क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य के विविध आयाम

तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे की विद्यावाचस्पति (पीएच्.डी.) उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबंध

साहित्य एवं ललित कला शाखा अभ्यास मंडल

हिन्दी साहित्य के अंतर्गत

शोधार्थी

श्रीमती स्वाती किरण खंदारे

शोध निर्देशिका

डॉ. श्रीमती रागिनी दिलीप बाबर

सितंबर, २०१५

प्रतिज्ञापत्र

मैं सौ. स्वाती किरण खंदारे प्रतिज्ञापूर्वक निवेदन करती हूँ कि, **''क्षमा क्षर्मा के कथा-साहित्य के विविध आयाम''** विषय पर शोध प्रबंध शोध निर्देशिका डॉ. सौ. रागिनी दिलीप बाबर, जिला पुणे के निर्देशन में, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे के अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

यह शोध प्रबंध या इसका कोई भाग अन्यत्र कहीं भी या किसी भी उपाधि अथवा परीक्षण हेतू किसी अन्य विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

स्थान- पुणे

दिनांक- सितंबर, २०१५ (सौ. स्वाती किरण खंदारे)

शोधार्थी

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सौ. स्वाती किरण खंदारे द्वारा **''क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य के विविध आयाम''** इस विषय पर यह शोध प्रबंध मेरे निर्देशन में तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे के अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है। यह इनकी मौलिककृति है। इसे परिक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

स्थान : पुणे

दिनांक : सितंबर,२०१५

(डॉ. सौ. रागिनी दिलीप बाबर)

शोध निर्देशिका

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोधकार्य की पूर्ति में उन समस्त चिंतकों, विद्वानों, आदरणीय स्नेहीजनों एवं इष्ट मित्रों, परिवार-जनों के प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करना मैं अपना परम दायित्व मानती हूँ। मैं आभारी हूँ तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे के पीएच्. डी. विभाग की जिन्हों ने मुझे शोधकार्य करने का अवसर प्रदान किया। सबसे प्रथम मैं मेरी माता-तुल्य शोध-निर्देशिका डॉ. सौ. रागिनी दिलीप बाबर मॅडम जी के प्रति नतमस्तक हूँ जिन्होंने मेरी जिद्, लगन और परिश्रम देखकर मार्गदर्शन करने हेतु समर्थन दिया। डॉ. बाबर मॅडमजी सच्चाई और ईमानदारी का उदात्त रूप है। दूसरों के हित में अपना हित, त्याग और समर्पण में श्रेष्ठता देखने की उनकी मूल प्रवृत्ति है। आदरणीय डॉ. बाबर मॅडमजी ने मुझे अपने कर्तव्य को बार-बार याद दिलाते हुए विचार विमर्श करते हुए मार्गदर्शन किया और कार्य आगे बढ़ता गया । आदरणीय श्री दिलीप बाबर सर जी ने भी मेरा हर कदम ढ़ाँढस बँधाते हुए मुझे प्रगति की ओर प्रेरित किया। इस तरह आज डॉ. बाबर मॅडमजी के कुशल एवं परिपक्व मार्गदर्शन में मैंने अपना शोधकार्य पूर्ण किया। डॉ. बाबर मॅडमजी ने अपना अमूल्य समय देकर आत्मीयतापूर्वक मार्गदर्शन किया। उनका यह ऋण मैं जिन्दगी भर नहीं भूल सकूँगी।

तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ के विभागाध्यक्ष आदरणीय डॉ. श्रीपाद भट सरजी की सहृदय आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोधकार्य से संबंधित मार्गदर्शन किया। मेरी कठिनाई तथा शंका का उन्होंने अपना अमूल्य समय देकर समाधान किया। मैं मेरे श्रद्धेय ससुरजी श्री खंदारे अशोक सिद्राम, पूज्य सासुमाँजी सौ. खंदारे शांता अशोक, पूज्य पिताश्री शर्मा बन्सीलाल मोतिलाल, पूंज्य माताजी स्वर्गीय शर्मा कमल बन्सीलाल के चरणों में प्रणाम निवेदित करती हूँ जिनके आशिर्वाद तथा प्रोत्साहन के कारण मेरा शोधकार्य पूर्ण हो पाया है। मेरे शक्तिस्त्रोत एवं मेरे पति श्री खंदारे किरण अशोक जिन्होंने अपने काम की व्यस्तता के बावजूद हर संभव मेरा साथ देकर मेरा उत्साहवर्धन किया, उनके अमूल्य योगदान को मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। मैं मेरी सुपुत्री निधी के उज्वल भविष्य के लिए ईश्वर से कामना करती हूँ जिसमें मेरे मनोबल को सदैव दृढ़ रखा और यथासमय सहयोग भी दिया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध पूरा करने के लिए मुझे जयकर ग्रंथालय, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा ग्रंथालय, पुणे विश्वविद्यालय का हिंदी विभागीय ग्रंथालय आदि से सहायता प्राप्त होती रही है। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा ग्रंथालय के ग्रंथपाल श्री प्रदीप जोशी जी से मुझे बहुत सहायता प्राप्त हुई है। उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

इस प्रबंध के टंकलेखन का कार्य यथासंभव शुद्ध एवं सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए पुणे के कार्तिकी एंटरप्रायजेस के संचालक श्री एवं सौ म्हस्के इनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मुझे अनेक संदर्भ ग्रंथों,पत्र-पत्रिकाओं, कोशों आदि से सहायता तथा अनेक ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों, विद्वानों से अनेक रूपों में सहयोग, मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा है। उन सबके प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। अंत में उन समस्त सहृदयजनों की आभारी हूँ जिनकी शुभकामनाएँ मुझे सदैव प्रोत्साहित करती रही। मेरी इस कृति से यदि हिंदी विद्वानों को संतोष हुआ तो मैं अपने श्रम सार्थक समझूँगी।

धन्यवाद !

(सौ. स्वाती किरण खंदारे)

शोधार्थी

१. प्रस्तावना

क्षमा शर्मा हिंदी साहित्य की एक सशक्त लेखिका हैं। उनका अनुभव गहन एवं व्यापक है। अनुभवों की सामग्री पास होने के कारण उनके साहित्य में कल्पना की उड़ान कम और यथार्थ की भूमि अधिक है। परिणामस्वरूप उनके साहित्य का परिवेश वास्तव होकर उभरता है। उनके पात्र भी हमारे आस-पास के देखे-सुने प्रतीत होते हैं। उनमें सत्-असत् दोनों प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। उनके पात्र परिस्थितियों के अनुसार आचरण करते हैं। अत: वे काल्पनिक लोक के नहीं लगते। फलस्वरूप उनका साहित्य नगरीय-महानगरीय अहसासों का सजीव साहित्य बन गया है। समाज के यथार्थ को परिपक्व भाषा में प्रस्तुत करने के कारण उनका लेखन विशिष्ट संवेद्य धरातल का निर्माण करता है। उनके कथा-साहित्य में विविधताके रंगो के दर्शन होते हैं। निम्नवर्ग तथा मध्यवर्ग की आशा-आकांक्षाओं को वहन करने की सृष्टि उनकी साहित्यिक विशेषता है।

प्रस्तुत शोधकार्य में क्षमा शर्मा के कथा साहित्य के अध्ययन को प्राथमिकता दी गयी है, जिसके अंतर्गत उनके द्वारा लिखित कहानी संग्रहों तथा उपन्यासों का समावेश है। चरित्र चित्रण की दृष्टि से क्षमा शर्मा के पात्र निर्जीव कठपुतलियाँ नहीं,बल्कि परिवेश की आवश्यकता के अनुसार ये पात्र बदलते रहते हैं। इसी कारण ये पात्र नितांत मौलिक हैं। क्षमा जी स्वयं मध्यवर्गीय परिवार से जुड़ी होने के कारण मध्यवर्गीय जीवन पद्धति का, उनकी समस्याओं का, मध्यवर्गीय प्रौढ़ युवती, स्त्री-पुरूष तथा वृद्धों की विविध स्थितियों का चित्रण सूक्ष्मता के साथ पाया जाता है। आचार्य शुक्ला जी के शब्दों में 'प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित कोश होता है।'

क्षमा जी के लेखन में 'स्त्री' का फलक उच्चवर्ग और मध्यवर्ग से उतर कर निम्नवर्ग तक जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में सरल किंतु सशक्त अंदाज में स्त्री-पुरूष संबंधो और उसमें स्त्री की विडंबना को बड़ी सच्चाई से व्यक्त किया है। आधुनिक युग में नारी की इस स्थिति को देखकर वे चिंतित होती हैं। रचनाकार स्त्री को पुरूष के विरोधी नहीं बल्कि समांतर दिखाने का प्रयास कर रहीं हैं।

क्षमा जी के कथा साहित्य में नारी जीवन का व्यापक चित्र दिखायी देता है। विशेष रूप से स्त्री जीवन की अनेक परतों को खोलकर उनके अनेक प्रश्नों को उन्होंने वाणी प्रदान की है।

केवल प्रश्नों का उद्‌घाटन करना ही क्षमा जी का उद्‌देश्य नहीं है, बल्कि उनका समाधान भी उन्होंने प्रस्तुत किया है। 'मोबाइल' उपन्यास की नायिका मधु, 'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास की नायिका वीभा, 'न्यूड का बच्चा' कहानी की नायिका वीनू, 'बया' कहानी की नायिका रिपु, 'कैसी हो सुष्मिता' कहानी की नायिका सुनिता, 'बेघर' कहानी की सुमि, 'नेम प्लेट' कहानी की नायिका निर्मला, 'एक है सुमन' कहानी की नायिका सुमन, 'बिंदास' कहानी की नायिका अनु, 'जिन्न' कहानी की नायिका सुधा, 'जिंदा है प्रतिभा बर्मन' कहानी की नायिका प्रतिभा, 'काला कानून' कहानी की कांत भाभी, 'थैंक्यू !सद्‌दाम हुसैन' कहानी की नायिका नीतू, 'एक लड़की और सत्रह किस्से' कहानी की शोभा, 'पापा के एपिसोड में बेटा' कहानी की नायिका शुभा ऐसे ही पात्र हैं।

उनका साहित्य न स्त्री-केन्द्री है, न पुरूष-केन्द्री, बल्कि वह तो मानव-केन्द्री है। उनकी समस्त रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं, सम्बन्धों, रिश्तों, जन-चेतना जागृति, महिला सबलिकरण का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनके कथासाहित्य में विषयों, पात्रों, समस्याओं की इतनी विविधता है, कि जिसके अनेक आयाम निरूपित किये गए हैं।

२. प्रेरणा एवं विषय चयन

कथा साहित्य के प्रति आरंभ से ही लगाव रहा है तथा स्त्री-लेखन रूची का विषय रहा है। स्त्री-साहित्य का अध्ययन करना आत्मियता की बात है। अत: क्षमा शर्मा द्वारा लिखित 'नेम-प्लेट' यह कहानी संग्रह में सामाजिक प्रश्नों का उद्‌घाटन किया है। यह कहानी संग्रह पढने पर मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि यदि क्षमा शर्मा के कथा साहित्य का अध्ययन किया जायें तो उसमें इन विचारों का प्रतिबिंब अवश्य मिलेगा। आदरणीय गुरूवर्याजी से प्रस्तुत विषय पर विचार विमर्श किया गया। उन्होंने इस विषय पर अनुसंधान करने की प्रेरणा दी तथा क्षमा शर्मा के साहित्य के संदर्भ में विचारों को सुनिश्चित रूप दिया। तभी क्षमा शर्मा द्वारा लिखित तथा उनसे संबंधित साहित्य का संकलन तथा अध्ययन करना आरंभ किया गया।

प्रस्तुत शोधकार्य में क्षमा शर्मा के कथा साहित्य के अध्ययन को प्राथमिकता दी गयी है, जिसके अंतर्गत उनके द्वारा लिखित कहानी संग्रहों एव् उपन्यासों का समावेश है। आदरणीय

गुरूवर्याजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से 'क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य के विविध आयाम' इस विषय पर शोधकार्य करने की सुबुद्धि प्राप्त हुई।

३. संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

औरंगाबाद विश्वविद्यालय में क्षमा जी के बालसाहित्य पर शोधकार्य शुरू है। किन्तु जहाँ तक ज्ञात है,किसी विश्वविद्यालय में इस विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ है। इसलिए संबंधित विषय चयन किया गया है।

४.ध्येय

क्षमा शर्मा के कथा साहित्य का निर्णयपरक वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य :

- क्षमा शर्मा के कथा साहित्य की प्रेरणाओं का अध्ययन किया गया है।
- क्षमा शर्मा के कथा साहित्य की विशेषताओं को रेखांकित किया गया है।
- क्षमा शर्मा पर पड़े प्रभावों का विवेचन किया गया है।
- क्षमा शर्मा के कथा साहित्य के अंतर्गत दृष्टिकोण को उद्घाटित किया गया है।
- उनके साहित्य को समाज के सामने प्रस्तुत किया गया है।

५. सिद्धांत कल्पना

क्षमा शर्मा यह बहुआयामी लेखिका है।

६. शोध पद्धति एवं तंत्र

- शोध पद्धति – साहित्यिक शोध (आलोचनात्मक शोध)

  कथा साहित्य का संकलन कर, विश्लेषणात्मक ढंग से अध्ययन कर संश्लेषणात्मक निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

- तंत्र–निरिक्षण, अनुसंधानात्मक साक्षात्कार
- साधन–प्रश्नावली

७. सामग्री संकलन

- मुख्य सामग्री –लेखिका द्वारा लिखित साहित्य
- सहाय्यक सामग्री – ग्रंथालय सामग्री (कोशग्रंथ, लेख, संदर्भ ग्रंथ, मिश्रित सामग्री, पत्र–पत्रिका, शोध प्रबंधों की टंकित प्रतियाँ), आलोचना सामग्री, आन्तरजाल

८. रूपरेखा

'क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य के विविध आयाम'

प्रथम अध्याय : 'क्षमा शर्मा का व्यक्तित्व तथा कृतित्व'

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत क्षमा शर्मा के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का अध्ययन किया गया है तथा संक्षिप्त में उनके साहित्य का विवरण किया गया है।

द्वितीय अध्याय : 'क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य की विषय–वस्तु'

प्रस्तुत अध्याय में क्षमा जी के कथा–साहित्य की विषय–वस्तु के दृष्टि से सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक,आर्थिक, राजनीतिक,मनोवैज्ञानिक आधार पर अध्ययन–विश्लेषण किया गया है।

तृतीय अध्याय : 'क्षमा शर्मा के उपन्यास साहित्य में शिल्प–विधान'

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत क्षमा जी के उपन्यास साहित्य को कथानक,पात्र तथा चरित्र–चित्रण, कथोपकथन,देशकाल–वातावरण, भाषाशैली, तथा उद्देश्य आदि शिल्प उपादानों के आधार पर सोदाहरण विश्लेषित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय : 'क्षमा शर्मा के कहानी साहित्य में शिल्प–विधान'

प्रस्तुत अध्याय में क्षमा जी के कहानी साहित्य कथानक, पात्र, तथा चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, देशकाल–वातावरण, भाषाशैली, शीर्षक तथा उद्देश्य को आधार बनाकर क्षमा जी के साहित्य के विशेषताओं पर विचार किया गया है।

पंचम अध्याय : 'क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य में नारी–चेतना'

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत क्षमा जी के कथा–साहित्य में चित्रित नारी–चेतना का विश्लेषण किया गया है।

षष्ठ अध्याय : 'क्षमा शर्मा का योगदान'

प्रस्तुत अध्याय में क्षमा जी का हिंदी कथा–साहित्य में योगदान की चर्चा की गई है।

उपसंहार :

इसके अंतर्गत संपूर्ण शोध प्रबंध का सार, शोध प्रबंध की सीमाएँ, प्राप्त उपलब्धियाँ तथा निष्कर्ष को सार रूप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अध्याय

क्षमा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

१.० प्रस्तावना :

किसी भी रचनाकार के साहित्यिक विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए उनका समग्र जीवन-परिचय प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि उनके जीवन और व्यक्तित्व के अनेक आयाम उनके साहित्य को किसी न किसी रुप में प्रभावित करते हैं। साहित्यकार जिस स्थान, सभ्यता, संस्कृति, परिवेश और वातावरण में जीविकोपार्जन करते हैं, वहाँ की भाषा, वेशभूषा, खान-पान, आचार-विचार, रहन-सहन आदि उनकी जीवनशैली से अनायास एकरुप होते हैं।

विवाहपूर्व और विवाहोपरांत शिक्षा तथा नौकरी में व्यस्त लेखिका सुश्री क्षमा जी के साहित्य सृजन में विभिन्नता के दर्शन होते हैं। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं की रचनाकार क्षमा जी हिंदी साहित्य की एक विशिष्ट लेखिका हैं। उन्होंने लगभग सभी विधाओं में लेखन कार्य किया है। ऐसी विदुषी लेखिका के साहित्यिक उपलब्धियों तथा जीवन-पक्षों को जानना अवश्य लाभदायक सिद्ध होगा। इस सन्दर्भ में डब्लू. एच. हडसन ने कहा है- "A great book is born of the brain and heart of its author. He has put himself into its pages; they partake of his life and are instinct with his individuality."[१] अत: किसी लेखक के साहित्य का अध्ययन करते समय उसके व्यक्तित्व का अध्ययन भी महत्वपूर्ण होता है।

१. १ क्षमा शर्मा : जीवन परिचय :

साठोत्तर हिंदी कथा-साहित्य में परिश्रम और लगन के बल पर क्षमा जी ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। शोधकर्त्री ने क्षमा जी से प्रत्यक्ष साक्षात्कार, दूरभाष, आन्तरजाल, भ्रमणध्वनी तथा साहित्य के माध्यम से उनके व्यक्तित्व के संबंध में प्राप्त जानकारी प्रस्तुत की है।

१.१.१ बाल्यकाल :

क्षमा जी का जन्म ३० अक्तूबर,१९५५ को सुप्रसिध्द शहर आगरा में हुआ। जन्म से ही इनका जीवन सामान्य बच्चों से अलग रहा है। जन्म के समय ये बिल्कुल मरते हुए बच्चे के समान पैदा हुई थी परंतु डॉक्टरों के प्रयास के फलस्वरुप ये बच गई और साथ ही एक ऐसी घटना घटित हो गई जिसने इनकी माँ को पूरी तरह से हिला दिया। एक मानसिक रोग से ग्रस्त स्त्री इनको उठा कर ले गई और तीन दिन की लगातार खोज के बाद ये वापिस मिली। इस प्रकार शुरुवाती दौर से ही इनका जीवन दुविधा–पूर्ण रहा है।

१.१.२ माता पिता :

क्षमा जी की माता का नाम कैलादेवी और पिता का नाम राम स्नेही शर्मा था। उनकी माँ पुरानी रूढ़ी–परंपरा को माननेवाली संस्कारशील और शालीन महिला थी। उनके पिता रेलवे में कार्यरत थे इसलिए उनका स्थान परिवर्तन होता रहता था। पिताजी के साथ अनेक स्थानों पर रहने के कारण जीवन का उनका अनुभव बढ़ता गया और उन्हें देश के अलग अलग हिस्सों के लोगों की जिन्दगी और समस्याओं को समझने का अवसर मिला। पिताजी से ही उन्होंने सीखा कि व्यक्ति को अपने बारे में भी सोचना चाहिए, गंभीर होना चाहिए। अपनी वैयक्तिकता, रुचियों, इच्छाओं और स्वप्नों को भी पर्याप्त महत्व देकर 'स्व' को रंजित एवं तुष्ट करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए। लेकिन जब क्षमा जी बारहवी कक्षा में पढ़ रही थी कि अचानक जुलाई १९७२ में उनके पिताजी की मृत्यु हो गई।

१.१.३ परिवार :

क्षमा जी के तीन भाई और दो बड़ी बहने हैं। क्षमा जी परिवार में सबसे छोटी है। उनके बड़े भाई का नाम डॉ. रामस्वरुप शर्मा है, जो देशबन्धु कॉलेज में कार्यरत थे। वे स्त्री और पुरुष को समान समझते हैं। उनके पिताजी के उपरान्त इन्ही के कंधो पर परिवार का सारा बोझ आ गया। इन्होंने ही क्षमा जी की शिक्षा के तरफ ध्यान दिया। तथा कई परेशानियों के होते हुए भी क्षमा जी को शिक्षा दी।

कठिन समय में भी उनके माँ ने बहुत ही दृढ़ता से कठीनाइयों का सामना किया। उनके मंझले भाई शिवस्वरुप पहलवानी का शौक रखते और उनके तीसरे भाई इंद्रस्वरुप अभियंता हैं।

उनके पिताजी के अंतिम दिनों में बड़े भाई को अच्छी नौकरी नहीं थी और बाकी दोनो भाई परिवार को सहारा नहीं दे पा रहे थे। पैसे के अभाव के कारण रिश्तेदारों ने भी मुँह मोड़ लिया। क्षमा जी को यह सब सहन कर पाना असंभव था।

१.१.४ शिक्षा :

पिताजी के साथ शहर में रहते हुए भी क्षमा जी गाँव से बराबर सम्बद्धित रहीं। उनकी प्राथमिक शिक्षा कन्नोज गाँव में हुई। गाँव का वातावरण उनके शिशुमन को बराबर प्रभावित करता रहा। उनकी माध्यमिक शिक्षा आगरा और उच्च माध्यमिक शिक्षा हाथरस में हुई। इसके उपरांत ही उनसे पिताजी का साया उठ गया। अत: बड़े भाई उन्हें दिल्ली ले आये और आगे की पढ़ाई उनकी देशबंधु कॉलेज में शुरू हो गयी।

उसी दौरान उन्होंने अपना लेखन कार्य शुरू किया। उन्हें कहानियाँ, लेख लिखने में तथा अनुवाद करने में अधिक दिलचस्पी थी। घर में आर्थिक कठीनाईयों का सामना भी करना पड़ रहा था। तब उन्होंने इसी रूचि को आर्थिक स्वावलंबन में परिवर्तित करने की चेष्टा की और सफल हो गयी। उन्होंने हिंदी विषय में स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की और जिंदगी की रूकावटों के साथ 'व्यावसायिक पत्रकारिता का कथा-साहित्य के विकास में योगदान' इस विषय में 'जामिया-मिलिया विश्वविद्यालय' से अपना शोधकार्य पूर्ण किया। उनके अनुसार, ''पढ़ाई के अलावा अभिनय में विशेष रूचि होने के कारण उन्होंने अनेक नाटकों में अभिनय किया तथा अभिनय के माध्यम से ही किताबों से इतर भी उनका एक जीवन बना। अभिनय और विविध स्पर्धाओं द्वारा उनका एक सार्वजनिक जीवन भी निर्मित हुआ।''[२]

१.१.५ विचारधारा :

''श्रोत्रं श्रुतेतैव न कुण्ड़लेन।''[३] (सज्जनों के कान की शोभा विद्या से बढ़ती है, कुंडल से नहीं।)की तरह क्षमा जी पर साहित्यिक दृष्टि से प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी आदि का प्रभाव है। उनमें भी महात्मा गाँधी के 'My Experiment with Truth' का विशेष प्रभाव है। उनके अनुसार साहित्य मनुष्य को समूचे विश्व के साथ जोड़ देता है।

क्षमा जी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण बहुत व्यापक है। ''वे अपने आपको समाज के महत्त्वपूर्ण तथा प्रतिभाशाली साहित्यकार में सबसे पीछे मानती है।''[४] उनका विचार है कि उम्र के किसी भी पड़ाव में व्यक्ति सीख सकता है, व्यक्ति को चाहिए कि वह कभी भी अपने विद्यार्थी दशा को समाप्त ना करे। उनके अनुसार ''हमारे जीवन में बहुत अधिक जटिलताएँ हैं। अगर व्यक्ति सारा जीवन भी उन जटिलताओं को सुलझाने और कमियों को दूर करने का प्रयत्न करता रहेगा तब भी वह पूर्णत: सफल नहीं हो पाएगा। एक स्वस्थ दृष्टिकोण और निरंतर संघर्ष करने की प्रवृत्ति एक सफल जीवन की निशानी होती है।''[५] उनका मानना है कि जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं। परंतु आने वाली कठिनाईयों से घबराए नहीं अपितु निड़रता से बिना थके निरंतर उन कठिन रास्तों पर चलते रहे और अपनी मंजिल तक पहुँचने का प्रयास करें।

क्षमा जी वामपंथी विचारधारा की है। उनका मानना है कि ''हर मनुष्य को जीने का अधिकार है और उसे कम से कम इतनी सुविधा तो मिलनी चाहिए कि वह जीवन की जरूरतों को पूरा कर सकें। भारतीय समाज में नारी को अपना कोई स्थान बनाना है तो उसे बहुत ही परिश्रम एवं लगन से अपना कार्य करना होगा क्योंकि हमारे समाज में आज भी नारी के प्रति दोहरा दृष्टिकोण रखा जाता है।''[६] क्षमा जी स्त्रीवाद से प्रभावित है। उनका मानना है कि शिक्षा का सही अवसर प्राप्त होना महत्त्वपूर्ण है। विशेष तौर पर छोटे शहरों में लड़कियों को मौका नहीं मिलता, लडकियाँ पढ़-लिख जायेंगी परंतु अवसर की कमी के कारण आत्मनिर्भर नहीं हो पाती।

क्षमा जी के अनुसार हर व्यक्ति के प्रयत्न से ही समाज में परिवर्तन हो सकता है। आज का हर नौजवान हमारी संस्कृती में उचित बदलाव कर समाज की प्रगति कर सकता है।

१.१.६ वैवाहिक जीवन :

क्षमा जी दहेज के प्रथा के खिलाफ हैं। जब सुधीश पचौरी का प्रस्ताव उनके सामने प्रस्तुत हुआ तब एक-दूसरे से स्वतन्त्रतापूर्वक मिलकर, एक-दूसरे को पूरी तरह समझकर प्रेमविवाह की संज्ञा न देकर आपसी पसंद से उन्होंने १७ अगस्त १९७७ को विवाह किया। दोनों ही दहेज विरोधी थे इसलिए किसी से कोई भेंट नहीं लेना चाहते थे। सुधीर पचौरी उस समय कॉलेज में पढ़ाते थे। ''क्षमा जी ने अपने घर से एक नई साड़ी तक भेंट में नहीं ली। यहाँ तक की छोटे भाई शादी की खुशी में दो किलो मिठाई लेकर आए थे, परंतु सुधीश जी ने उसे भी लेने से इंकार कर दिया। सुधीश जी ने ना क्षमा जी के परिवार से कुछ लिया और ना ही अपने परिवार से।"[७]

विवाह के पश्चात पति के सहयोग से क्षमा जी का लिखने-पढ़ने में ध्यान और भी अधिक लगने लगा। सृजनात्मकता से उन्मुख होकर वे लेखन कार्य में अधिक व्यस्त रहने लगी क्योंकि रचनात्मक अभिव्यक्ती का वे माध्यम उन्हें मिल गया जो तब तक वे खोजती रही थी। वे अपने परिवार के साथ बहुत खुश हैं। उनके एक पुत्र और एक पुत्री है। एक आदर्श गृहिणी के रूप में वे अपने परिवार के हर सदस्य की चिंता करती है। सूर्यबाला जी का कहना है कि 'आम धारणा है कि उच्च सफल लेखक सफल परिवारी नहीं हुआ करता।'परंतु यह देखा गया है कि कई कामयाब लेखिकाएँ सफल परिवारी भी होती हैं।

आखिर लेखिकाएँ भी प्रथमत: इन्सान ही होती हैं। सुख-दु:ख, जरूरतें उनकी अपनी होती हैं और ऐसे में अपनी संवेदनाओं की अभिव्यक्ती के लिए उन्हें कई तूफानी हलचलों का सामना करना पडता है। परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए अपने 'लेखकीय अस्तित्त्व' सुरक्षा के लिए एक लेखिका को अंगारों पर चलना होता है और सफल पारिवारिकता की अग्निपरीक्षा देनी होती है। ''भारतीय पारिवारिकता इतनी छुई-मुई है कि वह एक महिला की लेखकीय प्रतिबद्धता से सहम जाती है।''[८] इन संदर्भों में क्षमा जी का उदाहरण देते हुए कहा जा सकता है कि उन्होंने परिवार और लेखन दोनों क्षेत्रों में सामंजस्य और सन्तुलन बनाए रखा है। उन्होंने पारिवारिक अड़चनों का सामना करते हुए अपनी साहित्यिक आत्मा को जीवित रखा है, सृजन प्रक्रिया जारी रखी है।

१.१.७ नौकरी :

क्षमा जी को साहित्यिक संस्कार विरासत के रूप में प्राप्त हुए थे। उन्होंने बचपन से ही अपने आस-पास रचनाधर्मी वातावरण को देखा और उस वातावरण में वह संस्कार विकसित होता चला गया ,अर्थात् उसका प्रतिफल वर्तमान में प्राप्त हो रहा है। दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. करते समय ही उन्होंने रेड़िओ पर पहली बार वार्ता की। उसी समय उनका 'अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष' नामक लेख 'अमर उजाला' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। तथा 'व्हाईस ऑफ अमेरिका ' के कुछ कार्यक्रमों का उन्होंने हिंदी में अनुवाद किया।

लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण पडाव उनके जिंदगी मे तब आया जब 'हिंदुस्थान टाईम्स' की बाल पत्रिका 'नंदन' में सह-संपादकीय रूप में उनकी नियुक्ति हुई। संप्रति इसी पद पर कार्य करते हुए स्वतंत्र रूप से साहित्य सृजन में संलग्न हैं।

१.१.८ पुरस्कार एवं सम्मान :

यह निर्विवाद तथ्य है कि क्षमा जी ने स्वयं संघर्ष कर अपने जीवन को अधिक सार्थक बनाया है। उन्हें उनके मौलिक लेखन के लिए भारत में अनेक पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है, जो निम्नलिखित हैं -

- सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार
- हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा तीन बार पुरस्कृत
- बालकल्याण संस्थान, कानपूर, इंडो रूसी क्लब नई दिल्ली तथा सोनिया ट्रस्ट नई दिल्ली द्वारा सम्मानित
- देश के सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में बच्चों, महिलाओं और पर्यावरण से संबंधित सैंकड़ों लेख प्रकाशित
- सी.आई.टी.टी.के लिए बहुत से कॅसेटों और फिल्मों का लेखन
- टेलिफिल्म 'गाँव की बेटी' दूरदर्शन से प्रसारित

- १९७६ से आकाशवाणी के लिए कहानियों, नाटकों, वार्ताओं, बाल कहानियों आदि का नियमित लेखन।
- महिला संघटनों और पत्रकारों की युनियन में सक्रिय भागीदारी।
- दूरदर्शन तथा अन्य चैनलों के सैकड़ों कार्यक्रमों में भागीदारी।
- 'स्त्री का समय' और 'नेमप्लेट' कहानी संग्रह पर दूरदर्शन द्वारा पत्रिका कार्यक्रम में विस्तृत चर्चा।
- 'रास्ता छोड़ो ड़ार्लिंग' कहानी पर दूरदर्शन की सी.पी.सी. केंद्र द्वारा फिल्म का निर्माण।
- जयपुर लिटरेरी फेस्टिवल और दूरदर्शन द्वारा बनाए कार्यक्रम किताबनामा में लेखिका के लेखन पर विस्तृत चर्चा
- मीड़िया एड़वोकेसी ग्रुप के लिए कई बार मीड़िया में स्त्री और बच्चों संबंधी खबरों का अध्ययन।
- अंतर्राष्ट्रीय एन.जी.ओ. पापूलेशन कम्युनिकेशंस इंटरनेशनल, न्युयार्क और प्रसार भारती आकाशवाणी महानिदेशालय की ओर से बनाए जाने वाले धारावाहिक 'तरू' की लेखिका।
- 'लेखिका संघ' की आजीवन मानद सदस्य
- आकाशवाणी, दूरदर्शन, एन.ड़ी.टी.वी., जी.टी. वी., सहारा, जनमत, लोकसभा चैनल, राज्यसभा चैनल, एस १, सी.टी., पी ७, बी.बी.सी. वर्ल्ड़ सर्विस, वायस आफ अमेरिका, एस.बी.एस. रेडिओ ऑस्ट्रेलिया आदि पर अनेक बार साक्षात्कार प्रसारित।
- नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली पब्लिक लाईब्रेरी, शाईन, बचपन बचाओ, मारूती, युनिसेफ आदि संस्थाओं की ओर से भारत भर में आयोजित बच्चों की बहुतसी कार्यशालाओं में भागीदारी।
- दो बार दिल्ली युनियन आफ जर्नलिस्ट की कार्यकारिणी में।
- नेशनल बुक ट्रस्ट की पुस्तक चयन समिती में २००४
- प्रसार भारती के बाल धारावाहिक चयन समिती में २००४
- प्रसार भारती के धारावाहिकों की चयन समिती में २००५-०७
- के.के.बिरला फाउंड़ेशन की बिहारी पुरस्कार समिती में २००४-०८

- दो बार इंड़ियन प्रेस कोर की प्रबंध समिती में।
- दूरदर्शन की राष्ट्रीय पुरस्कार की जुरी में २००१-११
- सूचना एवं प्रसारण मंत्रायल में भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार समिती में २००६-१२
- आकाशवाणी की राष्ट्रीय पुरस्कार समिती में २००७-०९
- चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, बालभारती कहानी प्रतियोगिता, राजस्थान पत्रिका कहानी प्रतियोगिता में निर्णायक
- आकाशवाणी की वार्षिक पुरस्कार समिती की सदस्य
- दिल्ली पब्लिक लाईब्रेरी की बोर्ड़ मेंबर २००७-११
- जनवरी २०१३ में जयपुर लिटरेरी फेस्ट के तीन सेशन में भागीदारी। बच्चों के लिए एक वर्कशॉप भी आयोजित
- टी.वी. धारावाहिकों (२००७-०८) की चयन समिती में।
- दिल्ली पब्लिक लाईब्रेरी, नेशनल बुक ट्रस्ट, युनिसेफ तथा अनेक एनजीओज में बच्चों के लिए अनेक स्टोरी टैलिंग सैशन।
- संप्रति : सैंतीस वर्षों से हिंदुस्तान टाईम्स की बाल पत्रिका नंदन से सम्बंद्ध।
- वर्तमान में कार्यकारी संपादक

१.२ क्षमा शर्मा के व्यक्तित्त्व की विशेषताएँ :

किसी भी साहित्य के स्वरूप को जानने के लिए रचनाकार के व्यक्तित्व को समझना महत्त्वपूर्ण होता है। व्यक्तित्त्व के अतिरिक्त परिवेश का भी लेखन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। क्षमा जी को रचनात्मक गतिविधियों के लिए परिवार का पूरा सहयोग तथा पोषक वातावरण प्राप्त था। सहयोग और संघर्ष से ही उन्होंने अपने जीवन को अधिक सार्थक बनाया है। उनके व्यक्तित्त्व के अंतर्गत उनके जन्मगत गुण, स्वभाव, रूचि, संस्कार आदि बातों का समावेश किया गया है।

१.२.१ बाह्य व्यक्तित्त्व :

आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्त्व की धनी क्षमा जी पाँच फिट दो इंच उँचाई, गोरा रंग, सुदृढ़ शरीर, भौंहो के उपर बड़ी सी बिंदी, गोल चेहरे पर मंद मुस्कान उनके भव्य व्यक्तित्त्व को गरिमामय बना देता है। मृदुभाषी, कोमल, स्नेहमयी तथा मिलनसार मृदुला जी की बातों में सामने वालों को आकर्षित करने का जादू है। छरहरी काया, सलिकेदार रहनसहन, कोमल एवं मृदु व्यवहार,दृढ़ विचार ये सारी बातें उनके व्यक्तित्त्व को गरिमा प्रदान करती हैं। स्वाभिमान उनमें कूट-कूट कर भरा है। जीवन में दुराव-छिपाव वह नहीं जानती और अपने लेखन को भी उन्होंने उसी के अनुरूप ढाला है। उनका कहना है कि, ''जैविक तृष्णाओं की सहज स्पष्ट अभिव्यक्ति ही अपने प्रति बोला गया सच है।''[९]

एक सूक्ष्म पारदर्शी वेदना धारा उनके लेखन और व्यक्तित्व में बहती हुई दिखाई देती है। वे कभी हँसी के नीचे छलकती है, कभी शुध्द त्रासदी बनकर उभरती है। कुल मिलाकर क्षमा जी का बाह्य व्यक्तित्व प्रेरक,आकर्षक और सुंदर है।

१.२.२ आन्तरिक व्यक्तित्व :

आन्तरिक व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र के गुणों और विशिष्टताओं से जाना जाता है। व्यक्ति के आन्तरिक व बाह्य दोनों प्रकार की विशेषताओं से व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व बनता है, ढलता है। अत: व्यक्तित्व को सम्पूर्णता में जानने के लिए उसके अन्तर्गुणों से परिचित होना भी जरुरी है।

प्रस्तुत है उनके आन्तरिक व्यक्तित्व की कुछ झलकियाँ-

१.२.२.१ माता-पिता के प्रति श्रध्दा :

क्षमा जी को अपने माता-पिता के प्रति अटूट प्रेम और श्रध्दा है। उनके प्रति मन में अपार इज्जत है। क्षमा जी के लिये उनके बड़े भाई एक आदर्श और बहुआयामी व्यक्ति हैं। साहित्य के प्रति अग्रसर होने की प्रेरणा उन्हें अपने बड़े भाई से ही प्राप्त हुई। ''किसी भी एक लेखक, पक्ष या अन्य विषय को लेकर अपने भाई से घंटो चर्चा करने में मुझे अलग ही आनंद की अनुभूति होती थी।''[१०]

क्षमा जी के भाई एक अच्छे भाई होने के साथ-साथ अच्छे मार्गदर्शक भी साबित हुए हैं। गलती करने पर वे कठोर हृदय भाई बन जाते हैं, तो नेक और अच्छा काम करने पर प्रशस्ति भी देते हैं।

१.२.२.२ कलाप्रियता :

कलात्मक अभिरूचि सम्पन्न क्षमा जी का कला-प्रेम सराहनीय है। उनका घर कलात्मक वस्तुओं का संग्रहालय है। लेखन के अलावा उनकी अन्य कई अभिरूचियाँ हैं। उन्हें लकड़ी की चीजों, कलात्मक वस्तुओं तथा हस्तकला की वस्तुओं से घर सजाने का बहुत शौक है। उनके घर का ड्रॉईंग हॉल इन वस्तुओं से सजा-धजा तथा देखने लायक है।

१.२.२.३ संघर्षशीलता :

बारहवीं के पश्चात् ही अपने पिताजी का साया सर से उठ जाने की वजह से घर के सभी कामों में उन्हें हाथ बँटाना पड़ता था। अपनी छोटी बेटी सुंदर, प्रतिभासंपन्न और सुशील होने के कारण घर में कोई भी उनसे काम की अपेक्षा नहीं करता था। इतनी मेधावी, सुसंस्कृत और कुशाग्रबुद्धी क्षमा जी अपनी माँ की परेशानी को देखते हुए सारा दिन काम के लिए भागती रहती। जैसे- बाजार से सामान लाना, दूध लाकर गर्म करना, माँ के काम में हाथ बँटाना, बिजली का बिल अदा करने के लिए घंटों कतार में खड़े रहना, बाजार से खरीदी हुई वस्तु माँ को पसंद न आने पर वापस कर आना, माँ को समयपर दवा देना, पौधों को पानी देना। खेलने की उम्र में ही उनपर घर और बाहर की जिम्मेदारियाँ आ पड़ी थीं। क्षमा जी के अनुसार, ''जिम्मेदारीयों से मेरे व्यवहार और व्यक्तित्त्व में शुरू से एक उन्मुक्त स्वयंसेवक के गुण विकसित होते गए।''[११]

१.२.२.४ दायित्त्वबोध :

एक रचनाकार होते हुए भी क्षमा जी अपने दायित्त्वबोध के प्रति सजग है। वे पहले स्थान पर गृहिणी, दूसरे स्थान पर सम्पादिका और तिसरे स्थान पर लेखन कार्य को रखती हैं। भारतीय नारी के बहुत से गुण उनमें सम्मिलित हैं। उनका कहना है, ''इन्हीं जिम्मेदारियों से मैंने प्रेरणा लेना सीखा

है।''[१२] पारिवारिक जीवन में जिन कटु-प्रखर अनुभवों से वे गुजरीं, वे ही उनके लेखिका बनने की दिशा में वरदान सिद्ध हुए।

१.२.२.५ साहसी :

क्षमा जी में बचपन से ही साहस, शौर्य, पराक्रम और बहादूरी के गुण विद्यमान हैं। अपने आपको लड़की मानकर डरना, घबराना, शरमाना तथा चुप रहना उनके स्वभाव में ही नहीं है। स्कूल और कॉलेज की सभी प्रतियोगिताओं में अपने प्रतिद्वंद्वी को पराजित करना, यही उनका एकमात्र लक्ष्य होता था। उनके अनुसार, ''हार मानकर पीछे हटना मुझे पसंद नहीं है।''[१३] इसी आत्मबल, साहस और शौर्य के कारण वह उत्तरोत्तर सफलता के चरण छू रही हैं।

१.२.२.६ लेखन का बावलापन :

दिल-दिमाग का बावलापन क्षमा जी के व्यक्तित्त्व की सबसे बड़ी विशेषता है। उनके मन-मस्तिष्क में कोई रचना साकार हो जाए, तो न वे चाय बना सकती हैं, न अखबार पढ़ सकती हैं और न किसी काम में मन लगा सकती हैं। जब तक लिख नहीं लेती तब तक लगातार झुंझलाहट, बेचैनी-सी बनी रहती है। घर या बाहर किसी को गुस्सा दिलाने पर कहानीही नहीं मानो पूरा उपन्यास कुछ घंटों में लिख लेती है , फिर उसे दोबारा रिवाईज नहीं करती।

उनमें लेखन के लिए विशिष्ट स्थान, स्थिति, समय तथा व्यवस्था आदि को लेकर किसी भी प्रकार आग्रह नहीं हैं। जब वे अन्य रचनाकारों की स्टड़ीरूम देखती हैं, जैसे- दुर्लभ एकांत, करीने से लगी पुस्तकें, सलीके से बिछा बिस्तर, कम्प्युटर और इंटरनेट सुविधा, कॉफी का इंतजाम आदि। वह इतनी सुविधाएँ देखकर दंग रह जाती हैं। बहुत अधिक साफ-सूथरे, सलीकापसंद माहौल में उनकी रचना-प्रक्रिया ठिठुर जाती है। उन्हें जब भी समय मिल जाए, तब उनके लिए अखबार का टुकड़ा भी पर्याप्त होता है। इस संबंध में उनके विचार है, कि ''अक्सर यह होता है कि बहुत दिनों तक न लिखूँ तो वह झुंझलाहट भी समाप्त हो जाती है और जड़ता वाला स्थगन आ जाता है, जो लेखक के लिए बहुत घातक है।''[१४]

क्षमा जी के लेखन की यह भी विशेषता है कि कभी-कभी दिमाग में अनार की तरह छूटती है कहानी। एक कहानी के चार-चार शीर्षक सूझ रहे हैं और फिर मस्तिष्क विचलित हो उठता है। वे बताती है कि, ''कभी तो कहानी रसोई में सब्जी जला रही है, संवाद में श्रवणशक्ति चुका रही है, बिस्तरपर नींद उड़ा रही है। कभी कहानी एकदम त्सुनामी लहरों की तरह प्रलयंकारी वेग से आती है और फिर उतनी ही तीव्रता से वापस भी चली जाती है।''[१५] लेखन का बावलापन ही उनकी रचनाओं का सबसे बड़ा कारण और कारक रहा है।

१.२.२.७ अभिरूचि :

साहित्यकारों का अपना एक रचनात्मक संसार होता है, लेकिन इस साहित्य जगत् से भिन्न व्यक्तिगत जीवन का भी अपना एक विशिष्ट संसार होता है। क्षमा जी ने अपने जीवन को विविध रंगों में रंगा है। प्रत्येक आनंद का अनुभव लेने में उनकी विशेष रूचि है। जगजीत सिंह के गीत सुनना, पुरानी विश्वप्रसिद्ध क्लासिक पुस्तकें पढ़ना, साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ना, चाट खाना, साड़ीयाँ खरीदना आदि बातों की वे शौकिन हैं। क्षमा जी को रसोई में जाकर खाना बनाने का बहुत शौक नहीं है , लेकिन कोई मनपसंद व्यंजन खाने का मन कर रहा हो तो फिर बड़ी लगन से वे उस काम में लग जाती हैं।

१.३ क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य का संक्षिप्त परिचय :

क्षमा जी साहित्य को एक अच्छा जीवन साथी मानती है। प्रत्येक साहित्यकार अपना साहित्य-सृजन कुछ मूलभूत सिद्धांतों के आधार पर करता है। अपनी मान्यता के आधार पर उन्होंने घर-परिवार, नारी जीवन के विविध पक्ष तथा जीवन के विविध पहलूओं पर अपनी लेखनी चलाई है। नारीवादी लेखन और नारी के मुक्ति संघर्ष को आगे लाने वालों में वे पहली पांति में रही हैं। क्षमा जी ने स्पष्ट और दृढ़तापूर्वक स्त्री-पुरूष समानता का समर्थन किया है। उनकी स्पष्ट और निर्भिक दृष्टि उनकी बहुत बड़ी शक्ति है। उन्होंने स्त्री-पुरूष दोनों की समस्याएँ, संघर्ष और विसंगतियों को अपने

साहित्य में स्थान दिया है। नारी शक्ति का कृत्रिम प्रदर्शन करने से परहेज किया है। नारी जागृति आंदोलन की सुपरिचित लेखिका का सम्मान प्राप्त किया है।

क्षमा जी अपने पात्रों के प्रति विशेष मोह नहीं रखती। उन्होंने पाठकों से भी कोई दुराव-छिपाव नहीं किया, बल्कि अपनी बहुत सी रचनाओं में अपनी खुशियाँ, मायुसियाँ, इरादे, मनसूबें तथा जीवन की संवेदनात्मक परिस्थितियों को पाठकों के समक्ष खोलकर रख दिया है। क्षमा जी की रचनाओं में ''राजनीति सब्जी में नमक की तरह है।''[१६] उन्हें राजनीतिक विषयोंपर रचनाएँ लिखना तो दूर, पढ़ना भी नीरस लगता है। वर्तमान परिवार और समाज में परस्पर संबंध इतने जटिल हो गए हैं कि उनके विश्लेषण में ही राजनीतिक परिचय मिल जाता है।

लेखिका को अपने जीवन में अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा है। इसके बावजूद उन्होंने परिस्थितीयों का मुकाबला कर अपना लेखनकार्य जारी रखा। वे सिर्फ उपन्यास और कहानियाँ ही नहीं बल्कि बाल-साहित्य के साथ सम्पादन और अनुवाद का कार्य भी बड़ी कुशलता से कर रही है। क्षमा जी में हमें एक बहुआयामी व्यक्तित्त्व अर्थात् सफल उपन्यासकार, कहानीकार, बाल-साहित्यकार, अनुवादक, वक्ता एवं आलोचक के दर्शन होते हैं।

क्षमा जी सन् १९७० से लेकर अबतक निरंतर लेखन कार्य में जुटी हुई हैं। वे साहित्य की अधिकांश विधाओं में सृजनात्मक कार्य कर रही हैं। क्षमा शर्मा के समग्र साहित्य का निम्न प्रकार से वर्गीकरण प्रस्तुत है -

कहानी संग्रह :

१. काला कानून, देवदार प्रकाशन, नई दिल्ली

२. कस्बे की लड़की, राजधानी प्रकाशन, नई दिल्ली

३. घर-घर तथा अन्य कहानियाँ, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली

४. थैंक्यू सद्दाम हुसैन, किताबघर, नई दिल्ली

५. लव स्टोरीज, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली

६. इक्कीसवीं सदी का लड़का, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

७. नेम प्लेट, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दो संस्करण प्रकाशित– हिंदी अकादमी द्वारा कृति सम्मान, पेपरबैक संस्करण भी उपलब्ध

८. रास्ता छोड़ो डार्लिंग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

९. लड़की जो देखती पलटकर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

उपन्यास :

१. दूसरा पाठ, किताबघर, नई दिल्ली– चार संस्करण प्रकाशित, हिंदी अकादमी द्वारा पुरस्कृत

२. परछाई अन्नपूर्णा, राजसूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली– दो संस्करण प्रकाशित

३. शस्य का पता, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली

४. मोबाइल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

स्त्री विषयक :

१. स्त्री का समय, मेधा बुक्स, नई दिल्ली– चार संस्करण प्रकाशित– सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की ओर से भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार के अंतर्गत प्रथम लेखिका पुरस्कार

२. स्त्रीत्ववादी विमर्श–समाज और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली दो संस्करण प्रकाशित, पेपरबैक संस्करण भी उपलब्ध

३. औरतें और आवाजें, आलेख प्रकाशन, नई दिल्ली

४. बंद गलियों के विरूद्ध– 'महिला पत्रकारिता की यात्रा,' 'इंड़ियन विमेन प्रेस कोर' के लिए मृणाल पाण्ड़ेय के साथ सम्पादन। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

५. बाजार ने पहनाया बारबी को बुर्का, पेंग्विन, नई दिल्ली

पत्रकारिता विषयक :

१. व्यावसायिक पत्रकारिता का कथा–साहित्य के विकास में योगदान

बाल उपन्यास :

१. शिब्बू पहलवान, राजकमल प्रकाशन, पांच संस्करण प्रकाशित, नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना में चुनी गई पुस्तक

२. पन्ना धाय, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक, चार संस्करण प्रकाशित

३. मिठू का घर, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली

४. राजा बदल गया, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली

५. पप्पू चला ढूँढने शेर, मेधा बुक्स, नई दिल्ली, तीन संस्करण प्रकाशित, हिंदी अकादमी द्वारा पुरस्कृत

६. पीलू, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली

७. होमवर्क, किताबघर, नई दिल्ली

८. इंजन चले साथ-साथ, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली

९. मानू और बादल, किताबघर, नई दिल्ली

१०. गोपू का कछुआ, आलेख प्रकाशन, नई दिल्ली

११. घर का चिड़ीयाघर, एमपरसंड प्रकाशन, नई दिल्ली

१२. नाहर सिंह के कारनामे, एमपरसंड प्रकाशन, नई दिल्ली

१३. एक रात जंगल में, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, सात संस्करण प्रकाशित, पंजाबी में भी अनूदित

१४. भाईसाहब, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित, उर्दू में भी अनुवाद

१५. डायनोसोर की पीठ पर, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

१६. बोलने वाली घड़ी, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

१७. सरसों के फूल- राजस्थान सरकार के लिए वहां के अध्यापकों द्वारा लिखी कहानियों का संचयन, प्रकाशन

बालकहानी संग्रह :

१. पानी-पानी, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली

२. परी खरीदनी थी, देवधर प्रकाशन, नई दिल्ली

३. तितली और हवा, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली

४. इक्यावन बाल कहानियाँ, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली

५. चालाकी की सजा, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली

६. भाई की सीख, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली

७. भेड़िए के जूते, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली

८. धरती है सबकी, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली

९. फिर से गाया बुलबुल ने, आलेख प्रकाशन, नई दिल्ली

१०. दोना भर जलेबी, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली

११. लालू का मोबाइल, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली

१२. बुलबुल और मुन्नू, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, चार संस्करण प्रकाशित, पंजाबी और उड़ीया में अनूदित

- बच्चों के लिए बीस वर्ल्ड़ क्लासिक्स का रूपांतरण
- पंजाबी, उर्दू, अंग्रेजी, तेलगु, मलयालम, तमिल, उड़ीया आदि में रचनाओं का अनुवाद

१.३.१ क्षमा शर्मा का उपन्यास साहित्य :

१.३.१.१ दूसरा पाठ :

यह उपन्यास सन् १९९४ में विकास पेपर बैक्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया। इस उपन्यास के माध्यम से क्षमा जी ने हमारे शिक्षा से संबंधित लोगों के सामने प्रश्न चिह्न लगाया है। क्षमा जी का विचार है कि आज हमारी शिक्षा प्रणाली का स्वरूप इतना अधिक बिगड़ गया है कि उसमें परिवर्तन लाना अत्यंत आवश्यक है। आज समाज में हर कोई केवल अपना स्वार्थ ही देखता हैं। कोई भी किसी दूसरे से मतलब नहीं रखता। आज हर व्यक्ति इतना अधिक अपने आप में सीमित हो गया है कि उसके आस-पास क्या हो रहा है इससे उसका कोई मतलब नहीं रह गया है। उसकी इस मानसिकता का प्रभाव समाज के हर पहलू पर पड़ रहा है, चाहे वो राजनीति हो, आर्थिक हो या शिक्षा का। आदर्श आज कहीं भी जीवित नहीं रह गया है। कही-कहीं यदि कोई आदर्शवादी रह भी गया है तो वह समाज के साथ नहीं चल पाता क्योंकि समाज की दृष्टि में वह एक असफल व्यक्ति साबित कर दिया जाता है।

इसी प्रकार क्षमा जी का यह उपन्यास ग्राम्य जीवन के उस रोग की पड़ताल करता है जो आधुनिकता के नाम पर भारतीय जीवन में फैला है। आज़ादी के मिलने के आसपास एक विचार हर एक के पास होता था कि हम अपनी तकदीर के मालिक है और उसे जैसा चाहे बदल सकते हैं इसलिए जीवन में यत्र-तत्र आशावादी संकल्पशील नायक नजर आते थे जो समाज को बेहतर बनाने का यकीन करते थे, फिर अचानक सब उलट-पुलट गया। समाज को बेहतर बनाने का इरादा जैसे खत्म हो गया। इक्का-दुक्का आदर्शवादी रह गए।

यह उपन्यास ऐसे ही एक अकेले आदर्शवादी युवा गौतम की कहानी है। वह एक गाँव में आता है और अपने आदर्श के तहत स्वयं स्कूल को सुधारने की कोशिश करता है किंतु अंतत: वह हर तरफ से हताश होता है। लेखिका ने गौतम के बहाने हमारे शिक्षा के वातावरण के एक-एक रंग को टटोलकर बताया है कि, जब तक सभी मिलकर उसे ठीक नहीं करना चाहेंगे तब तक स्थिति नहीं बदलेगी।

१.३.१.२ परछाई अन्नपूर्णा :

यह उपन्यास सन् १९९६ में राजसूर्य प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया। इस उपन्यास की नायिका के माध्यम से क्षमा जी पाठकों को यह बताना चाहती हैं कि स्त्री आज अपने अतीत से पीछा छुड़ाकर बाहर आना चाहती है। अपना अस्तित्त्व पहचानना चाहती है। उसकी मानसिकता का विकास उसकी महत्त्वाकांक्षाओं से होता है। नारी में अस्तित्त्व चेतना का बोध भी विकसित हुआ है। वह अपने स्वत्त्व के प्रति सचेत हो उठी है। स्त्री शिक्षित और स्वतंत्र हुई, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुई तो उसकी मानसिकता में भी भारी परिवर्तन आया है। उसे एक ओर गृहिणी तथा दूसरी ओर जीविकोपार्जन की भूमिका निभानी पड़ रही है। दोनो भूमिकाओं में परस्पर विरोधी आवश्यकताओं के बीच जूझना पड़ता है। इसके साथ संक्रमणशील समाज में उसे कई विसंगतीयों से जूझना होता है। उसे परम सहयोगी और चरम विरोधी पुरूष के दोनो ही रूपों से निर्वाह करना पड़ता है।

स्त्री को पति, परिवार, समाज वे पुरूष जिनके आधिन वह काम करती है और सहयोगी पुरूष जो उसकी प्रगति में सहयोगी और विरोधी दोनों ही होते हैं- इन सबके मध्य अपने अस्तित्त्व का विकास करना पड़ता है। रूढ़ दृष्टिकोण और आधुनिक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का टकराव भी होता है। संबंधों पर उसकी गतिशीलता का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। इन सारे परिवर्तन का स्वरूप, समस्याएँ, समाधान, और नारी की नैतिकता में परिवर्तन तथा इसके भावनात्मक स्वरूप को क्षमा जी ने इस उपन्यास का कथ्य बनाया है।

उपन्यास की नायिका घर से बाहर निकलकर नौकरी करने वाली स्त्री का प्रतीक है। वह किस प्रकार अपने पति को अपने काम में सहयोग देने के लिए तैयार करती है। इन सब स्थितियों का सामना करते हुए उसे किस मानसिक दबाव से गुज़रना पड़ता है, यह एक नौकरीपेशा स्त्री का सजीव चित्र है। आज जब हर तरफ स्त्री की सामाजिक और आर्थिक स्थिती में सुधार की बात की जाती है, तब भी जो स्त्री बाहर निकलकर नौकरी करती है, उसकी यह भूमिका आज भी लोगों को नापसंद है। नौकरी करने का अर्थ स्त्री को अपने विकास से भी हो सकता है, यह न मानकर, माना जाता है कि बढ़ती महंगाई को रोकने का यह सबसे कारगर तरीका है। यह बात भी कही जा सकती है कि नौकरी करने वाली स्त्री आदमी का हक छीनती है ।

इस उपन्यास में ऐसे बहुत से सवाल हैं। बहुत से ऐसे प्रश्न भी हैं, जो केवल संकेत हैं। इस उपन्यास के माध्यम से क्षमा जी ने समाज के सामने एक प्रश्न रखा है कि क्या अगर स्त्री घर से बाहर निकलकर काम करना चाहती है तो क्या यह परिवार के लिए लाभदायक नहीं है? क्यों ऐसा माना जाता है कि यदि स्त्री बाहर निकलेगी तो उसका चरित्र खराब हो जाएगा। हमारे सामाजिक ढाँचे के कारण स्त्री को किन सामाजिक यातनाओं से गुजरना पड़ता है इसका अहसास पुरूष नहीं कर पाता। क्षमा जी के साहित्य में स्त्री का हर रूप देखने मिलता है।

‘‘भारतीय समाज में स्त्रियों में आजादी के बाद नई चेतना आई है। पढ़ाई-लिखाई हो या पुलिस का मुस्तैद काम यहाँ रात-दिन अपराधियों से निबटना पड़ता है। हर क्षेत्र में स्त्रियों ने पुरूषों से बेहतर कार्यक्षमता का प्रदर्शन किया पर कट्टर मर्दवादी संकीर्ण दृष्टि के लोग स्त्री के हर अभियान पर

नाक ही सिकोड़ते हैं। स्त्री का कामकाजी होकर संकीर्ण दृष्टि से टकराव लेना यह उपन्यास का कथासूत्र है।''[१७]

१.३.१.३ शस्य का पता :

क्षमा जी द्वारा रचित यह उपन्यास सन् १९९७ में आकाशदीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। ''यह धरती केवल मनुष्य के लिए क्यों? यदि इस धरती पर पेड़-पौधे, पशु-पक्षी नहीं रहेंगे तो इनका क्या होगा? पर्यावरण संतुलन के बिगड़ने से सिर्फ मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी भी उजड़ रहे हैं। मनुष्यका ही नहीं, पशु-पक्षियों का भी व्यवहार बदल रहा है। यह उपन्यास इस उजाड़ में बदलते हुए उनके स्वभाव एवं व्यवहार के बारे में है।''[१८] इस उपन्यास में क्षमा जी ने अपनी अन्य रचनाओं के विषय से हटकर दिल्ली में फैलते हुए प्रदूषण का और इस प्रदूषण का हमारे प्राकृतिक वातावरण और पक्षियों पर कितना विपरित प्रभाव पड़ रहा है इसका चित्रण किया है। इस उपन्यास में चित्रित तोते और कौओं के माध्यम से क्षमा जी हमारी वर्तमान राजनैतिक स्थिती पर भी प्रकाश डालना चाहती हैं।

एक जमाने में मनुष्य धर्म से डरता था। पाप करने से डरता था। लेकिन आज स्थिती बदल रही है। धार्मिक नेताओं को लगता है कि लोग चाहे ईश्वर से न डरें, पाप और बेईमानी से न डरे, लेकिन उनसे और उनके द्वारा दूसरे धर्मों की बताई गई काल्पनिक दादागिरी से जरूर डरें। इसके अतिरिक्त क्षमा जी ने अन्य भी कई पहलुओं को उठाया है। कागज़ के स्थान पर प्लास्टिक का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। लकड़ी, मिट्टी के उद्योग प्लास्टिक में बदल गए हैं। बड़े उद्योग में छोटी पूंजी और उनसे जुड़े उद्योग समाते जा रहे हैं। आज की दिल्ली पहले की दिल्ली से कितनी भिन्न है। आज पर्यावरण को कितना नुकसान पहुँच रहा है। जनसंख्या विस्फोट के कारण हर तरफ मारामारी है। पेडों को निरंतर काटे जाने के कारण हरियाली तथा स्वच्छ वायु समाप्त होती जा रही है। जहाँ पहले खुले खुले मैदान होते थे वहाँ बड़ी-बड़ी इमारतें हैं। लोगों के जीवन के उद्देश बदल गए हैं। उनकी सोच बदल गई हैं।

क्षमा जी के इस उपन्यास में पर्यावरण, राजनीति, संस्कृती, बदलते हुए मूल्य के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में बने हुए नेता आदि के ऐसे चित्र हैं जिन्हें बहुत ही सफलता के साथ चित्रित किया गया हैं।

१.३.१.४ मोबाइल :

यह उपन्यास सन् २००४ में राजकमल प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस उपन्यास में बताया गया है कि छोटी शहर की लडकियाँ बड़े शहर में आकर चुनौतियाँ झेलती हुई आगे बढ़ती, लढ़ती-झगड़ती, जीवन के रास्ते तलाशती है। इन लड़कियों के पास संसाधन नहीं है, फिर भी आत्मनिर्भरता का विचार पनप रहा है। लेकिन नौकरियाँ न के बराबर हैं। इन लड़कियों का संघर्ष चुनौतियाँ तथा खुद निर्णय लेने की क्षमता भी बहुत अधिक है। इस सदी की तेजी से बदलती दुनिया में ये लड़कियाँ भी अछूती कैसे रह सकती हैं।

यह उपन्यास एक आत्मनिर्भर लड़की की कहानी है, जिसकी आकांक्षाओं और सपनों के सामने आसमान भी छोटा है। ''आपाधापी से भरे समय में छोटे शहर से एक लड़की नौकरी करने महानगर में आती है। महानगर लड़की के लिए रक्षक की तरह साबित होता है जो रोजी-रोटी देने के साथ उसे तमाम तरह की दकियानूसी विचारों से मुक्त भी कराता है। लेकिन यही महानगर उसका भक्षक भी बन जाता है। रक्षक और भक्षक इस द्वंद्व के बीच अपने अस्तित्त्व को तलाशती लड़कियों की मुक्ति गाथा क्षमा शर्मा के उपन्यास 'मोबाइल' का मूल कथ्य है।''[१९]

१.३.२ क्षमा शर्मा का कहानी साहित्य :

क्षमा जी की अनेक कहानियाँ विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं और पुरस्कारों से सम्मानित भी हुई हैं। क्षमा जी के अबतक प्रकाशित कहानी संग्रहों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार हैं-

१.३.२.१ लव स्टोरीज़ :

यह कहानी संग्रह सन् १९९८ में आत्माराम एंड सन्स दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस कहानी संग्रह में क्षमा जी ने एक स्त्री की मुसीबतें जो जिन्दगी भर खत्म नहीं होती, लगातार पीछा करती है का सजीव चित्रण किया है। भारत में स्त्री का जीवन बहुत कठीन है–जिसे संस्कृति, लज्जा, शील, पारिवारिकता, मर्यादा, चरित्र, कुल का मान आदि कहते हैं। ये सब की सब अवधारणाएँ स्त्रियों की पीठ पर कोड़े की तरह बरसती हैं। आज से कुछ साल पहले तक नौकरीपेशा स्त्रियों को इन नजरों से देखा जाता था कि वे पैसा कमाने लगी हैं, तो अपने पति और परिवार को तोड़ती हैं। बाहर के आदमीयों के साथ गुलछर्रे उड़ाती हैं, घमंड़ी होती हैं। अपने कमाएँ पैसों को अपने उपर खर्च करती हैं, और सबसे प्रमुख बात इन औरतों के चरीत्र पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता, यह चित्र अब बदल रहा है, मध्यवर्ग स्त्री की भूमिका बदल रही है।

आज की स्त्री इतनी अधिक व्यस्त रहने लगी है कि अपने आस–पास होने वाली घटनाओं को भी ठीक प्रकार नहीं देख पाती। आज नारी यदि पुरूष के साथ टक्कर ले रही हैं तो दूसरी तरफ अपने संस्कारों से भी बाँधी हुई है। विवाह के बाद यदि पति औरत को छोड़कर चला जाता है तो उसकी स्थिती क्या हो जाती है, वह किस प्रकार समाज में रहती है, ना ससुराल में उसका कोई स्थान रहता है, न माता–पिता के घर। क्षमा जी ने इस कहानी संग्रह में स्त्री जीवन के तकरीबन हर पहलू पर प्रकाश डाला है। यदि कोई स्त्री बिना विवाह के किसी विवाहित पुरूष के साथ कितने भी वर्षों तक क्यों न रह ले, परंतु कानून उसे कोई महत्त्व नहीं देता। उस पुरूष की मृत्यु के पश्चात् समाज भी उससे कोई संबंध नहीं रखता। वह पूरी तरह बेदखल कर दी जाती है। एक स्त्री, चाहे उसका रूप पत्नी का हो, बेटी का हो या बहन का, वह अपने आप को ईर्ष्या, प्रेम इन्हीं बंधनों में बँधकर संतुष्ट रहती है। इस कहानी संग्रह में निम्नांकित ३८ कहानियाँ संकलित हैं।

१. सुबह से शाम तक
२. बर्फ होती मुलाकात
३. शुरूआत
४. काला कानून
५. समाप्त पीढी
६. दुमुँही
७. लौटते हुए
८. जिंदा है प्रतिभा बर्मन

९. न होने का अहसास	१०. मास्टर तोताराम
११. इसके बाद	१२. मौज की रोटी
१३. किसको बताऊँ ओर छोर	१४. अनुभव जी
१५. कस्बे की लड़की	१६. पिता
१७. मोर्चा	१८. बिखरी हुई जिंदगी
१९. खंडहर	२०. घर-घर
२१ बया	२२. लड़की
२३. एक प्रेम-पत्र	२४. डोर
२५. व्यूह	२६. घिराव
२७. मंडी हाऊस	२८. गोष्ठी
२९. घर की बातें	३०. खुशी
३१. नायक	३२. दलदल
३३. ढाई आखर	३४. अंतिम चरण
३५ मातृ ऋण	३६. सेमिनार
३७. प्रेम के बीच	३८. और अब
३९. लव्ह स्टोरीज़	४०. काहे को ब्याही बिदेस
४१. रास्ता छोड़ो डार्लिंग	४२. एक शहर अजनबी
४३. उत्तरार्ध	४४. कब्रगाह
४५. जिन्न	४६. कैसी हो सुष्मिता
४७.थँक्यू ! सद्दाम हुसैन	४८. यहीं कहीं है स्वर्ग

१.३.२.२ इक्कीसवीं सदी का लड़का :

क्षमा जी द्वारा रचित इस कहानी संकलन का प्रकाशन सन् १९९९ में सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा किया गया है। वैसे तो पुस्तक की अधिकांश कहानियाँ इससे पूर्व विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं

में प्रकाशित हो चुकी हैं, लेकिन लेखिका के लेखनी का यह कमाल ही कहा जाएगा कि ये कहानियाँ आज भी उतनी ही उपयोगी और पठनीय हैं, जितनी लिखते समय थीं। ''उनकी जीवंतता में कोई आँच नहीं आ पाई है। कुल मिलाकर क्षमा जी की कहानियाँ महिलाओं की आवाज को गती देने की कोशिश है। जगह-जगह व्यंग की पुट हो जाने से लेखिका की लेखनी और धारदार हो गई है।''[२०]

इन कहानियों में उन स्त्रियों की कठिनाइयों को सामने लाने का प्रयास किया है जो किसी को दिखती ही नहीं है। ये कहानियाँ उन्हीं स्त्रियों की आवाज को कुछ गती देने की कोशिश है। कैसे धर्म, समाज के कायदे-कानून सबकी कोशिश अंतत: स्त्री को अनुशासित करने की है। स्त्री तभी तक अच्छी लगती है, जब तक 'जन्म-जन्म की दासी' और 'तुम्हारे चरणों मे बैठने लायक' की तोतारंटत करते रहे। जरा सा भी आत्मसम्मान और अपने राय को दृढ़ता से रखनेवाली औरत किसी को पसंद नहीं आती। क्योंकि जो स्त्री बोल सकती है, अपने विचार प्रकट कर सकती है, वह किसी की गुलाम नहीं बन सकती। बोलनेवाली स्त्री का अर्थ है अहंकारिणी स्त्री, जो किसी से दबती नहीं। पुरूषों को यदि अपनी सत्ता चलानी है तो स्त्री को दबाकर ही उस पर अपनी श्रेष्ठता साबित की जा सकती है।

ये सब बातें स्त्री जीवन से सीधे जुड़ी इन कहानियों का विषय बनी है। कई बार तकलिफें इतनी बड़ी होती हैं, कि कथा में शतांश भी नहीं आ पाता। इन कहानियों से एक प्रश्न हमारे सामने खड़ा होता है कि आखिर स्त्री की सही तस्वीर क्या है? किसी की बहू, किसी की बेटी, प्रेमिका, पत्नी मात्र क्या उसका अपना कोई अस्तित्त्व और स्वायत्तता भी है? ये कहानियाँ उसी स्त्री की आवाज को सुनाने की कोशिश है, जो घर के किसी अंधेरे कोने में सूर्योदय की प्रतिक्षा कर रही है। प्रस्तुत संग्रह में कुल २२ कहानियों का समावेश है-

१. इक्कीसवीं सदी का लड़का
२. एक लड़की और सत्रह किस्से
३. इंडिया विल विन
४. सीधा प्रसारण
५. यहीं कहीं है स्वर्ग
६. माँ
७. डर
८. जय श्रीराम
९. वह पीछा करती है
१०. छिनाल

११. वह जो एक भाई था
१२. पापा के एपिसोड में बेटा
१३. ढूँढ़ते रह जाओगे
१४. बुढ़िया कहीं की
१५. खेल
१६. न्यूड का बच्चा
१७. टयूबेक्टामी
१८. लघुकथाएँ
१९. कमीज पहन रहा है जैक द रिपर
२०. उस जमाने की लड़की
२१. अगली सदी की लड़की
२२. जन्मदिन

१.३.२.३ थँक्यू ! सद्दाम हुसैन :

इस कहानी संग्रह का प्रकाशन सन् १९९७ में भारती प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा किया गया है। इस कहानी संग्रह से स्पष्ट पता चलता है कि आज समय बदल गया है। अब कोई स्त्री सिर्फ अपने स्त्री होने के नाते किसी पुरूष से दबना नहीं चाहती। ''इसमें स्त्री की बदलती भूमिका के बारे में कहानियाँ हैं, जिन्हें अब कोडों से पीटा नहीं जा सकता।''[२१] इसीलिए नये सिरे से स्त्रियों को यह पाठ पढ़ाने की कोशिश की जा रही है कि उसकी जगह उसका घर है और उसकी एकमात्र कर्मस्थली उसका रसोईघर है। जब कोई लड़की अपनी पसंद से शादी करना चाहती है तो उसे सजाए मौत दे दी जाती है। पूरा गाँव इस बर्बरता को खामोशी से देखता है। दहेज के लिए औरतों को जलाकर मार देना तो इतनी आम बात मान ली गई है कि अब इसपर चर्चा भी नहीं होती।

ये कहानियाँ एक घटना के रूप में नहीं प्राय: किसी सूत्र के रूप में दिखी है। आज का लड़का किस प्रकार अपनी शिक्षा को दहेज लेने का माध्यम बनाता है, जो कहता तो यह है कि उसे दहेज से नफरत है परंतु अन्तर्मन से वह भी दहेज चाहता है। आज यदि लड़कियों की सोच बदल रही है, तो लड़के भी बदल रहे हैं, आज स्त्रियों की सोच बदल रही है, स्त्री नौकरी के लिए बाहर निकलती है, उसका प्रमोशन होता है, वह अपनी पसंद से शादी करती है। ऐसी बहुतसी बातें इन कहानियों का विषय बनी हैं। पहले यदि विगत का कोई पुरूष सामने आ जाता था तो लड़कियाँ उससे डरती थीं। यह डर बहुत बार ब्लैकमेलिंग का कारण बनता था, लेकिन आज की स्त्री उसे चुनौती दे सकती है। इस प्रकार की स्त्री का चित्र इन कहानियों में उभरा है।

इस संग्रह में संकलित १४ कहानियाँ इस प्रकार हैं–

१. रास्ता छोड़ो ड़ार्लिंग	२. वह फिर उदास हो गई
३. लव–स्टोरीज़ : 1994	४. उत्तरार्ध
५. कब्रगाह	६. काहे को ब्याही बिदेस
७.मातृ–ऋण	८. और अब
९. जिन्न	१०. कैसी हो सुष्मिता
११. प्रेम के बीच	१२. सेमिनार
१३. एक शहर अजनबी	१४. थैंक्यू सद्दाम हुसैन

१.३.२.४ रास्ता छोड़ो ड़ार्लिंग :

यह कहानी संग्रह सन् २००८ में वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। प्रस्तुत कहानियों के माध्यम से क्षमा जी समाज के सामने उन समस्याओं को लाना चाहती है, जिनका समाधान अभी तक नहीं हुआ है। स्त्री आज घर से बाहर निकली है तो उसके संपूर्ण व्यक्तित्त्व पर, उसके चरित्र पर प्रश्नचिह्न लगा दिया जाता है, परंतु कितनी अजीब बात है कि पूरी पुरूष जाति सृष्टी के प्रारंभ से ही घर से बाहर निकली है, किन्तु उनका चरित्र नहीं बिगड़ा। स्त्रियाँ घर से बाहर निकलते ही बिगड़ जाती हैं, क्यों? क्या पुरूष का चरित्रवान होना आवश्यक नहीं? क्या नारी के विश्वास को बनाए रखना, उसके प्रति वफादार रहना क्या उसका कर्तव्य नहीं? इसके अलावा ये कौन निश्चित करेगा कि बिगड़ना क्या होता है? स्त्री की उपस्थिती मात्र से इतना डर कैसा? जिससे ड़रते हैं उसी को कैद करके रखना चाहते हैं? उसी को कमजोर बनाते है। उसी के आत्मसम्मान पर बार–बार चोट करते हैं। औरत और आत्मसम्मान का कोई संबंध दिखाई नहीं देता। गुलामों को दबाने का यह सबसे अच्छा तरीका है कि उन्हें यह बताया जाए कि उनका जीवन तभी सार्थक है, जब वे जीवनभर भली प्रकार से गुलामी करें। इसी तरह स्त्रियों को घुट्टी में पिलाया गया है कि उनका जन्म ही इस धरती पर पुरूषों की सेवा करने और मन बहलाने के लिए हुआ है।

क्षमा जी की इन कहानियों से स्पष्ट दिखाई देता है कि उनका मानना है कि यदि किसी को गुलाम बनाना है तो सबसे पहले उसकी इच्छाओं का दमन करो, उससे भी पहले उसकी वाणी छीन लो। उसकी अभिव्यक्ति को उसकी मुँहजोरी और मर्यादा का उल्लंघन मानो। इसिलिए आज यदि स्त्री अपने को अभिव्यक्त कर रहीं है, लिख रहीं है तो यह एक बडी बात है। स्त्रियों को इस जमाने के लोकतंत्र तथा शिक्षा में बराबरी का स्थान और मीडिया ने यह अधिकार दिया है कि वे अपने मन की भीतरी पर्दों को खोल सकती है। यह एक महत्त्वपूर्ण बदलाव है। वाणी की वापसी पूरी स्त्री जाति के जीवन को सँवारने का प्रथम बिंदु है। इस पुस्तक की कहानियाँ लगातार लिखी गई हैं। उनके जीवन में घटित घटनाओं का प्रभाव भी इन कहानियों में देखने को मिलता है।

प्रस्तुत संग्रह में क्षमा जी की कुल ४१ कहानियाँ संकलित हैं–

१. बया	२. पिता
३. जिन्न	४. कौन है जो रोता है
५. कैसी हो सुष्मिता	६. मातृ ऋण
७. घर–घर	८. बिंदास
९. कार्ड	१०. लौटते हुए
११. कब्रगाह	१२. एक शहर अजनबी
१३. और अब	१४. रास्ता छोड़ो ड़ार्लिंग
१५. तसवीर	१६. इसके बाद
१७. कस्बे की लड़की	१८. घिराव
१९. काला कानून	२०. ढ़ाई आखर
२१. सीधा प्रसारण	२२. मोर्चा
२३. दादी माँ का बटुआ	२४. खेल
२५. बेघर	२६. बराबर
२७. फादर	२८. अलविदा
२९. एक है सुमन	३०. हर बार लौटना

३१. व्यूह	३२. डोर
३३. चार अक्षर	३४. जय श्रीराम
३५.अंतिम चरण	३६. नेम प्लेट
३७. रसोईघर	३८. खामोशी
३९. मंडी हाऊस	४०. सेमिनार
४१. यहीं कहीं है स्वर्ग	

१.३.२.५ नेम प्लेट :

यह कहानी संग्रह सन् २००६ में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। यह संग्रह स्त्री के मन की खिडकियाँ खोलता है। यह स्त्री के मन के बदलाव उसके भीतर की उथल-पुथल और धीरे-धीरे साहसी हो जाने की अविरल कथा है। इसमें नारी मन की अंतरंग गहराई, परेशानी, मानसिक द्वंद्व, बेचैनी और आत्मविश्वास का भी बड़ा ही सजीव और यथार्थ चित्रण है। 'नेमप्लेट' कहानी की नायिका अपनी प्रतिभा और काबिलियत के द्वारा अपने गंतव्य तक पहुँचने में दृढ़ विश्वास रखती है, जैसे कि- '' 'देखिए मि. वर्मा।' लड़की अपने ब्लाऊज में छिपाया हुआ टेप रिकॉर्डर निकालती है। 'मैंने आपकी सारी बातों को टेप कर लिया है। कॉलेज के जमाने में रहे होंगे आप नम्बर वन फ्लर्ट, लेकिन अब आप किसी लड़की का अपमान नहीं कर सकते। मुझे कल तक शादी की डेट चाहिए। जल्दी से जल्दी। यह डेट मैं कोई बन्दूक के जोर पर नहीं, तुम्हारे बयानों के आधार पर ही माँग रही हूँ।' ''[२२]

इसमें कामकाजी नारी का संघर्ष, कुंठा, तनाव, मध्यवर्ग के उदात्त मूल्य, दहेज समस्या, पुरूष का अहंकार और उच्चताबोध आदि समस्याओं को भी उपस्थित किया है। इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ प्रत्येक पाठक को बौद्धिक धरातल पर झकझोर देती हैं। यह संग्रह जहाँ स्त्रीमुक्ती के निहितार्थ खोलता है वहीं मर्मवादी रवैये पर चोट भी करता है। स्त्रीमुक्ती का संकेत है और स्त्रीवाद के प्रचलित मुहावरों का इन्कार भी है। स्त्री उत्पीड़न का प्रतिवाद जितना मुखर है उतना ही अनकहा भी है।

इस संग्रह में २८ कहानियाँ हैं।

१. दादी माँ का बटुआ	२. खेल
३. एक अधुरी प्रेम कहानी	४. खलनायक
५. गन्दगी	६. बुढ़ी औरत
७. दयाल वेड्स कमलिनी	८.वेलेंटाईन डे
९. फादर	१०. बेघर
११. बराबर	१२. दोस्त
१३. न्यूड का बच्चा	१४. नेम प्लेट
१५. चार अक्षर	१६. अलविदा
१७. एक है सुमन	१८. हर बार लौटना
१९. रसोईघर	२०. खामोशी
२१. घर और घर	२२. कार्ड
२३. स्मृतियों के शिलालेख	२४. कौन है कि जो रोता है
२५. बिन्दास	२६.तस्वीर
२७. सन्दर्भहीन	२८. अगली सदी में एक लड़की

१.३.२.६ काला कानून :

यह कहानी संग्रह सन् १९८२ में देवदार प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। प्रस्तुत संग्रह की अधिकांश कहानियाँ वर्तमान मानस को झकझोर कर प्रक्षुब्ध कर देने वाली हैं। ये कहानियाँ मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग परिवार का दायरा प्रस्तुत करती हैं। इनमें भ्रष्ट, अकर्मण्य सरकार, सामाजिक विषम प्रवृत्तियाँ, मूल्यहीनता, वर्तमान व्यवस्था की भयावहता, तनाव, एकाकी संघर्ष, नारी की छटपटाहट तथा उसका शारीरिक और मानसिक शोषण आदि को रेखांकित किया गया है। लेखिका ने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज की मूल्यहीनता पर करारा व्यंग्य भी किया है। इन

कहानियों का निर्वाह इतने अनूठे ढंग से हुआ है कि हर कहानी के अंत में पाठक आँख मूँदकर एक मिनट सोचने –समझने के लिए विवश हो जाता है।

इस संग्रह की सभी कहानियाँ विविध विषयों को लेकर लिखी गई हैं। जैसे कि –सरकारी अफसरों की भ्रष्टता। भ्रष्टाचार के प्रति युवा आक्रोश, विद्रोह, सुशिक्षित किन्तु रूढ़िबद्ध नारी की क्रूरता, नारी के प्रति नारी का अत्याचारी बर्ताव, शोषण, उत्पीडन, अकेलापन, महानगर की भयावहता तथा छोटे शहर का मुक्त जीवन आदि का सूक्ष्म अंकन प्रस्तुत है।

क्षमा जी ने इस संग्रह में एक ओर पति–पत्नी के संबंधों की व्यापकता को दर्शाया है तो दूसरी ओर वर्तमान भ्रष्ट राजनीति का पर्दाफाश भी किया है। उन्होंने जीवन के छोटे–मोटे संवेदनात्मक क्षणों को भी बड़ी ही खूबसूरती और कलात्मकता से अपनी कहानियों में पिरोया है। प्रस्तुत संग्रह की १८ कहानियाँ निम्नांकित हैं–

१. अनिर्णय के बीच	२. वार्तालाप
३. सुबह से शाम तक	४. बर्फ होती मुलाकात
५. शुरूआत	६. स्थगित
७. काला कानून	८. समाप्त पीढी
९. धनुषलीला	१०.ठहर गई जिंदगी
११. एक इच्छा	१२. चूड़ी
१३. अपने पराए	१४.जमीन का आदमी
१५. दुमुँही	१६. खाली हाथ भविष्य
१७. अर्पिता नहीं मिली	१८. छोटी–सी भूल

१.३.२.७ कस्बे की लड़की :

सन् १९८९ में वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित क्षमा जी का यह कहानी संग्रह विभिन्न सामाजिक पहलुओं को उद्घाटित करता है। इन कहानियों में धार्मिक आडंबर, अंधश्रद्धा, उँच–नीच तथा जातीय भेदभाव की समस्या, नारी शोषण आदि का यथार्थ चित्रण हुआ

है। यह संग्रह वर्तमान युग की जीवन स्थितियों से साक्षात्कार करता है। इसमें विवाहित-अविवाहित प्रौढ़ नारी, युवक-युवतियों की सम-विषम स्थितियों, जातिगत समस्याओं, रिश्तों में उपेक्षित व्यवहार आदि को स्पष्टतापूर्वक चित्रित किया है।

इस संकलन की सभी कहानियों में जीवनवादी यथार्थ का सौंदर्यबोध है। यह संकलन विविध पक्षों और आयामों से परिचित कराता है और परिवार से लेकर समाज तक सभी प्रकार की स्थितियों पर प्रकाश डालता है। लेखिका ने इक्कीसवीं सदी के अमानवीय सत्य, विसंगति और विवाद को अपनी कहानियों में उद्‌घाटित किया है। स्त्री-पुरूष केशारीरिक शोषण को भी उन्होंने अभिव्यक्ति दी है। भाषागत सौंदर्य ने कहानियों को रोचकता प्रदान की है।

प्रस्तुत संग्रह में निम्नांकित कहानियाँ संकलित हैं-

१. लौटते हुए	२. जिंदा है प्रतिभा बर्मन
३. न होने का अहसास	४. मास्टर तोताराम
५. युग-पुरूष	६. इसके बाद
७. मौज की रोटी	८. किसको बताऊँ ओर-छोर
९. अनुभव जी	१०. कस्बे की लड़की
११. पिता	१२. मोर्चा
१३.बिखरी हुई जिंदगी	१४. खंडहर

१.३.२.८ घर-घर तथ अन्य कहानियाँ :

यह कहानी संग्रह सन् १९९४ में सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। ये कहानियाँ स्वातंत्र्योत्तर भारत की नई पीढ़ी के सामने आज की जिंदगी की अनगढ़ता, क्रूरता, विद्रूपता, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, दांपत्य में बनते-बिगडते संबंध आदि को चित्रित करती हैं। इन कहानियों में नारी की जीवन स्थितियों का बडा ही मार्मिक और सूक्ष्म चित्रण मिलता है। ये कहानियाँ नारी जीवन से संबंधित हैं जो मध्यवर्गीय परिवार का दायरा उपस्थित करती हैं। इनकी सभी कहानियाँ मानवीय सत्य से परिपूर्ण हैं। क्षमा जी ने जीवन और जगत की हल्की-फुल्की घटनाओं को

इन छोटी–छोटी कहानियों के माध्यम से अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

इस संकलन में मुख्यत: निम्न मध्यवर्गीय परिवार की घुटन में जीने वाली शिक्षित नारी की छटपटाहट का चित्रण हुआ है। आर्थिक संघर्षों से जूझती नौकरी पेशा नारी जब इन कहानियों में आती हैं तो अभिव्यक्ति की समृद्धी किसी भी पाठक के मन को बाँध लेती है। इन कहानियों में दांपत्य जीवन की विभिन्न स्थितियों और रूपों का अनोखा चित्रण है। इनमें प्रेम संबंधों का परिवर्तित रूप, प्रेम में मोहभंग, प्रेमविवाह के बावजूद असफल दांपत्य, नारी शोषण, अलगाव, दरार, जीवन की वास्तविकता के कटू सत्य एवं यंत्रणाएँ भी यथार्थ रूप में चित्रित हुई हैं। ये कहानियाँ सहज जिंदगी के दर्द और वास्तविकता को अपने आप में समेटती हैं। इस संग्रह की हर एक कहानी एक अलग स्त्री रूप, जैसे– प्रेमिका, माता, वृद्ध नारी, अविवाहित, प्रौढ़ और युवा आदि की समस्याओं को दर्शाती हैं।

इस संग्रह में १६ कहानियाँ हैं–

१. घर–घर	२. बया
३. लड़की	४. एक प्रेम–पत्र
५.डोर	६. व्यूह
७. घिराव	८. मंडी हाऊस
९. गोष्ठी	१०. घर की बातें
११. खुशी	१२. शहर
१३. क्रान्ति	१४. नायक
१५. दलदल	१६. ढाई आखर

१.३.२.९ लड़की जो देखती पलटकर :

सन् २०१२ में वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा यह कहानी संग्रह प्रकाशित किया गया है। वैसे तो लड़कियों के जीवन में उम्र का सोलहवाँ साल बहुत नाजुक होता है पर पच्चीस

साल तक की उम्र भी खास मायने रखती है। क्षमा जी ने इन कहानियों में युवतियों की मानसिकता, उनके जीवन-संघर्ष, राग-विराग कहीं चटक तो कहीं उदास रंगों में प्रस्तुत किया है। क्षमा जी की सुपरिचित, सरल, सहज शैली में लिखी गई यह कहानियाँ पाठक को कहीं विषाद से भर देती हैं, तो कहीं कुछ खो जाने, छुट जाने का अहसास भी दे पाती हैं।

इस संग्रह की कहानियों के पीछे समस्त विसंगतियाँ हैं, जिन्हें उन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा कहानियों में उतारा है। किसी न किसी घटित वारदात को उन्होंने अपनी रचनाओं में सहज रूप में बिखेरा है। इन रचनाओं में अनेक घटनाएँ-दुर्घटनाएँ, स्वप्न-दुस्वप्न, अनुराग-विराग और आकांक्षाएँ समाई हैं।

प्रस्तुत संग्रह में कुल ३० कहानियों का समावेश हैं-

१. बिजनैस	२.ईको फ्रेन्डली
३. व्हाइट हाऊस में टॉम और लिंकन का भूत	४. बहन
५. शाम पकड़ लो अरूणिमा को	६. आवाजें
७. फिर भी	८. माँ
९. रेड लाईट	१०. लड़की जो देखती पलटकर
११. बेटी	१२. बेटा
१३. बता मुझे हुआ क्या है	१४. इश्क बरिश्ता
१५. उड़ान	१६. नगाड़ा बजा
१७. अन्त में शरण	१८. एक उम्र इस तरह
१९. तुम्हारी बेटी	२०. माँ
२१. क्रिकेट	२२. धूप है कि खिल उठी
२३. एक है सुमन	२४. रसोईघर
२५. स्मृतियों के शिलालेख	२६. भूख
२७. बुआ	२८. सेमल डॉट कॉम
२९. मेरी बहू	३०. कौन है कि जो रोता है

निष्कर्ष :

क्षमा जी ने एक सुसंपन्न परिवार में जन्म लिया है। वे अपनी बाल्यकाल में अनेक बीमारियों से ग्रसित रही हैं। पिता के तबादलों के कारण उनकी शिक्षा विभिन्न स्थानों पर पूर्ण हुई। उनके पिता के असमय मृत्यु के कारण जीवन में बहुत सारी समस्याओं का सामना उन्हे करना पडा। इन सभी परिस्थितियों से संघर्ष करने के पश्चात् एक साहसी वृत्ति उनके अंर्तमन में पनपती गई। बड़े भाई की साहित्य-साधना और साहित्यकारों के प्रति प्रेम तथा आदरभाव को देखकर ही उन्होंने साहित्यकार बनने का अपना लक्ष्य निश्चित कर लिया था। घर में हिंदी से लेकर अंग्रेजी साहित्य सहज ही उपलब्ध था। कॉलेज में दाखिला लेने से पूर्व ही उन्होंने विविध विषयों की अधिकांश किताबे पढ़ ली थी। हिंदी विषय में एम.ए. करने के पश्चात् कहानी साहित्य के प्रति उनकी रूचि बढ़ने लगी और उन्होंने अपने साहित्य का सृजन आरंभ किया।

एक साहित्यिक गोष्ठी में श्री. सुधीश जी से उनका परिचय हुआ और उस मधुर भेंट ने उनका साहित्य का रूझान और अधिक बढ़ा दिया। उस समय से अबतक क्षमा जी कहानी और उपन्यास दोनो विधाओं में सफलतापूर्वक लेखनकार्य कर रही हैं। किन्तु कहानी विधा में उनकी बेहद रूचि है। वे साहित्य के साथ घर-परिवार की जिम्मेदारियों को भी बखूबी निभा रही हैं। क्षमा जी का लेखन विविध विषयों से संपन्न है। उनकी रचनाओं में जिंदगी की निहायत नामालूम और सामान्य सी लगनेवाली बातें होती हैं, जिससे पाठक स्तब्ध रह जाता है और सोचने लगता है कि सचमुच, यह तो जीवन में होता ही है।

क्षमा जी ने उँच-नीच, सामाजिक-आर्थिक-धार्मिक- विषमता, राजनीतिक अराजकता, स्वार्थी प्रवृत्ति, भ्रष्टाचार, गरीबी, भूखमरी आदि बातों के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त किया है। नारी जीवन के अनेक परतों को खोलकर उन्हें अपने साहित्य में वाणी प्रदान की है। उन्होंने न केवल समस्याओं का वर्णन किया है, अपितु उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है। क्षमा जी के लेखन की यह विशेषता सचमुच प्रशंसनीय है। वे किसी भी स्थान, स्थिती और समय में बडी तल्लीनता से लिख सकती है। डॉ.दया दीक्षित के अनुसार, ''कुछ कहानियों में लेखिका की प्रखर, मुखर सोच उभरकर आयी है और 'पंथियों' की खबर ली गई, जो चेग्वारा, मार्क्स तथा कास्त्रो के नाम या विचारों की

जुगाली करते हुए चुहों की तरह समाज और व्यवस्था को कुतरकर खोखला कर रहे हैं तो कुछ में राजनीति की नूराकुश्ती और हिटलरी हैवानियत के आगे रोती सिसकती इंसानियत का मंजर है।''[२३]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि क्षमा जी की साहित्य धारा अबाध गति से प्रवाहित हो रही है। जीवन की अनेक समस्याओं के बावजूद उन्होंने लेखनकार्य को निरंतर जारी रखा है। अपनी सृजनात्मकता, प्रतिभा, लगन और परिश्रम के आधार पर अपनी पहचान बनानेवाली क्षमा जी महिला रचनाकारों की श्रेणी में विशिष्ट हैं। आज क्षमा जी के बारें में यह कहा जा सकता है कि, ''न हृष्यत्यात्मसंमाने नावमानेन तप्यते। गाङ्गो हृद इवाक्षोभ्यो य: स पण्डित उच्यते।''[२४] (जो मान-सम्मान प्राप्ति पर हर्षित नहीं होता, जो अपमान से क्रोधित नहीं होता, जो गंगा की लहरों की तरह सदैव शांत रहता है, वही पंडित कहलाया जाता है।)

सन्दर्भ : प्रथम अध्याय

१. Hudson W. H.– An Introduction in the study of Literature, Pg.15

२. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि. ६ अप्रैल, २०१४

३. वृत्तनाम–उपजाति, भर्तृहरिसुभाषितसंग्रह– ५४, प्रकरण–१६, श्लोक–३

४. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि. ६ अप्रैल, २०१४

५. सिंह संगीता–अजित समाचार, जनवरी,२०००, पृ.३२

६. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि. ६ अप्रैल, २०१४

७. गृहलक्ष्मी, सितंबर,पृ.६४

८. लोकमत समाचार, नवम्बर, २००२, पृ.३

९. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि. ६ अप्रैल, २०१४

१०. गृहलक्ष्मी, सितंबर, २००१, पृ.६४

११. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि. ६ अप्रैल, २०१४

१२. महाजन उषा–जनसत्ता, ३० मार्च, १९९७, पृ.२३

१३. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि. ६ अप्रैल, २०१४

१४. शर्मा विष्णु–अमर उजाला, १९ जनवरी, २००५. पृ.३४

१५. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि. ६ अप्रैल, २०१४

१६. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि. ६ अप्रैल, २०१४

१७. नवभारत टाइम्स, १० अगस्त, १९९७, पृ.५

१८. दैनिक हिंदुस्तान, १० अक्तूबर, १९९७, पृ.५

१९. द्विवेदी शशिभूषण–जनसत्ता, ३ अप्रैल, २००५, पृ.६

२०. राधारमण–अक्षर भारत, २७ दिसंबर, १९९७, पृ.७

२१. हिंदुस्तान रविवासरीय, ३० नवंबर, १९९७, पृ.७

२२. शर्मा क्षमा–'नेम–प्लेट', पृ.१३

२३. डॉ. दीक्षित दया–दैनिक जागरण, ४ मई, २००९, पृ.१२

२४. वृत्तनाम–अनुष्टुभ्, महाभारतम्, प्रकरण ७, श्लोक–१३

द्‌वितीय अध्याय

क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य की विषय-वस्तु

२.० प्रस्तावना :

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत उपन्यास और कहानी साहित्य की विषय-वस्तु का अध्ययन तथा विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इसमें क्षमा जी के चार उपन्यास और नौ कहानी संग्रहों का समावेश है। विषय-वस्तु की दृष्टि से उनके साहित्य का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि क्षमा जी ने अपनी अधिकांश रचनाओं में मध्यवर्ग तथा निम्न मध्यवर्ग के पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया है। इस पारिवारिक जीवन के अंतर्गत स्त्री-पुरूष के बदलते संबंध, बनते-बिगड़ते दांपत्य तथा प्रेम संबंध, नोंक-झोंक, आपसी मतभेद, असामंजस्य, ईर्ष्या, द्वेष, संदेह, तनाव, अलगाव, अकेलापन आदि विभिन्न स्थितियों को बड़े ही यथार्थ रूप में चित्रित किया है। 'सामयिक प्रकाशन' द्वारा क्षमा शर्मा जी की पुस्तक 'इक्कीसवीं सदी का लड़का' पर जब चर्चा हुइ तब '' राजेंद्र यादव द्वारा लोकार्पण के बाद मैंनेजर पाण्डेय, केदार नाथ सिंह, अरविंद जैन, शेरजंग गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा ने क्षमा शर्मा की कहानियों पर संक्षिप्त लेकीन सारगर्भित चर्चा करते हुए संग्रह की कहानियों को उल्लेखनीय बताया। ''[१]

इस तरह हम कह सकते हैं कि क्षमा जी ने जीवन के छोटे-बड़े अनुभवों को बड़ी ही खूबसूरती से अपनी रचनाओं में मधुर हास्य के रूप में दर्शाया है। क्षमा जी स्वयं एक मध्यवर्गीय परिवार की बेटी और बहू होने के कारण उनका रचनासंसार अधिकांशत: मध्यवर्गीय जीवन के इर्द-गिर्द ही घूमता है। मध्यवर्ग के आचार-विचार, रहन-सहन, रूढ़ी-परंपरा, धार्मिक आडंबर और अंधश्रद्धा, स्त्री-पुरूष मानसिकता, पुरानी मान्यताओं का समर्थन, वैचारिक द्वंद्व, पीड़ा, यातना और संघर्ष आदि विविध विषयों को उन्होंने अभिव्यक्ति दी है। उनकी आरंभिक रचनाओं में नारी घर की चार दिवारी के भीतर ही घुटती रहती थी। उन्होंने 'माँ', 'डर', 'एक लड़की और सत्रह किस्से' जैसी अपनी आरंभिक कहानियों में अपने बचपन में देखी पीड़ा और यातना को ही अंर्तभूत किया है। अपनी बाद की रचनाओं में कामकाजी नारी की दोहरी भूमिकाओं पर भी उन्होंने दृष्टिक्षेप किया है।

क्षमा जी ने अपनी अधिकांश रचनाओं में नगरीय-महानगरीय जीवन की विभिषिकाओं को भी चित्रित किया है। उनका बाल्यकाल से अब तक का सफर महानगरों के विभिन्न शहरों से जुड़ा रहा है। वहाँ के सुख-दु:ख, अच्छे-बुरे सभी अनुभवों को उन्होंने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। महानगरीय व्यस्तता, अजनबीपन, महँगाई, आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, नवयुवकों की मानसिक स्थिति, अफसरों का दुर्व्यवहार, झूठ, मक्कारी, अपराध का खुला प्रदर्शन आदि विविध विषय आपकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होते हैं।

२.१ विषय-वस्तु का अर्थ एवं स्वरूप :

आधुनिक हिंदी शब्द-कोश के अनुसार विषय-वस्तु का अर्थ है- ''कल्पना, विचार आदि के तत्त्व, चिंतन या बिंदू जिसे लेकर कोई कलात्मक या कौशलपूर्ण रचना की जाती हो, किसी कृति का आधारित और मूल विचार, विषय और उनकी संकल्पना।''[२] विषय-वस्तु शिल्प का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। विषय-वस्तु के अंतर्गत कथासूत्र, मुख्य कथानक, प्रासंगिक कथा, अंर्तकथा तथा विभिन्न घटनाएँ आती हैं। रचनाकार अपनी प्रतिभा द्वारा जीवनानुभूति एवं कल्पना का उचित संयोजन करके कथा-साहित्य की विषय-वस्तु का सृजन करता है। यह विषय-वस्तु यथार्थ और संभाव्य जीवन की कथा के रूप में प्रस्तुत होती है। जिस प्रकार प्रकृति के नियमानुसार वस्तुओं में रूपगत वैविध्य होता है, उसी प्रकार रचनाकार द्वारा सर्जित कथा-साहित्य की विषय-वस्तु विशिष्ट रूप में प्रस्तुत होती है।

क्षमा जी की अधिकांश रचनाएँ पारिवारिक जीवन तथा नारी जीवन की समस्याओं से संबंधित होते हुए भी परिवारेतर विषय-वस्तु की ओर भी उनका लक्ष केंद्रित हुआ है। व्यक्ति, समाज, धर्म, संस्कृति, राजनीति तथा अर्थतंत्र के विविध पक्षों का उन्होंने अपनी रचनाओं में समावेश किया है। इसके अतिरिक्त मनुष्य का व्यवहार और मनोविज्ञान भी उनका बड़ा दिलचस्प विषय है। स्त्री के साथ-साथ पुरूष भी जटिलताओं से प्रत्यक्ष होते हैं। उनकी मनोदशा का चित्रण करना अर्थात जोखिम को चुनौती देने जैसा है। इस जोखिम को भी इस लेखिका ने स्वीकार किया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि नारी जीवन क्षमा जी के कथा-साहित्य का केंद्रबिंदु अवश्य रहा है, किंतु जगत् के अधिकांश विषयों को उन्होंने अपनी रचनाओं में समेटा है। उनका कथा-संसार वर्तमान जगत् का ऐसा जीवित दस्तावेज है जिसमें प्रतिदिन की घटनाओं को केंद्र में रखकर मनुष्य के जीवन संघर्ष की प्रखर प्रस्तुती है। अपने जीवन के हल्के-फुल्के अनुभवों को भी उन्होंने अपनी रचनाओं में यथावत स्थान दिया है। प्रस्तुत अध्याय में क्षमा जी के कुल चार उपन्यास और नौ कहानी संग्रहों के विषय-वस्तु को पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक आदि दृष्टियों से विभाजित कर उसे विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

२.१.१ पारिवारिक विषय-वस्तु :

हिंदी शब्दकोश के अनुसार परिवार का अर्थ- ''परिजन, समूह, कुटुंब है।''[३] परिवार एक ऐसा मूलभूत संघटन है जिसमें माता-पिता, भाई-बहन आदि सदस्य एक-दूसरे के रक्तसंबंध से जुड़े होते है। भारतीय परिवार में एक दूसरे के प्रति स्नेहभाव है और इस दृढ़ता का प्रमुख कारण पारिवारिक संबंधों में प्रेम, विश्वास और आत्मीय भाव ही है। हमारे इस कृषिप्रधान देश में सदियों से संयुक्त परिवार पद्धति चली आ रही है। लेकिन स्वातंत्र्योत्तर काल में औद्योगिकरण और पाश्चात्यों के अंधानुकरण से परिवार में विघटन होने लगा है। संयुक्त परिवार के स्थान पर विभक्त परिवार की प्रवृत्ति विकसित होने लगी है। प्रेम, विश्वास, परोपकार और सहयोग जैसे गुणों का ऱ्हास हो रहा है और उसके स्थान पर तिरस्कार, द्वेष, ईर्ष्या और बुराईयाँ पनप रही हैं। फलस्वरूप परिवार के सभी पात्र एक दूसरे से भयभीत और सहमे-सहमें से है। इन पारिवारिक जीवन की हल्की-फुल्की बतकहियों के बीच लेखिकाने रोज़मर्रा के प्रसंगों में से कोई न कोई प्रसंग छाँटकर (पड़ोसियों से उपजी परेशानी 'मोर्चा' जैसी कहानी) आज के समाज की झाँकी दिखाई है। क्षमा जी यथार्थधर्मी रचनाकार हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में इर्द-गिर्द की अनुभूतियों को ही अपने कथ्य का विषय बनाया है। इसे निम्नांकित मुद्दों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

२.१.१.१ कुंठित पति-पत्नी :

विवाह व्यक्ति के जीवन की आवश्यकता है। इस संबंध में डॉ. महेंद्रकुमार जैन का मत है, "परिवार का निर्माण मूलत: दंपत्ति (पति-पत्नी) द्वारा होता है, जो विवाह व्यवस्था द्वारा परिवार एवं दाम्पत्य का श्रीगणेश करते हैं।"[४] परिवार की सुख समृद्धि दोनों के समायोजन पर आश्रित होती है, लेकिन जहाँ दोनों में प्रेम, आत्मियता और विश्वास जैसे मूल्यों का क्षय होने लगता है, वहाँ एकाकीपन बढ़ने लगता है और कुंठा का उद्गम होने लगता है। 'उत्तरार्ध' कहानी में पति के द्वारा हो रहे दमन का वर्णन किया गया है। नायक के रातों के नींद में अक्षर और विचारों में कागद-पेन समाए रहते हैं। नायिका कहती है, "देवेश जब लिखने बैठता था तो घोंघे की तरह हो जाता था, अपने शैल में बंद। जहाँ उसे कोई भी पसंद नहीं था, न बच्चे, न पत्नी। आँखो में पागलपन समा जाता था।"[५] यह कहानी नारी की कुंठा को व्यक्त करती है। इसमें पति पर पूर्णरूपेण आश्रित पत्नी की कहानी है, जो निरंतर पति के सामने दबी हुई दिखाई देती है। पतिद्वारा उपेक्षित होकर भी वह उसकी हर आज्ञा का पालन करती है। अपनी नापसंद बातों का विरोध करना तो चाहती है, लेकिन डर और आशंका से कर नहीं पाती। पति की एकाधिकार की भावना से आहत तथा रोजमर्रा के जीवन से त्रस्त पत्नी की चिंताएँ निरंतर बढ़ती ही रहती है।

'वेलेंटाईन डे' इस कहानी में नकुल पत्नी को बिना बताए अपने पूर्व प्रियतमा से मिलने आता है। जब वह उसके पत्नी के बारे में पूछती है तब नकुल जवाब देता है कि, "उसे बताने की जरूरत क्या थी। उस कटखनी से मिलकर क्या करोगी?"[६] जब प्रियतमा जोर देकर पूछती है तब वह कहता है कि 'कटखनी क्या नॉन एड़जेस्टिंग' जबकि नकुल की पत्नी खुबसुरत भी है और उनकी शादी में उसके पिता ने नकुल को मोटी रकम भी दी है। यहाँ पर नायक के रूग्ण मानसिकता की ओर निर्देश किया गया है। सुशिक्षित और बुद्धिमान नकुल रहन-सहन और वेशभूषा से जितना आधुनिक है, उतना ही विचारों से कीड़ लगे दीमक की तरह घिनौना है। वह इतना मनोरूग्ण है कि पत्नी की सच्ची स्तुती तक नहीं कर सकता। ऐसे पति के साथ जिंदगी बिताना 'मदारी के इशारे पर नाचनेवाले बंदर' से कम दुखदायी नहीं है।

'बया' इस कहानी में नायिका रिपु अपनी गुजरी माँ की यादों में खोई हुई है। अपनी सहमी माँ और पिता का कठोर बर्ताव उसे याद आ रहा है। वह कहती है, "माँ से अप्पी ने सिनेमा तो क्या कभी दो मीठे बोल भी न बोले होंगे।"[७] नायिका की माँ पति के तेज, कठोर, निर्दयी और अहंकारी स्वभाव के कारण निश्चिंत न रहकर हमेशा डरी-सहमी हुई रहती है। उनके पास सुख, संपत्ति, ऐश्वर्य सब कुछ होते हुए भी वह अपनी गृहस्थी में खुश नहीं है। उसे इस बात का एहसास है कि अन्य पुरूषों की अपेक्षा उसका पति कुछ ज्यादा ही ड़पटता है , फिर भी अंदर ही अंदर तिलमिलाती आशा सब कुछ सहती रहती है।

'बेघर' इस कहानी में विनि नामक लड़की जो हॉकी के नॅशनल टीम की कप्तान रह चुकी है। पर घर-गृहस्थी के मामले में गैर जिम्मेदार है। जब उसकी शादी विजय से हुई तो वह पूरी तरह बदल गयी। उसका घर बिल्कुल विजयमय हो है- "विजय की पसंद के धोबी से धुले साफ चादर। हर चीज करीने से अपनी जगह। उसके लिए आए एक-एक फोन का हिसाब-किताब। उसकी चिट्ठियाँ। प्रेस हुए कपडे। बाथरूम का धुला तौलिया और महकते अंड़रगारमेंट्स। उसकी पसंद का खाना।"[८] लेकिन जब विनि की ब्रेन हेमरेज से मौत होती है तब विजय उसकी मृत्यु के ठीक नौ दिन बाद बेटे अमन का जन्मदिन धूमधाम से मनाता है और सालभर में ही दूसरी शादी कर बच्चों को बोर्ड़िंग भेज देता है। विजय का यह स्वभाव कुंठाग्रस्त कर देता है। इस तरह इन कहानियों की नायिकाएँ अपने पति के दुर्व्यवहार से दु:खी हैं। अपनी इस विवशता को वे कहें भी तो किससे? लेखिका की अधिकांश रचनाओं में नारी ही पति के अत्याचार और अपमान सहने के लिए विवश है। कहीं उसके संस्कार आड़े आते हैं, तो कहीं उसकी कमजोरी उसे विरोध करने से रोकती है।

२.१.१.२ स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण :

समाज में स्त्रियों को जो दुय्यम दर्जा प्राप्त है, उसके लिए काफी हद तक स्वयं स्त्री भी उत्तरदायी है। प्राय: यह कहा जाता है कि 'घायल की गति घायल जाने।' किन्तु स्त्रियों के बारे में यह उतना सही नहीं है। यदि ऐसा होता तो स्त्री होने की जो पीड़ा एक स्त्री ने भोगी है, दूसरी स्त्री के लिए वह उसी पीड़ा का निर्माण नहीं करती। क्षमा जी की अधिकांश रचनाएँ नारी केंद्रित हैं। जिसमें पुरूष

ही स्त्री का शत्रु नहीं है, बल्कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है। उनकी प्रत्येक रचना में नारी की असंख्य छवियाँ हैं। जैसे, कहीं नारी की क्रूरता है तो कहीं ईर्ष्या और जलन है। कहीं नारी मानसिक और शारीरिक रूप से किसी अन्य का शोषण कर रही है तो कहीं ताने, उलाहने, अपमान और तिरस्कार से बींधती चली जा रही है। उनकी कुछ रचनाओं में प्रबुद्ध, सुशिक्षित और आर्थिक रूप से संपन्न नारी भी शोषण का शिकार बनी हुई है। इसके अंतर्गत निम्नांकित रचनाओं का समावेश है।

'पापा के एपिसोड में बेटा' इस कहानी में नायिका के पति को शराब और शबाब की लत पड़ गयी है। नायिका का भरोसा है कि बच्चे के जन्म के उपरांत पति के बर्ताव में कुछ सुधार होगा। लेकिन पति की तो पहले हप्ते की एक रात बाहर बीतनी शुरू हुई, फिर दो, फिर तीन और उसके बाद हप्ते, महीने, साल। ऐसे में पास-पड़ोस की औरतें सांत्वना देने की बजाए उसे कठोर शब्द सुनाकर चिढ़ाने के अंदाज में कहती है- "आदमी वक्त पर घर नहीं लौटता तो क्या पैसे तो बराबर भेजता है ...।"[९] 'न्यूड़ का बच्चा' इस कहानी में बीनू नामक लड़की को कॉलेज के नवयुवक से प्यार हो जाता है। लेकिन जब यह बात उसकी माँ को पता चलती है तब उसकी माँ उससे समझदारी से पेश न आते हुए उसे थप्पड़, जूते, घूंसे देती है। बीनू परेशान हो जाती है और सोचती है, दुनिया की हर माँ अपने को सर्वश्रेष्ठ घोषित करने के चक्कर में अपनी लड़कियों को खूब दबा देती है। उन्हें खूब सताती है। आखिर औरत ही औरत की दुश्मन होती है।

'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' कहानी में नायिका मध्यवर्गीय गृहिणी है और उसकी सहेली मीनू उच्च वर्गीय वैश्या है। नायिका की घर-गृहस्थी देख मीनू को उस पर जलन होने लगती है। वह नायिका को नीचा दिखाने के लिए अपने घर बुलाती है और तीखे कड़वे शब्दों से अपमानित करती है। नायिका के शांत स्वभाव का फायदा उठाकर उसे व्यंग्य बाणों से कचोटती है और कहती है- ''तुम एक आदमी को शरीर सौंपती हो और मैं पचास को। करते तो हम दोनों एक ही काम है। और मेरे पास वह सबकुछ है- बैंक बैलेंस, कार, उँचे संपर्क जिनके लिए तुम जीवन-भर तरस सकती हो।''[१०] कहानी में वे छोटे-छोटे अहसास हैं, जो हमें तोड़ते-मरोड़ते हैं पर अवसाद के चरम पर पहुँचाने के बावजूद हमारे भीतर की जिजीविषा को बनाए रखते हैं। यहाँ मदद की भी कीमत वसूली जाती है और रिश्ते भी मतलबी लगते हैं।

'जिन्न' कहानी में नायिका विधवा है, लेकिन नौकरी करते हुए उसने अपने साज-शृंगार को नहीं छोड़ा है। कॉलेज में यही बात अब चर्चा का विषय बन गई है। एक दिन जब वह परिचय की शादी में जाती है तब वहाँ की औरतें जल-भुनकर उसे टोक देती है और तीखी नजरों से देखती हँसती हुई कहती हैं कि, ''घर-घर में चर्चे हैं आपके। लिपस्टिक, बिंदी, काजल तो आपने ही छीन लिया, यह मंगलसूत्र तो छोड़ देती हमारे लिए। हम सुहागिनों के लिए।''[११] वह उसे सहानुभूति देना तो दूर उसके चरित्र पर भी शक करती है। कहानी मन-मस्तिष्क पर रूमानी जाल बिछाकर भीतर बेगानेपन की कसक छोड़ जाती है। इस दोहरेपन का शहरवासियों के व्यक्तित्व में जैसे अपने आप आरोहण होता रहता है, जिससे रिश्ते बेरंग और बेमानी जान पड़ते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि क्षमा जी की रचनाओं में नारी मात्र पुरूष के द्वारा नहीं छली जा रही है, बल्कि वह नारी का शोषण करने में भी कतई पीछे नहीं है। वास्तव में इस पुरूष प्रधान समाज रचना में यदि स्त्री को अपने स्वतंत्र व्यक्तित्त्व का विकास करना है तो उसे सबसे पहले अपने आपसे शुरूआत करनी होगी अर्थात् एक स्त्री के प्रति दूसरी स्त्री का रवैया प्रतिद्वंद्विता पूर्ण न होकर एक सहयोगी का होना चाहिए। इसलिए सबसे पहले स्त्रियों को अपना पुरूष प्रवृत्ति का दृष्टिकोण बदलना चाहिए जो औरत को दुय्यम स्थान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आपस में भगिनीभाव को बढ़ावा देकर अपनी जाति के उत्थान के लिए सहयोगिता की भावना को अपनाना चाहिए।

२.१.१.३ कामकाजी नारी की दोहरी भूमिका :

भारत में स्त्री शिक्षा प्रणाली का आरंभ होते ही स्त्रियाँ शिक्षा का लाभ लेने लगी। आज स्त्री हर क्षेत्र में पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है। कोई भी क्षेत्र उससे अछूता नहीं रहा है। स्त्री अपनी प्रतिमा के सहारे उच्च शिखर तक पहुँच गई है, फिर भी वर्तमान पुरूष का उसके प्रति दृष्टिकोण और व्यवहार यत्किंचित नहीं बदला है। लगता है, जैसे अधिकांश पुरूष आज भी मध्ययुगीन मानसिकता से ही प्रभावित हैं। आज भी पुरूष अपने अनेक हथकंड़ों से उसे दबोच रहा है। उसकी आर्थिक क्षमताओं का लाभ तो परिवार प्रसन्नतापूर्वक उठाता है किंतु उसकी कार्य संबंधी व्यस्तताओं

के बावजूद परिवार का प्रत्येक सदस्य उससे यह आशा भी रखता है कि वह परंपरागत रूप में एक माँ, पत्नी, बहू, भाभी अथवा बेटी के दायित्त्व का पूर्णत: निर्वाह करे।

घनश्यामदास भुतड़ा के शब्दों में–''नारी नौकरी करती हुई आर्थिक निर्भरता से संतोष प्राप्त करने की एवं पारिवारिक जीवन में 'एड़जस्ट' न कर पाने के फलस्वरूप वह व्यर्थता बोध से भर जाती है। घर और बाहर के जीवन में समन्वय स्थापित न कर पाने से उसे नौकरी छोड़नी पड़ती है या तनाव की स्थिती को झेलते हुए अनचाहा जीवन व्यतीत करना पड़ता है।''[१२] क्षमा शर्मा की कहानियों में ऐसी अनेक नारियाँ हैं, जो नौकरी करती हैं, जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिती अच्छी हो जाती है किन्तु नारी का व्यक्तित्त्व दोहरी भूमिका में बँटने के कारण उसे मानसिक तनाव भी झेलना पड़ता है।

'सुबह से शाम तक' कहानी में परिवार में पति और घर की जिम्मेदारी साथ ही नौकरी के दबाव को झेलते हुए इतनी परेशान हो जाती है कि उसके पास अपने लिए समय शेष नहीं रह पाता। घर और नौकरी दोनों से निपटते हुए उसे ऐसा लगने लगता है कि वह इन्सान नहीं एक धक्का गाड़ी है। और फिर एक दिन वह दफ्तर न जाने का निर्णय लेती है – ''इस घर में आने के बाद उसने पहली बार निर्णय लिया था कि वह आज दफ्तर बिल्कुल नहीं जाएगी। किसी भी चीज की एक हद होती है। काम ... काम...! आखिर कब तक? इतवार को भी छुट्टी नहीं।''[१३] जो भी हो, वक्त की रफ्तार तो अब रूकेगी नहीं। औरतों को आगे बढ़ने का मौका मिला है, तो वे क्यों न काम करें, तरक्की करें?

'हर बार लौटना' इस कहानी में जिस नौकरी को कोसते-कोसते मिसेस सक्सेना ने पूरी जिंदगी निकाल दी उसी नौकरी की अहमियत उन्हें रिटायरमेंट के वक्त समझ आ रही है। उनके सामने एक बड़ा सा प्रश्न उपस्थित हुआ है कि अब वक्त कैसे कटेगा? वह सोचती है कि, ''युवावस्था में वह नौकरी को कितना कोसते थे। बोरियत, उबाऊपन, अफसरों से कहासुनी, वक्त का न होना, बच्चों की देखभाल, बीमारियाँ और तमाम किस्म की दुनियादारी ... तब जैसे अपने मन को समझाते थे नौकरी को गालियाँ देकर, एक प्रकार का कम्पनसेशन।''[१४] अर्थात् आजकल कोई भी महिला सिर्फ गृहिणी कहलाना पसंद नहीं करती और किसी न किसी रूप में वह अपनी एक व्यक्तिगत पहचान बनाने की कोशिश में लगी रहती है।

'मोबाइल' उपन्यास में बताया गया है कि नायिका कुँवारी है और नौकरी के लिए उसे गाँव छोड़ शहर आना पड़ा है। तब उसे नौकरी के साथ-साथ घर की सारी जिम्मेदारी भी सँभालनी पड़ती है, गृहस्थिन की तरह उसे गैस, सब्जी, दाल, चावल, साबुन, टुथपेस्ट, कामवाली, फ्रिज, टेलिविजन, गीजर इन सबकी चिंता होती है। 'ढ़ाई आखर' कहानी में परिवार की औरतें आर्थिक सहायता हेतु नौकरी करती हैं। घर और नौकरी की परेशानियाँ उन्हें इतना व्यस्त बना देती हैं कि उनके पास अपनी देखभाल और साजशृंगार के लिए समय ही शेष नहीं रह पाता। दिन-रात भाग-दौड़ करने के बावजूद वह अपनी मामूली-सी ख्वाहिशें भी पूरी नहीं कर पाती। रास्ते से चलते-चलते उन्हें पड़ोसियों से बात करना भी मुश्किल हो जाता हैं, ''जिन चालिस-पचास फ्लैटों के सामने से यह सड़क गुजरती है, उनके मालिकान अक्सर दफ्तर आने-जाने में ही इतना थक जाते हैं कि चाहते हुए भी बाकी दुनिया की खैर-खबर नहीं ले सकते।''[१५]

इस प्रकार क्षमा शर्मा की कहानियों में कामकाजी स्त्री के अनेक पहलू दिखाई देते हैं। उनकी कामकाजी नारी एक ओर कार्यालय में अनेक पुरूषों की नजरों को झेलते हुए काम करती है, तो दूसरी ओर पति की आँखों में मँडराने वाले संदेह के बादलों का भी सामना करती है। उसके कामकाजी होने के कारण वह अपने बच्चों के लिए भी समय नहीं दे पाती। अन्य स्त्रियों की तरह आराम से जीवन बिताने की स्वतंत्रता न होने का दु:ख भी उसे है, फिर भी वह संवेदनशून्य, यंत्रवत और जड़ होने को बाध्य है। उसका घर और बाहर दोनों ओर शोषण ही होता है।

२.१.१.४ रिश्तों में उपेक्षित और तुच्छतापूर्वक व्यवहार :

क्षमा जी ने रिश्तों को प्रधानता देते हुए बहुत-सी कथाएँ लिखी हैं। उन्होंने सास-बहू के अतिरिक्त जेठानी-देवरानी, माँ और संतान, ननद और भाभी के बीच उपस्थित उपेक्षित व्यवहार को भी अपनी रचनाओं में उद्घाटित किया है। रिश्तों की जटिलता को बड़ी गहराई से समझनेवाली लेखिका ने पात्रों के माध्यम से उसे बड़ी सहजता से प्रस्तुत किया है। रिश्तों के धागे बड़े नाजुक होते हैं। परस्पर सामंजस्य का अभाव हो तो यह धागे तनकर टूट जाते हैं, किसी समय, किसी कारणवश वह जुड़ भी जाएँ तो इनमें अवश्य ही गाँठ पड़ जाती है।

'छिनाल' कहानी में नायिका के पति के देहांत के बाद रिश्तेदार नायिका के हर चीज पर अपनी मिल्कियत स्थापित करना चाहते हैं। उसकी भावनाओं से खेल, उसके धन पर अपना अधिकार जताते हैं। अनु के पति के मृत्यु के उपरान्त वह दु:ख में डूबी हुई थी। ''जितना वह दु:ख में डूबी, उतना ही उसने देखा, लूट बढ़ी। कोई उसके कपड़े यह कहकर ले गया कि अब वह तो उन्हें पहनेगी नहीं। किसी ने उसके देखते-देखते उसका शृंगारदान हड़पा। किसी ने परफ्यूम की बोतलें अपनी जेब में रखी। ''[१६] जब तक नायिका खामोश थी, तब तक हर कोई अपने चालाकी से उसे लूट रहे थे। तो कोई उसे दबोच रहा था। हर रिश्तेदार की अपनी-अपनी तरह लूट शुरू थी। 'अगली सदी की लड़की' कहानी में नायिका शिक्षित, प्रौढ़, आधुनिक नारी है जो अपने होने वाले बहु से दहेज की अपेक्षा नहीं करती। लेकिन यह विचार सुन बहू को कोई खुशी नहीं होती, बल्कि वह नायिका को सुन उलाहने देती है। उसकी मतलबपरस्ती की तहें भी साथ ही तार-तार होती हैं। उसे एतराज है कि होनेवाली सास ने मम्मी-पापा से ऐसा क्यों कह दिया कि वह दहेज नहीं लेना चाहती। नायिका का बेटा भी उसीको गलत साबित करते हुए कहता है, ''और क्या, फालतू के आदर्श उन लोगों के सामने बघारती फिरोगी जो उन्हें समझ नहीं सकते तो लोग पागलही कहेंगे। तुम्हें पता ही नहीं चलता कि कब किसके सामने क्या बात कहनी चाहिए।''[१७] इसके बावजूद नायिका अपनी व्यक्तित्त्व को जानने और अस्तित्त्व को बनाए रखने के लिए संघर्षरत है। कहानी द्वारा वैचारिक बहस का यह रचनात्मक रूप प्रस्तुत होता है।

ऐसे ही ननद और भाभी के संबंधों के प्रति अपेक्षा भाव को दर्शाती 'शुरूआत' यह कहानी है। इस कहानी में रिश्तेदारी में साझेदारी नजर आती है। यहाँ रिश्तों के कोमल भाव मुरझाकर सिर्फ कठोरता नजर आती है। रिश्तों की अपने-पराये की सूझ-बूझ आँखों से परे हो गई है। इसमें अनिता को उसकी ननद की बारे में पूछा गया तब वह बेसलीकेसे कहती है, ''अजी जहन्नूम में। जब भी आती है भाई के कान के इर्द-गिर्द मंडराती है। अब तो मैंने परवाह करना भी छोड़ दिया है। घर में आती है तो मैं बाहर चली जाती हूँ। ''[१८] रिश्तों का धागा बंधन को जोड़ता है, परंतु यहीं धागा कमजोर हो तो बंधन को तोड़ता नजर आता है। 'मातृ-ऋण' कहानी में माँ को कौन सँभालेगा इस प्रश्न-पर बहस करते भाई नजर आते हैं। बड़ा-भाई माँ से कहता है, 'तुम बहुत छोटी बातें करती

हो ! भाइयों में मनमुटाव कराना चाहती हो।' और जब मँजले भाईपर माँ की जिम्मेदारी आती है, तब वह कहता है कि, 'हमारी माँ राजनीति करती है, उसकी नियत में खोट है।' साथ ही उसकी बीवी कहती है, 'एकही हमेशा क्यों करें?' रिश्तों में कटु, उपेक्षित और तुच्छतापूर्ण व्यवहार पारिवारिक आपसी रिश्तों में दूरियाँ पैदा करता है और यहीं दूरियाँ आगे चलकर इस कदर बढ़ जाती है कि आदमी कितनी ही कोशिश कर ले वह यह फासला मिटा नहीं पाता। यह कहानी पाठक को कौंचती है कि चीजें इतनी बदल जाती हैं फिर भी हमें दिखाई क्यों नहीं देतीं ?

'प्रेम के बीच' कहानी में नायिका के पिता प्रौढ़ावस्था में जब दूसरी शादी करते हैं तब वह अपनी सौतेली माँ से काफी क्रूरता से बर्ताव करती है। उसका व्यवहार काफी उपेक्षित तथा दूजाभावपूर्ण है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि, क्षमा जी की कहानियों में आज संयुक्त परिवार का विलगाव नई और पुरानी पीढी की टकराहट अथवा महिलाओं का वैचारिक संघर्ष रिश्तों में तनाव बढ़ा रहा है। साथ ही सास-बहू के झगड़े, ननद-भाभी के झगड़े या किसी विधवा या परित्यक्ता बेटी का एकाधिकार प्रदर्शित करना अथवा परिवार के किसी सदस्य का निकम्मा होना रिश्तों में तुच्छतापूर्ण व्यवहार बढ़ा रहा है।

२.१.१.५ अनमेल विवाह :

क्षमा जी की अधिकांश रचनाएँ दांपत्य जीवन से जुड़ी हुई है। इन रचनाओं में नारी जीवन संबंधी विविध आयामों को उन्होंने बड़ी सघनता से प्रस्तुत किया है। उनमें से एक है, अनमेल विवाह, जिससे पति-पत्नी में कुंठा जैसी विषम प्रवृत्ती निर्माण होने लगती है। 'काहे को ब्याही बिदेस' कहानी में नायक माता-पिता के इच्छानुसार विवाहसूत्र में बँध जाता है, लेकिन पत्नी के विचारों की दूरी, मानसिक सोच में अंतर और रुचियों में भिन्नता उसका जीवन विषाक्त कर देती है। तभी नायक विदेश लौट जाता है। ''पहले उनके पत्र आते थे जिनमें खूब मीठी बातें होती थी। फिर वे कम-से-कम होते गए, फिर अंतमें उन्होंने लिखा कि वह उन्हें नहीं बुला सकते क्योंकि वह इंग्लैंड में बहुत पहले शादी कर चुके हैं।''[१९] इस प्रकार सोच में अंतर की वजह से जिंदगियाँ तबाह हो जाती हैं। सुख दु:ख के जनम-जनम के साथी एक-दूसरे के लिये पराये हो जाते है।

'जय श्रीराम' कहानी में सुशिक्षित विचारों का नायक विवाहबद्ध होता है। कुछ दिनों के पश्चात् ही पत्नी को अपने घमंड़ी स्वभाव का अहसास कराकर, उपकार के बोझ तले दबा लेता है। पुरूष प्रधान संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता हुआ नायक हर पल हर कदम पत्नी को बेबस,अबला समझकर अपमानित करता है। अपने आभासी सर्वश्रेष्ठता को अधोरेखित करते हुए वह उसे जूती की नोंक पर धरता है। पति के लायक बनने के लिए निरंतर प्रयास करती नायिका को कुछ ही दिनों में अपनी हैसियत का पता चल जाता है कि घर में उसकी जगह 'पैर की जूती' इतनी ही है। 'घिराव' इस कहानी में नायक अपने पत्नी से अत्यधिक बुरा व्यवहार करता है। वह बहुत ही गैरजिम्मेदार पति है। जो नौकरी न करते हुए हमेशा उधार माँगकर नशे में झूलता रहता है। पत्नी के बारे में सबसे यहीं कहता है कि उसके हालत की जिम्मेदार उसकी पत्नी है। उसकी वजह से उसे ये दिन देखने पड़ रहे हैं। अगर वह अकेला होता तो उसके जिन्दगी के रंग आज कुछ और होते। अपनी निराशमय जिन्दगी के लिए वह उसीको जिम्मेदार ठहराता है और उससे नफरत करने लगता है। झुंझलाहट में सबसे कहता है, आज मेरी जो हालत है, उसके कारण। वही खाना, वही कपड़ा, वही–वही सब कुछ, सब चुक गया। आई हेट हर। अकेला होता तो सब कुछ झेल लेता। और जब लोग अपने उधार के पैसे माँगने आते है तो चीखते हुए कहता हैं कि , ''यह मेरा खून पीने बैठी है। मरती भी नहीं।''[२०]

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि क्षमा जी की अधिकांश रचनाएँ अनमेल विवाह की समस्या को दर्शाती हैं। इस अनमेल विवाह के पीछे पारंपरिक रूढ़ियाँ, आर्थिक विपन्नता, पुरूष की अनेक प्रकार की स्वार्थांधता दिखाई देती है। अच्छे विचार को समय और पिछड़ी सोच इस कदर सर के बल खड़ा कर देती है।

२.१.२ सामाजिक विषय–वस्तु :

आधुनिक हिंदी शब्दकोश के अनुसार समाज शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ व्याप्ति निम्नलिखित है– ''समाज, संघ, संघात, समष्टि, सभा, परिषद, गोष्ठी।''[२१] क्षमा जी का रचना संसार सामाजिक समस्याओं से अछूता नहीं है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। अत: साहित्य में सामाजिक तत्वों का समन्वय स्वाभाविक है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, उसे समाज के बनाए नियमों

का पालन करना ही पड़ता है। पूरा मानव जीवन समाज से जुड़ा हुआ है और समाज से जुड़कर ही वह अपना विकास करता है।

सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत समाज की वास्तविकता को ही अधिक से अधिक स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। किंतु इसमें कोरा यथार्थवाद ही नहीं होता बल्कि रचनाकार का अपना अनुभव और कल्पना शक्ति का समन्वय होता है। उपन्यासों में सामाजिक समस्याएँ अनेक होती हैं। डॉ. शशिभूषण सिंहल के अनुसार, ''सामाजिक उपन्यास समाज के गठन का, सामाजिक मूल्यों का तथा सामाजिक समस्याओं की पारस्पारिक क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण करता है।''[२२] समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ तथा स्थितियों का अंतर्भाव होता है, जिसे रचनाकार वास्तविक रूप में अपनी कृति में विषय-वस्तुके रूप में अभिव्यक्त करता है। क्षमा जी के कथा-साहित्य में भी ऐसी ही समस्याएँ और स्थितियाँ अंकित हैं, जैसे-दहेज समस्या, नैतिक मूल्यों का पतन, शिक्षासंबंधी समस्या, मध्यवर्ग की जीवन स्थिति आदि।

२.१.२.१ दहेज समस्या :

भारत रूढ़ि और परंपराओं का देश है। प्राचीन काल में लड़की के माता-पिता विवाह के अवसर पर स्वेच्छा से विविध वस्तुएँ भेंट स्वरूप देते थे और वर पक्ष बगैर किसी शिकायत के उस भेंट को खुशी से स्वीकार करता था। समय परिवर्तन के साथ-साथ इस स्वेच्छारूपी भेंट ने इतना विकृत रूप धारण कर लिया है कि सामान्य मनुष्य इसके बोझ तले दबा जा रहा है। दहेज लोलुपता ने समाज को इस स्तर तक गिरा दिया है कि अपनी बहू-बेटियों को सताने और जिंदा जलाने में उन्हें अपराध बोध नहीं होता है। शरीर में फूटे कोड़ की बीमारी की तरह यह ऐसा घातक रोग है, जो समाज को शनै: शनै: अपने शिकंजे में जकड़ता ही जा रहा है।

'इक्कीसवीं सदी का लड़का' कहानी में दहेज प्रथा का बड़ा ही घिनौना रूप दिखाई देता है। इलाके के सबसे बड़े प्रोविजन स्टोर के मालिक का लड़का इंजिनिअरिंग की पढ़ाई पूरी कर रहा है और जो आज के युवावर्ग का प्रतिनिधी भी है उसके शादी के बारे में विचार सुन उसका दोस्त गुस्सा होकर कहता है, ''बड़ा ही लालची किस्म का लड़का है। कहता है कि इंजिनिअरिंग इसलिए पढ़ रहा

है कि अच्छा दहेज मिल जाए''[२३] लालची... दहेज पर होने वाली तमाम उबाऊ बहसों के मुकाबले यह एक शब्द बहुत ही असरकारक है। यह विधान इक्कीसवीं सदी के लड़के की भावनाओं का भविष्य दर्शन है। यह कहानी बीसवीं सदी की सोच और संवेदना को मूर्त कर इक्कीसवीं सदी के दरवाजे पर जीवित और विद्रोही दस्तक का आभास देती प्रतीत होती है। 'अगली सदी की लड़की' कहानी में नायिका की होनेवाली बहू एकदम कैल्क्युलेटेड, प्रैक्टिकल है जो दहेज को स्त्री का अधिकार समझते हुए नायिका को दहेज लेने के लिए मजबूर करती है। तब नायिका कहती है, ''लेकिन मैं दहेज को पूरी स्त्री जाति का अपमान मानती हूँ। एक रिश्ता जो खुबसूरत होते होते भौतिक सुखसुविधाओं के कारण लालच में बदल जाता है, आखिर लड़की के पैदा होते ही माता-पिता क्यों उसकी दहेज की चिंता में डूबने लगे।'' [२४] कहानी की नायिका भारतीय संस्कृति और अध्यात्मिकता की दुहाई देते हुए, भौतिकता कि एक मारूति या कलर टिव्ही के लिए औरत को जलाये जाने के सख्त खिलाफ है। उग्र रूप धारण किए हुए दहेज समस्या को लेखिका ने एक नया आयाम देने की कोशिश की है जो अत्यंत प्रशंसनीय है।

'घर-घर' कहानी में एक माँ अपनी बेटी के शादी के लिए दहेज जुटाने में चिंतीत है। वह अपनी बेटी की किताब तो नहीं पढ़ सकती लेकिन उन किताबों के पन्नोंपर अपनी बेटी के भविष्य के सपने देखना चाहती है। बेटी की शादी की कल्पना करते-करते उसके सामने दहेजरूपी भयावह राक्षस प्रकट हो जाता है। अपने सुनहरे सपनों को वह आँखों के सामने बिखरता हुआ देखती है। ''एक वृत्त जो बराबर इर्दगिर्द चक्कर काटता है। चाहिए न दहेज ! कितना कुछ है जिसमें वह डूबी रहती है, माँ डूबी रहती थी ... घर ... घर ... दहेज।''[२५] दहेज जैसी विकराल समस्या ने मनुष्य को पंगू बना दिया है।

इस प्रकार आज की दहेज प्रथा लड़की के माता-पिता के लिए समस्या बनी हुई है। आज की पीढी सुशिक्षित होते हुए भी अपनी इस मानसिकता को बदलने में असमर्थ क्यों है? यह सचमुच ही चिंताजनक प्रश्न है। यदि युवा पीढी इस प्रथा के विरोध में आवाज उठाती है, तो धीरे-धीरे यह प्रथा समाप्त हो सकती है और लड़की के माता-पिता भी इस विकराल चिंता से मुक्त हो सकते हैं।

२.१.२.२ भ्रष्टाचार :

आज समाज का प्रत्येक क्षेत्र भ्रष्टाचार रूपी राक्षस से घिरा हुआ है। अफसर से लेकर चपरासी तक और व्यापारी से लेकर नोकर तक इस मायाजाल के शिकंजे से उलझा हुआ है। आज यदि किसी छोटे-मोटे पद को प्राप्त करना हो तो अफसर के तलुवे चाँटने पड़ते हैं, फिर भी काम आसानी से नहीं होता है। इस भ्रष्टाचार की आँधी में हमेशा गरीब ही पिसा जाता है। उच्चवर्ग तो अपनी प्रतिष्ठा और पैसों के बलपर आगे निकल जाता है और मध्यवर्ग प्रतिभा होते हुए भी पिछड़ जाता है। 'काहे को ब्याही बिदेस' कहानी में नायिका नौकरी के तलाश में है। नायिका के बड़े भाई बताते हैं कि दस हजार रूपये देने से नौकरी पक्की हो सकती है। बाद में ''पैसे देकर भाई निश्चिंत नहीं हुए थे। उन्हें लगता कहीं ऐसा न हो कि दस हजार भी जाएँ और नौकरी भी न मिले। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। यदि ऐसा होता तो लोगों का रिश्वत से भरोसा उठ जाता।''[२६] कहानी में अफसरों की स्वार्थी, लालची और दंभी वृत्ती को उजागर किया है।

'मोबाइल' उपन्यास में सरकारी अफसरों की भ्रष्टता का अंकन किया है, जो अपने स्वार्थ हेतु सरकारी नियमों का उल्लंघन करते हैं। जो दो वाक्य भी सही तरीके से नहीं लिख सकते उनकी किताबें कैसी छप जाती हैं? नायिका के इस प्रश्न पर जवाब दिया जाता है, 'तुझें नहीं पता! मपठ के नाते-रिश्तेदार, सरकारी अधिकारी जो इसे किसी कमेटी में घुसवा दें या विदेश की सैर करा दें, हर शाम शराब की पार्टी दे, बन जाएँगे लेखक। छप जाएगी उनकी किताब।' 'डोर' कहानी में नायिका तेज धूप में ताज देखने निकली है। पवित्रता के नाम पर नन्हीं बच्ची के साथ सभी की चप्पले उतरवा ली है। लेकिन विदेशी लोगों से ज्यादा पैसे लेकर उनके जूतों पर कपड़े बाँध दिए हैं। नायिका जब इस बात पर प्रश्न उठाती है तब उन्हें यह कहा जाता है, ''कपड़े बाँधने के पौने दो रूपए लगतें हैं, आप भी बँधवा लो। पवित्रता की कीमत सिर्फ पौने दो रूपए।''[२७] पैसा और पवित्रता की दौड़ में अक्सर पैसा ही जीतते देखा जाता है। पवित्रता तो पिंजड़े में कैद पक्षी रूपी कैदी की तरह बाहर आने के लिए छट्पट़ाती हुई दिखाई देती है। इसप्रकार अकर्मण्य सरकार, भ्रष्टाचार, मूल्यहीनता आदि पर क्षमा जी ने क्षोभ व्यक्त किया है।

'काला कानून' इस कहानी में सरकारी प्रशासनिक, भ्रष्ट व्यवस्था पर भी करारा व्यंग्य किया है जिससे देश की प्रशासनिकव्यवस्था स्पष्ट रूप से सामने आती है और साथ ही भ्रष्टता का जहरीला रूप भी दिखाती है। देश में सिवाय पैसों के किसी का सम्मान नहीं होता और फिर लोग कहते हैं कि भारत के खिलाड़ी अच्छे नहीं है। ''अच्छे कहाँ से हों किसी को खेलने लायक खुराक मिलती है क्या यहाँ? सब कुछ मोटे पेट वाले हजम कर लेते हैं। हड्डियों के बल पर भला कोई कब तक खेल सकता है?''[२८] यहाँ खिलाडियों के लगन का हौसला अफजाई न करते हुए उनकी सच्चाई और इमानदारी को नजरअंदाज कर दिया गया है। फिर, भ्रष्टाचाररूपी चक्की में हमारे देश के नवयुवक खिलाड़ी पिसने से चुकें नहीं हैं। क्षमा जी भी समाज में व्याप्त इस भ्रष्टाचार से बच नहीं पाई है। स्थान-स्थान पर फैले हुए इस भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी आदि को देखकर इन सबसे प्रभावित आम जनता के जीवन को देखकर उत्तेजित हो जाती है तथा इसके विरूद्ध आवाज उठाती है, जो उनकी रचनाओं में स्पष्ट दिखाई देता है।

२.१.२.३ नैतिक मूल्यों का पतन :

बदली हुई परिस्थितियों में नैतिकता के सम्बन्ध में एक से अधिक दृष्टिकोण का होना नितान्त आवश्यक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नारी ने जो अधिकार प्राप्त किये हैं उससे नैतिक जागरण का नया स्वर मुखरित होने लगा है। ''नैतिक मामलों में भी जितनी स्वाधीनता नरों को प्राप्त है, उतनी ही स्वाधीनता नारियों को भी मिलनी चाहिए। अर्थात् पहले वो नैतिक गुलामी में नरों की समानता करना चाहती थी, आज वे नैतिक स्वतंत्रता में उनकी बराबरी करना चाह रही है।''[२९] परम्परावादी जहाँ परम्परागत मूल्यों की पुन:स्थापना करना चाहते हैं, वहाँ नये विचारोंवाले व्यक्ति समाज की नैतिकता को पुर्ननिर्धारित करना उचित समझते हैं। समीक्षक प्रेमप्रकाश भाटिया के अनुसार, '' 'न्यूड का बच्चा' कहानी में वीनू के स्त्री-जीवन का द्वंद्व है, 'आत्म' की तलाश है, लेकिन कहानी का अंत उसकी 'न्यूडिटी' के मूल्य के रूप में अभिव्यक्त करता है, जो उसका 'आत्मसत्य' हो सकता है, ' सामाजिक सत्य' नहीं।''[३०]

'माँ ' कहानी में नायिका की माँ वर्तमान में अतीत की यादें बुन रही है। कहती है, 'गंगाजी में पानी ही नहीं है। जब हम छोटे थे तो गंगाजी में कितना पानी था। आज इन्सान में इन्सानियत नहीं रही, किसी को किसी की परवाह नहीं है।' जब माँ सूखी हुई नदी को देखती है तो उनका मन पिघल जाता है। आँखों से आँसू बहने लगते हैं। नदी की तरह उनके अधर सूख जाते हैं। शायद अब 'गंगा' माँ ने भी सोच लिया है कि जब आदमियों को ही मेरी परवाह नहीं तो मैं आदमियों की परवाह क्यों करूँ? लेखिका ने कहानी में बूढ़ी स्त्रियों की पीड़ा का विस्तार किया है। वैज्ञानिकता में आगे बढ़ते हुए आधुनिकता के कुछ दुष्परिणामों का सामना तो हमें करना ही होगा। निसर्ग से मानव जितना अधिक दूर होता जायेगा और यंत्र के समीप होता जाएगा उतना ही अधिक वह संवेदनशीलता के पर्याप्त सीढ़ी से नीचे उतरता जाएगा। 'ढूँढते रह जाओगे' इस कहानी में अपने बच्चों की हृदयहीनता को कोसते बूढ़े माँ-बाप हैं जो वृद्धाश्रम में हैं। अपने चालबाज बच्चों के क्रूर व्यवहार से दु:खी हैं। ''नगर के बाहर बहुत-से ओल्ड़ एज होम बनें, क्योंकि जो शक्तीवान नहीं, वह किस काम का ! बूढ़ों की स्मृतियों के आधार पर तो समाज चल नहीं सकता। इस पीढी ने जल्दी से जल्दी अपने सुख-चैन में रोड़े की तरह अटके अपने माता-पिताओं से पल्ला छुड़ाया था।''[३१]

संस्कृति की धरोहर जब अखिल मानव जाति अपने साथ लिये चलती है तभी उसका कल्याण होता है। लेकिन जब यह विचार वह अपने से दूर करती है तब लेखिका द्वारा आगे की कहानी रची जाती है। 'न्यूड का बच्चा' कहानी में स्वतंत्र और मुक्त विचारों की नायिका है जो गैरजिम्मेदार, स्वैराचारिणी की तरह अपने शरीर का गलत इस्तेमाल करना चाहती है। उसके विचार हैं कि , 'एक्सपोजर मीन्स सर्कुलेशन, मीन्स मनी, मीन्स पावर, मीन्स फेम! अन्डरस्टैंड ! ' लेखिका ने शिक्षा और संस्कृति के अंतर का पुनरुच्चार करते हुए स्त्री भ्रूण हत्या के घिनौने रूप को 'और अब' कहानी द्वारा फिर एकबार हमारे सामने लाया है। ''कोई बात नहीं, सब उपरवाले का खेल है। तीन बेटियाँ जनीं, चार आधी जनीं कोई मजाक है। शरीर कहाँ तक साथ देगा। रोमी को उबकाई आने लगी ..... जंगली जानवर भी अपनी कौम को नष्ट नहीं करते ..... ''[३२] एक कुत्ता दूसरे कुत्ते का माँस नहीं नोचता, लेकिन इन्सानरूपी यह माँ अपनी ही चार लड़कियों को मार चुकी है। लेखिकाने कहानी द्वारा समाज के अंध:कारमय भविष्यकालीन राह को उजागर किया है।

सामाजिक असंगति की ओर निर्देश करते हुए 'व्यूह' व्यंग्यात्मक कहानी है। 'क्रांति' कहानी भी आधुनिक मानसिकता का पर्दाफाश करती है। नैतिकता से बदले हुए स्वरूप से यह स्पष्ट होता है कि बदलती हुई आधुनिक स्थितियों के साथ ही नैतिकता सम्बन्धी परम्परागत मापदंड टूट गए है। इसके साथ ही जीवन के सारे मूल्य परिवर्तित जीवनमूल्य, अलगाव, बनावटीपन, अकेलापन आदि पर केन्द्रित होकर समूचे विधी निषेधों का उल्लंघन कर परम्परागत जीवन दृष्टि को समाप्त कर गये हैं।

२.१.२.४ शिक्षा संबंधी समस्या :

शिक्षा का कोशगत अर्थ है, '' 'सीख', 'विद्याप्राप्ति', 'प्रशिक्षण', 'उपदेश', 'ज्ञान'।''[३३] सामान्य रूप से हम यह मानकर चलते हैं कि, ''शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य व्यक्तित्त्व का सम्यक् विकास कर जीवन के सार्थक उपयोग की क्षमता प्राप्त करता है। इसके आधार पर नारी शिक्षा का उद्देश्य यह है कि हमारे देश की कन्याएँ अपने अस्तित्त्व का सम्यक् विकास कर सकें अर्थात् अपने मन, बुद्धि और कर्म को ही सही दिशा में प्रवृत्त करने की क्षमता प्राप्त कर सकें और वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार अपने जीवन को अधिकाधिक सार्थक बना सकें।''[३४] क्षमा जी ने अपने साहित्य में वर्तमान शिक्षा के वातावरण पर तथा उनमें होने वाले भ्रष्टाचार को समाज के सामने लाने का प्रयत्न किया है। उन्होंने समाज के सामने यह प्रश्न खड़ा किया है कि आज हमारे समाज में कौन आदर्शवादी रह गया है और यदि कहीं कोई एक-दो आदर्शवादी होते भी हैं तो समाज उन्हें आदर्शवादी रहने नहीं देता। उनके रास्तें में इतनी रूकावटें पैदा करता है कि मजबूर होकर वह अपना रास्ता बदल लेते हैं।

'बुढ़िया कहीं की' कहानी में आज के शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। आज के माँ-बाप बच्चों से भी अधिक घबराए हुए होते हैं। उनके मन में सर्वाधिक ईर्ष्या जागृत रहती है। उनके जीवन का मूलाधार स्पर्धा ही होता है। दिमाग में जहर और जबान पर शक्कर लिए वह समाज में घुलते-मिलते हैं। बनावटी हँसी उनका सबसे अधिक धारदार शस्त्र होता है। इसकी नोंक पर वे किसी भी कीमत पर अपने बच्चों के सिर पर विजय का ताज पहनाने के लिए उत्सुक रहते हैं। ''छोटे

से मैदान में जमा हुए पचासों बच्चे। साफ-सुथरे। मोजे, टाई, निकर शर्ट, शर्ट-स्कर्ट, इंद्रधनुषी हेअर बैंड। सबके सब जीतने को आतुर। हर एक को हर एक से आगे रहना था।''[३५] बच्चों के मन में दौड़ के लिए उमंग होनी चाहिए लेकिन 'मुझे ही' जितना है यह घमंड नहीं होना चाहिए।

'दूसरा पाठ' उपन्यास में भ्रष्टाचार इतना अधिक फैल गया है कि सरकार स्कूलों में पैसा देती है उसकी स्थिती सुधारने के लिए परंतु वह पैसा स्कूल में नहीं लगाया जाता और उस वजह से वहाँ अव्यवस्था बनी रहती है। उसीका विदारक चित्र लेखिका प्रस्तुत करती है ,''पूरी लैब में अव्यवस्था फैली हुई थी। एक कोने में बीकरों का ढ़ेर रोड़ी के ढ़ेर की तरह लगा था। दूसरे कोने में परखनलियाँ इधर से उधर बिखरी थी एसिड़ों की शीशियों के ढ़क्कन खुले पड़े थे।''[३६] सरकारी विद्यालयों में सामान की सही देखभाल भी नहीं होती है। यहाँ तक कि उनकी सही संख्या का भी हिसाब नहीं होता। एक के बाद दूसरा जो भी व्यक्ति आता है वह भी कुछ सुधार करने का प्रयत्न नहीं करता जो जैसा चल रहा होता है वैसा ही चलने देता है। 'छः सालों में बीकर पाँच सौ के पाँच सौ ही थे। परखनलियाँ चार सौ की चार सौ ही थीं। जो भी नया मास्टर आ रहा था वह इसी संख्या पर हस्ताक्षर किए जा रहा था।' गाँव में जाति-भेदभाव आम तौर पर देखा जा सकता है और इसको खत्म करने के बजाय, अध्यापक पढ़े-लिखे होने पर भी अपने स्वार्थ की खातिर इसको बढ़ावा देते हैं। गौतम का खून खौल उठता है जब वह देखता है कि कक्षा में हरिजन और सवर्ण बच्चों को अलग-अलग बैठाया जाता है। यहीं नहीं इस विभाजन में अध्यापकों का पूरा-पूरा योगदान होता है।

शिक्षा को ज्ञान का मंदिर समझा जाता है। लेकिन इस ज्ञानरुपी मंदिर को कुछ स्वार्थी, मतलबी और लालची अध्यापकों के कुछ संबंधितों ने कलुषित किया है। क्षमा जी समाज के सामने शिक्षा क्षेत्र में फैला भ्रष्टाचार को रोकना चाहती है। अध्यापक जो समाज की नींव होते हैं, जो बच्चों के भविष्य निर्माता होते हैं, वह भी कितनी बुरी तरह से इसमें लिप्त हैं। जब निर्माता ही बिगाड़ने वाला हो जाए तो देश का भविष्य कैसे सुनहरा हो सकता है, यदि कोई इसे सुधारना भी चाहता है तो उसे इतना तंग किया जाता है, कि वह भी हताश होकर हथियार डाल देता है।

२.१.२.५ मध्यवर्ग की जीवनशैली :

क्षमा जी का मध्यवर्ग से इतना घनिष्ठ संबंध है कि उनके साहित्य में प्रमुखत मध्यवर्ग की ही अधिकता दिखाई देती है। आज की बढ़ती महँगाई ने मध्यवर्ग को इतना पंगू बना दिया है कि वह इस स्थिती में जीने के लिए मजबूर है। इस परिस्थिति से उबरने के लिए वह प्रयत्न तो करता है लेकिन जिम्मेदारियों का बोझ ढोते ढोते उनका सम्पूर्ण जीवन बीत जाता है। उब, घुटन, संत्रास, भय, अवनति, अकेलापन, संघर्ष, शोषण आदि उसकी निजी समस्याएँ बन गई हैं। समीक्षक रजनी गुप्त के अनुसार, ''जानी मानी कथाकार क्षमा शर्मा के नये संग्रह ' रास्ता छोड़ो डार्लिंग' की कहानियों का संसार खासा सुपरिचित मध्यवर्ग है जिसमें विचरण करते हुए पात्रों के सुख-दुख, आशा-आकांक्षा, टूटते-बिखरते सपने और सरोकारों से हम सभी को किसी न किसी रोज़ गुज़रना पडता है लेकिन रचनाकार की खूबी यह है कि वे इस यथास्थितिवादी स्थितियों का प्रतिवाद करते हुए एक प्रतिसंसार सृजित करने के प्रति कटिबद्ध है।''[३७]

चूँकि क्षमा जी पत्रकारिता से जुड़ी रही हैं और स्त्री विमर्श भी उनकी दिलचस्पी का एक खास केंद्र रहा है, इसलिए इन कहानियों के पात्रों और प्रसंगों के चित्रण में एक विशेष समझदारी नज़र आती है। 'माँ ' कहानी में परिश्रमी और कर्तव्यनिष्ठ ऐसे माँ-पिता है जो अपने बच्चों पर सर्वस्व न्योछावर कर रहे हैं। गणित की प्रमेयों की तरह वह अपने भविष्य के प्रश्न हल कर रहे हैं। ''कैसे भी तुम लोग पल जाओ। फिर तो सब ठीक हो जाएगा। बच्चे अपने रास्ते जाएँ, कमाएँ, तो वे माता-पिता की देखभाल करें, बचपन में जब तुम असहाय थे हमने तुम्हारी देखभाल की, जब हम असहाय हैं, तुम करो।''[३८] 'लव्ह स्टोरीज: १९९४' कहानी में जहाँ मध्यवर्गीय परिवार का प्रेम, आस्था तथा आत्मियता दिखाई देती है वहीं मकान की किस्त, स्कूटर का इंश्योरेंस, इन्कमटैक्स, एलआयसी का प्रीमियम, कामवाली का न आना, बच्चों का रिझल्ट, क्रेच की प्रॉब्लेम, सास-बहू की खटखट, रिटायरमेंट, पेन्शन, पी.एफ. अनगिनत आदि समस्याएँ भी परेशान करती हैं। उनकी कानों में कितनी सारी बातें लगातार गूँजती रहती हैं। लेखिका ने यहाँ मध्यवर्गीय इच्छाओं के प्रेत और विलाप करते यक्ष, हजारो कभी न समाप्त होने वाले यक्ष प्रश्न उपस्थित किए हैं।

'मातृ–ऋण' कहानी में भारतीय नारी का कल का जो स्वरूप था वह आदर्श और विश्वासों से लदा हुआ था। इस कारण सम सामायिक परिस्थितियों से उसका संबंध ठीक नहीं बैठता। पौराणिक मान्यताएँ भी स्त्री को स्वतंत्र सत्ता प्रदान नहीं करती। ''मेरी माँ यह ऋण भी नहीं कबूलती। बेटी के घर रहना पाप है न, वह हमारे यहाँ पानी भी नहीं पीती। वह अब भी मनुस्मृती से नहीं बच सकी है। बचपन में पिता जवानी में पति और बुढ़ापे में लड़कों के घर के अलावा उसे कुछ नहीं दिखता।'' [३९] क्षमा जी की ख़ूबी अतियों में न जा कर एक संतुलित दृष्टिकोण से इस मध्यवर्गीय संसार को देखने की है। लेकिन वे उस स्थिति को स्विकार करने की बजाय उसे बदलने के पक्ष में खड़ी नजर आती हैं।

महात्मा गांधी ने नारी के आदर्श विषय में कहा है कि नारी त्याग की मूर्ती है। ठीक इसी तरह 'कार्ड' इस कहानी में एक माँ है। जो कैन्सर की लास्ट स्टेज में है वह अपने लड़के से लिखने के लिए पेन माँगती है, सहारा देकर वह उन्हें बिठाता है। वह लिख नहीं पा रही है, फिर भी कोशिश कर रही है। आड़ी–तिरछी रेखाओं के साथ उन्होंने वाक्य खत्म किया। 'बेटा पापा का ध्यान रखना, वह बहुत अकेले हैं।' इसतरह से यह सभी रचनाएँ मध्यवर्ग की जीवन स्थितियों के विभिन्न रूपों को दर्शाती है। कभी मध्यवर्ग परिस्थितियों से समझोता करता है तो कभी हकीकत से भयभीत होता है, कभी झूठी शान के पीछे भागता है तो कभी बच्चों के दिखावटी प्रेम से निराश हो जाता है। क्षमा जी ने मध्यवर्ग की सच्चाई, स्वार्थ, शरारत, हरकत, प्रेम, अकेलापन और उनकी मजबूरी को अपनी रचनाओं में समेटने का पूरा प्रयास किया है।

२.१.२.६ महानगर की समस्या :

क्षमा जी का नगरों–महानगरों से बचपन से लेकर अबतक घनिष्ठ संबंध रहा है। महानगर की भयावहता, मकान की समस्या, जगह की तंगी, लूटालूट आदि अर्थात 'रोटी, कपड़ा और मकान' से संबंधित विविध समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य में उतारा है। 'ढूँढते रह जाओगे' कहानी के महानगर में गंदी बस्तियाँ, गरीबी, प्रदूषित जल, बीमारियाँ, अशिक्षा तथा नागरिक सुविधाओं के अभाव का रोना था और यह भी क्या कम था जो 'इस नगर में लोग इंटरॅक्शन, आपसी

मेल-मिलाप में यकीन नहीं करते थे। घर और बाहर की दो अलग दुनिया थी। बिल्कुल मायावी, एक-दूसरे से बेखबर। यहाँतक कि घर के बाहर पिता-पुत्र को नहीं पहचानता था और पुत्र पिता को। उनकी आँखे एक-दूसरे को अपरिचय की नजरों से देखती। पड़ोंसीयों की तो बात ही क्या!'

हताशा से आशा की तरफ सकारात्मक रूख लेती कहानियाँ इसी दौर की दस्तावेज़ है और यही उनकी सबसे बड़ी शक्ति है। 'खेल' कहानी में महानगर में सोया समाज जब गति में शामिल होता है तो वहाँ तेजी से बहुत कुछ बदल जाता है। जैसे कि ''बड़े स्टेशनों पर ऐसा नहीं होता है। वहाँ हर समय आपाधापी मची रहती है। लोगों का समुद्र अचानक राजस्थान के समुद्र की तरह वाष्पित हो जाता है, फिर एक नया समुद्र उग आता है। पल-पल सब कुछ बदलता हुआ। बदलने में करोड़ों वर्ष नहीं लगते। गति से उपजी दिक्कतें, प्रदूषण, भीड़, सब कुछ ... फिर भी लोग बढ़े चले आते हैं ... जीवन की गति में शामिल होने के लिए।''[४०] तेज़ रफ्तार समय की चाल कुचाल को कलमबंद करने की कला लेखिका को बखूबी आती है। 'लघुकथाएँ' कहानी में एक लड़की है, जिसे कुछ लोग लगातार फोन करते हैं। फोनपर भले-बुरे शब्दों में धमकाते हैं। 'ब्लैकमेलिंग' का एक नया तरीका अपनाते हैं। तभी लड़की बिना घबराये,बिना हौसला डगमगाए,अपनी सारी शक्ती जुटाकर चिखती है, 'हरामजादे तुझ जैसे मक्कारों की तलाश में तो मैं बहुत दिनों से हूँ। जा अब तू लीक कर दे। मैं देखती हूँ तू मेरा क्या बिगाड़ लेगा?' लेखिकाने भारत के नारी की अस्मिता को उजागर करने का सफल प्रयास किया है।

'शस्य का पता' उपन्यास में लेखिका ने प्राकृतिक चित्रण द्वारा दिल्ली की निरंतर बढ़ती जनसंख्या, जिसके कारण बढ़ता जा रहा यातायात और फैलता जा रहा प्रदूषण दर्शाया है। महानगर के कुछ बिल्डर अपने फायदे के लिए हरे पेड़ो को काटकर शहर बसा रहे हैं। सारी जगह इमारतें घेर रही है। जिन घरों में दस मनुष्य रहते थे, उसी जगह बीस मंजिल इमारत में दस हजार लोग काम करने लगे हैं। ''एक तरफ पेड़ कटने से ऑक्सिजन कम हुई तो दूसरी ओर बिल्डिगों में आदमियों, कारों और बसों के आ-जाने से प्रदूषण बढ़ा। अपने सिपाहियों को सरकार ने मास्क दे दिए, ... लेकिन हम ..... ?''[४१] फिर भी यह पात्र टूट कर बिखरते या हारते हुए नहीं दिखते। दुखों में भी उनके जीवन की निरंतरता और जिजीविषा बनी रहती है।

'मंडी हाऊस', 'गोष्ठी', 'घर की बातें', 'शहर' आदि कहानियों महानगरीय प्रदूषण, संबंधों के बिखराव, शहरीपन के संत्रास को व्यक्त करती है। महानगरों में जैसे-जैसे औद्योगिक विकास होता जा रहा है, उसी गति से आबादी भी बढ़ती जा रही है। बड़े-बड़े कल-कारखानों के निर्माण होने से युवा पीढी को रोजगार प्राप्त हो रहा है, लेकिन महँगाई, काला बाजार, भ्रष्टाचार, मकान की समस्या आदि ने आम आदमी को तहस नहस कर दिया है। शहरों की भीड़-भाड़, वस्तुओं के बढ़ते दाम से जहाँ वह परेशान है, वहीं अपराध और लूट से भयभीत भी।

२.१.३ सांस्कृतिक विषय-वस्तु :

''शुद्ध आचरणगत परंपरा का दूसरा नाम संस्कृति है'' [४२] संस्कृति को अंग्रेजी में कल्चर कहते हैं। नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार ''संस्कृति का अर्थ है- शुद्धि, सफाई, सुधार। किसी व्यक्ती, जाति, राष्ट्र की वे सब बातें जो उसके मन, रूचि, आचार-विचार, कला-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं।''[४३] आधुनिक हिंदी शब्द-कोश के अनुसार संस्कृति का अर्थ, ''किसी देश या जाति की सामाजिक परम्परागत क्षमताओं और कलात्मक क्रिया-कलापों का उनके जीवन में व्यवहृत रूप, मनुष्य की आंतरिक मानसिकता।''[४४]

निस्संदेह कहा जा सकता है कि संस्कृति का संबंध संस्कार से है, जिसका अर्थ परिमार्जन, नवनिर्मित, सुंदरता, परिष्कार, सुधारना होता है। मनुष्य की सुंदर पोशाक उसे सभ्य नहीं बनाती बल्कि उसके सद्विचार और सद्व्यवहार उसे सुसंस्कृत बनाते हैं। क्षमा जी के कथा साहित्य में परोपकार, संस्कार, मान-मर्यादा और सम्मान, मानवता आदि रूपों में संस्कृति के दर्शन होते हैं।

२.१.३.१ परोपकार :

'छिनाल' कहानी में नि:शुल्क और तत्परता से सेवा कार्य करती नायिका मानव धर्म के प्रति जागरूक है। गाँव में जब हैजा, प्लेग, तपेदिक, चेचक आदि महामारियाँ फैलती हैं, तब गाँव के गाँव खाली हो जाते हैं। लोग अपनों को मरने के लिए छोड़कर भाग जाते हैं। जो लोग महामारी से ग्रस्त है उनका तो अब गाँव में कोई नहीं है, तब नायिका उनका सहारा बनती है। ''तुम अपनी सेवा से

तकलीफ कम करती थीं। कोढ और प्लेग के ठुकराए गए रोगियों को तुम्हारा सहारा मिलता था। उनकी सेवा में तुम रात-दिन एक कर देती थी। न खाने का होश, न पीने का, न सोने का।''[४५] 'कब्रगाह' कहानी में नायिका गिलहरी के बच्चे को जीवनदान देती है। जब गिलहरी का एक छोटा सा बच्चा पेड़ से उसकी गोद में आ पड़ा तब घबराहट में उसकी साँस जोर से चलने लगी। उसी वक्त साक्षात् यमदूत की तरह एक कौआ उसके सिर पर से उड़ान भरता निकल गया। डर के मारे उसने आँखे बंद कर ली, और गिलहरी के बच्चे को दूसरी हथेली से ढ़क लिया और इसप्रकार गिलहरी के बच्चे की जान बचा ली। लेखिका यहा स्पष्ट करती है कि, नैतिकता और संवेदनशीलता का नाता अटूट होता है। मानव अगर इनसे जुड़ जाए तो उसके मन में स्नेह का झरना बहने लगेगा, जिसमें विश्व का हर जीव डुबकी ले पाएगा।

'फादर' कहानी में नायक अनाथालय की लड़कियों को अपना नाम देते हैं, जिससे वे लडकियाँ बदनामी से बचकर अपने उज्वल भविष्य की ओर आगे बढ़ सके। ''असली पिता तो तुम्हारे फादर डेविड ही हैं, जिन्होंने तुम्हें पाला-पोसा बड़ा किया। वह नहीं जिसने तुम्हारी माँ को धोखा दिया। उसे मजबूर किया कि वह दुनिया के डर से तुम्हें अनाथालय में छोड़ दे।'' [४६] ये कहानियाँ आज के संक्रमणशील समाज का एक ऐसा आईना है, जिनमें हर वर्ग के लगभग हर पात्र का चेहरा बखूबी देखा जा सकता है। 'शस्य का पता' उपन्यास में एक सहृदय स्त्री मरते हुए कुत्ते को जीवनदान देती है। वह माँ की तरह उसे मौत के मुँह से खींच लाती है। ''हरियाणा के उसके छोटे शहर में रेत पर पड़ा वह कालू कुत्ता। पूरी-की-पूरी जीप उसकी रीढ़ की हड्ड़ी को तोड़ती निकल गई थी, फिर भी एक दयालु स्त्री ने उसकी जान बचाई। नियम से खाना-पीना दिया, दूध पिलाया। कालू के सिर पर वह स्त्री माँ की तरह हाथ फेरती थी।'' [४७]

क्षमा जी की उक्त रचनाओं में किसी न किसी पात्र के माध्यम से परोपकार, मानवीयता की भावना दिखाई देती है, कुछ लोग अपने स्वार्थ हेतु जीवन जीते हैं, किन्तु कुछ नि:स्वार्थ लोग दूसरों पर उपकार करने और उन्हें खुश देखने में अपना जीवन सार्थक समझते हैं।

२.१.३.२ मान मर्यादा और सम्मान :

'छिनाल' कहानी में नायिका ने विराट दर्द अपने आप में समेटे हुआ है। सारे संस्कृति के रक्षकों की नींद हराम हो गई है क्योंकि एक विधवा स्त्री गर्भवती हो गई है। ''तुम्हारा गर्भ अवैध था। जो धर्म कण-कण में भगवान खोजता फिरता है, वह एक जीते-जागते, दुनिया में आँख खोलने वाले बच्चे और उसकी माँ को जान से मारने में दो पल नहीं लगाता।''[४८] समाज अपने मान-मर्यादा के खातिर उसे जीते जी मार डालता है। यह कहानी समय की रफ्तार से भी ज्यादा तेजी से बदलते संबंधों और पीढी अंतराल को सशक्त रूप से प्रस्तुत करती है।

'पापा के एपिसोड़ में बेटा' कहानी में स्वाभीमानी नायिका अपने विश्वासघातकी पति को छोड़ अपने बेटे के सहारे पूरी जिंदगी काट देती है और जिंदगी के शाम में वहीं बेटा अपने पापा की शानों-शौकत देख उनके पास जाने की जिद करता है तब माँ कहती है, 'बाबू, किसी भी ऐशो आराम के मुकाबले मुझे आत्मसम्मान प्यारा है। मैं वहाँ नहीं जाऊँगी ! शुभा ने दृढ़ता से कहा।' शुभा इस चक्रव्यूह से निकलने की छट्पट्राहट् भी करती है किंतु वह अंतत: असफल होती है।

'समाप्त पीढी' कहानी में नायिका की माँ पति के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है, जो अपने पति के पीछे न दवा खाती है न अच्छी खुराक। वह कहती है, ''मैं आजकल की औरतों की तरह नहीं हूँ जो पति के रहते दस खसम कर लेती है। मेरी सारी इच्छाएँ तो उनके साथ चली गई। शास्त्रों में जो लिखा है वही ठीक है। मैं उनके (पिता के) बनाए सिद्धांतों को नहीं तोड़ सकती।''[४९] भारतीय संस्कृति में बड़ों की इज्जत करना, आदर और सम्मान करना, पैर छूकर प्रणाम करना आदि संस्कार सम्मानसूचक हैं। जिस परिवार में इन मूल्यों का पालन होता है वहाँ सद्भावना, प्रेम, विश्वास और स्नेह विकसित होता रहता है। आज की युवा पीढी पर पाश्चात्य संस्कृति का इतना गहरा प्रभाव पड़ रहा है कि उनका अनुकरण करने में हमें उच्चताबोध होता है। अपने आदर्श को सुरक्षित रखने के लिए हमें अपनी संस्कृति को स्वीकार करना होगा।

२.१.३.३ मानवता :

'ट्यूबेक्टामी' कहानी में कुछ लोग ऐसे दिखाई देते हैं जो नि:स्वार्थी रूप से पेड़ों की देखभाल कर उनका अपने बच्चों की तरह पालन-पोषण करते हैं। ''तुम्हें अपने घर में मनीप्लांट लगाना हो तो ले जाना। बहुत झाड़ हो गए हैं। कमबख्त। इस अमरूद का भी कोई फायदा नहीं। यही सोचकर चुप रह जाती हूँ कि हरा पेड़ है। हरे पेड़ पर कुल्हाड़ी चलाना अपने बच्चे की गरदन काटने जैसा लगता है।''[५०] 'मोबाइल' उपन्यास में नायिका के अड़चन में आदित्य उसे मदद करता है तब वह नवीन से कहती है, ''फिर भी क्या, सबकुछ जानते हुए आदित्य ने जिंदा मक्खी कैसे निगली? बहुत बारीक फर्क है नवीन पिछड़ेपन और इंसानियत में। स्वार्थी होने और दूसरे की मदत करने में। आदित्य ने दूसरा रास्ता चुना।''[५१] इससे तो हम यहीं अनुमान लगा सकते हैं व्यवहार अच्छा हो तो बुरे समय में दूसरे भी अपने हो जाते हैं। मानवता की सच्ची परीक्षा तभी होती है, जब मनुष्य दु:ख के क्षणों में दूसरों के काम आता है।

२.१.४ धार्मिक विषय-वस्तु :

भारत धर्म, रूढ़ि, परंपराओं का देश है। यहाँ विभिन्न धार्मिक रीति-रिवाजों और परपरांओं को आस्था और विश्वास के साथ निभाया जाता है। यहाँ धर्म को पूजनेवाले श्रद्धालु भक्त भी हैं और धर्म की आड़ में झूठ, फरेब करनेवाले दंभी और पाखंड़ी पुजारियों की भी कमी नहीं है। प्राचीन काल में धर्म का इतना विकृत रूप नहीं था जितना आज दिखाई देता है।

२.१.४.१ अंधश्रद्धा और लूटमार :

साहित्यकार समाज को खुली आँखों से देखता है। वह धर्म की विकृतियों को समझता बूझता है और इनकी अभिव्यक्ति अपने साहित्य में करता है। यही कारण है कि साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। क्षमा जी ने धर्म की विकृतियों को अपनी विधाओं के माध्यम से गति दी है।

'एक शहर अजनबी' कहानी में अंधश्रद्धा के भौंड़े रूप को प्रस्तुत किया है। कमरे में बैठी स्त्री हिन्दु शास्त्र और कर्मकांड से इहलोक और परलोक की व्याख्या कर रही है ... आत्मा अमर है।

न वह पैदा होती है, न मरती है, न उसे काटा जा सकता है। वह निर्गुण है, निराकार है। लेकिन उसी समय उसी मृत व्यक्ति के लिए ''रजई, गद्दे, गिलास, आटा, दाल-चावल, गहने-कपड़े यह सब यह स्त्री ग्रहण करे। एक बेटा गर्व से बताता है- सोने की चेन, अंगूठी, लौंग दी है।'' [५२] लेखिका यहाँ प्रश्न उठाती हैं, किसी की मृत्यु के उपरांत हम खोखले रीति-रिवाजों, आडंबरों और दिखावों से जितना चिपकते हैं, उतना मृत्यु से पहले की जिंदगी से क्यों नहीं ? जाति, धर्म और सांप्रदायिकता के खिलाफ आवाज उठाती एक और सशक्त कहानी है 'कौन है कि जो रोता है' जिसे पढ़कर मौजूदा दौर के तीखे सवालों की लपट से अंत:करण झुलस जाता है ।

'सुबह से शाम तक' कहानी में अंधश्रद्धा के विविध रूप देखने के लिए मिलते हैं। भारत के सर्वाधिक स्त्री-पुरूष अंधश्रद्धा से घिरे हुए हैं जिससे स्वार्थी, लालची पंडे-पुजारी आदि उनकी अंधश्रद्धा और मजबूरियों का फायदा उठाकर अपनी तिजोरी भरते रहते हैं। महानगर के धार्मिक लोग भी दंभी पुजारियों की चपेट में आकर पुण्य की आशा में मुँह माँगा दाम देकर उन्हें खुश कर देते हैं। यहाँ पर एक रूढ़िवादी पुराने विचारोंवाली महिला दर्शाई गयी है जो अपने बेटी से कहती है, ''मित्तू! बंदरवाले को आटा देकर कहना कि वह अपने माँगे हुए आटे में से थोड़ा-सा टेनिया में ड़ाल दे। वह माँ की बात मानकर ऐसा ही करती थी और बंदरवाला मुस्कुराते हुए थोड़ा आटा उसे दे देता था। माँ उस आटे को सारे आटे में मिला देती थी। उसका विश्वास था कि इस आटे को खाने से पेट की बिमारीयाँ नहीं होती।'' [५३] 'मास्टर तोताराम' कहानी में धर्म के प्रचंड प्रभाव को प्रस्तुत किया गया है। यहाँ पर अंधविश्वासी मास्टर तोताराम जी को दिखाया गया है, वह गाहे-बगाहे जनेऊ को बिना कानपर चढ़ाए पेशाब करने बैठ जाते। उसके तुरंत बाद लोग उन्हें बेतहाशा बाजार की तरफ भागते देखते क्योंकि 'पवित्र जनेऊ' अगर गले में न पहना हो तो ग्रहों की छाया पडने का डर रहता है और क्या पता कब शनि की वक्र दृष्टि हो जाए, कब मंगल अनर्थ कर बैठे।

इन रचनाओं में अंधश्रद्धा, व्रत-उपवास, पाप-पुण्य जैसी मान्यताओं और रूढ़ियों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। लेकिन साथ ही क्षमा जी जीवनानुभव तर्क, सामाजिक स्थितियों एवं परिवेश के माध्यम से धर्म को नया रूप देने का प्रयास कर रही है। उनकी दृष्टि में धर्म आज रूढ़ नहीं रहा है , उसमें आज गतिशीलता भी आ गई है।

२.१.४.२ ईश्वर के प्रति आस्था अनास्था :

आज के समाज में ईश्वर के संबंध में किस प्रकार मान्यताएँ बदल रही है, यह हमें जहाँ कहाँ दिखाई देता है। क्षमा जी का साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। क्षमा जी ने नारी मन की विभिन्न भावनाओं का चित्रण किया है। साथ ही आज पढ़ी लिखी युवतियों के मन में ईश्वर के प्रति बदलती मान्यताओं का चित्रण भी किया है। 'माँ' कहानी में एक सुशिक्षित, विशेषज्ञ डॉक्टर की ईश्वर के प्रति आस्था को दर्शाया गया है। वे डॉक्टर टी.वी. इंटरव्यू में कहते हैं, 'मनुष्य को यदि ईश्वर का सहारा न हो तो आधे लोग हार्ट अटैक से मर जाएँ।' इच्छा मात्र से भगवान सम्पूर्ण जगत का उद्धार कर सकते हैं। योग दर्शन में क्लेश विधाक आशय आदि से ऊपर उठे पुरूष विशेष को ईश्वर कहा गया है। इसी ईश्वर पर अटूट विश्वास बनाए 'बूढ़ी औरत' कहानी में एक बेटी ईश्वर से याचना करती है, ''हे ईश्वर मेरी माँ को सुखभरी मौत देना। वह किसी की आश्रित होकर न मरें। वह कोई दु:ख न झेले। मैं उसकी बेटी। ईश्वर से उसके लिए जीवन नहीं एक सुखभरी मौत माँगती हूँ।"[५४]

'पिता' कहानी में ''कुछ बच्चों ने मिलकर अखंड रामायण का पाठ शुरू किया और रात के नौ बजते-बजते सारे बच्चे नींद में खो गए थे। बाबुजी ने उसे घोर पाप मानकर जैसे-तैसे बालकांड को पूरा करके पाठ समाप्त कराया था।'' [५५] इसतरह बाबूजी की ईश्वर पर असीम श्रद्धा है, पर साथ ही वे ईश्वर की अवकृपा से डरते भी हैं।

क्षमाजी देश की धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितीयों के प्रति पूर्णत: सजग है। इन परिस्थितीयों का चित्रण उन्होंने अपने रचनाओं में किया है। उन्होंने अपने साहित्य में अंधविश्वास को नकारते हुए परंपरागत रूढ़ियों एवं मूल्यों में आस्था को स्वीकारा है। परिस्थितीयों के अनुकूल रिश्तों की गरिमा को स्वीकारा है तथा व्यवहारिक जीवन को महत्त्व दिया है।

२.१.४.३ ज्योतिष :

'काहे को ब्याही बिदेस' कहानी में ज्योतिष विद्या के प्रगाढ पंडित के बेटी का घर-संसार बिखर जाता है। तब लोग उनकी हंसी उडाते हैं,''लोगों ने मजाक उडाया कि वह तो इतने बड़े ज्योतिष की लड़की थी। ज्योतिषी बाप होकर भी उनका भविष्य नहीं पढ़ सका!''[५६] लेखिका

मध्यवर्गीय प्रचलित समस्याओं से पूरी ताकत से टकराती हैं, इन प्रसंगों में गहरे उतरकर विवेकसम्मत समाधान भी सुझाती हैं। 'एक अधुरी प्रेम कहानी' में इम्तिहान के चिंता से बच्चों के चेहरे सूखे जा रहे हैं। शुभ-अशुभ की चिंताओं ने मन को घेर लिया है और साथ ही अखबारों में छपे भविष्यफलों पर इनकी निगाहें तेज घोडे की तरह दौडती हैं। इसलिए ''इन दिनों भविष्यफलों में स्टुडेंट्स के लिए अलग से एक वाक्य होता है, आप इम्तिहान में अच्छा करेंगे तो सफलता मिलेगी, थोडे श्रम की जरूरत है।''[५७] 'शस्य का पता' उपन्यास में जानी तोते के बारें में तर्कद्वारा कुछ बातें बताता है तब तोता कहता है, 'पक्के ज्योतिषी मालूम होते हो। क्या यह बात पता थी कि एक दिन आसमान में इस तरह टाँग दिए जाओगे?'

उपर्युक्त रचनाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि क्षमा जी की रचनाओं में नई पीढी भी इस अंधश्रद्धा से अछूती नहीं है। साथ ही कहीं युवा पीढी और सुशिक्षित लोगों का ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास प्रदर्शित है तो कहीं प्रचलित रूढ़ियों का विरोध भी दर्शाया गया है। ''कुल मिलाकर ये कहानियाँ मानवीय रिश्तों और बदलते समाज की असंगतियों का बहुत यथार्थवादी विश्लेषण करती हैं।''[५८]

२.१.५ आर्थिक विषय-वस्तु :

क्षमा जी की अधिकांश रचनाएँ मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग पर आधारित हैं। आज की बढ़ती महँगाई ने सामान्य मनुष्य का जीवन तहस-नहस कर दिया है। उच्चवर्ग आर्थिक दृष्टि से मजबूत होने के कारण निश्चिंत ही रहता है। मध्यवर्ग महँगाई और वेतन दोनों से समझौता करने में ही संपूर्ण जीवन बीता देता है। निम्नवर्ग आर्थिक अभाव के कारण विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है। उसे दो समय का भोजन भी प्राप्त नहीं होता। आज की इस भयावह स्थिति में अपने पेट की भूख मिटाने के लिए वह अनैतिक कृत्य करने से भी पिछे नहीं हटता। इस कृत्य के पिछे प्रमुख कारण है लाचारी, बेकारी और भूख।

२.१.५.१ आर्थिक विपन्नता :

आर्थिक विपन्नता मनुष्य को किस हद तक मजबूर बना देती है इसका उल्लेख क्षमा जी ने अनेक रचनाओं के माध्यम से किया है। 'कैसी हो सुश्मिता' कहानी में सुनिता अर्थाभाव के कारण अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं की पूर्ती करने में असमर्थ है, लेकिन जब वह मॉडलिंग का गलत रास्ता अपनाती है तब पुलिस उसे पकडकर ले जाती है। उसकी माँ नायिका से आकर कहती है, ''लौंडिया ने मुँह काला करा दिया। फोटू उतारने वाले ने झाँसे में लेकर उसके गंदे-गंदे फोटू खींच लिए। कहीं से पुलिस को खबर हो गई। वह कुतिया का जाया पकड़ा गया सो पकड़ा गया, सुनिता की भी जिंदगी खराब कर दी।''[५९] आज का युग अर्थप्रधान है। परिवार में भी अर्थ की सत्ता महता है। यहीं विचार 'प्रेम के बीच' कहानी के रमा के भी है। उसका मानना है, पैसा न हो तो इमोशंस की रोटी को कितने दिन बेलकर पका सकते हैं। इमोशन्स की लक्झरी पालने के लिए पैसा ही चाहिए।

'एक शहर अजनबी' कहानी में आर्थिक विपन्नता से मजबूर मध्यवर्गीय जीवन स्पष्ट हो रहा है। जहाँ महँगाई के वजह से आवास की समस्या गंभीर होते जा रही है। ''दिद्या बहुत बूढ़ी थी। चली गई, सबको जाना है। उन्हें भी जो उस वक्त इस चिन्ता में थे कि दिद्या का कमरा किसे मिलेगा कमरे के लिए कितने तर्क, कितनी मजबूरियाँ, कितनी परेशानियाँ।''[६०] एक कमरे ने दिद्दा की ९४ वर्ष की स्मृती को झाड़ने-पोंछने में कुछ भी वक्त नहीं लगाया। आज के ताकद और पैसे पर टिके समाज की परतें लेखिका बड़ी हुनरमन्दी के साथ उघाड़ती है और कई बार उनकी कहानी कुछ ऐसा मासूम-सवाल पेश करके खत्म होती है जिसका उत्तर मासूमियत से देना सम्भव नहीं होता।

'समाप्त पीढी' कहानी में एक गरीब माँ अथक, निरंतर परिश्रम कर अपने बेटे के उज्वल भविष्य के लिए दिन-रात कपडे सिलाई का काम कर गृहस्थी का बोझ ढोती है। वह आत्यंतिक दारूण आर्थिक स्थिती का मुकाबला करते हार नहीं मानती। 'माँ ने भाई को आगे पढ़ने के लिए दिल्ली भेजा था। हालांकि इसके लिए उसे बहुत आर्थिक संघर्ष करना पड़ा था। काम पाने के लिए लोगों की झिडकियाँ सुननी पड़ी थीं। एक बार सिले कपडों को ग्राहक की इच्छानुकूल बनाने के लिए दो-दो, तीन-तीन बार सिलाना पड़ा था।'

आर्थिक विपन्नता के कारण मनुष्य किन परिस्थितीयों से लड़ता है, इसका बड़ा मार्मिक चित्रण क्षमा जी ने किया है। लेखिका एक तब्दीली की माँग करती है जो वास्तविक जगत में भी हो सकती है, यहीं उनकी कहानियों के डाँडे वास्तविकता से मिलते नज़र आते हैं।

२.१.५.२ बेरोजगारी :

क्षमा जी ने अपनी रचनाओं में बेरोजगारी के कारण हताश शिक्षित नवयुवकों की समस्या को भी प्रस्तुत किया है। आज समाज में यह असाधारण समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। मध्यवर्गीय माता-पिता अपने बच्चों की उच्च शिक्षा हेतु पानी की तरह पैसा खर्च करते हैं। लेकिन उत्तम श्रेणी और गुणवत्ता के आधार पर भी नौकरी के चक्कर में दर-दर की ठोंकरे खाकर हताश नवयुवक अपना संतुलन खो बैठते हैं।

'वह जो एक भाई था' कहानी में एक बेरोजगार बेटे के पिता की अनकही चिंता दिखाई देतीं है ''पता नहीं आज क्या करके आए? कौन-सा नया गुल खिलाए? कई बार लगता जो लड़का दूसरों के दु:खों से इतना बेचैन हो उठता है, मारा-मारी पर उतर आता है, चोट-फेंट की परवाह नहीं करता वह अपने घर, अपने माता-पिता के दु:खों को क्यों नहीं समझता ? पिता का तीसरा हाथ क्यों नहीं बनता?''[६१] 'घिराव' कहानी में नायक नौकरी के लिए अनेक कार्यालयों में चक्कर काटता है लेकिन रोजगारी में असफलता और पारिवारिक मजबूरियों के तहत आखिरकार वह शराब के दलदल में फँस जाता है और फिर 'सौ रूपए देना यार बिबी बिमार है' कहकर हर किसी से पैसे उधार माँगता है। जब सामनेवाले अपने दिए हुए पैसे माँगने आते हैं, तो कहता है, 'क्यों ताने मार रहा है यार ! नौकरी मिलने दे ! एक-एक पाई न चुका दूँ तो कहना।' लेखिका में एक तंज़िया अंदाज़ है जो कभी चिकोटी काटता है तो कभी चिहुँकने पर मजबूर कर देता है।

'यहीं कहीं है स्वर्ग' कहानी में जहाँ आज के नवयुवकों को रोजगार नहीं मिल रहा है वहीं प्रौढ़ आदमी को बेरोजगारी किस तरह मजबूर कर देती है यह दर्शाया गया है। ''जिन लोगों के साथ आपने जीवन गुजार दिया, अपनी उम्र के चार दशक दिए, उन्हें छोडकर आप कहाँ जाएँगे ! किसके पास? चुस्ती और स्फूर्ती की दुनिया में आपके थरथराते हाथों को काम देगा कौन ?''[६२] 'अनुभव

जी' कहानी में नायक को गाँव से लगाव तो है लेकिन वहाँ पर रोजगारी न होने के वजह से वह मायूस है। वह कहता है कि, 'गाँव अगर रोजगार देता तो मैं एक बार क्या हजार बार लौट जाता। वहाँ जाकर क्या करूँ। अपने बिबी-बच्चों को भूखा मार दूँ?' मजबूरी आदमी को इस तरह बेबस बना देती है कि जिंदगी मौत से भी बत्तर नजर आने लगती है।

आज पढ़े-लिखे युवकों के लिए बेरोजगारी बड़ी ही चिंताजनक समस्या बन गई है। अपनी योग्यता के आधार पर ऊँची डिग्री लेकर भी नौकरी मिलना बहुत मुश्किल ही नहीं नामुमकीन हो गया है। उच्चवर्गीय लोग रिश्वत देकर बड़ी-बड़ी नौकरियाँ हासिल कर लेते हैं और सामान्य युवक योग्यता होते हुए भी पैसों के अभाव में वहीं रह जाते हैं।

२.१.५.३ महँगाई :

निरंतर बढ़ती महँगाई से निम्नवर्ग अत्याधिक ग्रसित है। जिस गति से वस्तुओं के दाम बढ़ने से महँगाई बढ़ी है, उस गति से वेतन में वृद्धि नहीं हुई है। आँसू पोंछने के लिए महँगाई भत्ते में कभी दस-पंद्रह रूपए बढ़ भी गए तो उससे कुछ अंतर नहीं पड़ता। किसी न किसी वस्तु पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सरकारी कर लग जाने से रूपया जैसा आता है, वैसा ही चला भी जाता है।

'अगली सदी की लड़की' कहानी में महँगाई के इस जमाने में इतने कम वेतन में नई गृहस्थी का बोझ ढ़ोना पति-पत्नी दोनों के लिए चिंता का विषय बन जाता है और इसी चिंता के कारण नायिका की होनेवाली बहू उनसे कहती है, ''लेकिन आन्टी, अगर हम अलग रहेंगे तो हम में से एक की तनख्वाह तो किराए में चली जाएगी , फिर मम्मी-पापासे आपने कहा कि आप दहेज में कुछ नहीं लेना चाहतीं। तो मेरी और बकुल की तो जिंदगी घर बनाने में ही निकल जाएगी।''[६३] 'गंदगी' कहानी में दिल्ली शहर की बढ़ती महँगाई के कारण चिंताजनक स्थिती का स्पष्ट उल्लेख है। महानगर की चकाचौंध लोगों को अपनी ओर आकर्षित अवश्य करती है, किन्तु वहाँ की महँगाई उन्हें खिन्न और बेचैन भी कर देती है। औरतों के बीच के संवाद यही स्पष्ट करते हैं, 'बजेट में तो सबकुछ ही बढ़ गया। कुछ भी तो नहीं छोड़ा। क्या आदमी खाए, क्या बचाए? दवाईयाँ भी महंगी हो गई, बस के किराए भी बढ़ गए, सस्ता क्या है?'

लेखिका 'व्यूह' कहानी में नौकरीपेशा मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक वास्तविकता तथा तंगी को रेखांकित करती है। जिस तरह महँगाई बढ़ती जा रही है उस तरह वेतन नहीं बढ़ पा रहा है, इस विषय में ''मॅनेजमेंट का कहना था कि वह कर्मचारियों का महंगाई भत्ता नहीं बढ़ा सकता। महंगाई सरकार बढ़ाती है तो मॅनेजमेंट मुनाफे में हिस्सा क्यों दे।''[६४] यह चित्र स्पष्ट हो रहा है। कम तनख्वाह और बढ़ती महँगाई के कारण यह परिवार अपनी आवश्यकताओं, भावनाओं और इच्छाओं को किस तरह कुचल डालता है, इसका बड़ा ही सजीव चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया गया है।

बाजार की चकाचौंध हो या फिर उदारीकरण और उसके प्रतिफल इन सब की झाँकी कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष रूप से हमारे सामने उभरती है और अक्सर हमें विचलित कर जाती है। आज महँगाई का मुँह सुरसा की तरह फैलते ही जा रहा है और उसी का परिणाम है कि आवास की समस्या से परेशान संयुक्त कुटुंब अब विभक्त हुए जा रहे हैं। यही चित्र हमें 'घर की बातें' कहानी में दिखाई देता है- ''अब हम लोगों के परिवार इतने बड़े हो चुके हैं कि एक-एक कमरे में गुजारा होना मुश्किल है। क्यों न हम ऐसा करें कि इस मकान को बेच दें। जितना-जितना पैसा हम सबके हिस्से में आएगा उससे हम सब अपना-अपना एक-एक फ्लैट तो खरीद ही लेंगे, बल्कि बैंक में भी थोड़ा-बहुत जमा कर सकेंगे।''[६५]

इसतरह से हम कह सकते हैं, आर्थिक विपन्नता मनुष्य को अनैतिक कृत्य करने के लिए मजबूर करती है, तो महँगाई उसे चिंतित करती है। इस दलदल में बेरोजगार आदमी बुरी तरह से पिसता चला जाता है।

२.१.६ राजनीतिक विषय-वस्तु :

राजनीति को अंग्रेजी में Politics कहते हैं। किंतु वर्तमान युग में इस शब्द को भ्रष्टाचार का पर्याय माना जा सकता है। स्वातंत्र्यपूर्व राजनेताओं में इतना स्वार्थ और लालच नहीं था, जो आज के नेताओं में दिखाई देता है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व राजनेताओं का ब्रिटिश सरकार से संघर्ष और तनाव था किंतु उनका एकमात्र उद्देश्य था-स्वतंत्रता प्राप्ति। आज स्थिति पूरी तरह से विपरित है। आज के

अधिकांश नेता लोग झगड़ते हैं, अपने हित के लिए। अपना स्वार्थ साधने के लिए वे अमानुष कृत्य करने से भी पीछे नहीं हटते। चुनाव के समय गली–मोहल्ले में जाकर पैसों का लालच दिखाकर गरीब जनता से वोट हासिल करते हैं। आज बड़े अधिकारी से लेकर चपरासी तक इस भ्रष्ट राजनीति से कोई अछूता नहीं रहा है।

२.१.६.१ राजनेताओं की स्वार्थ नीति :

क्षमा जी ने वर्तमान युग में चारों ओर व्याप्त प्रशासनिक व्यवस्था का यथावत रेखांकन और प्राकृतिक चित्रण द्वारा राजनीति पर गहरी चोट की है। 'शस्य का पता' उपन्यास उनके लेखन की इसी विशेषता को दर्शाता है। 'घिराव' भी एक राजनैतिक व्यंग्य की कहानी है जो तथाकथित मार्क्सवादियों की थोथी आदर्शवादित की कलई निर्भिकता से खोलती है।

'मास्टर तोताराम' कहानी में नेताओं की स्वार्थी और चापलूसी वृत्ति को चित्रित किया है। ''धीरे–धीरे मास्टर तोताराम स्कूल के हेड़मास्टर हो गए थे क्योंकि उस प्रदेश के नेता लोग उनके संस्कृत के ज्ञान से बेहद प्रभावित थे। देवभाषा संस्कृत को जानने वाले का यदि जल्दी प्रमोशन नहीं किया तो देवता नाराज हो जाएँगे और देवताओं की उतनी ही कृपा नेताओं को चाहिए थी, जितनी मास्टर मोताराम को।''[६६] 'नायक' कहानी में धर्म, गुंडागर्दी और राजनीति का अनोखा मेल दिखाई देता है। जग्गा नामक गुंडा, जिस पर बलात्कार का आरोप है साथ ही वह 'हिस्ट्रीशीटर' है और उसके खिलाफ चौदह केस है। कुछ दिन बाद खबर आयी कि पंजाब में होनेवाली हत्याओं के विरोध में प्रचंड प्रदर्शन हो रहे हैं। इसके लिए एक समिती भी गठित की है। समिती के महामंत्री के स्थान पर जगदीश कुमार एवं जग्गा का नाम लिखा है। इससे यह चित्र स्पष्ट होता है कि कल के भक्षक आज रक्षक के रूप में दिख रहे है।

'शस्य का पता' उपन्यास में जो बेइमान लोग हैं वही समाज में अपना स्थान बना पाते हैं। उनके लिए किसी चीज का महत्त्व नहीं हैं। वह हर काम पैसे से कर लेते हैं। ''बेईमानी का अर्थ है ताक़तवर होना। जो ताक़तवर है वह कानून की धज्जियाँ उड़ा सकता है। शक्तिशाली और कानून दोनों मिलकर कमज़ोर की गर्दन पकड़ते हैं। ओह नो पॉलिटिक्स प्लीज।''[६७] उपन्यास में राजनीतिक

पार्टियों तथा धार्मिक नेताओं पर भी व्यंग्य किया है कि किस प्रकार ये लोग सत्ता में रहने के लिए गलत काम करते हैं। राजनीतिक पार्टियाँ अपनी सत्ता चले जाने की आशंका से भयभीत रहती हैं। इसलिए वे अपने भय दूसरों पर आरोपित कर देती हैं। धार्मिक नेताओं को अपना हक खत्म होने का खतरा समाता है। उन्हें लगता है कि लोग चाहे ईश्वर से न ड़रे, पाप और बेईमानी से न ड़रे, लेकिन उनसे और उन द्वारा दूसरे धर्म की बताई गई काल्पनिक दादागीरी से जरूर ड़रें। लेखिका ने इस कदर समाज के आधारस्तंभ के दुर्गति को स्पष्ट किया है। जो दिल देहलाकर आँखों में वास्तव का अंजन ड़ालता है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि चुनाव के समय जो नेता या मंत्री जनता से हाथ जोड़कर वोटों के लिए याचना करता है, वही चुनाव जीत जाने पर कोई पद पा लेने के पश्चात् अकड़ और अभिमान से सर उँचा करके चलते हैं। सफेद कपड़ों के पीछे स्वार्थ और कपट का चोला पहन कर नीच हरकत करने से भी वे बाज नहीं आते।

२.१.७ मनोवैज्ञानिक विषय–वस्तु :

मनोविज्ञान शब्द 'मन' और 'विज्ञान' इन शब्दों से बना है। मनोविज्ञान अंग्रेजी 'सायकोलॉजी' शब्द का पर्यायवाची रूप है। नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार मनोविज्ञान का अर्थ है, ''वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों का या मन में उठने वाले विचारों आदि की मिमांसा होती है।'' [६८]

मनोविज्ञान यह विषय है, जिसमें मानसिक पक्ष से संबंधित विभिन्न तथ्यों व तत्त्वों का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति से किया जाता है। अस्सी वर्षीय बूढ़ी माँ और अपनी दस वर्षीय बच्ची के रिश्ते के बीच अपने आप को कथा लेखिका किस स्थिति में पाती है उसका बड़ा ही मनोवैज्ञानिक चित्र 'माँ' कहानी में खींचा गया है। यहाँ कहने की आवश्यकता नहीं है कि मानसिक पक्ष के अंतर्गत मनुष्य की सभी वृत्तियों, प्रवृत्तियों, अनुभूतियों, चेष्टाओं, क्रियाओं आदि का समावेश होता है जिनमें प्रमुख हैं– काम, संशय और अहं।

२.१.७.१ काम :

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्राईड़ ने अचेतन मन की संपूर्ण शक्तियों का मूल आधार मानव की दमित काम वासना को माना है। मध्यवर्ग ने अपने समाज को जिन नैतिक नियमों तथा बंधनों से जकड़ा हुआ है, उनमें सेक्स संबंधी बंधन प्रबलतम् है। क्षमा जी की बहुत-सी रचनाओं में युवक युवतियों की सेक्स संबंधी भावनाओं, यौनाकर्षण और विवाहपूर्व यौन-संबंध आदि को उजागर किया गया है। विवाहपूर्व पुरूष या स्त्री में काम प्रवृत्ति अधिक प्रबल हो सकती है, जिसकी पूर्ति ऐसे संबंधों से की जा सकती है और कालांतर में यही प्रवृत्ती यौन समस्या का गंभीर रूप धारण कर लेती है।

'सेमिनार' कहानी में अफसरों की वृत्ति के बारे में बताया गया है जो ठंडे मुस्कुराते, क्रूर और बाल की खाल निकालते एक ही सोच में ढले होते हैं। जब नायिका डिरेक्टर से मिलने की इच्छा जताती है तब उसे सावधान किया जाता है, 'जा रही है उनके साथ। ध्यान रखना। सैक्स इस उम्र में भी उनका प्रिय सबजेक्ट है।' 'थैंक्यू सद्दाम हुसैन' कहानी में तलाकशुदा नायिका का बॉस अपनी वासना की पूर्ति के लिए उसके सामने खुलेआम प्रस्ताव रखता है, 'आफिशियल जिंदगी में हम परिवार को नहीं लाते। बुलाओ तो फिर रात-भर का मेहमान बनाना पड़ेगा।' इन सबसे सफलतापूर्वक टकराते हुए, ''नितू आखिरकार अपनी पसंद की जिंदगी चुन ही लेती है। इस तरह के चुनाव का साहस आज की महिलाओं ने कैसे पाया-इस प्रक्रिया और संघर्ष को बखूबी क्षमा शर्मा ने पाठकों को नजर की है।''[६९] 'मोबाइल' उपन्यास में नायक नायिका के घर चाय पीने के बहाने आकर रसोई में खड़ी नायिका को पीछे से आकर घेर लेता है और सीने से लगाकर संभोग की अपेक्षा करता है, उसकी साँसों के संगीत ने नायिका की आँखे मूँद दी है। ''नवीन ने अपने सीने से उसका मुँह बाहर निकाला और बेतहाशा चूमने लगा। वह अपनी बाँहो में समेटे-समेटे उसे बिस्तर तकले आया। उसने मधु की साड़ी खींचकर एक तरफ पटक दी। उसके हाथ मधु की गर्दन सहला रहे थे और वह अतल में डूबी जा रही थी।''[७०] लेखिका यहाँ स्पष्ट करती है कि वर्तमान में नैतिकता जैसे आदर्श शब्दों को ध्वस्त कर महिलाओं ने अपने पैरों पर खड़े हो अपने ढंग से जीने के स्वतंत्र रास्ते चुने हैं।

'ढ़ाई आखर' कहानी में मि. मेहता एक ऐसे अतृप्त कामवासी है जो आधुनिक परिवेश से उत्पन्न विशेष मानसिकता को अंकित करते हैं। ''उन्होंने देखा लड़की हँस-हँसकर कभी लड़के के बालों को छूती, कभी उसकी कमीज का खुला बटन बंद करती और बार-बार उसकी छाती से जा लगती। मजा आने लगा मेहता जी को। दूसरों को वस्त्रहीन देखने में जो आनंद है, वैसा ही लुत्फ उठाने लगे वह। लड़की की उभरी हुई छातियों पर उनकी नजर ठहर-ठहर जाती और कल्पना में उन्हें उस लड़के का हाथ वहाँ घूमता नजर आने लगता।''[७१]

उपर्युक्त रचनाओं के माध्यम से क्षमा जी वर्तमान युवा पीढी को इन अवैध तथा अनैतिक संबंधों के लिए सतर्क करती हुई उच्च मूल्यों पर चलने के लिए उद्युक्त करती है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित और उसका अनुकरण-अनुसरण करनेवाले युवक-युवतियों को इन प्रभावों से दूर रहने का संदेश भी देती है।

२.१.७.२ संशय :

'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' कहानी में राकेश आधुनिक विचारोंवाला ऐसा मनोरूग्ण पति है, जो अपने सुसंस्कारित पत्नी से प्रेम तो बहुत करता है लेकिन किसी परपुरूष से बात करने पर उसे संशय के दृष्टि से देखता है। राकेश की संशय वृत्ती से केशा अंदर ही अंदर जलती रहती है। उसका मानना है, ''बहुत सारे गुण हो मगर दो अवगुण हो, गुस्सा और शक , तो सब कुछ मटियामेट हो जाता है।''[७२] 'थैंक्यू सद्दाम हुसैन' कहानी में नीतू के सामने ख्रिस्टोफर बहुत ही सादगी से शादी का प्रस्ताव रखता है। नीतू सोचती है, 'कभी किसी प्रेम का प्रदर्शन नहीं, कहीं यह भी तो चाल नहीं ? शादीशुदा हो, बेवकूफ बनाकर चला जाना चाहता हो।' आखिरकार अपनी भावना और प्रवृत्ति के अनुसार व्यक्ति जीवन को देखता है। इतने आसानी से अगर सपने सच होने लगे तो जिंदगी ही स्वप्नवत लगने लगती है।

'दुमुँही' कहानी में नायिका की लड़की निरंतर पढ़ रही है। हम उम्र किसी भी लड़के से उसे बात करते देख नायिका का मन भक्क से जल उठता है। वह हर बार कल्पना में किसी दुर्घटना की आशंका से त्रस्त हो जाती है। वह सोचती है, ''यूँ नारी-पुरूष मित्रता की पक्षधर होने के बावजूद मैं

कभी इसे मनश: स्वीकार नहीं पाई। अपनी स्टुडेंट लाईफ में मित्र कहकर प्रेम करने का नया तरीका मैंने ईजाद किया था इसीलिए किसी भी लड़के-लड़की को साथ देखकर उनके यह कहने पर वे दोनो मित्र है विश्वास नहीं कर पाती।'' [७३] एक अजीब विडम्बना है, जहाँ हम हाथों में बड़े-बड़े बैनर और नारों से भरी तख्तियाँ लेकर नारी उत्थान के लिए भाग-दौड़ कर रहे हैं, वहीं नारी अपनी प्रत्येक अवस्था में वहीं खड़ी है। 'लौटते हुए' कहानी में कमल अपने समझदार प्रियतमा रिप्पी को शक की निगाहों से देखता हुआ आरोप करता है, ''आज कल तुम मंदिर बहुत जाती हो? क्या बात है? किसे माँगना है ? उन्हीं को जो तुम्हारे शहर में पढ़ाते थे? ''[७४] कमल का रिप्पी के बारे में यह कहना समाज के हर उस मध्यवर्गीय मानसिकता का चित्रण है जो कि अपने साथ दफ्तर में काम करने से लेकर बस में सफर करने वाली औरत या लड़की के लिए रखता है।

विवेच्य रचनाओं की विषय-वस्तु में स्त्री-पुरूष के संकुचित दृष्टिकोण और संदेह वृत्ति को दिखाया है। बदलते युग के साथ हम अपने बाह्य व्यवहार में परिवर्तन कर लेते हैं, लेकिन जहाँ आंतरिक विचारों को बदलने की बात आती है वहाँ हम पीछे हट जाते हैं।

२.१.७.३ अहं-भावना :

नि:संदेह व्यक्ति चाहे किसी भी वंश, वर्ण या आयु का हो, अहं की प्रवृत्ती किसी न किसी मात्रा में अवश्य विद्यमान होती है। सामाजिक परिस्थितियाँ परिवेश इस अहंभाव को बराबर प्रभावित करते हैं। ''अहं भाव स्वाभिमान के स्तर तक तो उचित है किंतु जैसे ही वह अहंकार की श्रेणी में आता है बुराई में परिगणित किया जाने लगता है।''[७५]

'लघुकथाएँ' कहानी में अहंकारी अक्खड़ पुरूषप्रधान संस्कृति की मानसिकता व्यक्त हुई है। ''लड़कियों का आदर्श थी ऐश्वर्या राय, डायना हेडन। मनुवादी रो रहे थे, लड़कियाँ सावित्री थीं जो उनके जूतें में रहती थीं। महान भारतीय संस्कृति की महान नारियों का क्या हुआ? उन्हें क्या हुआ? जरत्कारू ने कहा था, जब औरत के पास जा रहे हो तो अपना कोड़ा ले जाना मत भूलना।'' [७६] स्त्री-पुरूष समानता का डंका पिटते हुए जब ढोल-नगाड़े बजने लगते हैं, तब उसी शोरगुल में स्त्री की आवाज गुमनाम हो जाती है। 'कैसी हो सुष्मिता' कहानी में सुनीता का अहम्भाव और

सौंदर्याभिव्यक्ति ही उसके जीवन के बिखराव का कारण बन गया है। उन दिनों की उसकी मन:स्थितियों का एक चित्र खींचती हुई लेखिका कहती है, उसकी कोशिश थी, कि जब कोई आए तो वह पाताल में समा जाए या आसमान उसको निगल ले। कोई न देखे उसे, न जाने वह नौकरानी है। उसे झाड़ू लगानी पड़ती है, पोंछा करना पड़ता है, उतरे हुए कपड़े पहनने पड़ते हैं और कभी-कभी डाँट खानी पड़ती है। इस प्रसंग से स्त्रियों के जीवन और उसके सोच में आए परिवर्तन को समझने में काफी सहायता मिलती है।

'शुरुआत' कहानी में रवि अपनी पत्नी अनिता के अहंकारी स्वभाव को झेलते रहने के लिए विवश है। अनिता के लिए रवि की इच्छा-आकांक्षाओं का कोई मोल नहीं है बल्कि उसे अपमानित करने में ही वह स्वयं का बड़प्पन समझती है। नायिका का भाई इन्ही बातों की याद दिलाते हुए कहता है, ''मुझे याद है शादी की बात तय होने के बाद तुमने रवि से कुंदन हार की मांग की थी। जब उसने इसमें अपनी असमर्थता प्रकट की थी तो तुम बिफर गई थी। तुमने अपनी तनख्वाह के रूपए रवि के मुँह पर मारे थे, साथ में कहाँ भी था-'ले जाओ। तुम्हारे पास पैसा नहीं है, तो इन पैसों का बनवा लेना। मेरे साथ काम करने वाली सभी लड़कियों के पास कुंदन हार है।' ''[७७] शिक्षा और समानता के संघर्ष में आज की स्त्री परम्परागत समर्पित रूप त्याग अपनी बौद्धिकता के साथ वैयक्तिक स्तर पर जी रही है। बौद्धिकता के साथ सुंदरता का अहसास भी उसके अहंभाव को पुष्ट कर रहा है। इसी का प्रतिपादन 'दुमुँही' कहानी में नायिका द्वारा किया गया है- 'इसी रूप की बदौलत न जाने कितने लड़कों को मैंने प्यार किया और ठुकराया। फ्लर्टिंग का बेहतरीन तरीका आता था मुझे। '

'इसके बाद' कहानी में आदर्शवादी, चरित्रवान नायक कम पढ़ी-लिखी, साधारण शक्ल-सुरत वाली पत्नी से विवाह तो करता है पर अपने इस त्याग का अहसास भी करा देता है। अपनी पत्नी की बदसुरती का फायदा उठाकर उसे कटु शब्दों से तिरस्कृत करता रहता है। अपनी शान बघारते हुए पत्नी को हर कदम छोटा सिद्ध करता है , जिसे लेखिका अपने शब्दों में कुछ इस तरह समाती है, ''पता नहीं जो शिकायत उन्हें अपने माता-पिता से करनी चाहिए थी, उसे वह पत्नी को

सुनाते। उनका अहं संतुष्ट होता। स्वामित्त्व का भाव प्रबल होता। घर... कार ... सामान ... पत्नी और बच्चा सबके स्वामी वह।''[७८]

इस तरह आज समाज को अहंरूपी नाग ने बडी बुरी तरह ड़स लिया है। मध्यवर्गीय समाज तो उसकी चपेट में इतनी मजबूती से जकड़ा हुआ है कि उससे मुक्त होना उसके लिए कठिन हा गया है। इसी समस्या द्वारा लेखिका ने पात्रों के भीतर झांकने का प्रयास किया है और उनकी मन:स्थितियों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है।

२.१.७.४ बच्चों की मानसिकता :

क्षमा जी एक सक्षम रचनाकार होने के साथ-साथ संवेदनशील माता भी हैं। स्त्री-पुरूष के अंतर्मन की गहराईयों का तो उन्होंने बड़ी बारीकी से अध्ययन किया है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी पैनी दृष्टी से बच्चों की मानसिकता को समझने का सफल प्रयास किया है। उसके द्वारा ही उन्होंने बच्चों का कोमल स्वभाव, उनकी शैतानियाँ, तथा उनकी उत्सुकता को शब्दों में अंकित करने की चेष्टा भी की है।

नन्हें बालक बहुत ही नादान और मासूम होते हैं। उनकी भावनाओं और हृदय की गहराई को बड़ी बारीकी से 'इक्कींसवी सदी का लड़का' कहानी में लेखिका ने व्यक्त किया है। ''बच्चों की दुनिया में ये बसें आजादी का पैगाम लेकर आती थीं। स्कूल और घर के बीच जो समय बचता था उसमें अनुशासन- यह मत करो, वह मत करो, खाना खा लो, पढ़ लो, सो जाओ, अरे अभी तक उठे नहीं, काम पूरा क्यों नहीं हुआ, क्लासवर्क की कापी क्यों भूले, क्लास के बाहर जाओ, कल मम्मी-पापा को लेकर आना, जैसे खलनायक और क्यों के काटे नहीं होते थे।''[७९] 'जन्मदिन' कहानी में बच्ची के हर वक्त के बोलने से माँ परेशान हो जाती है। दिमाग खाली हो जाएगा यह कहकर डाँटती है तब बच्ची का कल्पना-लोक जाग उठता है, 'तुम खाली दिमाग की अलमारी बना लेना। उसमें अपनी लाल रंग वाली साड़ी रख लेना। जब मैं आंखे बंद कर लिया करूंगी, तो लाल साड़ी दिखा करेगी।'

'मौज की रोटी' कहानी में लड़कों की भीड़ जम गयी है। उनमें जो उस्ताद है उसके हाथों में पतंग की ड़ोर है। समाँ यूँ है कि कुछ ही देर में पतंग के लिए मारामारी मचने वाली है, ''और जब पतंग कटती तो दौड़ते बच्चे भूल जाते कौन किस दल का था? किस के हिस्से कौन-सी पतंग आई थी? बस एक ही लक्ष्य ... सब उधर दौड़ पड़ते।''[८०] एक ही दल के दसों बच्चे प्रत्याशी बन जाते और लूट में पतंग की चिंदी-चिंदी बिखर जाती है। लेखिका ने बच्चों की उलझी हुई मानसिकता को बहुत ही सुलझे हुए तरीके से अंकित किया है। उनमें धाँधली होती है, वे उधम मचाते हैं, लेकिन साथ ही उनमें नि:स्वार्थ दोस्ती भी होती है। 'पिता' कहानी में बाबूजी के रिटायर होने का वसुधा पर गहरा प्रभाव पड़ा था। अब बाबूजी उसकी छोटी-बड़ी इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकते थे और इसी भावना ने उसकी मानसिकता को पूरी तरह बदल दिया। अब अगर कोई खाने की चीज वसुधा उस समय अपने पैसों से लाती और बाऊजी चबूतरे पर बैठे होते तो वह उनसे छिपाकर ले जाती इस भय से कि कहीं वह माँग न बैठे ? उनका हिस्सा न चुकाना पड़ जाए। नन्ही बालिका की बाल-सुलभ चेष्टाओं में भी लेखिका की मुखरता बराबर महसूस होती है।

'लड़की ' कहानी लड़कियों की निरीहता का बड़ा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करती है। 'एक प्रेमपत्र' संवेदनशील मार्मिक कहानी है जो अपने अंतर्द्वंद्व से पाठक को भी उलझा देती है और बताती है कि एक नारी दूसरी नारी का किस प्रकार शोषण करती है।'क्रांति' कहानी आधुनिक मानसिकता का पर्दाफाश करने का पूरा प्रयास करती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सभी विषय बिंदुओं को देखने के पश्चात् स्पष्ट होता है कि क्षमा शर्मा जी का रचनात्मक संसार पारिवारिक धरातल के इर्द-गिर्द ही नहीं घूमता, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक विषयों को भी उन्होंने अपनी भाव भूमि पर उतार कर अपना एक अलग परिचय दिया है। इसके साथ ही विभिन्न नगरों और महानगरों की अपनी अनुभुतियों और समस्याओं को भी अपनी रचनाओं में समाविष्ट किया है। ''इनके लेखन के केंद्र में मुख्यत: स्त्रियों का जीवन और संघर्ष है। इसमें हमारे परिवेश के ऐसे कई चित्र हैं, जिनमें विडंबनाएँ आहिस्ता-

आहिस्ता ही सही, पर निरंतर बोलती है। इनमें उठा-पटक की राजनीति और खुली-अधखुली मानव-मन की परतें हैं, तो हमारा घर-संसार भी है, जिसका यथार्थ दृश्य भी है। यह कहानियाँ हमारे मन के अंधेरे कोनों को भी टटोलती, छूती,झकझोरती और सहलाती है।''[८१]

स्त्रियों के साथ होनेवाले भेद-भाव, यौन शोषण के दर्शन वर्तमान समाज में यत्र-तत्र होते हैं। क्षमा जी के कथा-साहित्य में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। क्षमा जी स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार से हताश नहीं हुई , बल्कि उन्होंने स्त्रियों को संघर्ष करने की प्रेरणा दी है, तथा स्वतंत्र विचारधारा की ओर नारी को अग्रसर किया है। समाज में बढ़ती वैश्या वृत्ति, विधवा जीवन की त्रासदी, बढ़ता भ्रष्टाचार, पुलिस व्यवस्था, महानगरीय जीवन की विद्रुपताएँ, जल समस्या आदि अनेकानेक पहलुओं का विवेचन क्षमा जी के कथा-साहित्य में विद्यमान हैं। सांस्कृतिक विषय-वस्तु के अंतर्गत पर्व-उत्सव, संस्कार, रीति-रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक विश्वास, अंधविश्वास, धार्मिक सहिष्णुता का यथार्थ वर्णन क्षमा जी के कथा-साहित्य में परिलक्षित होता है।

आर्थिक विषय-वस्तु के विविध आयामों का क्षमा जी ने विश्लेषण किया है। वर्तमान समय में युवकों में बढ़ती बेरोजगारी का बेबाक चित्रण क्षमा जी ने किया है। आज महँगाई की समस्या भीषण रूप धारण कर चुकी है। बढ़ती महँगाई का सर्वाधिक शिकार मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग हुआ है। उच्चवर्ग द्वारा गरीबों का आर्थिक शोषण क्षमा जी के कथा-साहित्य में यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होता है। निम्नवर्ग की गरीबी का मार्मिक चित्रण क्षमा जी ने किया है। उच्चवर्ग की साधन संपन्नता, मध्यवर्ग की बढती धन लोलुपता, आर्थिक अभाव के कारण बढ़ती बाल मजदूरी, शरीर विक्रय आदि पहलुओं का बेबाक चित्रण करने में क्षमा जी सफल रही है।

क्षमा जी के पात्र भलें ही आर्थिक विपन्नता में जीवन-यापन कर रहे हो, अपितु वे परिस्थिति के सम्मुख संघर्ष करने के लिए तत्पर हैं, उन्होंने गरीबी से हार नहीं मानी, बल्कि अपने आत्मविश्वास द्वारा विपरित परिस्थिति पर विजय प्राप्त की है।

यद्यपि उनकी अधिकांश रचनाएँ नारी को केंद्र में रखकर ही प्रस्तुत हुई हैं, तथापि उन्होंने पुरूष की सर्वसामान्य स्थिति, आर्थिक परेशानियाँ, युवा आक्रोश, असंतोष, भ्रष्टाचार आदि को बड़े ही यथार्थता के साथ प्रस्तुत करने में कोई कसर नहीं रखी है। इन सारी परिस्थितियों को प्रामाणिक

धरातल पर प्रस्तुत करने में क्षमा जी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य जगत में कथाकार क्षमा शर्मा जी का एक विशिष्ट स्थान है।

सन्दर्भ : द्वितीय अध्याय

१. संस्कृति–सांध्य टाइम्स,१२ फरवरी, २०००, पृ.१२

२. चातक गोविंद (सम्पा.)–आधुनिक हिंदी शब्द–कोश, पृ.५३६

३. पाठक रामचंद्र–आदर्श हिंदी शब्दकोश, पृ.३६५

४. डॉ. जैन महेंद्र–हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक जीवन,(प्राक्कथन से)

५. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.४२

६. शर्मा क्षमा–नेमप्लेट, पृ.४९

७. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.११

८. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.१८४

९. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.९१

१०. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.१८

११. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.८७

१२. भुतड़ा घनश्यामदास–समकालीन हिंदी कहानियों में नारी के विविध रूप, पृ. ११०–१११

१३. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१३

१४. शर्मा क्षमा–नेम प्लेट, पृ.१०८

१५. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.१५०

१६. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.७९

१७. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.९१

१८. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१३

१९. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.६१

२०. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१७८

२१. चातक गोविंद (सम्पा.)–आधुनिक हिंदी शब्द–कोश, पृ.६०५

२२. डॉ. सिंहल शशिभूषण–हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ, पृ.१३

२३. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१६

२४. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१५२

२५. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.६५

२६. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.६५

२७. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.२२३

२८. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.२७

२९. दिनकर रामधारी सिंह–धर्म नैतिकता और विज्ञान, पृ.१४–१५

३०. भाटिया प्रेम प्रकाश–आजकल,फरवरी, २००१, पृ.४८

३१. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.९७

३२. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.७९

३३. द्वारकाप्रसाद (सम्पा.)–हिंदी–हिंदी शब्दकोश, पृ.७४५–७४६

३४. डॉ.नगेन्द्र–समस्या और समाधान, पृ.२७

३५. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१०५

३६. शर्मा क्षमा–दूसरा पाठ, पृ.१९–२०

३७. गुप्ता रजनी–वर्तमान साहित्य, जून २००९, पृ.६७

३८. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.४६

३९. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.७५

४०. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.११०

४१. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.२२

४२. डॉ. चव्हाण अर्जुन–राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृ.५३

४३. श्री नवल जी (सम्पा.)–नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ.१३८८

४४. चातक गोविंद (सम्पा.)–आधुनिक हिंदी शब्द–कोश, पृ.५९६

४५. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.७५–७६

४६. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.३४

४७. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.२६–२७

४८. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.७७

४९. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.३४

५०. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१२८

५१. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.१२७

५२. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.११४

५३. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१४

५४. शर्मा क्षमा–नेम प्लेट, पृ.१०८

५५. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१०८

५६. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.६१

५७. शर्मा क्षमा–नेम प्लेट, पृ.२२

५८. राधेश्याम बंधु–इंडिया टुडे,१५जुलाई,१९९६, पृ.८३

५९. शर्मा क्षमा– थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.१०१

६०. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.१०१

६१. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.८२

६२. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.२७५

६३. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१५२

६४. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.२१८–२१९

६५. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१९३

६६. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.६३

६७. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.१४

६८. श्री नवल जी (सम्पा.)–नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ.१०५९

६९. गौरीनाथ–इंडिया टुडे, १२ मई,१९९९, पृ.५१

७०. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.५३–५४

७१. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.१५०

७२. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.१२

७३. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.४४

७४. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.४७

७५. डॉ. वर्मा शीलाप्रभा–महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक–संदर्भ, पृ.२६४

७६. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१३३

७७. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.२४

७८. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.६८

७९. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.९

८०. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.७३

८१. सिन्हा रीता–जनसत्ता, १७ मई,२००९, पृ.१४

तृतीय अध्याय

क्षमा शर्मा के उपन्यास साहित्य में शिल्प-विधान

३.० प्रस्तावना :

पूर्व अध्यायों में क्षमा जी के कथा-साहित्य के कथ्य तथा उसमें चित्रित विविध आयामों पर प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक साहित्यकार अपनी अनुभूति और चिन्तन को अभिव्यक्त करने के लिए एक विशिष्ट माध्यम का सहारा लेता है और यह माध्यम प्रत्येक रचनाकार का अलग-अलग होता है। किसी भी साहित्यकार के साहित्य में एक ओर जहाँ उसका कथ्य उसकी पहचान बनता है वहीं दूसरी और उसकी अभिव्यक्ति का कलात्मक माध्यम अर्थात् शिल्प भी उस पहचान को और भी दृढ़ बनाता है। साहित्य की प्रत्येक विधा का अपना विशिष्ट रचना-शिल्प होता है। रचना शिल्प की दृष्टि से न केवल गद्य और पद्य विधाएँ अलग-अलग होती हैं बल्कि गद्य की भी विविध विधाएँ प्रस्तुत शैली के कारण एक-दूसरे से भिन्न हो जाती हैं। इसी कारण नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र आदि गद्यात्मक कथा-साहित्य में कथात्मक तत्व में समानता होते हुए भी रचना शिल्प में सैद्धान्तिक अन्तर पाया जाता है। क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य में शिल्प-विधान पर विचार करने से पूर्व 'शिल्प' की संकल्पना को समझना उपयुक्त होगा।

३.१ शिल्प : अर्थ एवं स्वरूप :

शिल्प का शाब्दिक अर्थ -'किसी वस्तु के बनाने या रचने का ढंग अथवा पद्धति ' है। हिन्दी में शिल्प,शिल्प-विधि,शिल्प-विधान आदि शब्द समानार्थी रूप में प्रयुक्त होते है। 'शिल्प' शब्द अंग्रेजी के 'टेकनीक'(Technigue) का हिन्दी पर्याय है। अंग्रेजी में टेकनिक के अतिरिक्त इसके लिए फार्म (Form), स्ट्रक्चर (Structure), आर्ट (Art) और क्राप्ट (Craft) जैसे शब्द प्रचलित हैं। उपर्युक्त सभी शब्दों में से ''शिल्प-विधि के लिए टेकनीक शब्द अधिक उचित लगता है। क्योंकि शिल्प-विधी का शाब्दिक अर्थ है, किसी चीज के बनाने या रचने का ढंग या तरीका। किसी वस्तु के रचने की जो विधियाँ अथवा प्रक्रियाएँ होती हैं, उनके समुच्चय को शिल्प-विधी के नाम से जाना जाता

है।''[१] नालन्दा विशाल शब्द सागर के अनुसार 'शिल्प' का अर्थ ''कोई वस्तु हाथ से बनाकर तैयार करने का काम, कारीगरी, दस्तकारी या कलासम्बन्धी व्यवसाय है।''[२] ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश के अनुसार टेकनीक ''विशेष कौशल से सम्पन्न कराने की विधि है।''[३] इस विवेचन के आधार पर स्पष्ट हो जाता है कि टेकनीक और शिल्प में थोड़ा बहुत अन्तर है। शिल्प जहाँ हस्तकला से अधिकतर सम्बन्धित है वहीं टेकनीक किसी भी काम के कौशल्यपूर्ण समापन की ओर संकेत करता है। सामान्य व्यवहार में चाहे वे भिन्न अर्थों की प्रतीति कराते हों, किन्तु साहित्य के क्षेत्र में वे लगभग एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

३.१.१ संस्कृत भाषा में शिल्प का अर्थ :

संस्कृत भाषा में 'शिल्प' शब्द का अर्थ श्री वामन शिवराम आपटे के अनुसार ''शिल्प शब्द की व्युत्पत्ति शिल्+पक है, जिसका अर्थ है–कला, ललित कला,यांत्रिक कला, कुशलता, कारीगिरी आदि। ''[४]

संस्कृत साहित्य में शिल्प का प्रयोग अनेक रूपों में मिलता है। ऐतरेय ब्राम्हण में ''विधाता की रचना को 'देवशिल्प ' और मनुष्य की सृष्टि के लिए 'ऐतेषाम वै शिल्पनाम' कहा गया है।''[५]

शिल्प शब्द का प्रयोग मानव जीवन से संबंधित रहा है, जैसे – कौशलपूर्ण कार्य के लिए तथा अन्य कलाओं के लिए आदि। इससे यह कहा जा सकता है कि 'शिल्प' शब्द का मूल अर्थ किसी भी रचना के कौशल से है फिर वह जीवनोपयोगी कला हो या ललित कलाएँ हो।

३.१.२ हिंदी भाषा में शिल्प का अर्थ :

हिंदी शब्दकोशों में शिल्प के अर्थ इस प्रकार दिए हैं – हिंदी व्युत्पत्ति कोश में 'शिल्प' शब्द (शील + प) से बना है। इसका अर्थ है –''हस्तकला दस्तकारी आदि। ''[६] हिंदी शब्द सागर में ''हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम दस्तकारी, जैसे बरतन बनाना, कपड़े सीना, गहने, गढ़ना आदि। रूप कला संबंधी व्यवसाय, दक्षता, कौशल, चातुर्य, रचना, आकार, आवृत्ति आदि।''[७]

शिल्प किसी रचना के कौशलपूर्ण निर्माण की एक प्रक्रिया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि 'शिल्प' एक कौशल है, एक कारीगरी है। इससे रचना के आरंभ से अंत तक कौशलपूर्ण बनावट की प्रक्रिया होती है।

३.१.३ शिल्प की परिभाषाएँ :

साहित्य के संदर्भ में शिल्प-विधि का अर्थ है साहित्यक कृति के रचने का ढंग या तरीका। हिन्दी साहित्य के विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से तकनीक या शिल्प को परिभाषित किया है।

जैनेन्द्र कुमार के अनुसार,''टेकनीक ढाँचे के नियमों का नाम है। पर ढाँचे की उपयोगिता इसी में है कि वह सजीव मनुष्य के जीवन में काम आए। वैसे ही टेकनीक साहित्य सृजन में योग के लिए है। ''[८]

डॉ. जवाहर सिंह साहित्य के सन्दर्भ में शिल्प को और अधिक स्पष्ट करते हैं कि, ''शिल्प विधि से तात्पर्य किसी कृति के निर्माण की उन सारी रचना प्रक्रियाओं तथा रचना पद्धतियों से है, जिनके माध्यम से शिल्पकार या रचनाकार अपनी अमूर्त जीवनानुभूतियों, मन:प्रभावों तथा विचारों और भावों को मूर्त रूप देकर अधिकाधिक और सौंदर्यमूलक बनाता है।''[९]

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के अनुसार,''शिल्पविधि कला के विभिन्न तत्त्वों अथवा उपकरण की योजना का वह विधान, वह ढंग है जिससे कलाकार की अनुभूति अमूर्त से मूर्त हो जाए। ''[१०]

उपर्युक्त परिभाषाओं से एक बात तो स्पष्ट होती है कि 'शिल्प' वस्तु को अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया का वैशिष्ट्य है। इसमें कलाकार की अनुभूति की सच्चाई और गहराई होती है। शिल्प रचनाकार की प्रतिभा, सृजनशील कल्पना और अविराम साधना का परिणाम होता है, जिसके द्वारा वह अपने रचनात्मक लक्ष्य को प्राप्त करता है।

साहित्य-सृजन की प्रक्रिया के कई सोपान होते हैं किन्तु उनमें प्रमुख दो स्तर उभर आते हैं -साहित्यकार की अनुभूति और अभिव्यक्ति। शिल्प-विधि का सम्बन्ध साहित्य के इन दोनों स्तरों से है। साहित्यकार की अनुभूति का रूपान्तर रचना के आशय अर्थात् भावपक्ष में हो जाता है और अभिव्यक्ति का रूपान्तर कला या व्यापक अर्थ में शैली पक्ष में हो जाता है। इन आधारों को सामने

रखते हुए डॉ. श्रीमती ओम शुक्ल ने शिल्प के दो भेद किए हैं – आंतरिक शिल्प और बाह्य शिल्प। उनके अनुसार आंतरिक शिल्प का अर्थ है रचना सम्बन्धी वे प्रक्रियाएँ, जो साहित्यकार के मन में घटित होती हैं और बाह्य शिल्प से तात्पर्य भाषा और शब्द योजना के उन तरीकों और विधियों से है जिनकी सहायता से साहित्यकार अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करता है। ''[११] अर्थात् साहित्य सृजन से पहले रचनाकार मनन और विश्लेषण द्वारा अपने भाव जगत का कोना–कोना खोजकर अपनी सामग्री इकट्ठा करता है और शब्द, भाषा, बिम्ब, प्रतीक आदि के माध्यम से अपनी कृती को सजाता है।

३.२ कथा–साहित्य में शिल्प–विधान का महत्त्व :

शिल्प के सहारे लेखक अपनी मनोवांछित बात पाठकों तक पहुँचा पाता है और भाव–विशेष को सुव्यवस्थित एवं निश्चित स्वरूप प्रदान करने के लिए उपकरणों, विधानों का प्रयोग करता है। अपने आंतरिक विचारों को प्रकट करने के लिए साहित्यकार को शिल्प का सहारा लेना पडता है। शिल्प साहित्य कृति की रचना प्रक्रिया का नाम है। शिल्प का मुख्य प्रयोजन रचना की बाहयकृति का निर्माण करना है। प्रत्येक सफल लेखक अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए शिल्प को अधिक से अधिक कुशल एवं पूर्ण बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। लेकिन रचनाकार में प्रतिभा के साथ–साथ कुशल शिल्प का होना भी अनिवार्य है।

शिल्प के महत्त्व पर जोर देते हुए डॉ. धर्मध्वज त्रिपाठी कहते हैं, ''शिल्प के माध्यम से किसी लक्ष्य की पूर्ति की जाती है। यह लक्ष्य रचना सृष्टि की प्रक्रिया से संबंधित होता है। भौतिक जीवन में यह लक्ष्य किसी वस्तु अथवा मनोवांछित तत्व प्राप्ति से संबंध रखता है और कला के क्षेत्र में इस लक्ष्य से अभिप्राय है – संपूर्ण भावाभिव्यक्ति का प्रकार अथवा ढंग।''[१२]

डॉ. त्रिभुवन के अनुसार, ''शिल्प अथवा रचना का संबंध उस परिणति से है, जो कृति को सभी रचना विधायक तत्त्वों के सहयोग से कृतिकार की प्रतिभा द्वारा प्राप्त होती है।''[१३]

इससे यह स्पष्ट होता है कि कोरी प्रतिभा उत्कृष्ट रचना का सृजन करने में असमर्थ है। प्रतिभा के साथ-साथ कुशल शिल्प का होना भी बहुत जरूरी है। प्रत्येक रचनाकार अपनी भावाभिव्यक्ति को रचना में समाहित कर रचना की सृष्टि करता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

साहित्य में शिल्प का अपना एक विशिष्ट स्थान है। जहाँ एक ओर कलाकार की अनुभूति उसकी गहराई व सच्चाई पर निर्भर है, वहाँ दूसरी ओर इस अनुभूति की कलात्मक अभिव्यक्ति कुशल शिल्प पर निर्भर है।

३.३ क्षमा शर्मा के उपन्यास साहित्य में शिल्प विधान :

क्षमा शर्मा हिंदी साहित्य में उस धारा का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो अनुभव और अभिव्यक्ति की पारम्पारिक जड़ता को चुनौती देती है। उन्होंने स्त्री लेखन के सीमित दायरे को तोडकर घर-परिवार की विडम्बनाओं, विद्रूपताओं को स्वर दिए है, व्यापक समाज के सरोकारों को भी उन्होंने अपने लेखन का धर्म बनाया है। इनके उपन्यास अपनी गुणवत्ता के कारण विस्तृत विवेचन की अपेक्षा रखते हैं। उनके अधिकांश उपन्यास आज की नारी को उसके सहज मानवीय रूप में चित्रित करते हैं तथा नारी के अस्तित्व को स्वतंत्र रूप में दृढ़तापूर्वक स्वीकार करते हैं। जीवन की वास्तविकताओं और समस्याओं से उनके उपन्यास जुड़े हुए हैं।

क्षमाजी सामाजिक सरोकार, समाज जागृति को अपने साहित्य का लक्ष्य मानती हैं। प्रत्येक रचनाकार अपने समस्त पारिवेशिक दबावों से प्राप्त अनुभवों को अपने युग की विसंगत स्थितियों के चित्रण से, उन पर व्यंग्य करके साहित्य के जरिए समाज को सीधी राह पर चलने का निर्देश देता है। क्षमा जी साहित्य में 'कला कला के लिए' की पक्षधर न होकर 'कला जीवन के लिए' की पक्षधर हैं।

इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि साहित्य में कला को अनदेखा करने का वे समर्थन करती हैं परन्तु अपने साहित्य में शिल्प को विषय-वस्तु पर हावी नहीं होने देती बल्कि उनके साहित्य में शिल्प विषय-वस्तु के उपकारक रूप में प्रकट होता है।

क्षमा शर्मा के उपन्यासों का शिल्प-विधान के सन्दर्भ में अध्ययन करते समय शिल्प के विभिन्न अंग अर्थात् उपन्यास के तत्त्वों का विचार करना आवश्यक है। शिल्प-विधान की दृष्टि से

उपन्यास के प्रमुख छः तत्त्व माने गए हैं–कथानक, पात्र तथा चरित्र–चित्रण, कथोपकथन या संवाद, देशकाल–वातावरण, भाषाशैली तथा उद्देश्य। क्षमा शर्मा के उपन्यासों में शिल्प का विवेचन इन्ही तत्त्वों के आधार पर करना उचित होगा।

३.३.१ कथानक :

३.३.१.१ कथानक का महत्व :

कथानक या कथावस्तु उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व है। ''उपन्यास जीवन की प्रतिकृति है, इसलिए इसका सम्बन्ध मानव–व्यापारों, क्रिया–कलापों और घटनाओं से होता है। इसी को उपन्यास की 'कथा–वस्तु' कहते हैं। ''[१४] इसे अन्य नामों से भी अभिहित किया जाता है– ''कथावस्तु, विषयवस्तु, इतिवृत्त, कथा, वस्तु, वृत्त आदि। ''[१५] कथानक का उपन्यास में वहीं स्थान माना जा सकता है जो हमारे शरीर में हडिड्यों का। उसी के आधार पर उपन्यास का सम्पूर्ण ढाँचा स्थिर होता है। विद्वानों ने कथानक में संवेदनशीलता, मौलिकता, रोचकता, जिज्ञासा या कुतूहल, स्वाभाविकता, सम्बद्धता, निर्माण कौशल, सूक्ष्मता, गहनता तथा मार्मिकता आदि अनेक विशेषताओं से युक्त होना आवश्यक माना है। साथ ही ''पाश्चात्य समीक्षकों ने प्रारम्भ,विकास,चरम सीमा,निगति और अन्त नामक पाँच स्थितियाँ कथा विकास के लिए आवश्यक मानी हैं। ''[१६]

उपन्यास में कथानक के लिए पत्रात्मक, डायरी आदि कई शैलियाँ प्रचलित हैं किन्तु उनमें भी साहित्यकारों में वर्णनात्मक तथा आत्मकथात्मक शैलियाँ विशेष प्रिय हैं। उपन्यास का कथानक पौराणिक, ऐतिहासिक, काल्पनिक किसी भी प्रकार का हो सकता है। उपन्यास की सफलता इस बात में निहित होती है कि कथानक कितना स्वाभाविक है और सामाजिक जीवन की समस्याओं का निरूपण कितनी विशदता एवं सूक्ष्मता के साथ किया गया है।

३.३.१.२ क्षमा शर्मा के उपन्यासों का कथानक :

क्षमा शर्मा जी ने अब तक चार उपन्यासों की रचना की है। उनमें समकालीन जीवन के विविध पक्षों, सामाजिक विशेषताओं, महानगरीय संस्कृति की पतनोन्मुख नैतिकता का विस्तृत चित्रण हुआ है। कथानक की दृष्टि से उनके उपन्यास में एक प्रकार की पूर्णता है। उनमें सन्दर्भ, प्रसंगों, घटनाओं का नियोजन इतनी सूझ-बूझ से किया गया है कि उपन्यासों की बनावट अत्यंत सघन और कलात्मक बन गई है। उनके कथानक की यह भी एक विशेषता है कि वे अपने निर्दिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति में पूर्णतया सफल हैं। जिन घटनाओं अथवा सन्दर्भों को वे निर्देशित करती हैं, वे मुख्य कथा को स्पष्ट, प्रभावोत्पादक और रोचक बनाने में पूरी तरह सार्थक हैं। कथानक की दृष्टि से उनके उपन्यास पूरी तरह सफल परिलक्षित होते हैं।

'दूसरा पाठ' उपन्यास में शिक्षण-संस्थानों के स्वरूप एवं क्रिया कलापों में अनेक तरह की जो विद्रूपताएँ जन्मी हैं उनका चित्रांकन किया गया है। इस तरह से नई पीढी पर लगातार दुष्प्रभाव पड़ रहा है। उपन्यास में परिस्थितिवश मात्र सत्रह वर्षीय मैट्रिक पास युवक गौतम देहात के एक जूनियर हाई स्कूल में विज्ञान अध्यापक होना स्वीकार कर लेता है, किन्तु अपनी अल्पकालीन सेवावधि में उसे शिक्षा जगत के विषय में जो कटु अनुभव आते हैं वह एक आदर्शवादी युवा मन को विचलित करने एवं वितृष्णा से भर देने के लिए पर्याप्त होते हैं। कथानक में हेडमास्टर सहित सहयोगी अध्यापकों का विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार में लिप्त रहना, सरकारी सहायताओं का अपनी निजी कामों में इस्तेमाल करना, स्कूल की उपयोगी सामग्री को बेच देना आदि के माध्यम से कथ्य से जुड़े अधिसंख्य लोगों की जीवनप्रणाली और नियति को अभिव्यक्ति मिली है।

क्षमा शर्मा का दूसरा उपन्यास 'परछाई अन्नपूर्णा' नौकरी करती औरत की रोजमर्रा की दिक्कतों का बेबाक बयान है। नौकरी करती औरतों के प्रति घर, बाहर या उनके कार्यस्थलों में पुरूष वर्ग का रवैया, घर-बाहर सही संतुलन स्थापित करने की चिंता, बच्चों की चिंता यही इस उपन्यास की कथावस्तु है। विभा, उपन्यास की मुख्य पात्र इन्हीं औरतों का प्रतिनिधित्व करती है। वह परेशान-हताश होती है, संघर्ष, बहस करती है। औरत के प्रति चरित्रहीन नजरिए का जमकर विरोध करती है। कई बार तो वह नौकरी छोड़ देने तक के बारे में सोचती है। यहाँ तक कि उसे यह लगता है

कि उसे मर जाना चाहिए क्योंकि जीने की स्थितियाँ नहीं है। लेकिन इनके बावजूद वह जीती है, नौकरी भी करती है, बच्चे को जन्म भी देती है और स्थितियों से लड़ती भी है। इन सबको दृश्यांकित करती कथाएँ भी मुख्य कथा के साथ चलती है, किन्तु कहीं भी वे मुख्य कथा पर हावीं नहीं होती है।

'शस्य का पता' उपन्यास पर्यावरण के विनाश और उससे प्रभावित पशु-पक्षियों की बेचैनी की एक मार्मिक अभिव्यक्ति है। कथ्य में बाजारीकरण, उपभोक्तावाद और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रवेश और दबाव के कारण प्राकृतिक संतुलन के लिए पैदा हो रहे खतरे की ओर संकेत किया है। संगठन में ही शक्ति है, एकजुट होकर ही अन्याय का मुकाबला किया जा सकता है। उपन्यास में जानी तोता इस रहस्य को समझता है इसलिए वह समस्त तोतों से मिलकर उनका आश्रय छीनने वाली ताकतों से संघर्ष करने का आवाहन स्वीकार करता है। इस अभियान के दौरान उसे उन संकटों और यंत्रणाओं से गुजरना पड़ता है जैसा मानवी समाज में लोकतांत्रिक सरकारें कर रही है। रामविनय शर्मा द्वारा, ''यह कृति मनुष्येतर प्राणियों के माध्यम से मानव-समाज में चल रहे संघर्षो और सत्ता द्वारा उसका दमन करने के प्रयासों की ओर इंगित करती है।''[१७] तोते और ऊँट जैसे दो केंद्रिय पात्रों द्वारा वार्तालाप शैली में लिखा गया यह उपन्यास मजेदार और शिक्षाप्रद है।

'मोबाइल' उपन्यास उत्तर आधुनिक समाज में भौगोलिक दूरी को घटाने का प्रतीक ही नहीं है बल्कि मोबाइल से 'मोबाइल गर्ल' का मतितार्थ भी है। उपन्यास की नायिका मधु दिल्ली के एक प्रकाशन संस्थान में आदित्य, विनय और फरहत के साथ काम करती है, उनकी मित्रता है। अचानक उसकी जिदंगी में नवीन आता है जिसके साथ उसके शारीरिक संबंध हो जाते हैं। वह इस रिश्ते को जरा भी गलत नहीं समझती लेकिन नवीन जब उसे धोखा देता है तब उसे बहुत अफसोस होता है। जब दो इन्क्रीमेंट देकर उसका प्रमोशन किया जाता है तब उसके साथी उसे शक की निगाह से देखते हैं। कथ्य में नारी सशक्तीकरण के जोरदार नारे के सतहीकरण तक अपने को सीमित करने के बजाय बड़े शहर में आए दिन की आकांक्षाओं-चुनौतियों, राग-द्वेष तथा नियती के विषम चक्र में मध्यवर्गीय जीवन का जायजा लिया गया है।

उपर्युक्त चारों उपन्यास के कथानक में सामान्य विशेषता यह है कि इनमें कई घटनाएँ तथा उपकथाएँ हैं जो अपनी मूल कथा की सहयोगिनी हैं। अनावश्यक फैलाव अथवा अप्रासंगिक विस्तार

कहीं भी नहीं है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में कथानक का विकास अत्यन्त स्वाभाविक और प्रभावपूर्ण रीति से हुआ है। क्षमा जी अनेक छोटी-बड़ी घटनाओं के संगठन से कथानक को सुसूत्रता प्रदान करती है। उनके कथानक में व्यक्ति की अपेक्षा परिस्थितियों का चित्रण अधिक हुआ है जिन्हें सामाजिक आधारों पर खड़ा किया गया है।

क्षमा शर्मा के उपर्युक्त उपन्यासों के कथानक की एक विशेषता यह भी रही है कि वे व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित हैं। अत: अपने आस-पास के जीवन से प्राप्त अनुभवों से वे अपना कथानक बनाती हैं। कथानक का विकास-क्रम भी प्राय: अनुभवों की क्रमिक श्रृंखला का अनुकरण करता है। यही कारण है कि उनका प्रत्येक पात्र अथवा प्रसंग अपनी-अपनी लघु अथवा विशद् भूमिकाओं में अपनी सार्थकता बनाए रहता है।

३.३.२ पात्र तथा चरित्र-चित्रण :

३.३.२.१ चरित्र-चित्रण का महत्त्व :

उपन्यास का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व पात्रों का चरित्र-चित्रण है। रामलखन शुक्ल जी के अनुसार, 'यदि कथानक उपन्यास का मेरूदंड है तो चरित्र-चित्रण उसका प्राण है।' उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने तो लेखक की दृष्टि से कथानक की अपेक्षा पात्र या चरित्र को अधिक महत्त्व देते हुए कहा है, 'मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यासकार का मूल तत्त्व है।'

पात्रों के चरित्र-चित्रण का विचार करते समय साहित्यकार को अनुभूतियों द्वारा सृजित पात्र यथार्थ प्रतीत होते हैं। पात्रों का चरित्र लेखक के चिन्तन, मनन, निरीक्षण से अनेक प्रकार की वृत्ति-प्रवृत्ति से सज्जित होता है। रचनाकार उपन्यास के पात्रों के चरित्र-चित्रण में अपने व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएँ रेखांकित करता है। अत: स्पष्ट है कि पारम्पारिक दृष्टि से उपन्यास में चरित्र-चित्रण को अत्याधिकमहत्ता प्राप्त हुई है। चरित्रों के अभाव में उपन्यासों में न तो कथानक का निर्माण तथा विकास ही सम्भव है और न कथोपकथन जैसी प्रणाली की कल्पना की जा सकती है। चरित्रों के अभाव में उपन्यासकार की कल्पनाशीलता एवं प्रतिभा कौशल को भाव-भूमि मिलना मुश्किल तो

होगा ही साथ में उपन्यास के मूल उद्देश्य की पूर्ति भी असम्भव होगी। अतएव यह निर्विवाद सत्य है कि चरित्र–चित्रण उपन्यास के अन्य परम्परागत तत्त्वों को अत्यन्त सहायक सिद्ध होने के साथ उन्हें अस्तित्त्व की गरिमा प्रदान करता है।

३.३.२.२ क्षमा शर्मा के उपन्यास साहित्य में चरित्र–चित्रण :

प्रमुख पात्र :

- **गौतम :**

'दूसरा पाठ' उपन्यास में गौतम को केन्द्रित कर शिक्षा क्षेत्र में एक आदर्शवादी युवक के यथार्थ जीवन के कटु–भीषण संघर्षमय पक्ष को उजागर किया है। उपन्यास का नायक गौतम जो स्वाभिमानी है, आशावादी है, वह समाज में शिक्षा रूपी विकास की नींव डालना चाहता है। मैट्रिक परीक्षा के उपरांत वह अपने दृढ संकल्प के साथ देहात में आता है देश का विकास गाँव के विकास से जुड़ा है, यह जानते हुए वह जूनियर हाईस्कूल में विज्ञान विषय के अध्यापक पद का कार्यभार स्विकारता है। लेकिन सरकार छात्रों के लिए जो सुविधा उपलब्ध कराती है वह उन तक पहुँच ही नहीं पाती है। साथ ही स्कूल के अनेकानेक विद्रूपताओं का दुष्प्रभाव छात्रों पर लगातार पड़ रहा है। गाँव में अंधविश्वास पूरी तरह छाया है। स्कूल के छात्रों पर भी इसका प्रभाव देखने मिलता है।

गौतम कहता है, ''आप क्या मानें क्या न मानें। मगर एक अध्यापक होकर पूरी पीढियों को बर्बाद मत कीजिए, वैसे ही इस देश में अंधविश्वास कम नहीं फैले हैं। ''[१८] स्कूल में हो रही गड़बड़ी को गौतम उजागर करना चाहता है, लेकिन माणिकलाल उसे वहाँ से भगाना चाहता है। वह इस प्रकार की परिस्थिति पैदा कर देता है कि गौतम वहाँ से चला जाए। ताकि उन लोगों के रास्ते में कोई रूकावट न पड़े। अल्पावधि में ही स्कूल में हो रहे भ्रष्टाचार को देख वह हताश हो जाता है, निराश होकर आखिरकर चला जाता है।

गौतम के चरित्र की यह विशेषता है कि उसने अपने जीवन में सिद्धांतों को महत्त्व दिया है। अपने सिद्धांतों के कारण उसे उपेक्षा का शिकार होना पड़ा लेकिन लेखिका ने उसमें कहीं भी बेचारे का भाव नहीं आने दिया है। अत: कहा जा सकता है कि गौतम का चरित्र स्थिर चरित्र है, जिसमें

कोई परिवर्तन नहीं है, जो अपने सिद्धांतों के प्रति कटिबद्ध है। लेखिका ने गौतम का चरित्र-चित्रण संवादात्मक तथा विश्लेषण पद्धति से किया है।

➢ **विभा :**

'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास की प्रमुख पात्र विभा है। वह शादीशुदा है और एक बच्चे की माँ है। यह घर से दप्तर और दप्तर से घर के अंतराल में चलने वाले प्रसंगों और विसंगतियों में जीती कामकाजी महिला है। वह सोचती है कि औरतों की बराबरी का दावा करना एक बात है और सचमुच में उन्हें बराबरी के स्तर पर देख पाना बिल्कूल दूसरी बात, बल्कि पुरूष वर्ग को तो नौकरी करती औरतें ऐसी प्रतीत होती हैं, मानों उन्होंने पुरूषों के ग्रास को अपना निवाला बना लिया हो। विभा के लिए आज भी घर व बच्चे ही प्राथमिकता बना दिए गए हैं। उसे नौकरी करते वक्त तलवार के धार पर ही काम करना पड़ता है। घर-बाहर दोनों ही जगह अपनी सही भूमिका व पहचान के लिए लगातार लड़ना पड़ता है। उसके गर्भ में पल रहे जीव के प्रति उसकी शारीरिक पीड़ा और मानसिक व्यथा प्रकट होती है। संवेदनशील होने के चलते दप्तरों में औरतों को लेकर होनें वाली भौंडी बातचीत से वह उद्विग्न और क्षुब्ध रहती है। परिणामस्वरूप आक्रोश, घुटन की वजह से खुद को ही समाप्त कर देना चाहती है। वह कहती है, ''मुझे मर जाना चाहिए, तीस कंपोज खाओ सब समाप्त। ''[१९] उसकी सबसे बड़ी यह विशेषता है कि वह अपनी परछाई (बच्ची) को किसी भी वाद से दूर एक ऐसे रूप में प्रतिष्ठापित करना चाहती है, जहाँ वह केवल स्त्री हो, नारी हो, औरत हो।

उपन्यास में विभा का चरित्र अन्तर्मुखी है। वह जल्दी किसी के सामने खुलती नहीं है लेकिन एक बार किसी से मित्रता स्थापित हुई तो बिना कोई परदा रखे, खुद को परिभाषित करने लग जाती है। पात्रों के प्रकार की दृष्टि से विचार किया जाए तो विभा स्थिर पात्र है। उसके चरित्र का विकास लेखिका ने विश्लेषण पद्धति द्वारा किया है।

➢ **जानी :**

'शस्य का पता' उपन्यास का प्रमुख पात्र जानी नामक तोता है। दिल्ली के कनाट प्लेस के आसपास की सड़को पर पेड़ों की जो कतारें हैं, उनमें उसका घोंसला है। वह मनुष्यों जैसा ही व्यवहार करता है। जैसे कि, वह मनुष्यों की भाषा समझता है, उन्हीं की तरह चालाक, ईर्ष्यालु, संवेदनशील,

गुस्सैल और मजाकिया भी है। यह एक बेहद रोचक एवं सशक्त चरित्र है। वह सामाजिक विडम्बनाओं के प्रति बेहद कटु एवं मुखर है। उसका चरित्र एक आदर्श नेता के रूप में चित्रित हुआ है जो अपने लिए कम और अपने समस्त तोता समाज के लिए अधिक जीता है। विवशता में घिरे, उसका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष से भरा हुआ है, यह संघर्ष उसकी प्रकृति बन गया है। उसके चिंतन में गहराई है। वह सामने वाले व्यक्ति की पूर्वनिश्चित धारणाएँ तोड़ने और नए ढंग से सोचने के लिए उत्तेजित करने की खातिर सोच-समझकर ऐसा करता है। अपने समाज के विकास के लिए वह सभा आयोजित करता है, ईश्वर को याद करता है। सरकार और व्यवस्था को कोसता है। ''देखा नहीं कैसे भ्रष्ट लोगों के बचाव के लिए लोकसभा का एक बड़ा हिस्सा आ खड़ा होता है। ''[२०] जानी चेतनावादी विचारधारा का वाहक है। पात्रों के प्रकार की दृष्टि से जानी गतिमान पात्र है। इसका चित्रण करते समय लेखिका ने विश्लेषण पद्धति का आधार लिया है।

- **मधु :**

मधुलिका शुक्ला 'मोबाइल' उपन्यास की केन्द्रीय पात्र है। सम्पूर्ण उपन्यास की कथावस्तु उसके इर्द-गिर्द घूमती है। वह आधुनिक और आत्मनिर्भर है। मधु कामकाजी लड़की है जो पूरी गृहस्थी चलाती है, दप्तर में सहकर्मियों के बीच भेद डालने के लिए ठुकराल मधु को तरक्की देता है। जिससे वह सहकर्मियों की ईर्ष्या का केन्द्र बन जाती है। फिर भी वह उनके प्रति उन्मुक्त व्यवहार भी रखती है और अक्सर टकराव भी। मधु जब नवीन के प्रेम में पड़ती है तब सब कुछ जानते-समझते हुए भी धोखा खाती है। वह हारती है, रोती है, तड़पती है, मगर टूटती नहीं। कुँआरी मधु नवीन की दो जुड़वा बच्चियों रिद्धी और सिद्धि को जन्म देती है। बच्चियों को जन्म देना कुँ आरी माता का क्रांतिकारी कदम कहा जा सकता है। खासकर जब बेटियों की भ्रूण हत्याएँ हो रही है, तब बेटियों की रक्षा कर मधु ने अद्वितीय कार्य किया है जो अनुकरणीय है। नारी जाति के प्रति सम्मान भी है। अंत में आदित्य को पति के रूप में नवीन से मिलवाकर पूरी पुरूष सत्ता को एक तरह की चुनौती देती है।

पात्रों के प्रकार की दृष्टि से मधु गतिशील पात्र है, जिसका चरित्र-चित्रण लेखिका ने विश्लेषणात्मक पद्धति से किया है। लेकिन जहाँ-जहाँ नवीन प्रकट होता है, वहाँ आत्मकथनात्मक पद्धति का भी आधार लिया गया है।

गौण पात्र :

➢ **वरूण :**

'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास में वरूण विभा के पति के रूप में चित्रित पात्र है। जो अपने घर–गृहस्थी में लीन है। वह आधुनिक, प्रगतिशील विचारधारा का पति है जो अपनी पत्नी को सहचारिणी के रूप में स्वीकारता है। विवाह के बाद वह अपने उत्तरदायित्व के प्रति सचेत है। वह हृदय से बहुत ही सरल है। विभा की शारीरिक पीड़ा देख वह बेचैन हो जाता है। उसका कहना कि, ''ये दिन मैंने कितनी चिंता में बिताए हैं, मैं ही जानता हूँ।''[२१] उसे संवेदनशील मनुष्य की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देते हैं।

लेखिका ने बहुत बारीकी से वरूण के चारित्रिक विकास को अंकित किया है। विभा के प्रति प्रेम, बेटे के प्रति पितृत्व भाव, घर की जिम्मेदारियाँ आदि क्रियाकलाप उसकी मानसिकता के अनुकूल ही लेखिका ने चित्रित किए हैं। वरूण क्षमा शर्मा के उपन्यासों में चित्रित पुरूष पात्रों में सबसे सशक्त चरित्र है।

➢ **फरहत :**

फरहत 'मोबाइल' उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र है। यह उपन्यास की नायिका मधु की सहेली है लेकिन प्रकृति से मधु के विपरीत। मधु और फरहत एकही दप्तर में काम करते हैं और आपस में 'रूम पार्टनर' भी है। फरहत इसलिए पूरे जीवन कुँवारी रहने का संकल्प लेती है कि किसी मुस्लिम लड़के से विवाह नहीं करेगी। क्योंकि 'एक के बाद दूसरी फिर तीसरी सौतन' उसे असह्य है। और हिन्दू लड़के से शादी इसलिए नहीं कर सकती क्योंकि मजहब इजाजत नहीं देता। कथा की पृष्ठभूमि में अफगानिस्तान का युद्ध चल रहा है। कभी–कभी सहकर्मियों के मुस्लिम विरोधी बयान से फरहत आहत हो जाती है। मधु उसे समझाती है, जब कि फरहत स्वयं मुस्लिम कट्टरता की घोर विरोधी है।

केन्द्रीय पात्र मधु के चारों ओर फरहत घूमती है लेकिन कोई यादगार भूमिका निभाने में असफल सिद्ध होती है।

➢ **आदित्य :**

आदित्य 'मोबाइल' उपन्यास में मधु के सहकर्मी के रूप में चित्रित हुआ है। वह अत्यंत बुद्धिमान और सचेत नवयुवक है जो आधुनिक युग में इन्सानियत धर्म से वाकिफ है। वह दफ्तर में मधु और फरहत की गलतियों पर उन्हें डाँटता-डँपटता है तथा उनके गुणों की तारीफ भी करता है। लेखिका ने उसे एक सच्चे मित्र के रूप में साकार किया है, जो दिल को छू जाता है। नवीन जो मधु को धोखा देकर अपने पुरूषत्व के घमंड पर झूठी हँसी हँसता है, उसी नवीन के पुरूषत्व को मटिया मैल करने में आदित्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेखिका ने यह पात्र शब्दों के माध्यम से जीवंत कर दिया है। मोबाइल की तरह यह पात्र भी आज हर घर की जरूरत है।

क्षमा शर्मा के उपन्यासों की यह विशेषता है कि उनके पात्र मानवीय गुणावगुणों से परिपूर्ण हैं। उनके उपन्यास के ज्यादातर पात्र महानगरीय परिवेश का प्रतिनिधित्व करते हैं, परन्तु उनमें पाई जाने वाली मानसिकता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है।

३.३.२.३ क्षमा शर्मा के उपन्यास साहित्य में चरित्र-चित्रण की विशेषताएँ :

उपन्यास में चरित्र-चित्रण तत्त्व के समुचित निर्वाह के लिए उसमें कुछ विशेषताओं का होना आवश्यक है। क्षमा शर्मा के उपन्यासों में चरित्र-चित्रण के सन्दर्भ में कथात्मक अनुकूलता का निर्वाह किया गया है। अत: यदि पात्र कथावस्तु के अनुरूप सृजित नहीं होते तो उनमें एक प्रकार के विरोधाभास की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। क्षमा शर्मा के सभी उपन्यास आधुनिक युग से सम्बन्धित हैं। इस दृष्टि से 'मोबाइल' की मधु,'परछाई अन्नपूर्णा' की विभा आदि चरित्र उल्लेखनीय है।

चरित्र-चित्रण की दूसरी विशेषता पात्रों की मौलिकता है जो लेखक की प्रतिभा और प्रौढ़ता का परिचय देती है। इस विषय में क्षमा जी को विशेष महारत हासिल है। 'शस्य का पता' उपन्यास में जानी नामक तोता और अन्य पात्र इस विशेषता को सिद्ध करते हैं।

'स्वाभाविकता' के अभाव में चित्रित पात्र कृत्रिम और कल्पित प्रतीत होते हैं। क्षमा जी के उपन्यासों के पात्र बिल्कुल वास्तव लगते हैं क्योंकि वे किसी घटना के सन्दर्भ में वहीं करते हैं जो

सामान्य व्यक्ति करता है। अत: कहीं पर भी वे अमानवीय या कल्पित प्रतीत नहीं होते। 'दूसरा पाठ' का गौतम, 'मोबाइल' के आदित्य और नवीन आदि अनेक पात्र इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

सजीवता चरित्र-चित्रण का चौथा गुण है। यह गुण पात्रों के व्यक्तित्व को जीवंत बनाता है अन्यथा इसके अभाव में वे निष्प्राण प्रतीत होते हैं। क्षमा जी की उपन्यासों के पात्र सजीव हैं। इस दृष्टि से 'मोबाइल' में मधु की माँ, फरहत की माँ, 'परछाई अन्नपूर्णा' में विभा का मित्र बिंदु आदि प्रतिनिधि पात्र हैं।

चरित्र-चित्रण का अगला गुण यथार्थता है जो आज के उपन्यासों की एक उल्लेखनीय विशेषता मानी जाती है। एक सफल उपन्यासकार कल्पनाप्रधान पात्रों की सृष्टि भी इतनी सफलतापूर्वक करता है कि वे पाठक को सर्वथा यथार्थ प्रतीत होते हैं। 'शस्य का पता' उपन्यास पूर्ण रूप से इस गुण को सिद्ध करता है। उपन्यास का प्रमुख पात्र एवं नायक जानी नामक तोता, ऊँट, घोडा, तोती, बजुर्ग तोता, मोना नामक तोती आदि इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

उपन्यास के माध्यम से लेखक अपनी कलात्मक प्रतिभा का परिचय प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार कलात्मकता उपन्यास की सफलता का आधार होती है, उसी प्रकार पात्रों के सफल चरित्र-चित्रण में भी इस गुण की आवश्यकता होती है। क्षमा शर्मा ने अपने उपन्यासों के पात्र योजना में अपनी इसी खूबी का परिचय दिया है। इस दृष्टि से 'मोबाइल'उपन्यास की मधु का चरित्र उल्लेखनीय है। वास्तव में मधु अवैध संतान को जन्म देती है किन्तु इसके लिए उसमें कोई अपराधबोध नहीं है। और साथ ही धोखेबाज नवीन को वह अच्छा सबक सिखाती है। उपन्यास में मधु कोई उँचा आदर्श स्थापित नहीं करती किन्तु पाठक उसके कलात्मक चित्रांकन से प्रभावित हो जाते हैं। अत: कहा जा सकता है कि क्षमा शर्मा के उपन्यासों में वे सभी विशेषताएँ मौजूद हैं जो एक सफल रचनाकार के उपन्यासों में होती हैं।

३.३.३ कथोपकथन :

३.३.३.१ उपन्यास में कथोपकथन की भूमिका :

'कथोपकथन' उपन्यास के शिल्प का महत्त्वपूर्ण अंग है। पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप या संवाद को कथोपकथन कहते हैं। कथोपकथन का सम्बन्ध कथावस्तु और पात्रों के चरित्र-चित्रण दोनों से हैं। रामलखन शुक्ल के अनुसार 'उपन्यास की स्वाभाविकता कथोपकथन पर निर्भर करती है।' अत: कहा जा सकता है कि प्रभावशाली कथोपकथन ही उपन्यास को मनोरंजक, स्वाभाविक और सजीव बनाते हैं। कथोपकथन से उपन्यास में न केवल संक्षिप्तता, प्रभावोत्पादकता एवं रोचकता की वृद्धि होती है, बल्कि कथानक में निहित विषय का कथ्य और पात्रों की मनोवैज्ञानिकता का भी सफल चित्रण सम्भव होता है। कथोपकथन में उपन्यास के अन्य तत्त्वों की अपेक्षा अधिक कलात्मकता की आवश्यकता होती है। कथोपकथन वास्तविक प्रतीत होने चाहिए। श्रीमती बसंती पंत के अनुसार, '' कथोपकथन के मुख्यत: तीन उद्देश्य माने गए हैं- १. कथावस्तु का विकास करना २. पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन करना ३. उपन्यासकार के उद्देश्य को स्पष्ट करना।''[२२] अत: स्पष्ट है कि उसमें लेखक को अपने पूरे कथ्यात्मक अभिव्यक्ति कौशल का परिचय देना पड़ता है, तभी उसकी रचना में सारे उद्देश्य स्पष्ट हो सकते हैं और स्वाभाविकता आ पाती है।

३.३.३.२ क्षमा शर्मा के उपन्यास साहित्य में कथोपकथन :

क्षमा शर्मा के उपन्यासों में कथोपकथन का विविधतापूर्वक निर्वाह हुआ है। उन्होंने संवादों के माध्यम से पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है। 'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास में दप्तरों में औरतों को लेकर होने वाली भौंडी बातचीत का एक उदाहरण द्रष्टव्य है- '' 'सुना है एक और आ रही है।' 'सुना तो हमने भी हैं। हे भगवान दो-दो शेरनियों से कैसे निबटेंगे।' 'शेरनियाँ। गीदड़ियां कहिए। ऐसे औरतों से डरने लगे तो हो गया काम। ' 'हाँ यार, तुम्हारा क्या है, तुम तो बारी-बारी से दोनों को पटा लोगे।' ''[२३] यह संवाद दफ्तर के सहकर्मियों की नीचता के दर्पण बने हैं।

कथोपकथन ही कथा–वस्तु के भावी विकास का द्वार खोलता है। उपन्यासकार अत्यंत स्वाभाविक ढंग से कथोपकथन द्वारा घटना का परिचय देकर कथानक में गति लाता है और घटना क्रम आगे बढ़ाता है। कथोपकथन द्वारा कथा को नया मोड देकर कथा विकास होता है। इसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है– '' 'तुम्हें पता है माँ आ रही हैं। तुम उनसे मिलना चाहोगे ?' ठंडे स्वर में मधु बोल उठी। 'हाँ–हाँ।' नवीन उत्सुकता से बोला। जहाँ तक मधु समझ पाई उसकी उत्सुकता झूठी नहीं थी। उसने बात को आगे बढ़ाया, 'क्या तुम अपने फ्युचर प्लांस के बारे में सीरियस हो ?' 'हाँ क्यों नहीं ?' ' तो फिर माँ से शादी की बात करोगे ?' 'शादी की बात! हाँ करेंगे। अब तो खुश?' ''[२४] यहाँ 'मोबाइल' उपन्यास में मधु और नवीन के संवाद से कथा–प्रवाह को गति दी गयी है।

संवादों के माध्यम से उपन्यास में रोचकता उत्पन्न होती है। 'शस्य का पता' उपन्यास में तोता और तोती के संवाद प्रसंग हास्य पैदा कर रोचकता भर देते हैं– '' 'देखो वह वाला घोड़ा, कैसा कद्दावर जवान है! हाय सो क्यूट !' तोती ने इतराकर तोते से कहा। तोता हँसा – 'अभी तक छिनालेपन की आदत नहीं गई। अब बाहर वाले ही कद्दावर जवान नजर आते हैं।' 'हो न पूरे मेल चावनिस्ट कहीं के। किसी की तारीफ भी सहीं नहीं जाती। अरे घोड़ों की ही तारीफ तो की है। कौन से किसी तोते की कर दी है !' तोती ने रूठकर कहा ''[२५] इस प्रकार के संवादों में हास्य–प्रसंग के कारण सहजता उत्पन्न हुई है और इससे उपन्यास की रोचकता में वृद्धि हुई है।

कथोपकथन से देशकाल–वातावरण की भी पुष्टी होती है। क्षमा शर्मा के उपन्यासों में पात्रानुकूल संवादों की रचना की गई है। 'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास में निम्नलिखित संवाद पाठक को महानगरीय वातावरण में ले जाते हैं– '' 'अरे भाई यह क्या शिगूफा ले आए।' विभा ने पूछा। तो पंकज बोला,'लीजिए मैडम के लिए यह शिगूफा है। यह तो हमारा आंदोलन है आंदोलन मशीनीकरण के खिलाफ। हम इस आंदोलन को पूरे भारत,पूरे विश्व में फैला देंगे।' ''[२६] इस प्रकार के संवाद उपन्यास में देशकाल–वातावरण की सृष्टि करने में समर्थ होते हैं। क्षमा शर्मा ने संवादों के माध्यम से अनेक गूढ़ तथा गम्भीर विषयों को अभिव्यक्त किया है। 'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास में विभा के संवाद दृष्टव्य हैं – ''औरत सिगरेट पीती कुछ चुनौती–सी लगती है। रूबरू कुछ कह नहीं सकते। पीठ पीछे निंदा करना जरा मजेदार लगता है। ''[२७]

क्षमा शर्मा के उपन्यासों में संयोजित कथोपकथन में विविधता है। कहीं-कहीं दार्शनिक विषयों पर लम्बी बहसें चलती हैं तो कहीं-कहीं अत्यन्त संक्षिप्त संवाद हैं। 'मोबाइल' उपन्यास में मधु, फरहत और सहकर्मियों के बीच तथा 'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास में विभा और सहकर्मियों के बीच चलने वाली बहसें काफी विस्तृत संवाद के उदाहरण हैं। इसके विपरीत कुछ संवाद अत्यन्त संक्षिप्त हैं। उदाहरण के रूप में 'मोबाइल' उपन्यास में मधु तथा नवीन के बीच के संवाद देखे जा सकते हैं - '' 'मधुलिका से बात कर सकता हूँ। ''जी, मैं बोल रही हूँ ?।' 'अरे मधु, मेरी आवाज नहीं पहचानी ?।''कौन ? अरे ! कहीं तुम. . . . ' 'ठीक पहचानी हो भूली नहीं हो मुझे अब तक।' 'यह तुमने कैसे जाना नवीन ! टेलीफोन नम्बर कहाँ से मिला ?'
'तुम्हारे खत से बाबा।' ''[२८]

इस प्रकार क्षमा शर्मा के उपन्यासों में वार्तालाप का उत्कृष्ट प्रयोग किया गया है उनके'दूसरा पाठ' उपन्यास में संवाद अपेक्षाकृत विस्तृत हैं जबकि 'शस्य का पता' में संक्षिप्त हैं। दोनों प्रकार के संवाद कथावस्तु तथा पात्रों के चरित्र-चित्रण में उपयुक्तता तथा पात्रों में अनुकूलता, मुख्य विषय से सम्बद्ध, स्वाभाविक, संक्षिप्त तथा उपन्यास के उद्देश्य की पूर्ति में सर्वथा सहायक हैं।

३.३.४ देशकाल एवं वातावरण :

३.३.४.१ देशकाल एवं वातावरण का स्वरूप :

देशकाल एवं वातावरण तत्त्व उपन्यास रचना-प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसे परिवेश भी कहा जाता है। देश से तात्पर्य उपन्यास में चित्रित स्थान, काल से तात्पर्य उपन्यास जिस काल विशेष से सम्बन्धित है। काल, वातावरण से तात्पर्य सम्बन्धित स्थान तथा काल की परिस्थितियों से है। अर्थात् उपन्यास की विषयवस्तु जिस युग, समाज,जीवन तथा काल से सम्बद्ध रहती है, उसका यथार्थ बोध कराने के लिए तत्कालीन पारिवेशिक वातावरण का चित्रण आवश्यक होता है। डॉ. मक्खनलाल शर्मा के अनुसार ''देशकाल के अन्तर्गत समाज, राष्ट्र या राष्ट्र की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि आते हैं।''[२९]

कथानक को गति देने एवं उसकी विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए देशकाल वातावरण की बड़ी आवश्यकता होती है किन्तु उसकी विशेषताओं का ध्यान अगर उपन्यासकार न रखें तो परिवेश–तत्त्व उपन्यास का साधक न बनकर बाधक बन जाता है। उपर्युक्त देशकाल वातावरण के चित्रण से ही रचना रोचक एवं प्रभावकारी बन जाती है।

३.३.४.२ क्षमा शर्मा के उपन्यासों में देशकाल एवं वातावरण :

लेखक किसी क्षेत्र–विशेष को केंद्र में रखकर अपने कथानक का निर्माण करता है। उसका उद्देश्य होता है उस क्षेत्र के जन–जीवन की झाँकी प्रस्तुत करना, जिसे वह बदलते हुए परिवेश में अत्यन्त सूक्ष्म रूप में अंकित करने का प्रयास करता है। क्षमा शर्मा के उपन्यास इस दृष्टि से किसी विशिष्ट क्षेत्र–विशेष को केन्द्र में रखकर लिखे गए हैं। 'परछाई अन्नपूर्णा' महानगर के कामकाजी नारी को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। 'दूसरा पाठ' ग्राम जीवन के शैक्षिक स्थिति को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। 'मोबाइल' में देश की राजधानी में उच्चशिक्षित, कामकाजी युवतियों के संघर्ष को केन्द्र में रखकर लिखा गया है तो 'शस्य का पता' पर्यावरण की चिंता को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। इन उपन्यासों में देशकाल एवं वातावरण का सम्यक निर्वाह हुआ है।

'परछाई अन्नपूर्णा'उपन्यास की सारी कथा महानगर दिल्ली के आस–पास घूमती है। लेखिकाने उपन्यास में अनेक प्रसंगों में दिल्ली शहर के स्थानों का वर्णन कर उपन्यास को यथार्थ के निकट लाकर खड़ा कर दिया है। दिल्ली में बढ़ती झुग्गी–झोपड़ियों का वर्णन लेखिका इस तरह करती हैं –'' 'देखो–देखो इन झोपड़ियों की छतें उड़ गईं। 'एक स्त्री खिड़की से देखती चहकी थी। 'छतें ! क्या झोपड़ियों की छतें होती है–छप्पर !' एक आदमी ने कहा था। 'हाँ वही छप्पर। पिछली बार बाढ़ आई थी तब भी ये झोपड़ियाँ डूब गई थीं। आखिर ये लोग मरने के लिए जान–बूझकर यहाँ क्यों रहते हैं ? चले क्यों नही जाते?'उसी औरत ने कहा था।''[३०]

साहित्य सम्मेलन में गलाकाटू प्रतिस्पर्धा को लेखिका ने चित्रित कर सम्मेलन की दुनिया की परिस्थितियों की ओर संकेत किया है– ''जैसे–तैसे रोता–कलपता फंक्शन शुरू हुआ। माइक संभालने वाले, लम्बी–चौड़ी कविताओं को कब्र में से निकालने वाले कवि, महान लेखकों को मंच पर बुला–बुलाकर गद्दी सौंप रहे थे मंच पर वही अच्छे–अच्छे शब्द–समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता,

अंधविश्वासों को दूर करने में साहित्य की क्या भूमिका हो सकती है, स्त्री सुधार में हिन्दी कहानी की भूमिका आदि विषयों पर फलांजी और अलांजी, अमुक जी और तमुक जी बड़े-बड़े आलेख पढ़ रहे थे, भाषण झाड़ रहे थे। ''[३१] इसी प्रकार इस उपन्यास में साहित्य क्षेत्र में चलती राजनीति, कामकाजी स्त्री की अनेक समस्याएँ, स्त्रियों से सम्बन्धित घटनाओं का चटखारे लेता पुरूष वर्ग, पति का अपने गर्भवती पत्नी के लिए चिंतित होना आदि कई घटनाओं के माध्यम से लेखिका ने इसमें समकालीन स्थितियों की ओर संकेत किया है।

'शस्य का पता' उपन्यास की कथावस्तु की रचना भी मुख्यत: दिल्ली को केन्द्र में रखकर की गई है। दिल्ली के बाराखम्भा रोड, कस्तुरबा गांधी मार्ग, फायर ब्रिगेड लेन, कनाट प्लेस, लालकिला आदि स्थानों का चित्रण उसमें हुआ है। दिल्ली के पर्यावरण समस्या पर लेखिका ने दृष्टिक्षेप किया है। उपन्यास के सारे पात्ररूपी पक्षी और प्राणियों का मनुष्यों की तरह रवैये का सूक्ष्म चित्रण लेखिका ने किया है। उपन्यास में उचाट नजरों से देखता हुआ कौआ नजर आता है, जो आज की बिल्डिंग की जगह पहले के हरे-भरे पेड़ याद कर रहा है- '' 'बहुत दिन नहीं हुए हैं जब कनाट प्लेस में युकेलिप्टस के ऊँचे पेड़ जैसी सीधी सपाट बिल्डिगें नहीं उगी थीं। तब बड़ी-बड़ी कोठियाँ थीं। बड़े-बड़े लॉन वाली। शानदार फूलों से सजी। बेलपत्र, आम, अमरूद, शहतूत, खट्टी नारंगियों, यहाँ तक कि कटहल के पेड़ों से झूमतीं।' 'अँग्रेज जब गए, उस जमाने के अमीरों को बेच गए। पर तोतों, कौओं, को भला अमीरी-गरीबी से क्या।' ''[३२]

इस वर्णन में इतनी वास्तविकता है कि सारा चित्र ही मानसपटल पर उभर आता है। इसी प्रकार लेखिका ने अग्रवाल की कोठी और बगीचे पर जब बड़ी बिल्डिंग बननी शुरू हुई, उस वक्त को शब्द रूप में अंकित किया है- ''बड़े-बड़े पेड़ एकाएक मुरझाने लगे थे। उनकी जड़ों में तेजाब डाला गया था। पक्षियों को सब पता है। रात-रात भर वे उन पेड़ों की कराह और सिसकियाँ सुनते थे। जड़ों ने पत्तीयों से बाहरी तत्त्व के आक्रमण का संदेश ग्रहण किया था, पर क्या होता? पेड़ थे। भाग नहीं सकते थे। पक्षी भी नहीं थे जो उड़ जाते।''[३३] इस प्रकार पर्यावरण संतुलन बिगड़ने से सिर्फ मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी भी उजड़ रहे हैं। मनुष्य का ही नहीं, पशु-पक्षियों का व्यवहार भी बदल रहा है इस ओर लेखिका ने संकेत किया है।

क्षमा शर्मा के 'मोबाइल' उपन्यास की कथाभूमि भी दिल्ली ही है। अत: जगह-जगह उसमें दिल्ली का वातावरण अंकित है। यहाँ रोजमर्रा के परेशानियों से थके-हारें लोगों को लेखिका ने साकार किया है- ''बस में भीड़ बढ़ गई थी। थके-माँदे लटके चेहरे अपने-अपने घरों को जा रहे थे। हर रोज एक युद्ध था। अस्थायित्व की आँधी हर चीज को उड़ाए जा रही थी। स्टेबिलिटी का जमाना चला गया था। न सम्बन्ध स्थायी थे, न चीजें, न नौकरी ही। सब कुछ आपाधापी से भरा था। ऊपरवाले लूट रहे थे। नीचेवालों को पाँच रूपए देना भी उन्हें भारी पड़ रहा था। लोगों को बताया जा रहा था कि भूखे पेट रहना उन्हें सीख लेना चाहिए। वे भूखे रहेंगे तभी तो देश तरक्की करेगा।''[३४]

इस प्रकार क्षमा शर्मा के उपन्यास देशकाल एवं वातावरण की दृष्टि से बड़े सशक्त बन गए हैं। 'मोबाइल' और 'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास सामाजिक तथा स्त्री-चेतनाप्रधान उपन्यासों की श्रेणी में आते हैं। उनमें स्त्री के प्रति समाज का रवैय्या लेखिका ने चित्रित किया है। समीक्षक राजेंद्र सहगल जी के 'मोबाइल' उपन्यास के बारे में विचार है- ''वस्तुत: इस कृति को मोबाइल युग की पल-पल बदलते क्षरित-स्थलित नैतिक विचलनों में व्यक्ति और शहर के जटिल अंतर्संबंधों के आधार पर ही देखा समझा जा सकता है।''[३५] अत: सामाजिक परिवेश का बड़ा ही यथार्थ चित्रण लेखिका ने किया है।

३.३.५ भाषा-शैली :

भाषा भावाभिव्यक्ति का माध्यम है। अत: साहित्य की सभी विधाओं में उसका सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है। उपन्यास की शिल्पविधी में भाषा-शैली को समन्वित रूप में महत्त्व प्राप्त है। कुछ विद्वान भाषा और शैली को दो अलग चीजें मानते हैं। डॉ. सुरेश बाबर के अनुसार, ''भाषा मनोभावों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। शैली उस साधन का उपयोग करने की रीति अथवा पद्धति है। भाषा की शक्ति पर शैली की उत्कृष्टता अवलंबित होती है। ''[३६] अत: भाषा का महत्त्व शैली की अपेक्षा अधिक कहा जा सकता है। यहाँ भाषा तथा शैली को अलग-अलग रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

३.३.५.१ क्षमा शर्मा के उपन्यासों में भाषा–पक्ष :

उपन्यास की भाषा में कहावतों, मुहावरों तथा लोकोक्तियों का बड़ा महत्त्व है। जो भाव बड़े–बड़े वाक्य व्यक्त नहीं कर पाते, उसी भाव को कोई एक मुहावरा, लोकोक्ति या कहावत बड़ी सरलता और सहजता से व्यक्त कर देती है। भाषा के इन उपकरणों से उपन्यास में गतिशीलता आती है।

क्षमा शर्मा ने अपने उपन्यासों के माध्यम से अपनी भाषा की कुशलता का परिचय दिया है। उनके उपन्यासों में भाषा के निम्नलिखित रूप दिखाई पड़ते हैं।

३.३.५.१.१ गम्भीर तथा परिष्कृत भाषा :

क्षमा शर्मा ने अपने उपन्यासों में वर्णन तथा घटना विन्यास की रचना करते समय गम्भीर तथा परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया है। जिस वजह से पाठक खुद के गरेबान में झाँकने पर तथा चिंतन करने पर मजबूर हो जाता है। उदा. ''शालीनता की तकलीन, भारतीयता की याद, संस्कृति की पहचान सब इन्हें औरतों को देखकर याद आ जाता है।''[३७] इस प्रकार लेखिका की गम्भीर, श्लील और परिष्कृत शैली पाठक पर स्थायी प्रभाव डालती है।

३.३.५.१.२ पात्रानुकूल भाषा :

आवश्यकता और पात्रों के अनुसार जब साहित्यकार भाषा का प्रयोग करता है, तब वह भाषा अधिक रोचक, जीवंत एवं प्रवाहमयी हो उठती है। क्षमा शर्मा के उपन्यासों की विशेषता है कि उनमें वे पात्रानुकूल बोलचाल की भाषा का प्रयोग करती हैं। जैसे कि, '' अरे वाह रे खरमू। कब्र में पैर लटक रहे हैं और इश्क की पींगे बढ़ा रहा है। साले, अभी तो आधे ही उड़े हैं। किसी दिन उसके सामने पड़ गया तो पूरा गंजा कर देगी। मुँह में दाँत न पेट में आँत,चला है मजनूँ बनने।''[३८]

३.३.५.१.३ चित्रात्मक भाषा :

क्षमा शर्मा की भाषा मनोभावों के अनुकूल अपना वेश-विधान करती है। उनकी अभिव्यंजना सम्पन्न भाषा प्रसंग को पाठकों के सामने दृश्यमान कर देती है, अर्थात् उनकी भाषा में बिंबात्मकता की प्रखर शक्ति है। जैसे- ''वहीं एक पुराने नीम के पेड़ की फुनगी पर एक तोता चुपचाप बैठा था-किसी अकेले पड़ गए ऋषि की तरह।''[३९] वाक्य से अकेलेपन की मानसिकता का बिंब उभरता है। साथ ही क्षमा जी की भाषा में चित्रात्मकता की भी जबरदस्त शक्ति है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं- 'बसें, कारें, साइकिलें और लोग दौड़ रहे हैं। धुआँ और धूल उठ रही है।' तथा 'अभी आसमान में पक्षियों ने इतना ट्रैफिक जाम नहीं किया है।' आदि वाक्यों के प्रयोग से क्षमा जी की भाषा की क्षमता का अनुमान लगाया जा सकता है।

३.३.५.१.४ वातावरण प्रधान भाषा :

वातावरण प्रधान भाषा की कला में क्षमा शर्मा सिद्धहस्त हैं। अपनी लेखनी को यथार्थ के समीप लाने के लिए उन्होंने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत भाषा का प्रयोग किया है, उदा. ''सडक कहीं अँधेरे में डूबी थी तो कहीं जगमगा रही थी। मटमैले नीले धुएँ की एक चादर धीरे-धीरे नीचे उतर रही थी। यह प्रदूषण तो था ही सर्दी आने का पता भी था।''[४०]

३.३.५.१.५ काव्यात्मक भाषा :

कथ्य को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए, भावाभिव्यक्ति में तीव्रता लाने के लिए लेखिका ने काव्यात्मकता से भाषा को सजाया है। 'शस्य का पता' उपन्यास में जानी ऊँट की पीठ तबले की तरह बजा फुदक-फुदककर गाने लगा-

''जाट कहे सुन जाटनी,
तोय जईगाम में रहनी,
उँट बिलैया ले गई तो,
हाँजू-हाँजू कहनो।''[४१]

दूसरों की दया पर निर्भर ऊँट गाता है,

'दीनबंधू दीनानाथ मेरी सुध लीजिए,

हे दयालु दीनबंधु मेरी सुध लीजिए।'

बच्चे गली–गली लता मंगेशकर की नकल कर रहे हैं–

'यह जिंदगी उसी की है जो,

तोतो सोर का हो गया।'

बच्चे माइकेल जैक्सन की नकल में नृत्य कर रहे हैं–

'आय एम बैड,

तोतो, तोतो, तोतो, तोतो ---'

३.३.५.१.६ काल्पनिक भाषा :

क्षमा शर्मा के उपन्यासों में काल्पनिक भाषा का ठहराव उच्च प्रति का नजर आता है। कई स्थानों पर लेखिका ने कल्पना की उडान तेज कर दी है। 'शस्य का पता' उपन्यास पूर्णत: काल्पनिकता पर आधारित है। जैसे कि–

''परेड आगे बढ़ गई, किसी को पता न चला कि तोते ऊँट को ले उडे।''[४२]

'वह अपनी जादुई छड़ी से सांसदों की झोपडियों को महलों में बदल देती है।'

'जहाँ तक नजर जाती है बच्चे ही बच्चे दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है जैसे की इतने बड़े मैदान में हजारों फूल खिल उठे हैं और तितलियाँ मँडरा रही हैं।'

साथ ही ऊँट, चींटी की तरह हो गया है और तोता (तोतासोर) डायनासोर जितना भीमकाय हो गया है यह काल्पनिकता उपन्यास में दर्शाई गई हैं। उपन्यास में पर्यावरण के प्रश्नों पर रोशनी डालने की कोशिश करते हुए बोझिलपन न आए और पाठक मजे लेकर पढ़े इसलिए रंजकता की दृष्टि से काल्पनिक भाषा का प्रयोग किया गया है।

३.३.५.१.७ प्रतीकात्मक भाषा :

उपन्यास में शीर्षक, पात्र, तथा भाषा में प्रतीकात्मकता देखी जा सकती है। 'उपन्यास में प्रतीक, प्रतीकात्मक शीर्षक तथा प्रतीकात्मक चरित्रों की योजना द्वारा लेखक किन्हीं विचार बिंदुओं को संकेतित करता है। प्रतीक-योजना द्वारा वर्णन स्फीति से बचता हुआ अपने अभिप्रेत को व्यंजित करता है।'

'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास की नायिका विभा एक ऐसी औरत का प्रतीक है, जो अपने होने-न-होने की पीड़ा से गुजर रही है। जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद अपने जीवन की सार्थकता को तलाशने के लिए संघर्षरत है। 'मोबाइल' उपन्यास आधुनिक तथा आत्मनिर्भर मधु एवं फरहत जैसी लडकियों का प्रतीक है जो परिस्थिती का मुखर प्रतिरोध न करते हुए नियति को यथावत स्वीकार करती है, पर यह पिछडेपन का द्योतक नहीं बल्कि पुरूष के वर्चस्ववादी हथियारों को उन्हीं के विरूद्ध इस्तेमाल करते हुए उन्हें निहत्था करने की चेष्टा है। पशु-पक्षियों के माध्यम से लिखा गया 'शस्य का पता' उपन्यास शस्य श्यामला धरती की खोज का प्रतीक है और समस्त प्राणियों की जिजीविषा का प्रश्न भी है।

३.३.५.१.८ ध्वन्यात्मक भाषा :

लेखिका ने उपन्यासों में विविध ध्वनियों को शब्दांकित किया है। जिससे प्रभावोत्पादकता बढ़कर पाठक यथार्थता के निकट पहुँचता है। 'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं-

''अगर कहीं ऊँची एड़ी की खटखट या पायलों की रूनझुन सुनाई देगी, अनुमान तो कम से कम लगा ही लिया जाएगा कौन जा रही है।''[४३]

'जिधर से वह गुजर जाते थे, ईंट-ईंट थर-थर काँपती थी। '

'ईश्वर ने किकियाते हुए कहा था। '

' वह नीली बस सर्राटे भरती आगे निकल गई थी। '

'वह श्री तपाक से बोले।'

'पूरे हॉल में शोर फैल गया। '

'उसके पास आने पर विभा बुदबुदाई। '

'और दोनों खिलखिलाने लगती हैं। '

'मुँह पर उंगली रखे चुपचाप। '

'वे दोनों बाहर निकली तो किसी ने पीछे से आवाज दी। '

३.३.५.१.९ विज्ञापन भाषा :

लेखिका ने उपन्यासों में इस ओर संकेत किया है कि राजनीतिक पार्टियाँ, नेतागण, धर्म, विज्ञान, अलगाववाद, स्त्रियों की समानता, बच्चों का पोषण और विज्ञापन इन सब में सिर्फ 'डर' से काम लिया जा रहा है। डर को जीवन का केन्द्रीय भाव बनाया जा रहा है। किसी भी काम के लिए बड़े उद्देश्य नहीं बचे। 'शस्य का पता' उपन्यास में विज्ञापन भाषा का उदाहरण दर्शनीय हैं–

''कोलेस्ट्रल बढ़ा तो ह्रदय बंद हुआ, इसलिए अमुक ब्रांड का तेल इस्तेमाल करें ।''[४४]

'कहीं आपके यहाँ शॉर्ट सर्किर्टिंग तो नहीं? पूरा घर जलकर तबाह हो सकता है। इसलिए अमुक कम्पनी के स्विच इस्तेमाल करें। '

'आपका बच्चा बढ़वार में है। पौष्टिकता की कमी उसके व्यक्तित्व के विकास में बाधक है, इसीलिए फलाँ मिल्क दें। '

'जब बुढ़ापा आप पर हावी हो जाएगा कोई सहारा न देगा । इसलिए जीवन बीमा कराएँ। '

'विटामिन–ए की कमी बच्चों में अंधता बढ़ा सकती है ।'

'लड़की को पौष्टिक आहार नहीं देंगे तो भावी पीढी कमजोर पैदा होगी।'

इसप्रकार लेखिका कहती है कि बड़े उद्देश्यों की बातें तक सुनने में किसी को दिलचस्पी नहीं है, इसीलिए क्षणिक संवेगों से निशाना साधा जा रहा है।

३.३.५.१.१० आधुनिक सत्य की भाषा :

आधुनिक परिवेश के अनुसार आधुनिक सत्य की भाषा भी बदल रही है। मूल सत्य अपने उपर पड़े इतने वर्षों की परतों को एक-एक कर खोल रहा है। प्रस्तुत है इसी के अनुरूप कुछ उदाहरण -

'' बुद्ध ने कहा था कि एक कटोरी आटा उस घर से माँग लाओं जहाँ मौत कभी नहीं आई।''[४५]

'किसी भी गलत बात के प्रतिकार का सबसे अच्छा तरीका है उसका जवाब न देना। '

'चुप्पी से बड़ा अस्त्र तो कोई नहीं हो सकता ।'

'पैसा, पद, प्रतिष्ठा, स्वाभिमान, सुविधा के शब्द है अपने से कमजोर के लिए। अपने से बड़े के सामने वह विनम्रता में बदल जाते है। '

'मौत एक ऐसा भय है जो पल-पल जीने की प्रेरणा देता है। '

'संख्या में ज्यादा हैं, शोर मचा सकते हैं, रास्ता रोकसकते हैं, काले झंडे दिखा सकते हैं तो समझ लीजिए, दुनिया जीत सकते हैं।'

'राजनीति में सारे उठापटक के रिश्ते जायज हैं।'

३.३.५.१.११ अलंकारिक भाषा :

लेखिका ने उपन्यास, प्रवचननुमा न होते हुए रंजक हो इसलिए कथ्य को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए अलंकारिकता का प्रयोग किया है। जिससे भावाभिव्यक्ति गहन होते हुए भी तरल है। प्रस्तुत है अलंकारयुक्त भाषा के उदाहरण-

- **उपमा अलंकार :**

''लेकिन फिर भी क्यों जोंक की तरह चिपकी जा रही हूँ ?''[४६]

'उधर तोतों ने ऊँट को आसमान में कंदील की तरह टाँग दिया था। '

'एकदम माधुरी दीक्षित की तरह बड़ी-बड़ी आँखों वाली।'

'कंदील की तरह लटका ऊँट पूछता है।'

'दिल्ली सुरसा की तरह मुँह फैला रही है।'

‘ऊँट तो गेहूँ के बीच में घुन की तरह पिस गया।’

‘इंडिया गेट की बनावटी खामोशी की तरह।’

‘उसके मन में ज्वार-भाट जैसी उथल-पुथल है।’

➢ **रूपक अलंकार :**

‘‘प्रेम के बाजार में टके सेर मिलती है भावनाएँ। ’’ [४७]

‘उसकी आँखे क्या हैं एक्स-रे मशीन है। ’

‘आदमियों ने जहाजरूपी पक्षी बनाया जिससे गति को अपनी गुलाम बना सकें। ’

‘जो ईंटे थर-थर कापती थी वे ही रास्ते में दीवार बन गईं। ’

‘हाँ उनका नाम ले-लेकर फसल कटती रही। ’

➢ **श्लेष अलंकार :**

‘अरे, उनकी राय भी कोई राय हैं। ’

३.३.५.१.१२ मुहावरें, कहावतें :

➢ **मुहावरें :**

मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से क्षमा शर्मा की भाषा विविध रूप रंग लिए हुए हैं। इस वजह से उन्होंने भाषा पर तो अपना अधिकार दिखा ही दिया है और जो ‘कहना है’ उसे भी सहज रूप से कह डाला है। मुहावरों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

‘‘ चाँदी ही चाँदी होना ’’[४८]	‘कोहराम मचना’	‘सेर को सवा सेर’
‘तीर मारना’	‘बगलें झाँकना’	‘दूभर हो जाना’
‘घिग्घी बँधना’	‘नत्थी कर देना’	‘जिंदगी मुहाल करना’
‘भरी रात में सूरज दिखनां’	‘पंगा लेना’	‘गला सूखना’
‘गुल खिलाना’	‘मुँह मारना’	‘गुस्से को पीना’
‘बला टलना’	‘काम तमाम करना’	‘कहर ढ़ाना’

'उल्लू सीधा करना'	'खयाली पुलाव पकाना'	'जड़ से उखाड़ना'
'हिलाकर रखना'	'बर्बाद करना'	'बुद्धू बनाना'
'जश्न मनाना'	'वायदे से मुकरना'	'आँखे मिचकाना'
'आसमान गूँज उठना'	'टके सेर से सस्ती होना'	'सिर मढ़ देना'
'मौत के मुँह से खींचना'	'ईर्ष्या से फुँके जाना'	'लम्बी हाँकना'

- **कहावतें :**

कहावतों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

''हाथ कंगन को आरसी क्या।''[४९]

'जहर–जहर को काटता है।'

'मारा घुटना फूटी आँख।'

'जितना डरोगे डर उतना पीछा करेगा।'

'इधर कुआँ तो उधर खाई।'

'आँख ओझल सो पहाड़ ओझल।'

'मुसीबत का आना और अपने आप चल जाना।'

'एक पन्थ दो काज।'

'जहाँ बीमारी होती है वहीं उसका इलाज भी मिलता है।'

'दूसरे को छोटा करनेवाला खुद सबसे पहले छोटा होता है।'

३.३.५.१.१३ नारेयुक्त भाषा :

क्षमा जी ने सामाजिक स्थितियों को मद्देनजर रखते हुए नारेयुक्त भाषा का प्रयोग कर राजनीतिक रूप–रंग से उन्हें सराहा है। जैसे कि –

'' मजबूर एकता जिंदाबाद। ''[५०]

' उठो, जागो, ताकतवर बनो। '

'हमें हमारे पेड़ चाहिए। '

'हमें हमारे फल चाहिए ।'

'हमें हमारी पहचान चाहिए।'

'हमें हमारा अधिकार चाहिए।'

'हमें तोतिस्तान चाहिए।'

'भारत के तोते एक हों।'

'दुनिया के तोते एक हों।'

'अनेकता में एकता।'

'भयभीत करो और जगत जीत लो।'

'विश्व एक हों।'

'तोतो तोतो,किसका तोता उसका तोता, मेरा तोता, सबका तोता।'

'जानी, तुम आगे बढ़ो हम तुम्हारे साथ हैं . . . जानी जानी जिन्दा बाद ! हमारा नेता कैसा हो ? जानी जैसा . . . . जानी जैसा ।'

'रंग भेद मुर्दाबाद . . . जातिभेद मुर्दाबाद. . . . शक्तिभेद मुर्दाबाद।'

३.३.५.१.१४ शेरो-शायरी :

लेखिका को अपने अनुभवों के संप्रेषण के लिए 'कैसे कहना है' यह संकट खड़ा नहीं होता यहीं उनके कलापक्ष का सामर्थ्य है। इसी बात को सिद्ध करते हुए शेरो-शायरी के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है-

''अश्कों में जो पाया है वो गीतों में दिया है,
इस पर भी सुना है कि जमाने को गिला है,
हम फूल हैं औरों के लिए लाए हैं, खुशबू,
खुशबू . . . . . खुशबू . . . . खुशबू . . . . ''[५१]

'दिल नाऊमीद तो नहीं, नाकाम ही तो है। '

३.३.५.१.१५ दोहा–चौपाई :

लेखिका विश्व की अनंत शक्ति को आवाहन करने के लिए दोहा–चौपाई का मार्ग दिखलाती है–

'' ऊधौ मन न भए दस बीस, एक हुतौं सो गयौं श्याम संग . .एक हुतौ सो गयौ नवीन के संग।''[५२]

'बसि कुसंग चाहत कुशल, यह रहीम अफसोस महिमा दाटी समुद्र की रावण बसौ परोस।'

'रहिमन निज मन की बिथा मन ही राखौ गोय, सुन इठलैहें लोग सब, बाँट न लइहें कोय।'

'जो लड़े दीन के सूरा सोई–सूरा सोई ।'

'रहिमन धागा प्रेम का, मत तोंड़ो चिटकाय। टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाए।।'

'हुइए सोइ जो राम रचि राखा। '

३.३.५.१.१६ शब्द प्रयोग :

क्षमा जी ने अपने उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का अधिक इस्तेमाल किया है वह जरूरी भी है क्योंकि उपन्यास के प्रमुख पात्र सुशिक्षित हैं। लेकिन इसके साथ ही उर्दू–फारसी,तत्सम, तद्भव आदि कई प्रकार के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

- **अंग्रेजी शब्द एवं वाक्य :**

कोर्ट	फायर	कॉन्सेप्ट	कमांडर
बिल्डर	पेटेंट	मैसेज	पैंसिल
बिल्डिंग	साइन	द बुल	किडनैप
ऑक्सिजन	मल्टी–नेशनल्स	पॉलिटिक्स	सैटेलाईट
मीटर	माइनस	हरक्यूलिस	जोडिएक
कार	पेम्फलेट	वर्ल्ड बाँक	शार्पिन
हीरो	प्लस	न्यूमरोलॉजिकल	हीरोइन
बस	बेसिक	कैल्शियम	मैजोरिटी
गर्ल फ्रेंड	रिजेक्शन	रिवेंज	डस्टबिन

मास्क डबलगेम मायनॉरिटी फीलिंग

अंग्रेजी वाक्य –

‘ ओह नो पॉलिटिक्स प्लिज।’

‘जानी द ग्रेट वारियर।’

‘व्हाट इज योर सनसाइन। ’

‘डील इज ए डील।’

‘आई बिलीव इन इक्वलिटी आफ सक्सेज. . . . . हाँ बहनो।’

‘वी शैल ओवरकम वन डे।’

‘माय डीयर, लोकतंत्र इज द गेम ऑफ नम्बर्स।’

‘हो हिप–हिप–हुर्रे. . . चियर्स. . ..।’

‘स्पेशली केम फ्रॉम असम जंगल्स, साऊंड बाई तोतोसोर।’

‘आफ्टर ऑल वन बर्ड लाइक पैरेट हूँ कैन स्पीक लाइक मैन,कैन बी काउंटेड एज मैन, व्हाई नॉट।’

‘आई विश हर गुडलक।’

- **उर्दू–फारसी के शब्द :**

कमजोर	शराब	असर	बावड़ी	दूर	बदला
बला	तलाश	जहर	फैसला	पैदा	गम
रोज	यार	नाकाम	आराम	गुलाम	शाम
परवाह	खुशबू	गलतफहमी	जिंदगी	खूबसूरत	माफ
दुनिया	परेशान	नजर	फर्क	नाराज	ताज्जुब
कमाल	जमाना	मजाक	बहादुरी	कम्बख्त	तमाम

- **तत्सम शब्द :**

गति	नायक	अंत	शीशु	सम	तत्काल

मोक्ष	पुत्र	भ्रष्ट	अनंत	कर्म	गंध
पुरातत्त्व	आकाश	फल	उपनिषद्	स्वर्णिम	ईश्वर
स्वर्ग	शिलालेख	अक्सर	भाग्य	कुंडली	किम्वदंती
रक्षा	पुरूषार्थ	संसार	कथा	निर्णय	मर्यादावान
विष्णु	सिद्धांत	न्यायाधीश	मित्र	चक्र	लक्ष्य
सिंहासन	प्रारब्ध	देवता	करूण		

- **तद्भव शब्द :**

बेईमानी	टोकरी	सत्ता	व्यापारी	कानून	कूड़ेदान
आँसू	फूल	ताकतवर	कारनामा	महिने	जमीन
धज्जियाँ	किताब	गोद	सिर	शक्तिशाली	नकली
भरोसा	बचपन	गर्दन	गुंडा	आसमान	मूँह
इमारतें	धमाका	टाँग	गर्मी	बम	इकट्ठे
छोटी	उजाला	गोली	पता	कंधा	चुपचाप
रद्दी	पंख	गेंद	वक्त	श्याम	पेड़

- **सहयोगी शब्द :**

हरे-भरे	पेट-पूजा	कम-से-कम	आजू-बाजू
लम्बी-मोटी	वेद-पुराण	सुनने-समझने	दूर-दराज
शिव-पार्वती	सफाई-कर्मी	लगवे-भगवे	वर्ग-चेतना
डाँट-डपट	बा-सबूत	चोर-उचक्के	ठठ-के-ठठ
जीना-मरना	माल-मलाई	घर-बार	मंदिर-मस्जिद
भोले-भंडारी	चोरी-छिपे	तोड़-फोड़	आनन-फानन

➢ **द्विरूक्त शब्द :**

खट–खट झर–झर डाँय–डाँय भर–भर फर–फर

फुदक–फुदककर दूर–दूर हूँ–हूँ भीनी–भीनी जार–जार

➢ **विशेषणयुक्त शब्द :**

कलमुँही मैना	दयालु स्त्री	बाँज का पेड़
तपती रेगिस्तान	सदियों का वास्ता	बेर की बया
बियाबान खंडहर	सिरफिरा तोता	दहशत–भरा माहौल
उत्तेजक भाषण	कद्दावर ऊँट	कमजोर–प्रगतिशील शक्ति
मूँठवाली छड़ी	पालतू तोता	जहाजरूपी पक्षी
स्मृति वन	लम्बी–मोटी चोंच	प्राकृतिक स्मृति
बुद्धिजीवी किस्म का तोता	लालची कुत्ता	कौम का गद्दार
पपडाएँ ओंठ	बिना कंठी फौज	गहरी किस्म की खामोशी

'नज़र' के लिए विशेषणों का प्रयोग निम्नांकित है– उचाट नज़रें, गहरी नज़रें,स्नेहिल नज़रें, जलती नज़रें, चीली नज़रें, कातर नज़रें।

'डर' के लिए प्रयुक्त शब्द निम्नांकित है– किसी धर्म के खतरे में पड़ जाने का डर, आपतकाल जैसी स्थितियों का डर, केन्द्रीय पार्टियों की तानाशाही का डर, औरतों की आजादी का डर, मंडल के समर्थक और विरोधियों का डर, बहुसंख्याक और अल्पसंख्यकों का डर।

'दुश्मन' के लिए भी विविध विशेषणों का प्रयोग किया है– धर्म के दुश्मन, पंथ के दुश्मन, स्त्रियों के दुश्मन, प्राणियों के दुश्मन, सख्त दुश्मन।

➢ **पेड़–पौधों के नाम :**

नीम	कटहल	अशोक	युकेलिप्टस	जामुन	बेल
इमली	देवदार	आम	ताडी	चीड़	अमरूद
पाम	मौलिश्री	शहतूत	बड़	गुलमोहोर	बरगद

खट्टी नारंगी पिंपल पेरू

➢ **पक्षी :**

लेखिका के 'शस्य का पता' उपन्यास में विविध पक्षियोंका संदर्भ नजर आता है–

तोता	बया	उल्लू	चिड़िया	डायनोसोर	चमगादड़
कौआ	डोडो	हंस	कबूतर	गौरेया	घड़ियाल
बत्तख	गिद्ध	हवेले	गिलहरी	चील	मैमथ
मोर	श्यामा	बगुला	बुलबुल		

➢ **पशु :**

ऊँट	चीता	हाथी	नंदी	साँप	घोडा
बंदर	बकरी	लंगूर	बाघ	पांडा	शेर

➢ **अन्य पर्यावरणीय घटक :**

मगरमच्छ	मछली	डालफिन	सुरसा	व्हेल	चींटी
छिपकली	मक्खी	मच्छर	पतंग	तितलियाँ	

इस प्रकार क्षमा शर्मा के उपन्यास की भाषा प्रौढ़ और सुशिक्षित भाषा है। लगभग सभी पात्र सुशिक्षित होने के कारण ही अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है। उपन्यास की भाषा में पारदर्शिता ही नहीं है बल्कि वह सहजता भी है जो किसी भी कृति को पठनीय बनाती है। समीक्षक ज्ञानप्रकाश विवेक के अनुसार, ''लेखिका के पास शब्दों से खेलने का हुनर है। वह खेलती हैं। यह खेलना दुस्साहसपूर्ण भी है। चूँकि–कि शिकस्ता हो तो अजीजतर, है निगाहे–आईनासाज में।''[५३] यही खूबी उनके उपन्यास–'शस्य का पता' में और अधिक नुमायाँ होती है, जहाँ वे तंत्र के खोखल पर गहरा तंज करती हैं।

३.३.५.२ : क्षमा शर्मा के उपन्यासों में शैली-पक्ष :

उपन्यास की रचना-विधि में शैली-तत्त्व का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी के द्वारा उपन्यासकार अपनी रचना को प्रभावपूर्ण और आकर्षक बनाता है। शैली की परिभाषा देते हुए डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने कहा है, ''शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है, जो उस विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं।''[५४] क्षमा शर्मा के उपन्यासों में अनेक शैलियों के दर्शन होते हैं। उनके उपन्यासों को किसी एक निश्चित शैली में बाँध कर रखना कठिन है। उनके सभी उपन्यासों में आवश्यकतानुसार अनेक शैलियों का प्रयोग पाया जाता है। इस प्रकार उनके उपन्यासों में शैली की दृष्टि से विविधता है। शैली के अनुसार उनका विवेचन प्रस्तुत है।

३.३.५.२.१ वर्णनात्मक शैली :

घटना, विचार,पात्रों के मनोविज्ञान आदि सभी का यथेष्ट वर्णन और विश्लेषण इस शैली में किया जाता है। इस शैली में उपन्यासकार कथा और पात्रों का वर्णन तृतीय पुरूष के रूप में करता है। इसे ऐतिहासिक शैली भी कहा जाता है। विश्व का अधिकांश साहित्य इसी शैली में लिखा गया है। क्षमा शर्मा ने अपने उपन्यासों में अधिकांशत: इसी शैली का प्रयोग किया है। उनके चारों उपन्यास अपने भीतर व्यापक जीवनानुभव समाए हुए हैं। अत: उनकी भाषा वर्णनात्मक हो गई है। उपन्यास में आने वाली घटनाओं और समस्याओं के अतिरिक्त जब क्षमा जी पात्रों के हाव-भाव का अंकन करती हैं, तब इसी शैली को अपनाती हैं। लेखिका की इस शैली में भी बड़ी ताजगी है, जैसे- ''प्रागैतिहासिक गुफाओं और शैल चित्रों में उनके रेखांकन मिलते हैं। खुदाई के दौरान अनेक सभ्यताओं के आसपास भी वे देखे गए हैं। हमारी मायथोलॉजी में भी इनका वर्णन मिलता है। मगर ऐसे तोते का जिक्र कभी नहीं सुना गया।''[५५]

३.३.५.२.२ आत्मकथात्मक शैली :

इस शैली में कथा को कोई पात्र इस रूप में कहता जाता है, जिससे यह प्रतित होता है मानों वह अपनी अनुभूति को प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत कर रहा है। इस में लेखक के सामने सारी कथा

गुजरती–सी लगती है और वह इसका तटस्थ द्रष्टा बन जाता है। उनके 'परछाई अन्नपूर्णा ' की विभा, 'मोबाइल' की मधु तथा 'शस्य का पता' का जानी तोता कई स्थानों पर आत्मकथात्मक शैली में उपन्यास को आगे बढ़ाते चलते हैं। इस शैली के कारण पात्रों के अन्तर्द्वद्व को प्रकट करने में लेखिका को अपूर्व सफलता मिली हैं, जैसे– ''खूसट कहीं का, जैसे सारे जहान की लड़कियाँ मरी जा रही थीं। सोलह साल से लेकर साठ साल तक की स्त्रियों के प्रेम प्रसंग सुन लो इससे और अपनी बेटियों को ताले में बंद रखता था। कितने फख्र से कहता है मेरी लड़कियाँ तो कभी अकेली कनाटप्लेस तक नहीं गई। ''[५६]

३.३.५.२.३ पत्रात्मक शैली :

इस शैली में उपन्यासकार कथा को कुछ पात्रों के पत्रों के रूप में प्रस्तुत करता है जिससे कथा यथार्थ के अधिक करीब लगती है। क्षमा शर्मा के 'मोबाइल' उपन्यास में इस शैली का आंशिक प्रयोग हुआ है। इस उपन्यास में मधु ने लिखा हुआ पत्र नवीन के चरित्र को उद्घाटित करता है। नवीन के दिखाने के दाँत कुछ तथा खाने के दाँत कुछ और है। वह अपनी जिंदगी में आयी हर लड़की को शतरंज का प्यादा समझकर जीतने की ख्वाईश रखता है। इसी उपन्यास में मधु के माँ के पत्र का सन्दर्भ मिलता है किन्तु शैली की दृष्टि से वह इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है।

३.३.५.२.४ पूर्वदीप्ती शैली :

इस शैली में पात्र अतीत की स्मृतियों में खो जाता है और उन सन्दर्भों से आगे की कथावस्तु को जोड़ता जाता है। इस शैली का क्षमा शर्मा ने बहुत ही कलात्मकता से उपयोग किया है। उपन्यास में सबसे अधिक प्रयोग इसी शैली का हुआ है। उदा. '' लेकिन जब हम छोटे थे तो वह मधु को तो खास प्यार करते थे। अपने दोस्त के घर से दिखाने के लिए बस्ते में छिपाकर खरगोश लाते थे। कन्धे पर लिये–लिये घूमते थे। लेमनचूस दिलवाते थे। ''[५७]

३.३.५.२.५ सांकेतिक शैली :

इस शैली में कथा या घटना का ब्यौरा न देकर ऐसा चित्र प्रस्तुत कर दिया जाता है जो सांकेतिक है। 'शस्य का पता' में पर्यावरण को केंद्र में रखकर बाजारीकरण, औद्योगीकरण और भूमंडलीकरण से होने वाले खतरों की ओर संकेत किया गया है। ''दिल्ली में बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कई उदाहरण लेखिका प्रस्तुत करती है। 'डायनासोर खत्म हुए, डोडो खत्म हुई, हवेलें जैसे-तैसे बचा ली गई, मगर मैमथ न बच सकें।' ''[५८]

३.३.५.२.६ प्रतीकात्मक शैली :

इस शैली के माध्यम से उन भावों को स्वाभाविक ढंग से प्रकट किया जाता है जिन्हें, प्रकट करने में सामान्यत: व्यक्ति कठिनाई अनुभव करता है। लेखिका क्षमा शर्मा ने अनेक स्थानों पर इसका आधार लिया है। उदा. 'मोबाइल' उपन्यास में ''ब्राम्हण लड़की मधुलिका शुक्ला उर्फ मधु तथा मुस्लिम लड़की फरहत के रूम पार्टनर के रूप में रहने की उन्नत सोच, आदित्य के मुस्लिम विरोधी बयानों से आहत फरहत की उदारता, नवीन के साथ भावनात्मक उद्वेग में बहकर शारीरिक संबंध स्थापित करने के बाद मधु का बिना विवाह किए दो पुत्रियों को जन्म देने, शादीशुदा नवीन के छल को मधु द्वारा आत्मसात करने और नवीन को मुक्त करने तथा फरहत का धर्म के साये में खुद को बलिदान करने जैसी मन:स्थितियों ''[५९] को लेखिका ने प्रतीकात्मक रूप में वर्णित किया है।

३.३.५.२.७ व्यंग्यात्मक शैली :

लेखिका सामाजिक जीवन से संबंधित कई पहलुओं पर करारा व्यंग्य करती हैं। 'मोबाइल' उपन्यास के माध्यम से मध्यवर्गीय नारी की दशा और दिशा दोनों पर तीखा प्रहार करती है।

'शस्य का पता' उपन्यास ''नेताओं की धन और पदलोलुपता ने राजनीति को सामाजिक-राष्ट्रीय समस्याओं से काट कर नितांत वैयक्तिक धरातल पर खड़ा कर दिया है। अपराध और राजनीति एक-दूसरे के पूरक बन गए हैं। नेता आम जनता से अलग-थलग पड़ गए हैं। संसद उनके लिए कुछ बहस-मुबाहिसों और अपने निहित स्वार्थों की सिद्धि का एक अड्डा बन गई है। तब ऐसे

में जनाक्रोश तो बढ़ेगा ही और आंदोलन भी होते रहेंगे।''[६०] इस कृति में ये सारे व्यंग्यार्थ ध्वनित होते हैं।

३.३.५.२.८ मिश्रित शैली :

इस शैली में दो मुख्य शैलियों का मिश्रण होता है। सामान्यत: वर्णनात्मक शैली और अन्य एक शैली के प्रमुख संयोग से मिश्रित शैली बनाई जाती है। साथ ही अन्य शैलियों का भी उपयोग इसमें आवश्यकतानुसार किया जाता है। आजकल उपन्यास लेखन में साधारणत: इस शैली का उपयोग सबसे अधिक किया जाता है। क्षमा शर्मा ने अपने चारों उपन्यासों में मिश्रित शैली का ही प्रयोग किया है।

इस प्रकार लेखिका ने अपने उपन्यासों में वर्णनात्मक, आत्मकथनात्मक, पत्रात्मक आदि विभिन्न शैलियों का सहज स्वाभाविक प्रयोग किया है। उक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि कथाकार क्षमा शर्मा के उपन्यास की भाषा-शैली निर्विवाद रूप से प्रशंसनीय है। साथ ही एक ओर तो हमें प्रौढ़ समर्थ तथा विवेचनात्मक भाषा-शैली के दर्शन होते हैं, तो दूसरी ओर विभिन्न शैलियों का समन्वित सफल प्रयोग भी देखने मिलता है।

३.३.६ उद्देश्य :

संसार की कोई भी वस्तु निरूद्देश्य नहीं होती है। अत: कोई भी साहित्यिक रचना, चाहे वह कहानी हो या उपन्यास बिना किसी उद्देश्य की नहीं होती। यह रचना की सार्थकता होती है। पाठक इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर रचना का विश्लेषण मन-ही-मन करता है तथा साहित्य का आनन्द लेता है।

३.३.६.१ स्वरूप और महत्त्व :

उपन्यास जीवन के अनेक प्रश्नों को लेकर चलता है। उन्हीं के अच्छे-बुरे पहलुओं को हमारे सामने उजागर करता है। कई बार उन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास भी करता है। वास्तव में

साहित्यकार बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति होता है। रामलखन शुक्ल के अनुसार, ''लेखक का यह प्रमुख कर्तव्य होता है कि समाज की बुराइयों की धज्जियाँ उड़ाते हुए, उसकी अच्छाइयों की ओर संकेत करते हुए कुछ ऐसे रचनात्मक पक्ष भी प्रस्तुत करे जिससे रूग्ण समाज के रोग का निदान हो सके और भविष्य की निर्माणोन्मुख प्रवृत्तियाँ भी गतिशील हो सकें।''[६१]

३.३.६.२ क्षमा शर्मा के उपन्यासों में उद्देश्य :

क्षमा शर्मा की दृष्टि से साहित्य का उद्देश्य सोए हुए को जगाना है। अपने लेखन के उद्देश्य को लेकर क्षमा जी का कहना है, 'लिखना खुद को अभिव्यक्ति देने का साधन भर बना है।' ''फिर महिलाओं को अगर ताकत मिलेगी तो जाहिर है कि इससे समाज का भला होगा। यह बीते जमाने की बात है कि औरत अगर नौकरी करने लगेगी तो समाज बिगड़ जाएगा।''[६१] क्षमा जी की यहीं बेचैनी उनके उपन्यासों में चित्रित हुई है। उनके उपन्यासों में समाज के शेष आयामों के साथ-साथ स्त्री शोषण, शैक्षिक भ्रष्टाचार, पर्यावरणीय चिंता के प्रति अधिक उद्विग्नता दिखाई देती है। उनका 'मोबाइल' उपन्यास आधुनिक दुनिया में नारी की स्थिति को रेखांकित करता हुआ नारी की योग्यता को प्रस्थापित करता है। सदियों से पुरूष-समाज ने स्त्री को देहमात्र समझकर उसे बौना बनाए रखने की काशिश की है। आधुनिक युग में यह कोशिश रूप बदलकर सामने आ रही है। लेखिका ने इस उपन्यास द्वारा यह प्रमाणित किया है कि स्त्री केवल देहभर नहीं है, उसके पास भी मस्तिष्क है, जिसके बल पर वह पुरूषों के समान चुनौतीपूर्ण काम कर सकती है।

क्षमा जी का 'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास अपने आप में कई आयाम समेटे हुए है, जिन्हें दर्शाना लेखिका का उद्देश्य है। प्रस्तुत उपन्यास का दायित्व लेखिका ने अपने ऊपर लिया है और कामकाजी नारी के जीवन-पद्धति पर प्रकाश डालते हुए समग्र समाज में स्त्री की नियति पर करारा व्यंग्य किया है। यहाँ हर हाल में स्त्री मानसिक अस्वस्थता से गुजरती है। कभी पत्नी के रूप में, कभी प्रेमिका के रूप में, कभी गर्भवती के रूप में। लेखिका इस उपन्यास के माध्यम से यह संदेश देना चाहती है कि स्त्रियों का उद्धार स्त्रियाँ ही अपनी एकता और साहस से कर सकती हैं।

क्षमा शर्मा के 'शस्य का पता' उपन्यास में पर्यावरण के सम्पूर्ण विनाश से प्राणी जगत की त्रस्तता विशद की है। यह उपन्यास पक्षी जगत की ओर से दिए गए सार्थक बयान की तरह है। पुरानी आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के नष्ट हो जाने के फलस्वरूप शहरों की ओर आकर्षण बढ़ रहा है। गाँव संकुचित और शहर विकराल रूप लेते जा रहे है। इसी वजह से अपने ही शहर में अजनबी होते पक्षियों की समस्या पर प्रकाश डाला गया है। इस उपन्यास में क्षमा जी बार-बार दर्शाती है कि सबल हमेशा निर्बल पर अत्याचार करता है। सत्ता भी शक्तिशाली लोगों के साथ ही होती है। इस उपन्यास द्वारा लेखिका संदेश देती है कि, पर्यावरण का विनाश न सिर्फ मनुष्य, बल्कि पशु-पक्षियों को भी विस्थापित कर रहा है, उनके अस्तित्व के लिए खतरा बन रहा है। यहाँ तक कि उनके स्वभाव में भी भारी बदलाव हो रहा है।

'दूसरा पाठ'उपन्यास में लेखिका ने शिक्षा व्यवस्थापर करारा व्यंग्य करते हुए देश की महत्त्वपूर्ण उन्नति की राह में आनेवाले महाकाय रोडों को अंकित किया है। शिक्षा व्यवस्था की तमाम समस्याओं को प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त किया गया है। सिर्फ एक व्यक्ति इस पूरी व्यवस्था में बदलाव नहीं ला सकता बल्कि पूरे समाज को संगठित होकर इस महारोग का उपचार करना होगा।

इस प्रकार लेखिका अपने उपन्यासों द्वारा यह संदेश देती है कि सामाजिक जीवन की राह में आ रही अनेक अड़चनों का मुकाबला करते हुए, राह से न भटकते हुए हमें सफलता के प्रकाशमय राह की ओर आगे बढ़ना है। यही हमारी नियति है और यही हमारा बलस्थान है।

निष्कर्ष :

क्षमा शर्मा के उपन्यासों में अवलोकित भाषा और शैलीगत वैविध्यपूर्ण प्रयोग लेखिका की अभिव्यक्ति क्षमता के परिचायक है। निश्चित ही उन्होंने अपने उपन्यासों के कथ्य की आंतरिक माँग के अनुरूप ही भाषा और शैली को चुनकर तथा प्रयुक्त करके अपने शिल्प को परिपक्व बनाया है। 'शिल्पगत चमत्कार' दिखाने का उन्होंने कोई प्रयास नहीं किया है। उनके उपन्यास में भाषा और व्यंग्य तथा प्रतीक आदि स्वतन्त्र उपकरण न होकर कथ्य के सहगामी होकर आए हैं। इसी वजह से उनके उपन्यास विशिष्ट और उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार हमें उपन्यासकार की भाषा के विविधांगी रूपों के दर्शन होते हैं।

सन्दर्भ : तृतीय अध्याय

१. बाबर सुरेश–भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन, पृ.१६८

२. श्री नवल जी (सम्पा.)–नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ.१३४४

३. एस के शर्मा–आर.एन.सहाय (सम्पा.)–ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी हिंन्दी शब्दकोश, पृ.७०९

४. डॉ.यादव उषा –हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, पृ.१९४

५. समीक्षा, अक्तूबर–दिसंबर,२००७, पृ.२८

६. समीक्षा, अक्तूबर–दिसंबर,२००७, पृ.२९

७. वागार्थ, अक्तूबर, १९९९, पृ.११०

८. कुमार जैनेन्द्र–साहित्य का श्रेय और प्रेय, पृ.३७०

९. डॉ. सिंह जवाहर–हिंदी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्प–विधी, पृ.१

१०. डॉ. लाल लक्ष्मी नारायण–हिंदी कहानियों की शिल्प विधी का विकास, भूमिका भाग

११. डॉ.श्रीमती शुक्ल ओम–हिंदी उपन्यास की शिल्पविधी का विकास, पृ.२२

१२. डॉ.त्रिपाठी धर्मध्वज–प्रेमचंद कथा–साहित्य समीक्षा और मूल्यांकन, पृ.२१७

१३. डॉ. सिंह त्रिभुवन–हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग, पृ.२४०

१४. श्रीवास्तव शिवनारायण–हिंदी उपन्यास, पृ.१२

१५. पन्त बसंती–हिंदी उपन्यास: रचना विधान और युगबोध, पृ.२८

१६. पन्त बसंती–हिंदी उपन्यास: रचना विधान और युगबोध, पृ.२९

१७. डॉ. शर्मा रामविनय–जनसत्ता, १२ अप्रैल, १९९८, पृ.९

१८. शर्मा क्षमा–दूसरा पाठ, पृ.५२

१९. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.७५

२०. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.१४

२१. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.७७

२२. पन्त बसंती–हिंदी उपन्यास: रचना विधान और युगबोध, पृ.३२

२३. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.८

२४. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.१९

२५. शर्मा क्षमा– शस्य का पता, पृ.११

२६. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.२४

२७. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.१८

२८. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.११६

२९. डॉ. शर्मा मख्खनलाल–हिंदी उपन्यास:सिद्धान्त और समीक्षा, पृ.७५

३०. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.११

३१. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.३१

३२. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.७

३३. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.८

३४. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.५२

३५. सहगल राजेन्द्र–आऊटलुक साप्ताहिक,११ जून,२००७, पृ.५८

३६. बाबर सुरेश–भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन, पृ.१८५

३७. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.१८

३८. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.३५

३९. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.७

४०. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.१०

४१. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.१७

४२. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.१२

४३. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.९

४४. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.३७

४५. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.१४

४६. क्षमा शर्मा–मोबाइल, पृ.७५

४७. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.१०१

४८. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.२९

४९. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.७६

५०. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.६९

५१. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.३५

५२. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.५५

५३. विवेक ज्ञानप्रकाश–अमर उजाला,९अगस्त,१९९८, पृ.१८

५४. वर्मा धिरेन्द्र (सम्पा.)–हिंदी साहित्य कोश, पृ.६१८

५५. शर्मा क्षमा–शस्य का पता, पृ.८४

५६. शर्मा क्षमा–परछाईं अन्नपूर्णा, पृ.५४

५७. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.२६

५८. राठौर इंदिरा–दैनिक हिंदुस्तान,१२ सितंबर, १९९८, पृ.१८

५९. सहगल राजेंद्र–आऊटलुक साप्ताहिक, ११ जून, २००७, पृ.५८

६०. डॉ. शर्मा रामविनय–जनसत्ता, १२ अप्रैल, १९९८, पृ.९

६१. सिंह संगीता–अजीत समाचार, १ जनवरी, २०००, पृ.३२

चतुर्थ अध्याय

क्षमा शर्मा के कहानी-साहित्य में शिल्प-विधान

४.० प्रस्तावना :

क्षमा शर्मा सामाजिक चेतना-सम्पन्न कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ जीवन के यथार्थ अनुभवों पर आधारित हैं। उनकी कहानियों में मध्यवर्ग के जीवन की झाँकी मिलती हैं। निम्नवर्ग की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक समस्याओं से प्रभावित जीवन की स्थितियों और विभिन्न स्तरों पर उनकी परिणतियाँ ही उनकी कहानियों का मुख्य प्रतिपाद्य हैं। इसी कारण उन्होंने घर-परिवार की विडम्बनाओं-विद्रूपताओं को स्वर दिए हैं, साथ ही व्यापक समाज के सरोकारों को भी अपने लेखन का धर्म बनाया है।

क्षमा जी जीवनवादी साहित्यकार हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में शिल्प के महत्त्व को एक सीमा तक स्वीकारा हैं। क्षमा जी की कहानियों का शिल्प की दृष्टि से अध्ययन, कहानी-शिल्प केछः अंगो अर्थात् कहानी के छः तत्त्वों के दृष्टि से किया गया है। कहानी के शिल्प के तत्त्व हैं- कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देशकाल एवं वातावरण, भाषा-शैली, तथा उद्देश्य। यद्यपि विद्वानों में कहानी के इन तत्त्वों को लेकर मतभिन्नता है तथापि अधिकांश विद्वान इन्हीं तत्त्वों को कहानी के प्रमुख अंगों के रूप में स्वीकार करते हुए इन्हें कहानी की समीक्षा के मानदंड के रूप में स्वीकार करते हैं। अतः इन तत्त्वों के आधार पर क्षमा जी की कहानियों की समीक्षा प्रस्तुत है।

४.१ कथावस्तु :

४.१.१ परिभाषा तथा स्वरूप :

सैद्धांतिक दृष्टिकोण से कथावस्तु कहानी के शिल्प का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। एक कहानी में लेखक जिस प्रकार की कथावस्तु को प्रस्तुत करता है, वह जीवन के उस क्षेत्र विशेष में उसके अनुभव की उपज होती है। धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार 'कथानक' का शाब्दिक अर्थ होगा 'कथा का छोटा रूप या सारांश'। अपने विशिष्ट अर्थ में इससे अभिप्राय है ''साहित्य के कथात्मक

रूपों – लोकगाथा, महाकाव्य, खंडकाव्य, नाटक, उपन्यास,कहानी आदि का वह तत्त्व, जो उनमें वर्णित कालक्रम में श्रृंखलित घटनाओं को रीढ़ की हड्डी की तरह दृढ़ता देकर गति देता है ओर जिसके चारों और घटनाएँ बेल की भाँति उगती, बढ़ती और फैलती हैं।''[१]

अत: कहानी की शैली भी उसकी वस्तु के साथ ही विकसित होती है। आधुनिक कहानीकारों ने अपनी उलझी हुई भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अभिव्यक्ति को निरन्तर सशक्त बनाने का कार्य भी किया है। अत: कहानी का अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष, वस्तुपक्ष और कलापक्ष दोनों भी कहानी का निर्माण करने में सहाय्यक होते हैं। जरूरी है कि कहानी में कथ्य और शिल्प का उचित सामंजस्य हो, सापेक्षिक महत्त्व हो।

४.१.२ कथावस्तु के सोपान :

- **कथावस्तु का आरंभ:**

कहानी की कथा वस्तु के शिल्प की दृष्टि से कहानी का आरंभ, मध्य तथा चरम आदि सोपान महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सामान्य रूप में यदि कहानी का आरंभ प्रभावशाली होता है तो उसकी सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है। डॉ. सूर्यकान्त त्रिपाठी के अनुसार ''जिस प्रकार ढोल के अग्रभाग पर प्रहार होते ही उसका सारा पोल मुखरित हो उठता है, उसी प्रकार कहानी की नोक पर आँख पड़ते ही उसकी समग्र देहयष्टी फड़फड़ा उठनी चाहिए।''[२] इसी विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. प्रतापनारायन टंडन ने कहा है –''कहानी का आरंभ उसका महत्वपूर्ण अंश होता है। विभिन्न विषयों के अनुसार विविध लेखक कहानी का आरंभ प्रथम – पृथक रूप से करते हैं। वास्तव में यह कहानी का अंश होता है जो आकर्षक होने पर पाठक के मन में कहानी पढ़ने की अदम्य इच्छा जागृत कर देता है।''[३]

क्षमा जी की कुछ कहानियों का प्रारंभ प्रमुख पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप द्वारा होता है और पाठक को भी कहानी में वर्णित आगामी घटना का संकेत मिल जाता है। क्षमा जी कुछ कहानियों का प्रारंभ प्रमुख पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप द्वारा होता है और पाठक को भी कहानी में वर्णित आगामी घटना का संकेत मिल जाता है। इनकी कहानियों की बुनावट का तरीका यह है कि

पहली पंक्ति से ही पाठक को सतर्क और सतेज हो जाना पड़ता है। क्षमा जी की 'दयाल वेड्स कमलिनी' कहानी का प्रारम्भ देखिए–''मैंने सोचा आपका नाम कल्याणी होगा। कभी–कभी किसी को देखकर लगता है बस इसका नाम यही होगा। आपको देखकर लगता है आपका नाम कल्याणी हो। अभी तक उसके चेहरे का दायाँ हिस्सा मेरी तरफ था, अब वह इस तरह मुड़ा कि उसका पूरा चेहरा नज़र आने लगा।''[४]

क्षमा जी ने अपनी कुछ कहानियों की कथावस्तु का प्रारंभ किसी घटना के विवरण से भी किया है। इस प्रकार के प्रारंभ की कहानियों में किसी पात्र अथवा अन्य तत्त्व से सम्बन्धित विवरण प्रस्तुत न करके किसी घटना का प्रस्तुतीकरण किया जाता है, जिसका प्रभाव कहानी के आगामी भाग पर पडता है। उदा. 'बिजनेस' कहानी का प्रारंभ– ''जब तक विद्या गाडी को पार्क करने के लिए आगे बढ़ाती तब तक एक मारूती लेफ्ट से ओवरटेक करते हुए आयी और उस जगह में घुस गयी, जहाँ विद्या गाडी लगाने की सोच रही थी। 'शिट।' उसने गाड़ी लगाने वाले लड़के को कोसा फिर गाडी आगे बढ़ायी।''[५]

- **कथावस्तु का मध्य :**

क्षमा जी की कहानियों में कथावस्तु का आरंभ विविध प्रकार से हुआ है, जिससे उनकी कलात्मकता में वृद्धि हुई है। कथावस्तु का मध्य मुख्यत: कथावस्तु का प्रसार करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता है। इसका महत्त्व इसलिए भी होता है क्योंकि यही कहानी के विकास का आधार होता है और उसे अंत की ओर ले जाता है। सैद्धांतिक दृष्टिकोण से कहानी की कथावस्तु के मध्यभाग के मध्य की यह भी विशेषता होती है कि वह उसके प्रारंभ और अंत में संतुलन बनाए रखता है। क्षमा जी की 'फिर भी' कहानी के मध्यभाग की विशेषता यह है कि उसमें मूल कथा का प्रसार करने के साथ ही साथ आगामी कथा के नाटकीय संकेत भी मिलते हैं। उदा. ''शाम को दफ्तर खत्म करके जब बस स्टॉप पर खड़ी थी कि महेंद्र वहीं आ गया। उसके हाथ में चमकता कार्ड था– 'देखो, आना जरूर। नहीं आओगी तो समझ लेना शादी ही नहीं करूँगा। एक बार शादी हो जाने दो फिर हम तीनों खूब मजे किया करेगें। अभी जा रहा हूँ जल्दी में हँ।' कहता हुआ वह अपनी शादी के कार्ड्स का थैला लिये आँखों से ओझल हो गया।

घर पहुँची तो मूढ़े पर धम्म से बैठ गयी। पर्स और कार्ड एक तरफ रखकर सोचने लगी तो लगा जैसे सोचने को कुछ रहा ही नहीं। अगली सुबह उठी तो लगा महेंद्र इतना खुश है तो मैं क्यों इतनी दुखी हूँ। उसकी शादी हुई। मैं नहीं गयी। एक-दो बार शाम को उसने चाय पर बुलाया, नहीं गयी। मैं ने उसके मिस्ड कॉल,एस.एम.एस,मेल किसी का जवाब नहीं दिया। मैं उससे बदला नहीं ले रही थी बल्कि उसी की भलाई के लिए उसकी जिन्दगी से दूर जा रही थी। ऐसा क्यों हो कि वह अपनी पत्नी को भी धोखा दे और मुझे भी।''[६]

➢ **कथावस्तु का चरम :**

कहानी की कथा वस्तु के प्रारंभ और मध्य के पश्चात् उसके अंत का स्थान है जो वस्तुत: कथावस्तु के विकास की अन्तिम सीमा है। इसे कथावस्तु के विकास की चरम सीमा भी कहा जाता हैं। जगन्नाथप्रसाद शर्मा के अनुसार,'विषय की पूर्णता का द्योतक अंत का प्रधान लक्ष्य होता है। कहानीद्वारा उत्पन्न जो भी कौतुहल या जिज्ञासा होती है, उसका पूरा-पूरा समाधान अंत में होना चाहिए।' कहानी की कथावस्तु की समाप्ति बहुधा अप्रत्याशित रूप में कर दी जाती है। जिससे पाठक उसके अंत की पूर्व कल्पना नहीं कर सकता। इस प्रकार अंत नाटकीय और चमत्कारिक होता हैं। क्षमा जी की कहानियों की कथावस्तु का अंत या चरम सीमा अधिकांशत: अप्रत्याक्षित रूप में कर दिया गया है। इस दृष्टिसे उनकी 'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' कहानी का अंत दृष्टव्य है - ''हाँ मैंने बुलाया था तुम्हें, जानती हो किसलिए? अपनी बर्बादी का रोना रोने के लिए नहीं। अपनी ताकत दिखाने के लिए। तुम इतने दिन से हड्डियाँ घिस रही हो, क्या है तुम्हारे पास? एक दो कमरे का फ्लैट। इन सबको तमगे की तरह लटकाये घूमती रहो और मुझ पर तरस खाती हो, क्यों? तरस कमजोर के लिए मरहम हो सकता है, इसलिए तरस खाना ही चाहती हो तो अपने पर खाओ। तुम एक आदमी को शरीर सौंपती हो और मैं पचास को। करते तो हम दोनों एक ही काम हैं और मेरे पास वह सब कुछ है-बैंक बैलेंस, कार, ऊँचे संपर्क-जिनके लिए तुम जीवन-भर तरस सकती हो। ''[७]

क्षमा जी की कुछ कहानियों का अंत अनिश्चयात्मक ढंग से भी हुआ है। ऐसी कहानियों में कथ्य किसी निष्कर्ष तक नहीं पहुँचता और समस्या को जहाँ का तहाँ छोड़ दिया जाता है। इस दृष्टि से उनकी 'कोन है जो रोता है' कहानी दृष्टव्य है - ''वह कितने मामूली शब्दों में अपने और उनके मन

की बात कह गया है जो बस ऐसे ही मर जाते हैं। जिन्हें शहीद–शहीद कहकर बहुत कुछ अपनी जेबों में चला जाता है, इस उम्मीद में कि काश ! अगला युद्ध जल्दी हो ! राजू की सूनी आँखे आसमान में फैल गई हैं। उनमें कोई सितारा नहीं चमकता। ''[८]

विषयवस्तु की दृष्टि से क्षमा जी ने कहानियों की कथावस्तु रोजमर्रा की घटनाओं को कलात्मकता द्वारा कहानी के रूप में प्रस्तुत की है। '' 'नेम प्लेट' संग्रह की अनेक कहानियों का कथानक प्रेम पर आधारित है, लेकिन क्षमा शर्मा की इन कहानियो में प्रेम का वर्णन प्रचलित रूप में नहीं किया गया है। ''[९] एक स्त्री होने के कारण क्षमा जी में स्त्री–जीवन के प्रति रूची होना स्वाभाविक है। स्त्रियों के प्रति उनकी यह रूचि उनकी कहानियों में स्पष्ट दिखाई देती है। क्षमा जी की 'बया', 'दादी माँ का बटुआ', 'मातृऋण', 'दुमुँही','टयुबेक्टामी', 'लड़की जो देखती पलटकर', 'बिंदास', 'वेलेंटाइन डे', 'कैसी हो सुष्मिता', 'उत्तरार्ध', 'पापा के एपिसोड में बेटा', 'ईको फ्रेंडली' आदि कहानियाँ स्त्री–जीवन से सम्बन्धित कथानक पर आधारित है। अत: कहा जा सकता है कि क्षमा जी की कहानियों का कथानक सामाजिक वास्तव पर आधारित है।

४.१.३ क्षमा शर्मा की कहानियों की कथावस्तु की विशेषताएँ :

सैद्धांतिक दृष्टिकोण से किसी कहानी में कथावस्तु के सफल आयोजन के लिए उसमें कतिपय विशेषताओं का समाविष्ट होना आवश्यक होता है। जैसे की संक्षिप्तता, मौलिकता, रोचकता, क्रमबद्धता, विश्वसनीयता, उत्सुकता, शिल्पगत नवीनता तथा प्रभावात्मकता। किसी भी कहानी की कथावस्तु की सर्वप्रथम विशेषता उसकी संक्षिप्तता है। कहानी की आकारगत सीमा के कारण उसमें अनेकसूत्री कथावस्तु का समावेश नहीं हो पाता। उसके केंद्र में मुख्यत: एक ही घटना होती है और उसी का प्रसार तथा उत्कर्ष इंगित किया जाता है। क्षमा जी की 'यहीं कहीं है स्वर्ग ', 'लौटते हुए ', 'लड़की', 'मातृऋण','प्रेम के बीच'आदि कहानियाँ इसी कोटी की हैं, जिनमें कथावस्तुगत संक्षिप्तता दृष्टिगत होती है।

क्षमा जी की कहानियों की कथावस्तु की दूसरी विशेषता है – उसकी मौलिकता। इससे कहानीकार की प्रतिभा–शक्ति का परिचय मिलता है। कहानीकार जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सूत्र लेकर कथावस्तु का निर्माण करता है और उस पर कहानी की मौलिकता आधारित होती है।

क्षमा जी की कहानियों में 'एक लड़की और सत्रह किस्से', 'काला कानून', 'बया' 'लौटते हुए', 'इसके बाद' आदि कहानियाँ कथावस्तु की मौलिकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। रोचकता भी कथावस्तु की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। जिस कहानी की कथावस्तु में रोचकता का अभाव होता है वह न तो पाठक का मनोरंजन कर सकती है और न ही पठनीय हो सकती है। क्षमा जी की कहानियों में रोचकता का गुण विद्यमान है। इस दृष्टि से उनकी 'पापा के एपिसोड में बेटा', 'न्युड का बच्चा', 'मोर्चा', 'रास्ता छोड़ो डार्लिंग', 'और अब', 'कैसी हो सुष्मिता', 'बिंदास' आदि कहानियाँ उल्लेखनीय है।

क्रमबद्धता भी कहानी की कथावस्तु का विशिष्ट गुण है। कथावस्तु वास्तव में कहानी के घटनाओंका आलेख है। इस कारण उसमें पारस्परिक क्रमबद्धता होना आवश्यक है अन्यथा वह स्फुट घटनओंका संकलन मात्र प्रतीत होगी। क्षमा जी की जिन कहानियों में यह विशेषता दृष्टिगोचर होती है उनमें 'इंडिया विल विन', 'सुबह से शाम तक','पिता', 'लव–स्टोरीज','थैंक्यू सद्दाम हुसैन' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। विश्वसनीयता कहानी की कथावस्तु का पाँचवा गुण है। जिसके कारण एक काल्पनिक कहानी भी पाठक को यथार्थ और विश्वसनीय प्रतीत होती है। क्षमा जी की जिन कहानियों की कथावस्तु में यह गुण दृष्टिगोचर होता है, उनमें 'सीधा प्रसारण', 'माँ ', 'प्रेम के बीच', 'कार्ड ', तथा 'तसवीर' आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों को पढ़कर उनकी कथावस्तु पर अविश्वास का कोई कारण नहीं होता क्योंकि ये घटनाएँ हमारे आस–पास दिखाई देती हैं।

कहानी की कथावस्तु की एक अन्य उल्लेखनीय विशेषता उत्सुकता अथवा कौतूहल है। डॉ. प्रतापनारायण टंडन के अनुसार ''एक सफल कहानीकार अपनी कथावस्तु में विविध स्थलों पर इस प्रकार की सम्भावनाओं की सृष्टि करता है, जिनकी पूर्व कल्पना एक सामान्य पाठक नहीं कर पाता और उसके हृदय में कहानी की समाप्ति तक एक प्रकार की उत्सुकता बनी रहती है।''[१०] क्षमा जी की 'शुरूआत', 'न्युड का बच्चा', 'लड़की जो देखती पलटकर', 'बर्फ होती मुलाकात','बहन' आदि

कहानियों की कथावस्तु में उत्सुकता के निर्वाह का ध्यान रखा गया है। एक कहानिकार अपनी रचना में वर्ण्य वस्तु को अपेक्षाकृत कलात्मक एवं अभिनव शिल्प के रूप में व्यंजित करता है। क्षमा जी इस दृष्टि से चतुर शिल्पकार हैं।

४.२ चरित्र-चित्रण :

४.२.१ पात्रों का महत्त्व :

कहानी के शिल्पविधान में कथावस्तु के उपरान्त पात्र योजना अथवा चरित्र-चित्रण का स्थान है। पात्रों के माध्यम से ही रचनाकार समाज या मानव के विभिन्न रूपों को चित्रित करता है। जैसे कि प्रेमचंद जी ने अपने पात्रों की सृष्टि अपने अनुभव के आधार पर की थी। उनका ऐसा मत था कि ''सिर्फ ऐसा न हो कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ये सभी पात्र मनुष्य से मिलते-जुलते हैं ; बल्कि हम यह विश्वास चाहते हैं कि वे सचमुच मनुष्य हैं और लेखक ने हर संभव उनका जीवन चरित्र ही लिखा है। इसमें यह निश्चय हो जाना चाहिए की लेखक ने जो सृष्टि की है वह प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर की गई है अथवा पात्रों की जुबान से वह खुद बोल रहा है।''[११] उनके इस मत से स्पष्ट होता है कि यदि लेखक अपने अनुभवों के आधार पर पात्रों का चरित्र-चित्रण करता है, तो वह पात्र पाठकों को प्रभावित करता है।

पात्रों के चरित्र-चित्रण का विचार करते समय साहित्यकार की अनुभूतियों द्वारा सृजित पात्र यथार्थ प्रतीत होने चाहिए। पात्रों का चरित्र लेखक के चिंतन, मनन और निरीक्षण से अनेक प्रकार की वृत्ति से सन्नित होता है। पात्र की व्याख्या करते हुए प्रदीपकुमार शर्मा लिखते हैं, ''कहानी में जो घटनाएँ होती हैं, या घटना विहीन उपन्यास में जहाँ मानसिक घटनाओं का चित्रण होता है, उसका भोक्ता पात्र होता है, या जिसके आधार पर घटनाएँ या मानसिक संसार की रचना होती है वह पात्र या चरित्र कहला सकते हैं।''[१२] उपर्युक्त मतों से स्पष्ट होता है कि आधुनिक हिन्दी कहानी में चरित्र-चित्रण का विशेष महत्त्व है। जहाँ तक कहानियों का सम्बन्ध है, लेखिका की अधिकांश कहानियाँ सामाजिक समस्या प्रधान हैं। उनकी कहानियों में चित्रित समस्याएँ चरित्रों के माध्यम से ही व्यक्त हुई हैं।

४.२.२ क्षमा शर्मा की कहानियों के नारी-चरित्र :

लेखिका ने जहाँ कहीं नारी-चित्रण के प्रसंगों को छुआ है, वहाँ उसके तिल-तिल जलकर किए त्याग की उपेक्षा, सच्चे प्रेम का घटिया अंदाज में मूल्यांकन, तमाम वर्जनाओं के मुकाबले में डटे रहने के बावजूद नारी होने का अहसास, अपने ही प्रियजन द्वारा अवसर पड़ने पर रिश्तों का निजी स्वार्थ के संदर्भ में दुरूपयोग, वर्तमान माहोल में प्रेम-प्रसंगों की असलियत, स्त्री की भावुकता को अपनी कामुकता के अस्त्र से परास्त करने की प्ररूपगत मनोवृत्ति बरकरार है। लेखिका के नारीपात्रों के बारे में गौरीनाथ जी का कहना है, ''वो जो राशन की लाइन में खड़ी है, कोठियों-सोसायटियों में घर-घर जाकर बरतन माँजती है, बसों की भीड़ में धक्के खाती है, बस स्टॉप पर कई नजरों के तीर सहती है, दप्तरों में बॉस की छेड़खानियों का सामना करती है, घरों में लिंग-भेद की उपेक्षाएँ सहती या आत्महत्या के रास्ते अख्तियार करती है । इन कहानियों में इस तरह की कई महिला पात्र पूरे वजूद के साथ आई हैं।''[१३]

➢ **शुभा :**

'पापा के एपिसोड में बेटा' कहानी की प्रमुख पात्र शुभा है। शुभा आत्मनिर्भर स्त्री है और अपने पति से हुए पुत्र बाबू के सहारे सारा जीवन बीता देती है। लेकिन जिंदगी की शाम ढलते वक्त बाबू के पिता को अब उनकी जरूरत आन पडती है। अपने युवा बेटे को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए वे उसे अपने घर ले जाते हैं। बड़ा सा घर, ढेर सारे नौकर चाकर, बड़ासा लॉन, खेलने की जगह देखकर वह पिता की तरफ खींचा चला जाता है। वह उस ऐशो आराम के लिए पिता के साथ जाने के लिए तैय्यार है। अब उसकी आँखो में माँ का त्याग नहीं बल्कि पिता के जायदाद के सपने तैर रहे हैं, लेकिन शुभा अपने आत्मसम्मान को प्राथमिकता देते हुए तल्खी से वहाँ जाने से इन्कार करती है। वह सोचती है, ''आज जब वह अपना जीवन खो चुकी है तो यह लड़का उसे जिंदा रहने के तौर-तरीके सिखा रहा है। जो दुनिया उसे स्वार्थी कहती, उसने उसे तथाकथित त्याग के बदले क्या दिया ! जिस बच्चे को पाला . . . वह कुछ कह नहीं सकी।''[१४] अब उसकी आँखों के सामने से सब कुछ ढह गया है।

➢ **दुमुँही :**

'दुमुँही' कहानी की नायिका अत्यंत सुंदर स्त्री है जो अपने से नफरत और प्यार एकसाथ करती है। नायिका का व्यक्तित्व विचित्र है। वह जब भी किसी से प्यार करती है, तो पूरी शिद्दत के साथ। हर बार उसके मन में वैसा ही कम्पन और मिलने की ललक भी पैदा होती है। लेकिन दूर चले जाने के बाद उस व्यक्ति को दोबारा याद करने की कोशिश भी नहीं करती। वह यह तो कहती है कि जेवर पहनने से जान और माल दोनों को खतरा होता है। इससे तो अच्छा उतने पैसे की किताबें खरीदकर पढ़ी जाए। लेकिन साथ ही वह दूसरी औरतों की दौलत से ईर्ष्या भी करती है। यूँ तो नारी-पुरूष मित्रता की पक्षधर होने के बावजूद वह कभी इसे मनश: स्वीकार कर नहीं पाई। अपनी स्टुडेंट ऑफ लाइफ में मित्र कहकर प्रेम करने का नया तरीका उसने ईजाद किया था। इसीलिए किसी भी लड़के-लड़की को साथ देखकर उनके कहने पर भी कि वह दोनों मित्र हैं, वह विश्वास नहीं कर पाती। अब तो अपनी बच्ची के बारे में सोच-सोचकर वह बहुत परेशान हो जाती है। ''मेरी बेटी ने भी और लोगों की तरह मेरे बाहरी रूप को सच मान लिया है। वह आज मेरे ही नक्शेकदम पर चल रही है, तो मेरी अविश्वासी आँखें बार-बार उसके अन्दर पुरूष स्पर्श की गन्ध खोजती है। पर अपना शक कैसे जाहिर करूँ ? अपनी माँ को उदार कहने वाली बेटी की नजरों से मैं गिरना भी तो नहीं चाहती।''[१५] नायिका सच का पाठ और झूठ में भेद करना भूल गई है। अब तो सच बोलते- बोलते भी उसे लगता है कि वह झूठ बोल रही है।

➢ **माँ :**

'मातृ-ऋण' कहानी में नायिका की माँ एक खुद्दार स्त्री है जो अब बूढ़ी हो चुकी है। उनकी राय, उनकी नीयत, उनकी उम्र सब कुछ बीते जमाने की बातें हो गई हैं। वे जिद्दी हैं, अपनी बात कहती रहती हैं। अतीत के मुर्दे उखाड़ती रहती हैं। मगर फिर भी वक्त ने उनको पंक्ति से बाहर खदेड़ दिया है। यह दुनिया जिसमें शक्ति, चुस्ती, फुर्ती और युवावस्था का साम्राज्य है उसमें वे दृश्य से परे चली गई है। वह असहाय्य सी दिखती है। उनकी हर चीज लड़कों तक चली गई है, सिर्फ संवेदना बेटियों के हिस्से बची है। कानून जानने की वजह से मकान के हिस्से करते वक्त जब वे बेटियों के नाम लेती है, तब बेटे बड़ा बवाल मचाते हैं। उनका कहना है, ''एक बार पूछ तो सकते थे। मेरी

लड़कियों के पास भगवान का दिया क्या नहीं है? बस अपने हाथ कटाते जाओ। कानून लड़कियों को कुछ देदे पर लड़कीयाँ माँगेंगी नहीं, इस डर से कि कहीं भाईयों से संबंध न बिगड़ जाएँ।''[१६] यह एक ऐसी माँ है जो अपनी बेटियों को अपने भीतर पाती है। उनका अपमान वह सहन नहीं कर पाती। वह बेटियों का ऋण नहीं कबूलती और मनुस्मृति से भी नहीं बच पाती है।

➢ **सुनिता :**

सुनिता 'कैसी हो सुष्मिता' कहानी की प्रमुख पात्र है। जो सत्रह-अठारह वर्ष की किशोरी है। जिसने अपनी पढ़ाई आधी छोड़कर माँ के साथ झाडू-पौंछा का काम शुरू कर दिया है। स्वभाव से अत्यंत चंचल सुनिता टी.वी. की बहुत शौकीन है। उसे सजना-सँवरना, सिनेमा देखना, जोर-जोर से गाने गाना बहुत पसन्द है। ''लेकिन अब स्थिती बदल रही थी। उसकी कोशिश थी कि, अब कोई आए तो पाताल में समा जाए या आसमान उसको निगल ले।''[१७] लेकिन इस सबसे जो ड़र था आखिर वहीं हुआ। सुनिता नें चोरी-चुपके मॉड़लिंग शुरू किया और इसी बीच उसे पुलिस पकड़कर ले जाती है।

सुनिता युवा है। उसका आत्मविश्वास प्रबल है। परंतु अपने उत्तरदायित्व को वह नहीं समझ पाती। अपनी अनंत इच्छाओं को बाँधे रखना उसे मुश्किल है। वह संतोष-धर्म को नहीं मानती। वह कर्म और भाग्य के आधार पर अपनी स्थिती तय नहीं करना चाहती। वह अपनी हर इच्छा को पूरी करना चाहती है। इसलिए वह संघर्षमय जीवन के लिए भी तैय्यार है।

इन सभी नारी पात्रों के अतिरिक्त 'खेल' कहानी की निर्मल, 'वेलेंटाइन डे' की नायिका, 'एक है सुमन' की सुमन, 'नेमप्लेट' की निर्मला, 'खामोशी' की नेहा वर्मा, 'कार्ड' की माँ, 'तस्वीर' की मिसेज शुक्ला, 'अगली सदी में एक लड़की'की नायिका, 'एक लड़की और सत्रह किस्से' की शोभा, 'काला कानून' की कांता भाभी, 'जिन्दा है प्रतिभा बर्मन' की प्रतिभा बर्मन आदि क्षमा शर्मा की कहानियों के सशक्त और चेतना सम्पन्न पात्र हैं। इन पात्रों के अतिरिक्त क्षमा शर्मा की कहानियों में ऐसे भी नारी पात्र हैं, जिन्हें हम खलपात्र न कहते हुए नकारात्मक पात्र कह सकते हैं। इन पात्रों में 'दादी माँ का बटुआ' की खरखुशटी देवी, 'न्युड का बच्चा' की वीनू, 'बिन्दास' की अनू, 'बुढ़िया कहीं की,' की कीर्ति,'शुरूआत' की अनिता, 'किसको बताऊँ ओर-छोर' की मिस मुखर्जी, 'बया'

की भाभी, 'एक प्रेमपत्र' की मौसी आदि प्रमुख हैं। पात्रों के चित्रण से लेखिका ने अपना स्त्री-पुरूष समानता का दृष्टिकोण प्रदर्शित किया है। इन पात्रों के चित्रण से लेखिका यह संकेत देना चाहती है कि स्त्रियों की उन्नति के लिए स्त्रियों को उनके मार्ग में बाधा नहीं बनना चाहिए। तथा आपस में बहनापा स्थापित कर एक-दूसरे के विकास में सहाय्यता करनी चाहिए।

४.२.३ क्षमा शर्मा की कहानियों के पुरूष चरित्र :

- **राम सुमेरन सिंह :**

राम सुमेरन सिंह 'घर की बातें' कहानी का प्रमुख पात्र है। वे बहुतही ईमानदार और जिम्मेदार व्यक्ति हैं। वे 'बूंद-बूंद से घट भरे' इस कहावत पर यकीन करते हैं। हेड क्लार्क रहकर भी उन्होनें पाई-पाई जमा कर पाच सौ गज जमीन में चार कमरों का घर बनवाया है। ''इन दिनों राम सुमेरन बिल्कुल मकानमय हो गए थे। मकान की दीवारें इतनी पुख्ता तो हों कि सौ वर्ष चले। इसलिए चिनवाने से पहले हर एक ईंट को देखते-परखते। अपने पूरे परिवार की जिम्मेदारी निभाना वे भलीभाँती जानते हैं।''[१८]

इस पात्र द्वारा लेखिका ने सामान्य वर्ग की विशेषताओं को चित्रित किया है। जहाँ आदमी अपनी लड़ाई खुद लडता है। वह इतना संवेदनशील हो जाता है कि परिणाम स्वरूप गुमराह न होकर सही रास्ता अपना लेता है। यह करते हुए उसके मन में कोई अन्तर्द्वंद्व नहीं चलता।

- **बेटा :**

बेनी प्रसाद का बेटा 'इसके बाद' कहानी का पात्र है। बेनी प्रसाद एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं। उन्होंने अपने बेटे को डॉक्टरी शिक्षा दी है। वे चाहते हैं कि उनका बेटा अपना क्लीनिक खोले। शहर का सबसे बड़ा डॉक्टर बने-ऐसा डॉक्टर जिसकी एक दिन की फीस उनके पूरे महिने की तनख्वाह के बराबर हो। लेकिन उनका बेटा पैसे की मर्यादाओं को जानता है। वह अमीरों की नहीं बल्कि गरीबों की सेवा करना चाहता है। उसका कहना है, ''पापा पैसा कमाने के बाद भी कौन किस को पूछता है। हाँ हम खुद समझते रहते हैं कि हमारी दुनिया में बहुत पूछ हो रही हैं।''[१९]

क्षमा जी ने ऐसा बेटा साकार किया है जो एक सच्चा इन्सान है और गरीब लोगों की सेवा कर उनमें आशा की किरण जगाना चाहता है। वह सफेदपोशों की बजाय साधनहीन समाज की सेवा करना चाहता है। वे इज्जत, मान,प्रतिष्ठा की ही एक अलग, नयी पहचान बनाना चाहता है।

- **राजेंद्र :**

राजेंद्र 'वह जो एक भाई था' कहानी का बेरोजगार पात्र है। बचपन से माता-पिता के लाड़-प्यार में पले राजेन्द्र के जीवन में अचानक परिवर्तन आ जाता है, जब वह अपने घर में पहले स्थान से गौण स्थान पर आ जाता है। अब तक घर में उसी की तूती बोलती थी, परन्तु जब वह घर में निकम्मा साबित होता है, तब वह उपेक्षा का पात्र बन जाता है। यह स्थिति तब तक बनी रहती है जब तक कि नौकरी के अनुबन्ध की कमाई के रूपयों का लिफाफा माँ-बाप के हाथों में नहीं लाकर रखता। अनुबन्ध के रूपयों का लिफाफा ही उसकी स्थिती को फिर प्रभावित करता है। उसी के कारण माँ का आचरण, उसके प्रति उनका व्यवहार पूरी तरह बदल जाता है। लेखिका ने राजेंद्र के रूप में आज की स्थिती में बढ़ती हुई बेरोजगारी से युवकों में उत्पन्न हुई हताशा को चित्रित किया है। सदियों से चली आ रही पुरूष सत्तात्मक समाज के परिवार में पुरूषों की निरंकुश सत्ता रही है। परन्तु अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं। आज 'अर्थ' अर्थपूर्ण हो गया है और इस बदली हुई वास्तविकता को राजेन्द्र स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं, फिर भी एक बात सच है कि ऐसी हताशा की स्थिति में युवकों में हीनभावना पनपने लगती है। राजेन्द्र के चरित्र में इस स्थिति को लेखिका ने बड़ी खूबी से पकड़ा है।

इन पात्रों के अतिरिक्त क्षमा जी की कहानियों में अन्य भी पुरूष पात्र उपस्थित हैं, जैसे- 'पिता' कहानी के बाऊजी, 'दलदल' के मिश्रा जी,'फादर' के फादर डेविड, 'अंतिम चरण' का बूढ़ा आदमी, 'थैंक्यू सद्दाम हुसैन' का क्रिस्टोफर, 'बेटा' का अनूप, 'कार्ड' का लड़का आदि। क्षमा जी के पुरूष पात्रों की विशेषता है कि लेखिका ने एकांगी दृष्टिकोण से उनका चरित्र-चित्रण नहीं किया है अर्थात् उनकी कहानियों में पुरूष भले-बुरे दोनों प्रवृत्तियों वाले हैं। उपर्युक्त सभी पात्र नियति के शिकार है। लेखिका इन पात्रों के कार्यकलापों की ओर मानवीय संवेदनापूर्ण दृष्टिकोण से देखती है। उनके कृत्यों के लिए उन्हें उत्तरदायी नहीं ठहराती, बल्कि उन पात्रों ने किन परिस्थितियों

में वह कार्य किया है इसका विश्लेषण भी करती है। लेखिका ने कुछ कहानियों में पुरूषों का अवश्य नकारात्मक रूप उजागर किया है। उदा.– 'खेल' के मि.वर्मा, 'खलनायक' का सत्यजित, 'दयाल वेड्स कमलिनी' का दयाल, 'वेलेंटाईन डे' का नकुल, 'बेघर' का विजय, 'लौटते हुए' का नायक, 'एक प्रेम पत्र' के डैडी, 'घिराव' का नायक, 'सेमिनार' का राकेश और 'नायक' का जग्गा आदि। इन सभी कहानियों में पुरूषों का नकाब उतारना ही लेखिका का लक्ष्य रहा है।

४.२.४ क्षमा शर्मा की कहानियों के चरित्र–चित्रण की विशेषताएँ :

क्षमा जी की कहानियाँ सामाजिक समस्या–प्रधान हैं। उनमें चरित्र–चित्रण का अपना विशेष महत्त्व है। उनकी कहानियों में चरित्र–चित्रण के अन्तर्गत कथात्मक अनुकूलता, मौलिकता, स्वाभाविकता, सजीवता, यथार्थता, सहृदयता, कलापूर्णता आदि गुण द्रष्टव्य होते हैं।

- **स्वाभाविकता :**

रचनाओं में स्वाभाविकता लाने के लिए रचनाकार को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए कि वह जिस पात्र का सृजन करता है वह पाठक के आस–पास का ही हो। क्षमा जी के 'मातृ–ऋण' कहानी में माँ का अपमान करने वाले पुत्र दिखाई देते हैं तो साथ ही उनका आदर और सम्मान करनेवाली पुत्री भी है। 'कार्ड' कहानी में एक भाई जब ईर्ष्या से नायिका को 'सौतेली माँ' का ओहदा देता है तब दूसरे भाई के मन में उसी ममतामयी माँ के लिए करूणा पनपती है। 'शुरूआत' कहानी में 'अनिता' है जो अपने पति को उसके परिवार से अलग करना चाहती है। तो 'रानी' अपने परिवार को जोड़ने का सफल प्रयास करती है। लेखिका के कहानियों के सभी पात्र इतने स्वाभाविक लगते हैं मानों ये अपने आस–पास के और परिचित ही हैं।

- **सजीवता :**

सजीवता से तात्पर्य है, मानवीय गुण–दुर्गणों से युक्त होना। क्षमा जी के कथा–साहित्य के अधिकांश पात्र सजीव प्रतीत होते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में सभी प्रकार के पात्रों को स्थान देकर अपने पात्रों की एक विशिष्ट भूमिका बनाई है। 'इक्कीसवीं सदी का लड़का' कहानी का नवतरूण स्वार्थी और लोभी प्रवृत्तिरूपी दहेज का विरोध करता है। तथा 'इसके बाद' कहानी का युवा डॉक्टर गरीब मरीजों की जान बचाने के लिए मुफ्त में इलाज करने का निर्णय लेता है। सजीवता की दृष्टि से

'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' कहानी की केशा, 'और अब' की रोमी, 'लव-स्टोरीज: १९९४' का ड्राइवर, 'दोस्त' कहानी की लड़की, 'बेघर' की सुमि, 'वेलेंटाइन डे' की नायिका आदि चरित्र भी उल्लेखनीय हैं।

➢ **अनुकूलता :**

लेखिका ने अपने पात्रों का विकास वातावरण और परिस्थिती के अनुसार ही किया है। क्षमा जी ने 'सुबह से शाम तक' कहानी में पात्र और घटनाओं के अनुकूल ही वातावरण का चित्रण किया है। कहानी में नितिमा और विकास के विवाह के बाद नई गृहस्थी की जिम्मेदारियों से परेशान होना, धीरे-धीरे दोनों में आत्मीयता के संबंध लुप्त होना और चिंता, तनाव, संघर्ष जैसी परेशानियों से मनमुटाव आना आदि सभी घटनाएँ वर्तमान जीवन के अनुकूल ही जान पड़ती है। 'नायक', 'दुमुँही', 'कैसी हो सुष्मिता', 'बहन', 'नगाड़ा बजा', 'बिंदास', 'फादर' आदि कहानियों में पात्रों का सृजन वातावरण और कथानक के अनुकूल ही हुआ है।

➢ **मौलिकता :**

क्षमा जी की रचनाओं के पात्र मौलिकता से परिपूर्ण हैं। 'सीधा प्रसारण', 'दादी माँ का बटुआ','तसवीर','ढ़ाई आखर','व्यूह' कहानियों के पात्र जहाँ नैतिक मूल्यों के विपरित कार्य करते हैं वहीं दूसरी ओर 'एक है सुमन','चार अक्षर','माँ', 'बिजनैज','जिंदा है प्रतिभा बर्मन','कस्बे की लड़की' आदि कहानियों के पात्र अपने संस्कार और नैतिकता आदि बातों को ध्यान में रखते हुए जीवन बिताते हैं।

➢ **सहृदयता :**

सहृदयता की दृष्टि से क्षमा जी के कहानी के बहुत से पात्र उल्लेखनीय हैं। 'कब्रगाह' कहानी की नायिका गिलहरी और घोड़े की जान बचाकर इन्सानियत की मिसाल कायम करती है। 'शाम पकड़ लों अरूणिमा को' की नायिका दीपांकर के नि:स्वार्थ प्रेमस्वरूप ज्योती को जिंदगीभर हृदयरूपी अंजलि में प्रज्वलित रखती है। इस दृष्टि से 'स्मृतियों के शिलालेख' के भाईसाहब,'थैंक्यू!सद्दाम हुसैन' का क्रिस्टोफर, 'कौन है कि जो रोता है' का राजू, 'एक शहर अजनबी' की नायिका का चरित्र भी उल्लेखनीय है।

४.३ कथोपकथन :

कथोपकथन कहानी–साहित्य का प्रमुख तत्त्व है। पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप या संवाद को कथोपकथन कहते हैं। कथोपकथन का संबंध कथावस्तु और पात्रों के चरित्र दोनों से होता है। इससे कथा में स्वाभाविक रूप से सजीवता, विश्वसनीयता आ जाती है। रचनाकार कथोपकथन के माध्यम से अपने इच्छित वातावरण की निर्मिती कर सकता है। कथोपकथन के द्वारा ही वह अपनी कृती में वर्णित घटनाओं या दृश्यों में सजीवता लाता है और उनके संगठन से कथानक का विस्तार करता है।

शंकर व्यास के अनुसार, ''कहानी में वार्तालाप अनिवार्य है। क्योंकि अपने भावों और विचारों के प्रकाशन के लिए मनुष्य के पास यहीं एक साधन है, और कहानी को स्वाभाविक बनाए रखने के लिए, उसमें भी इसी साधन का उपयोग होना चाहिए।''[२०] इस साधन का महत्त्व इस कारण अधिक है क्योंकि कहानी के अन्य उपकरणों से इसका विशिष्ट सम्बन्ध होता है। एक ओर यह तत्त्व कथावस्तु के स्वाभाविक विकास में या घटनाओं को गतिशील बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, दूसरी ओर पात्रों के वार्तालाप ही उनके चरित्र की अधिकांश विशेषताएँ उद्‌घाटित करते है, तो तीसरी ओर भाषा–शैली में स्वाभाविकता लाते हैं।

क्षमा जी ने अपनी कहानियों में कथोपकथन और अन्य तत्त्वों में सुन्दर समन्वय स्थापित किया है। उन्होंने अपने अनुभव, ज्ञान तथा निरीक्षण शक्ति का परिचय दिया है।

४.३.१ क्षमा शर्मा की कहानियों में कथोपकथन की विशेषताएँ :

- **कथावस्तु का विकास :**

क्षमा जी की कहानियों के कथावस्तु के विकास की दृष्टि से 'कैसी हो सुष्मिता' कहानी कथोपकथन के उदाहरण के रूप में देखी जा सकती है। यहाँ घरेलू नौकर के जिज्ञासापूर्ण सवालों के जवाब देती घरमालकीन दिखाई देती है– '' 'बस ऐसे ही, क्या करती, पढ़–लिखकर करना तो मुझे चौका–बरतन ही है।आपकी तरह मेम तो नहीं बनाएगा कोई मुझे।' 'क्या कहा मेम ! मैं तुझे मेम लगती हूँ ? अरे भाई मैं भी किसी की नौकर हँ। ' 'लेकिन आप मेरी तरह की नौकर थोड़े ही हैं। मैं तो

घर–घर झाड़ू–बुहार करती हूँ और आप दिन–भर मेज–कुर्सी पर बैठती हैं।' 'हाँ वह तो ठीक है। तो तू भी पढ़–लिख। दुनिया में कोई कुछ भी बन सकता है यदि वह मेहनत करें।' 'वह बहुत देर तक मुझे देखती रही। क्या मेहनत से सब कुछ हो सकता है? उसने दोहराया।' ''[२१]

प्रस्तुत कथोपकथन में कथावस्तु का विस्तार द्रष्टव्य है,जिससे कहानी आगे बढ़ती है। कथोपकथन की दृष्टि से लेखिका की 'खलनायक ','बूढ़ी औरत','फादर','बेघर','दोस्त','चार अक्षर ','हर बार लौटना','रसोई घर'आदि कहानियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

➢ **चरित्र–चित्रण :**

कथोपकथन द्वारा पात्रों के चरित्र–चित्रण की दृष्टि से 'ढ़ाई आखर' कहानी के मेहतासाहब और मिश्राजी के बीच निम्नलिखित वार्तालाप द्रष्टव्य है – ''मिश्राजी ने उधर देखा और हँस दिए – 'अरे मियाँ, जवान लड़के–लड़कियाँ हैं। इस उम्र में यह सब नहीं करेंगे तो हमारी तरह बिना कुछ किए ही बुढ़े हो जाएँगे।' 'हमारी तरह. . . हम तुम्हें बुढ़े नजर आते हैं. . . अभी कुल पैतालिस के ही तो है। मगर अपने जमाने में तो यह सब खुले आम करने की इजाजत न थी . . . ' 'हूँ तो यह बात है अंगूर खट्टे हैं. . . मगर जब मौका नहीं मिला तो अब कुछ कर लो यार ' 'साली को देखो जरा, छातियाँ किस तरह तान रखी हैं। किसी का भी मन बेईमान हो जाए. . .' मिश्राजी ने शरारत भरे स्वर में कहा– ' हो रहा है क्या ? कहो तो कुछ हो जाए, लड़की तो चटक नमुना मालुम होती है. . . तुम्हें देखेगी तो उस मरियल को अपने आप फुटा देगी।' ''[२२]

इस वार्तालाप से यह बात प्रमाणित होती है कि मिश्राजी और मेहतासाहब के मित्रवत् सम्बन्ध हैं। ऐसे मित्रवत् सम्बन्ध से आपसी सौहार्द्र बढ़ता है। आस–पास के प्रेमी युगल को देखकर उनका मन लालायित हो उठता है और उनके मन में अनावश्यक ग्रंथियाँ उत्पन्न हो जाती है। अत: कहा जा सकता है कि क्षमा शर्मा ने कथोपकथन द्वारा पात्रों के चरित्र–चित्रण का सफल प्रयास किया है। ऐसे चरित्र–चित्रण की दृष्टि से लेखिका की 'एक अधूरी प्रेमकहानी','दयाल वेड्स कमलीनी','वेलेंटाईन डे','न्यूड का बच्चा', 'बिन्दास', 'बया', 'मातृ ऋण','घिराव' आदि कहानियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

➢ **वातावरण निर्मिती :**

क्षमा जी ने कहानी में वातावरण निर्मिती के लिए वर्णनात्मकता की अपेक्षा कथोपकथन को प्रधानता दी है। इस दृष्टि से 'अनुभव जी ' कहानी का उदाहरण द्रष्टव्य है। इस कहानी में कथोपकथन द्वारा स्त्री मुक्ती संग्राम के वातावरण की सृष्टि करने में लेखिका को सफलता मिली है– '' 'यानी कि आपको लगता है कि महिलाओं को घर से बाहर आकर अधिकार नहीं माँगना चाहिए ? ' मैंने पूछा। 'नहीं, मैंने कब कहा? मगर जिनको अधिकार चाहिए उन्हें तो मिलते नहीं। और जिनका पेट भरा है वे महँगाई का रोना रोती फिरें, पुरूष के अत्याचारों की बात करें यह कहाँ का न्याय है?' मैंने कहा – 'यह बताइए कि कोई अमीर औरत किसी गरीब औरत के लिए लड़ने जाए तो गलत है क्या ?जो औरत जुआ खेलती, ज्यूलरी साड़ियों या किट्टी पार्टियों पर समय बर्बाद करती है, वे किसी अच्छे काम में लगें तो बुरा क्या है ?' ''[२३]

अनुभव जी और नायिका के इस कथाकथन में महिला संस्थाओं पर व्यंग्य कसते पुरूषों की संकीर्ण विचारधारा से उत्पन्न संकट की स्थिती स्पष्ट होती है। अत: यहाँ लेखिका कथोपकथन द्वारा वातावरण की सृष्टि करने में पूर्ण रूप से सफल हुई है। ऐसे ही कई प्रसंग लेखिका की 'गन्दगी', 'खेल', 'तसवीर', 'खामोशी', 'कस्बे की लड़की', 'ढ़ाई आखर', 'मोर्चा', 'उत्तरार्ध', 'थैंक्यू सद्दाम हुसैन', 'इंडिया विल विन'आदि कहानियों में देखे जा सकते हैं।

➢ **पात्रानुकूलता :**

क्षमा जी की कहानियों के कथोपकथन की विशेषता है कि वे पात्रानुकूल हैं। पात्र जिस श्रेणी का है, उसी के अनुसार संवादों की रचना की गई है। अनपढ़ तथा साधारण पात्रों के लिए लेखिकाने सामान्य कथोपकथन का संयोजन किया है। सामान्य तौर पर ऐसे पात्रों के संवाद रोजी–रोटी या रोजमर्रा के जीवन से सम्बन्धित बातों पर केन्द्रित है। उदा. 'व्यूह' कहानी का वार्तालाप देखिए – सब्जीवाला सडक पर खड़ा था और हैप्पी की माँ तीन मंजिल पर बने प्लैंट के सामने से चिल्ला रही थी – '' 'तेरी भी टाँगे न तुड़वाई तो मैं अपने बाप से पैदा नहीं।' 'जा–जा . . . मेरा मुँह क्यों खुलवाती है'। तेरा लड़का एक–दो खीरे चुराकर भाग गया। निकाल उसे घर में से।' 'मैं भगवान

की कसम खाती हूँ जो वो यहाँ आया हो तू खुद आकर देख ले। हम तेरे खीरों के भूखे हैं। आज तक एक पैसे की भी बेईमानी की है?' 'पैसे से क्या होता है? जब-जब ठेले के पास आती है, कभी खड़े-खड़े चार-छ: गाजर खा लेती है, कभी मूली, कभी टमाटर। अब बन रही है हरिश्चंदर!' ''[२४]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि क्षमा जी ने कहानियों में कथोपकथन की योजना पात्रों के स्वभाव और व्यक्तित्व के अनुकूल की है। इसके कारण उनके पात्रों का व्यक्तित्व प्रभावशाली बना है। उनके संवाद भी भावनुकूल हैं। भाषा के स्तर पर भी लेखिका ने अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिया है। अनपढ़, ग्राम्य पात्रों के लिए ग्रामीण शैली तथा पढ़े-लिखे पात्रों के लिए हिंदी तथा बीच-बीच में अंग्रेजी का भी प्रयोग किया है। क्षमा जी की कहानियों के संवाद सभी दृष्टियों से अनुकूलता की कसौटी पर खरे उतरते हैं, इसके कुछ उदा. 'बराबर', 'मंडी हाऊस', 'वह फिर उदास हो गई', 'कब्रगाह', 'घर-घर', 'लव स्टोरीज़: १९९४', 'प्रेम के बीच', 'एक शहर अजनबी', 'इक्कीसवीं सदी का लड़का' आदि हैं।

- **विविधता :**

विविधता का तात्पर्य संक्षिप्त अथवा विस्तृत होने से है। क्षमा जी की कहानियों में संयोजित संवादों में विविधता है। लेखिकाने अपनी कहानियों में विषय के अनुसार संक्षिप्त अथवा दीर्घ दोनों प्रकार के संवादों का उपयोजन किया है। उनके कुछ संवाद संक्षिप्त होने पर भी पूर्ण रूप से स्वाभाविक, सहज तथा अर्थपूर्ण हैं। उदाहरणार्थ 'नेम प्लेट' कहानी के संक्षिप्त संवाद प्रस्तुत हैं- '' 'जी फरमाइए। ' ' मैं कैसी दिखती हूँ ? ' निर्मला सीधे उसकी आँखों में देखती है।' 'ही का क्या मतलब है ?' ' नहीं, ही नहीं आप सुंदर हैं, बहुत सुंदर।' 'गोरी हूँ न।' 'हाँ।' ''[२५]

क्षमा जी की कहानियों में लम्बे लम्बे संवाद भी पाए जाते हैं। जैसे के 'सीधा प्रसारण' कहानी के विस्तीर्ण संवाद - ''यहीं कि कार्बन डायऑक्साइड से लेकर ऑक्सीजन, दूध से लेकर सिंथेटिक दूध,मसालों से लेकर हरी सब्जियों, दालों, पानी, टूथपेस्ट और मनुष्य - सबमें हम शुद्धता देखना चाहते हैं। हमारा मन शुद्ध होगा, किसी के लिए दुर्भावना नही रखेंगे। सभी लोग ऐसा करने लगेंगे तो कोई किसी का बुरा नहीं सोचेगा। सारी मार-काट खत्म हो जाएगी। लोग मिलावट करना, चोरी

करना, चुगली करना, पर-निंदा में रस लेना सब भूल जाएँगे। जब मनुष्य, मनुष्य को नहीं मारेगा तो पेड़ काटने की बात तो भला वह सोचेगा भी कैसे ?''[२६]

अत: स्पष्ट होता है कि क्षमा जी की कहानियों के संवादो में विविधता है। उनमें कहीं - कहीं संक्षिप्त और लगभग एक शब्द में ही सिमेटने वाले वार्तालाप भी है और आधे पन्ने तक चलने वाले लम्बे-लम्बे वार्तालाप भी हैं। लेकिन दोनों वार्तालाप अपने-आप में पूर्ण और प्रभावोत्पादक है। ऐसे ही वार्तालाप लेखिका के 'दादी माँ का बटुआ','काहे को ब्याही बिदेस', 'मातृ-ऋण', 'और अब', 'एक लड़की और सत्रह किस्से', 'यहीं कहीं है स्वर्ग', 'माँ','वह जो एक भाई था', 'बुढ़ीया कहीं की'आदि कहानियों में देखे जा सकते हैं।

४.४ परिवेश चित्रण :

क्षमा जी की प्रारंभिक शिक्षा विविध महानगरों में हुई है। नौकरी के लिए भी वे शहर में रही हैं। जिससे वहाँ के लोगों से तथा वातावरण से उनका गहरा संबंध रहा है। स्वाभाविकत: नगरों और महानगरों से लंबे समय तक जुड़े रहने की वजह से उन पर वहाँ के वातावरण का अमिट प्रभाव पड़ा है। उनकी रचनाओं में नगरीय और महानगरीय लोगों का जीवन चरित्र बड़े ही सहज रूप में चित्रित हैं। जिनमें ऐतिहासिक स्थितियों को छोड़कर अन्य चित्रण बड़े ही सुंदर और अनूठे ढ़ंग से प्रस्तुत हैं।

४.४.१ परिवेश चित्रण की आवश्यकता :

रचनाकार के कृति में परिवेश चित्रण का भी अपना एक विशेष महत्त्व होता है। डॉ. रामलखन शुक्ल के अनुसार, ''लेखक जिस वस्तुविशेष को अपने पाठकों तक संप्रेषित करना चाहता है, उसका उचित रीति से संप्रेषण हो सकें। ऐसा करने के लिए देश-काल की सूक्ष्मतम विशेषताओं का सम्यक ज्ञान होना चाहिए। समाज, संस्कृति, धर्म, रीति-परंपरा, वेश-भूषा आदि के संबंध में उसका निश्चयात्मक ज्ञान होना चाहिए। क्योंकि इन्हीं के सहारे वह अपने कथानक को खड़ा कर सकता है। ''[२७] क्षमा जी की कहानियाँ यथार्थवादी सामाजिक कहानियाँ हैं। अत: उनमें सामाजिक, महानगरीय आदि से सम्बन्धित परिवेश के चित्र देखे जा सकते हैं।

४.४.२ क्षमा शर्मा की कहानियों में परिवेश चित्रण :

क्षमा जी के कहानियों में परिवेश के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, प्राकृतिक, साहित्यिक आदि प्रकार दृष्टिगत होते हैं।

- **सामाजिक परिवेश :**

क्षमा जी के सामाजिक परिवेश के अंतर्गत 'इक्कीसवीं सदी का लड़का' कहानी द्वारा दहेज प्रथा का बड़ा ही घिनौना रूप दिखाया गया है। 'काहे को ब्याही बिदेस', 'काला कानून','डोर' कहानी में प्रशासनिक भ्रष्टता स्पष्ट की गई है तथा 'माँ','ढूँढते रह जाओगे', 'न्यूड का बच्चा ' कहानियों द्वारा नैतिक मूल्यों के पतन का चित्रण किया गया है। 'बुढ़ीया कहीं की' कहानी द्वारा शिक्षासंबंधी समस्या को मुखरित किया गया है। 'कार्ड','मातृ-ऋण' कहानी द्वारा मध्यवर्ग की जीवन स्थिति को स्पष्ट किया गया है। 'खेल','लघुकथाएँ ' कहानियों में महानगरीय जीवन के परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है। 'जय श्रीराम','घिराव' कहानी में बेमेल विवाह की समस्या, 'उत्तरार्ध','वेलेंटाईन डे', 'बया', 'बेघर', 'छिनाल', 'अगली सदी की लड़की', 'प्रेम के बीच' कहानियों में पारिवारिक रिश्तों में दरार आदि विविध विषयों को रेखांकित किया है।

- **सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश :**

क्षमा जी ने अपनी कहानियों में सांस्कृतिक परिवेश के अंतर्गत समाज के रीति-रिवाज, रूढ़ि, धार्मिक परंपराएँ आदि का समावेश किया है। 'छिनाल','कब्रगाह' कहानी की नायिका मानव धर्म के प्रति जागरूक है। 'फादर' कहानी का नायक नैतिकता और संवेदनशीलता का प्रतिनिधी है। 'पापा के एपिसोड में बेटा' कहानी की नायिका मान-मर्यादा तथा सम्मान से अपनी जिंदगी जीती है। 'समाप्त पिढ़ी' में नायिका की माँ दकियानूसी विचारों द्वारा पति के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है। 'किसको बताऊँ ओर-छोर' कहानी के प्रगतिशील समाज में हमारे प्राचीन आदर्श एवं मान्यताओं के कुछ अवशेष बचे हुए हैं। 'टयुबेक्टामी' कहानी में पेड़-पौधों के प्रति सजगता दिखाई देती है।

धार्मिक परिवेश के अंतर्गत 'एक शहर अजनबी' कहानी में अंधश्रद्धा के भौंडे रूप को प्रस्तुत किया है। 'सुबह से शाम तक' कहानी में स्वार्थी,लालची,पंडे-पुजारी लोगों की मजबुरियों का फायदा उठाकर अपनी तिजोरी भरते दिखाई देते हैं। 'मास्टर तोताराम' कहानी में धर्म के प्रचंड प्रभाव

को प्रस्तुत किया गया है। 'माँ' कहानी में विशेषज्ञ डॉक्टर की ईश्वर के प्रति आस्था को दर्शाया गया है। 'पिता'कहानी के बाबूजी ईश्वर की अवकृपा से डरते हुए दिखाई देते हैं। 'काहे को ब्याही बिदेस' कहानी में ज्योतिष विद्या के प्रगाढ़ पंडित का लोग मजाक उड़ाते हैं।

- **आर्थिक परिवेश :**

क्षमा जी की अधिकांश कहानियाँ मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग पर आधारित है। इन कहानियों में महँगाई और बेरोजगारी के कारण उत्पन्न आर्थिक स्थिति का यथास्थान चित्रण किया है। 'प्रेम के बीच' कहानी में रमा अर्थप्रधान युग का प्रतिनिधित्व करती है। वह परिवार में भी अर्थ की सत्ता को ही महत्ता देती है। 'समाप्त पीढी' कहानी की माँ अत्यंत दयनीय आर्थिक स्थिती का मुकाबला करते हुए अपने बेटे के उज्वल भविष्य के लिए गृहस्थी का बोझ ढोती है।

'यहीं कहीं है स्वर्ग' कहानी में बेरोजगार नवयुवक और आर्थिक विपन्नता के कारण मजबूर प्रौढ़ता को दर्शाया गया है। 'कैसी हो सुष्मिता' कहानी में सुनिता अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए नैतिक दृष्टया गलत रास्ते का इस्तेमाल करती है। 'एक शहर अजनबी' कहानी में महँगाई के वजह से मजबूर मध्यवर्गीय परिवार की आवास की गम्भीर समस्या स्पष्ट की गई है।

- **प्राकृतिक परिवेश :**

प्राकृतिक परिवेश के अंतर्गत 'नगाड़ा बजा' कहानी में महानगरीय प्रकृति का यथोचित परिचय प्राप्त होता है। जैसे- 'गुनगुनी धूप किसी लग्जरी से कम नहीं थी। वरना तो पूरा दिन ऐसी घुटन भरे कमरे में बीत जाता था। गोल चक्कर पर भागते शहर की रफ्तार दिखाई देती थी।' 'एक उम्र इस तरह' कहानी में बर्फबारी का वर्णन करते हुए 'हवा सूँ – सूँ करके आती और सुइयों की तरह गालों में घुस जाती ' तथा 'ठण्ड से पेड़ भी अपने आप में सिमट गये थे' जैसे शब्द प्रयोग किये गये हैं। 'न होने का अहसास'कहानी में नायिका को यात्रा के दरम्यान पेड़, सड़के, खेत, नहर, ढाबा, झोपडियाँ देख बुआ की याद आती है। 'इसके बाद' कहानी में घरके बगीचे में लगाये हुए विविध किस्म के गुलाब, कैक्टस, क्रोटन, चमेली, रजनीगंधा, आदि फूलों के द्वारा नायिका के व्यक्तित्व को उजागर किया गया है।

'पिता' कहानी में सूर्यास्त का बड़ा ही मनोहर दृश्य शब्दांकित किया गया है– ''खिड़की के पार सूरज विदा के लिए रक्ताभ हो उठता है। पेड़ों की गहराती सांझ की हरी कालिमा और फिर अरूणिमा। ''[२८] प्रकृति के अनन्वित सौंदर्य को देखकर नायिका भावविभोर हो उठती है।

➢ **साहित्यिक परिवेश :**

क्षमा जी के पात्र 'बुद्धिजीवी' हैं इसी वजह से उनकी रचनाओं में साहित्यिक परिवेश भी खुलकर ज्ञात होता है। 'बर्फ होती मुलाकात' कहानी की नायिका कामकाजी महिला है, जो निराश न होते हुए भी विचारमंथन के भँवर में फँसी हुई है – 'पता नहीं गर्मी की उमसती दोपहर या अलसाई पड़ी सड़क अथवा मन के अन्तर्द्वंद्व का प्रभाव था कि मुझे रास्ता बड़ा लम्बा लगा था।' 'दुमुँही' कहानी में नायिका का सौंदर्याविष्कार लेखिका ने जगह–जगह शब्दरूप में पिरोया है। 'मौज की रोटी' कहानी में १४–१५ वर्षीय साहसिक कारनामें करनेवाले छिद्दा का वर्णन लेखिका कुछ इस प्रकार करती है। 'उनकी इमेज हम उम्र किशोरों में किसी लोकल अमिताभ बच्चन से कम नहीं है।'

'शुरूआत' कहानी में विद्यावती अनिता का स्वर्णप्रेम देखकर बड़े भाईसाहब के होश खो जाते हैं। उसे सही मार्ग दिखाने हेतु बड़े ही साहित्यिक अंदाज में वे कहते हैं, 'और सबसे पहले तो मुझे बिल्कुल बिना पढ़ी–लिखी 'गबन' की 'जालपा' याद आई थी। 'गबन' तो तुमने भी पढ़ा था और जालपा को उसकी स्वर्ण भक्ति के लिए तुम क्रिटीसाइज भी करती रही थी।'

समीक्षक ज्ञानप्रकाश विवेक जी के अनुसार, '' 'सेमिनार', 'लवस्टोरी–94', 'और अब', 'उत्तरार्ध', 'काहे को ब्याही बिदेस', 'कब्रगाह', तथा 'थैंक्यू सद्दाम हुसैन' ऐसी कुछ कहानियाँ उदाहरणार्थ प्रस्तुत की जा सकती हैं। इन कहानियों में लेखिका ने जिन दृश्यों को उपस्थित किया है वे भी किसी जीवंत पात्र की भाँति मुखर होते हैं। ''[२९] उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखिका के कहानियों में परिवेश प्रभावोत्पादक ढंग से उभरकर आता है।

४.५ भाषा–शैली :

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। प्रत्येक रचनाकार इन साधनों के द्वारा अपनी कृती को अधिक असरदार एवं कलात्मक बनाने का प्रयास करता है। एक और सरल तथा

सहज भाषा कहानी को विश्वसनीय बना देती है, वहीं क्लिष्ट भाषा उसे नीरस भी बना देती है। भाषा के सन्दर्भ में डॉ.प्रतापनारायन टंडन ने कहा है –''वस्तुत: भाषा मनुष्य की मनोभावनाओं की अभिव्यंजना का एक मानसिक साधन है। कहानी में आयोजित पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने के साथ–साथ कहानी में अन्य तत्त्वों के प्रस्तुतीकरण के लिए भी भाषा ही एकमात्र माध्यम है,क्योंकि कहानी में अभिनयात्मक माध्यमों की भाँति संकेत अथवा प्रदर्शन के द्वारा भावाभिव्यंजना सम्भव नहीं है। ''[३०] शैली इस माध्यम का उपयोग करने कि रीति अथवा पद्धति है। भाषा के प्रयोग पर शैली की उत्कृष्टता निश्चित होती है। भाषा के निखार के लिए कहानीकार को शब्द योजना, वाक्य–विन्यास, प्रसंग,कहावतें, मुहावरें आदि उपयुक्त होते हैं।

४.५.१ क्षमा शर्मा की कहानियों में भाषा–पक्ष :

क्षमा जी के कहानी साहित्य की भाषा पात्र, कथानक और विषय के अनुरूप है। उनके कहानी साहित्य में उच्च मध्यवर्ग से निम्न मध्यवर्ग तक के नगरीय–महानगरीय स्त्री–पुरूषों का यथास्थान समावेश हुआ है, जिससे पढ़े–लिखे नौकरीपेशा पात्रों की भाषा में अंग्रेजी का प्रयोग होना सहज है। समीक्षक ज्ञानप्रकाश विवेक जी का कहना है – ''लेखिका ने जहाँ गहरी संवेदना और सूक्ष्म दृष्टि से माहौल तैयार किया है, वहाँ कहानियाँ शिल्प, मिज़ाज, मुहावरें और भाषा के स्तर पर मुकम्मल होती नजर आती है।''[३१] शुरूआती कहानियों में अनुभवों की ताजगी के बावजूद लेखिका की झिझक महसूस होती है, लेकिन बाद में एक परिपक्व लेखिका का वजूद सामने आता है। संदीप जोशी के अनुसार ''लेखिका की कहानियाँ सहज, सरल भाषाशैली में सामाजिक विडंबनाओं, आशाओं व निराशाओं की खोज है। पाठक कहानियों से जुड़ता है क्यों कि कथन में कोई जटिलता नहीं है।''[३२] अर्थात शहरी समाज में पुरूष की ही भाँति भागदौड़ में मसरूफ स्त्री के आधे–अधूरे सपनों पर क्षमा जी के लेखनी की पैनी नज़र है। प्रस्तुत कहानियों में आत्मविश्वास से भरी लेखिका नए भाषा का प्रयोग करती है जो खिलदंडापन और विडंबना की प्रचिति देते हैं। ये बातें लेखिका की पहचान बनती है।

४.५.१.१ बोलचाल की भाषा :

प्रसंगानुसार जब कोई साहित्यकार बोलचाल की भाषा को अपनाता है तो वह अधिक प्रभावी और सजीव होकर पाठक के मन–मस्तिष्क पर प्रभाव डालती है। क्षमा जी की कहानियाँ साधारण जन–जीवन से सम्बन्धित है। अत: बोलचाल की भाषा से अधिक उपयुक्त भाषा उनके लिए दूसरी नहीं है। 'बया' इस कहानी का यह उदाहरण इस बात को प्रमाणित करता है–

'' 'अपने कलमी आम के पेड़ पर अब भी उतने ही आम लगते है।' 'कलमी आम का पेड़! वह बाग तो तुम्हारे भैया ने कब का बेच दिया।' 'कब का? लेकिन मैं शायद दो साल बाद आई हूँ। ' 'दो साल क्या कम समय होता है। बाग एक साल तो खूब फसल देता और एक साल कोरा का कोरा, तो क्या फायदा !' 'फायदा नहीं पर पुरखों का बाग था।' ''[३३]

क्षमा जी की भाषा सन्दर्भ में–''रोज–मर्रा की आम भाषा में लिखी ये कहानियाँ गरिष्ठ नहीं लगतीं, इन्हें पढ़ने में तारतम्य स्वत: ही बना रहता है।''[३४] कहानियों में लेखिका स्त्री–पात्रों की मन:स्थितियों के सहारे व्यक्त होती हैं।

४.५.१.२ महानगरीय भाषा :

क्षमा जी की अधिकांश कहानियाँ दिल्ली के परिवेश पर लिखी गई हैं। दिल्ली भारत की राजधानी है, जहाँ संसार के लगभग सभी क्षेत्रों से लोग आते हैं। अत: यहाँ की भाषा एक अजीब प्रकार का मिश्रण है। यहाँ सम्पर्क भाषा तो हिन्दी है किन्तु इस हिन्दी में अंग्रेजी, पंजाबी भाषाओं के शब्द इस तरह घुल–मिल गए हैं जिससे उसकी शैली भी बदल गई है। 'बिजनैस' कहानी की भाषा का उदाहरण प्रस्तुत है–''विद्या उठी,थैंक्यू कहा और बाहर निकल आयी। इतना इनडीसेंट प्रपोजल, छि . . . कैसे वह ड्राइव कर ऑफिस पहुँची पता नहीं। वहाँ से सीधे घोष के कमरे में पहुँची। घोष खड़ा–खड़ा सिगरेट पी रहा था, हालाँकि यह नो–स्मोकिंग जोन था। 'सर,अब से मैं उस राणा के पास कभी नहीं जाऊँगी।' विद्या थर थराते हुए बोली। 'क्यों ? तुम्हारी तो पचास लाख की डील फइनल होने वाली थी।' घोष ने आश्चर्य से पूछा। ''[३५]

'लव स्टोरीज़' कहानी में पंजाबी भाषा, 'मौज की रोटी ','दलदल', 'कैसी हो सुष्मिता' कहानी में देहाती भाषा, 'सुबह से शाम तक', 'बर्फ होती मुलाकात', 'शुरूआत', 'मोर्चा', 'व्यूह', 'मंडी हाऊस' कहानी में महानगरीय भाषा का प्रयोग किया गया है।

४.५.१.३ चिन्तनप्रधान भाषा :

क्षमा जी ने विषय तथा कहानी में चित्रित पात्रों के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। गम्भीर तथा चिंतनशील विषयों पर लिखी कहानियों में उनकी भाषा बड़ी गंभीर और परिष्कृत है। पात्रों के वार्तालाप की भाषा देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके पात्र किस श्रेणी के हैं। अत: ऐसे प्रसंगो में क्षमा जी की भाषा गम्भीर होती है, जो पाठक पर स्थायी प्रभाव डालने में सक्षम है। इस दृष्टि से 'अनुभव जी ' कहानी का उदाहरण द्रष्टव्य है–''दुनिया में हजारों लोग मर रहे हैं। परमाणू युद्ध हो तो दुनिया को खत्म होने में तीन मिनट भी नहीं लगेंगे। अफ्रिका में पिछले सालों में चालीस लाख से ज्यादा बच्चे मर गए। मार्कोस भाग गया। पड़ोस की लड़की ने आत्महत्या की, या दफ्तर का कोई साथी बहुत बीमार है, मगर इनके पास एक असाध्य वाक्य है हमें क्या? राजनीति से हमें क्या लेना–देना ?''[३६]

'शुरूआत','जिन्दा है प्रतिभा बर्मन', 'बिखरी हुई जिन्दगी', 'एक प्रेम–पत्र', 'किसको बताऊ ओर छोर', 'गोष्ठी','टयूबेक्टामी' आदि कहानियों में प्रसंगोचित परिवर्तन दिखाई देता है।

४.५.१.४ वातावरण प्रधान भाषा :

क्षमा जी ने अपनी समर्थ लेखनी से बाह्य परिवेश या वातावरण को भी अपनी भाषा द्वारा साकार किया है। पात्रों के मनोभावों को व्यंजित करने के लिए वातावरण के अंकन से काम लिया है। 'शाम पकड़ लो अरूणिमा को' इस कहानी में उमस भरे वातावरण का वर्णन लेखिकाने कुशलतापूर्वक किया है – ''वसन्त झर रहा है। इस जून के महीने में इस उमस भरी शाम में सड़क के अँधेरे भरे इस किनारे में। रात उतर रही है धीरे–धीरे। हवा चल रही है, मिट्टी वाली कुल्हड़ में पानी डालों वैसी गन्ध लिये। बारीश आने के आसार है। हवा में यह मिली हुई धूल, ठण्डी हवाएँ, हण्डे

की लपलपाती लौ से उठती मिट्टी के तेल की गन्ध फिर भी पसीना। ''[३७] 'बया ','जिन्न','लौटते हुए', 'एक शहर अजनबी', 'काला कानून', 'अंतिम चरण' आदि कहानियों में वातावरण के सजीव चित्रण के साथ ही पात्रों की मनोदशा भी प्रकट होती है। कहानियों में महानगरीय हलचलें, बाजार के दृश्य हैं। ड्राइंगरूम, रेस्तरों, कॉफी हाऊस, सेमिनार, ब्लू लाइन बस जैसे परिचित और साधारण दृश्य हैं। क्षमा जी उन्हें व्यर्थ नहीं जाने देती। असाधारण बनाती है। साधारण चीजों को, पात्रों को, स्थितियों को लेखिका असाधारण बनाने का हौसला रखती है।

४.५.१.५ अलंकारिक भाषा :

अलंकार वाणी के भूषण हैं। अलंकारों के प्रयोग से भाषा का सामर्थ्य,सौन्दर्य तथा समृद्धि में इजाफा होता है। प्रस्तुत विधानों द्वारा लेखक अपने निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति करता है। भाषा को अलंकारिकता से सजाकर पेश करने से साहित्य सरस और संप्रेषणीय हो जाता है। क्षमा जी ने भी अपनी कहानियों को अलंकारों से श्रृंगारित किया है । प्रस्तुत है उनकी भाषा में अलंकारयुक्त वाक्यों के उदाहरण –

➢ **उपमा अलंकार :**

''हरे पेड़ पर कुल्हाडी चलाना अपने बच्चे की गरदन काटने जैसा लगता है। ''[३८]

'लव स्टोरीज़' कहानी संग्रह से लिए कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

'आसमान में पतंगे एक – दूसरे के पीछे लडंतू कुत्ते की तरह भाग रही है। '

'जुबान देखो कतरनी की तरह चलती है। '

'प्रेम स्टाक एक्सचेंज की तरह है जिसमें उछाल और मंदी आती रहती है।'

'प्रेम मुद्रास्फीती की तरह है, इधर महँगाई बढ़ती है, उधर प्रेम का बाजार सिकुड़ता है।'

➢ **रूपक अलंकार :**

'लड़की जो देखती पलटकर' कहानीसंग्रह से कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

''जलती–बूझती लाइट्स से शक का साँप फन निकालता निकला। ''[३९]

'भावनाओं की आँधियों के साथ---- उसकी घुडकियाँ जारी हैं।

'उसकी बिल्ली आँखों में कोई हिंसा नहीं एक ठण्डापन था। '

'थैंक्यू ! सद्दाम हुसैन' कहानी संग्रह से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

'किसके लिए जीवन की इस वीरान सड़क पर क्योंकर अकेली दौंडती चली जाएँ ?'

'सामने कठोर जीवन का बियाबान बिछा था। '

➢ **श्लेष अलंकार :**

''पिता को नहीं बता सके, नहीं तो पिता अपने बुढ़ापे की लकड़ी पर बाकायदा लकड़ी की आजमाइश कर लेते।''[४०]

इस प्रकार अलंकारों के अनेक उदाहरण लेखिका के कहानी–साहित्य में देखे जा सकते हैं।

४.५.१.६ दृश्यात्मक भाषा :

क्षमा जी के द्वारा अनेक दृश्यों का हू–ब–हू वर्णन देखकर लगता है कि हम भी उस दृश्य के दृष्टा है। प्रस्तुत है उनके द्वारा कुछ दृश्यों के शब्दबद्ध रूप– ''बाहर बाऊंड्री पर सी ग्रीन कलर की बेल है। उस पर गुच्छे–के–गुच्छे लाल फूल खिले हुए हैं। उसके पीछे कोठी की जगह खाली पड़ी है, जिसमें ढेर से सूखे झाड–झंखाड़ खड़े हैं। अचानक दो कुत्ते वहाँ आकर छुआ–छुई खेलते हैं।''[४१]

'लड़की जो देखती पलटकर 'कहानी में चित्रात्मकता का बड़ा ही सुंदर उदाहरण देखा जा सकता है– 'दीवारों पर पानी बह रहा था। पत्ते आपस में हिल–मिलकर पानी की बौछारें नीचे फेंक रहे थे। एक बिल्ली, खिड़की के बाहर की शहतीर पर बैठी जासूसी आँखों से दुनिया को देख रही थी। चिड़ियों ने पानी से बचने के लिए पंख फुला लिये थे।'

'ढाई आखर' कहानी में मेहता जी के गर्जना का बड़ा ही सजीव चित्र लेखिकाने प्रस्तुत किया है– 'उनकी गर्जनासे जैसे सूरज की तेजी बढ़ गई, जालियों पर थिरकते पत्ते सहम गए, मंद–मंद बहने वाली हवा को सांप सूँघ गया और भौंचक्के से उस प्रेमी युगल ने मेहता जी की तरफ देखा। उन दोंनो के चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।'

इस प्रकार क्षमा जी की कहानियों में दृश्यात्मक भाषा का यथार्थ रूप दृष्टिगत होता है। उनकी ''कहानियों की भाषा केवल भाषा नहीं रहती, वह दृष्टि में बदल जाती है, जो परिदृश्य को ही नहीं; बल्कि पसेमंजर भी देखने और महसूस करने की कुव्वत रखती है।''[४२]

४.५.१.७ काल्पनिक भाषा :

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है, अपनी संवेदना और अनुभव को कल्पना के रूप में उतारने की क्षमता क्षमा जी की भाषा में है जो उन्हें औरों से पृथक सिद्ध करती है। काल्पनिकता लेखिका की अतिरिक्त कलात्मक क्षमता का परिचायक है।

क्षमा जी ने स्थिती को देखते हुए अपने कहानी साहित्य में काल्पनिकता का प्रयोग किया है। उदा.- ''तो प्रेम जींस तय करेंगे। अगर हमारे जींस डायनासोर के शरीर में इंजेक्ट कर दिए तो असमय ही उसके दाँत गिर पडेंगे। वह दुम हिलाता आएगा। वे मंगल पर बस्तियाँ बसायेंगे। मच्छरों को डायनासोर बना देंगे और डायनासोर को कुत्ता।''[४३]

' लड़की जो देखती पलटकर ' कहानी संग्रह से कुछ उदाहरण- 'किसी साड़ी को छूती हूँ तो माँ के कोमल बालों का अहसास होता है तो किसी से उनके खुरदरे हाथ-पैरों का।' 'हमारी हँसी शायद नीम के पत्तों को सुनाई दे जाती। वे झूमने लगते। कोई गौरेया उनकी ताल पर थिरकने लगती। आसमान में झाँकने को चाँद उतावला हो जाता। हम चुप हो जाते फिर भी हमारी हँसी पार्क में गूँजती रहती। ' 'अँधेरा, रोशनी और आसमान के बीच तन गया है। '

इस प्रकार लेखिका के स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति को भाषा में समेटा गया है। जो पाठक में विचलन पैदा करने की क्षमता रखता है। यह काल्पनिकता बनावटी नहीं बल्कि असल जीवन से आया उत्कृष्ट अनुभव है।

४.५.१.८ प्रतीकात्मक भाषा :

क्षमा जी प्रतीकात्मक शब्दों के सहज प्रयोग में सक्षम हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रतीकों का सहज प्रयोग कर रचनाओं को अर्थपूर्ण बना दिया है। ''उसके दाँतों पर टूथपेस्ट की टयुबें जगमगा

रही थीं। बिन्दी, काजल, पाऊडर, कुण्डल, चूड़ी सब जगह कम्पनियाँ खड़ी इठला रही थी... .."[४४] यह लिखकर स्त्रीत्व से मुक्ति और बाजारवाद के चंगुल में स्त्रीदेह के फँसने को प्रतीक रूप में दिखाया गया है, जो न लिखा जाता तो कहानी अधूरी होती।

'खेल' कहानी में रात के समय गाड़ी की यात्रा बेहद डरावनी लगती है। 'बाहर का सब कुछ कितना एकसार लगता है, बिलकुल भयावह। जहाँ कोई गति-स्पंदन ही न हो। एक अंधा कुआँ।' लेखिका ने प्रतीक योजना द्वारा यहाँ अर्थ सौष्ठव तथा भाषिक सौन्दर्य बढ़ाया है। प्रबद्ध पाठक भाषा में छिपे प्रतीकार्थ को गहराई में जाकर ढुँढता है और एक अपूर्व आनन्द प्राप्त करता है। जैसे 'तिल में तेल होता है वैसे ही प्रतीकात्मक भाषा में अर्थ' होता है।

'एक है सुमन' कहानी में - 'जो लकीर पर चलते हैं गुम हो जाते हैं। जो दौड़ती सड़क से दूर हटकर कोई पगडंडी चुनते हैं वे अक्सर अकेले दिखते हैं।' इस वाक्य में लेखिका स्त्री मुक्ति से आगे जाकर स्त्री स्वतन्त्रता का विमर्श प्रस्तावित करती है। भाषा का सधा प्रयोग मानव-मन की सूक्ष्मतम तरंगों, जीवन की विंसगतीयों को व्यक्त करता है। क्षमा जी भाषा को प्रतीकों में कुशलता पूर्वक बाँध पाती हैं। इसे रचनाकार का खुलापन और वैशिष्ट्य ही समझना चाहिए।

४.५.१.९ ध्वन्यात्मक भाषा :

लेखिका की कई कहानियों में शुद्ध साहित्यिक रूप में विविध ध्वनियों का सूक्ष्म, सटीक तथा सार्थक चित्रण किया गया है। उन्होंने ध्वन्यात्मक शब्दों को प्रयुक्त कर प्रभावात्मक ढंग से दृश्य खड़ा करने में सफलता प्राप्त की है। ध्वन्यात्मक शब्दों के उदाहरण दर्शनीय हैं -

''सोफा चरमरा उठा। बाहर चलती हवा भी थमकर फिर से सरसराने लगीं।''[४५]

'थैंक्यू सद्दाम हुसैन' कहानीसंग्रह से कुछा उदाहरण प्रस्तुत हैं -

'पीछे से पों-पों करती हुई कोई कार छाती पर चढ़ती चली आती है।'

'बिट्टू भाड़ से दरवाजा बंद करता निकल गया।'

'स्वस्थ स्त्री ने केबिन में घुसने की कोशिश की मगर केबिन उसके मुँह पर भड़ाक से बजा और बंद हो गया।'

‘वह गूँगे के गुड़ की तरह खा रहा है। धीरे–धीरे, चुपके–चुपके, बेआवाज।’

‘कैसेट पर बहुत सैड साँग्ज बज रहे हैं।’

४.५.१.१० अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा :

अमूर्त भावों की पकड़ के लिए भाषा में अतिशयोक्ति का प्रयोग किया जाता है। भाषा में अतिशयोक्ति का प्रयोग अत्यंत आकर्षक सिद्ध होता है।

अतिशयोक्ति के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है –

‘‘बदनामी की बात, सुगंध से भी कहीं तेज फैलती है।’’[४६]

‘थैंक्यू सद्दाम हुसैन’ कहानी संग्रह से कुछ उदा.–

‘खुशी जहाँ प्रकाश की तरह फूटती थी। दु:ख जहाँ कभी अतिथि की तरह ही पैर मारते थे।’ ‘सुबह से शाम तक इसके दु:ख मेरे घर में बहते रहते थे और मैं झाडू लेकर उन्हें साफ करती फिरती थी। ’

४.५.१.११ काव्यात्मक भाषा :

वातावरण को सजीव बनाने के लिए क्षमा जी ने अपनी कहानियों में कई जगहों पर काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। जिसके कारण शब्दों में अर्थ की गहराई और भाषा में खूबसूरती आई है। ‘दलदल’ कहानी में मिश्रा जी ने मजदूरों के लिए, मेहनतकश किसानों के लिए प्रेरणादायी कविता रची है – ‘‘जब इसका रंग सिंदूरी होगा,

चिड़िया नए तराने गाएगी, खेतों में फूली सरसों,

पेड़ों पर होगी नई गंध, अब तक रहेगा युद्ध अनवरत युद्ध . . . ’’[४७]

‘पिता’ कहानी में चाचाजी ने उषा जिजी को गीत तैयार कराया था मास्टर जी की विदाई पर गाने के लिए–

‘आँखे आँसू से है भर आई।

आज सुनकर तुम्हारी विदाई।।’

इसी कहानी में पँद्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी के दिन पूरे स्टेशन पर काम करने वाले बच्चे यह गीत गाया करते हैं–

'हम भारत की फुलवारी के, फूल बनेंगे न्यारे।

हम चमकेंगे इस धरती पर, जैसे चाँद सितारे।।'

'धनुष लीला' कहानी में गाँव के सभी लोग परिवार सहित रामलीला देखने जरूर जाते हैं और लौटते हुए अक्सर गुनगुनाते हैं–

'बोले–बोलो री जमीं, बोलो आसमाँ।

कहाँ मिलेंगे मेरे प्रभु के निशाँ।।'

४.५.१.१२ विज्ञापन भाषा :

क्षमा जी ने अनेक प्रचलित विज्ञापनों को सन्दर्भ एवं भावानुकूल परिवर्तन के साथ अपने कहानी साहित्य में जड़ दिया है, यथा–

''ले लो भई चार आने की दो–दो, इन्हें बच्चा खाए, तो पहलवान हो जाए, बूढ़ा खाए, जवान हो जाए। ''[४८]

'धूप का चश्मा' कहानी में–

'देखिए आ गई आपकी मनपसन्द चीजें–अमेरिका की सबसे मशहूर कम्पनी का बना पाऊडर ... इंग्लैंड की नाखूनी ... सप्तरंगी चश्मा .. . इम्पोर्टेड खास डिजाइन की साडियाँ।'

'लव स्टोरीज़' कहानी संग्रह से कुछ उदा.–

'आइए और प्रेम करना सीखिए। सफलता पर डिस्काऊंट भी। रबर इंडस्ट्री के कुछ गिफ्टस भी।'

'अच्छी आय, उदार विचारों वाला लड़का, कोई बंधन भी नहीं और तलाकशुदा,विधवा भी स्विकार्य हैं।'

'ओफ ओह, फिर से वही वाला टूथपेस्ट। कोई कहता है, फिर से वही लड़की। '

इनकी रचनाओं के विज्ञापन वर्तमान नारी के घर–परिवार से लेकर कार्यालय तक के दौड़ धूप भरे जीवन स्थितियों से साक्षात्कार कराते हैं।

४.५.१.१३ प्रवचननुमा भाषा :

प्रवचननुमा वाक्यों के प्रयोग से भाषा में गहन अनुभवों का सार तो भर ही जाता है, साथ ही एक प्रकार की दार्शनिकता और गंभीरता भी आ जाती हैं । क्षमा जी ने रचनाओं में प्रभावात्मकता लाने के लिए इनका सार्थक प्रयोग किया है। उदा.–

''माफ करना, मैं कभी किसी तीर्थ में नहीं जाऊँगी। मैं किसी धर्म का झँडाबरदार नहीं बनूँगी। ''[४९]

'लव स्टोरीज़' कहानी संग्रह से कुछ उदाहरण –

'उसकी और मेरी जिंदगी के नियमों का फासला कभी नहीं भरेगा।'

'मगर वह बंदिनी थी अपने ही मन की, वह उसके अलावा कौन जानता था।'

'उम्र आपकी प्रौढ़ता बताने लगे और दिमाग से आप वही सोलह साल के बने रहे .. . . शायद यह उम्र की सच्चाई को जानने का डर हो।'

'आत्मा अमर है न वह पैदा होती है, न मरती है। न उसे काटा जा सकता है। वह निर्गुण है निराकार है।'

'कभी–कभी छोटी चीजें कितना सुख दे जाती हैं।'

४.५.१.१४ भदेस भाषा :

क्षमा जी की कहानियों में सुशिक्षित तथा अशिक्षित पात्र अपना आक्रोश, तिलमिलाहट और क्रोध आदि मनोभावों को व्यक्त करने के लिए गाली–गलोच से लेकर भाषा के बीभत्स, भदेस रूप का प्रयोग करते हैं। 'लव स्टोरीज़' कहानी संग्रह से :–

''कमीने, कुत्ते, नामाकूल, नामुराद नासपीटे। क्या दिया तुमने मुझे !''[५०]

'मैं नाली का कीड़ा हूँ ! मैं साला . . . '

'अश्लील, घटिया, कुतिया'

'इक्कीसवीं सदी का लड़का ' कहानी संग्रह से उदा.–

'अपने तमाम कमीनेपन, क्षुद्रताओं, घटियापन के भार से दबी यह औरत भागी जा रही थी।'

'रंडी कहीं की।'

'साली, छिनाल, कुतिया।'

'यह भड़वा रिपर मुझ तक कैसे आ पहुँचा ?'

'ओ चुप हरामखोर।'

'ससुरी को दो हाथ पड़े तो सब ठीक हो जाए। '

'उल्लू के पट्ठे, अपने कान तक तो तू बचा नहीं पाया।'

'मेरे जूतों में बैठेने के काबिल नालायक, मक्कार औरत, मेरे हाथ से पानी पी।'

४.५.१.१५ : सूक्तियाँ :

'गागर में सागर ' के मान सूक्तियों के कारण भाषा अर्थगहन हो जाती है। इन सूक्तियों से पाठकों को भी जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण मिलता है। क्षमा जी ने समुद्र में स्थित मोतियों के मान यह सूक्तियाँ अपनी कृति में बिखरी है। उनकी वैचारिक क्षमता, चिंतन, मनन तथा भाषिक सामर्थ्य का परिचय देने वाली इन सूक्तियों का अपना महत्त्व है। प्रस्तुत है क्षमा जी की कहानियों में बिखरी हुई मोतीसमान सूक्तियाँ 'लव स्टोरीज' कहानी संग्रह से–

''सदा सच बोलो, गरीबों पर दया करो, माता–पिता की सेवा करो, बेईमानी महापाप है।'' [५१]

'यह जीवन ही पतझड़ है। उत्पन्न होना, नष्ट हो जाना।'

'परिस्थितियाँ कैसी भी हों, कैसा भी समय हो, विजय हमेशा सच की होती है।'

'जब जड़ तक पहुँचोगे तभी तने की बात सोच सकते हो।'

'अगर वक्त के साथ नहीं चलोगे तो आगे आने वाली गर्द–गुबार तो आँख में पड़ेगी ही।'

क्षमा जी की सूक्ति/उक्ति पर रजनी गुप्ता जी का कथन है ''सहज सरल संप्रेषणीय भाषिक संरचना में सूत्रात्मक दार्शनिक उक्तियाँ उल्लेखनीय हैं मसलन –'उम्र की ढ़लवाँ सड़क कहाँ से कहाँ तक ले जाती है।' '' [५२]

४.५.१.१६ मुहावरें, कहावतें :

➢ **मुहावरें :**

साहित्य में भाषा के लालित्य और समृद्धि के लिए मुहावरों और कहावतों का विशिष्ट योगदान होता है। क्षमा जी ने अपनी रचनाओं में मुहावरों का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया है जिससे उनकी अभिव्यक्ति सशक्त बन गई है। मुहावरों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं। 'थैंक्यू सद्दाम हुसैन' कहानी संग्रह से–

''जायजा लेना''[५३]

'हड्डियाँ घिसना'	'जुबान लंबी होना'
'तरस खाना'	'नाक बहती रहना'
'रस्मअदायगी करना'	'बात टालना'
'भूसा बना देना'	'मन उतरना'
'चट कर जाना'	'दिल तोड़ना'
'ठोक देना'	'ठहाका मारना'
'कान काट लेना'	'ऐसी की तैसी करना'
'उफ न करना'	'हद से आगे बढ़ना'
'लुढ़क जाना'	'खम ठोकना'
'छक्के छुड़ा देना'	'मातम छाना'
'सिर चढ़ा रखना'	'कहकहे गूँजना'
'नकल उतारना'	'कुर्बान होना'
'ओंठ बिचकाना'	'टाँका भिड़ना'
'नामोनिशान न रहना'	'तहस–नहस होना'

➢ **कहावतें :**

कहावतों के प्रयोग से भाषा प्रवाहपूर्ण बनती है। लेखिका ने अपनी कहानियों में कहावतों का प्रयोग कर भाषा को उत्कृष्ट बनाने का पूरा प्रयास किया है। कहावतों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं 'लव स्टोरीज़'कहानी संग्रह से–

''आँख ओझल सो पहाड़ ओझल।''[५४]

'जोड़–जोड़ मर जाएँगे, माल हिलन्दे खाएँगे।'

'निन्दन नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।'

'होनी के तो सब बहाने हैं।'

'बूढ़ी घोडी लाल लगाम।'

'म्यांऊ के गले में घंटी कौन बाँधें।'

'उतना ही मिठा रखो जितना झेल सको।'

'चिकने घडों पर कोई असर नहीं होता।'

'बूँद–बूँद से घट भरे।'

'अफसर की कुर्सी पर तो बैठकर गधा भी मीठे सुर में गाने लगता है।'

'ब्याह न सगाई कोरिया से लट्ठम–लट्ठा।'

'घर में नहीं है दाने और अम्मा चली भुनाने।'

क्षमा जी के मुहावरेदारी पर समीक्षा करते हुए ज्ञानप्रकाश विवेक कहते हैं,''भाषा की बिल्कुल नई तर्ज–ए– बयानी और आधुनिक मुहावरेदारी कहानियों को दबंग, खिलदंड़ा और तुर्श बनाती है।''[५५]

४.५.१.१७ नारेयुक्त भाषा :

क्षमा जी ने अर्थपूर्ण नारे तथा साइनबोर्डस का यथास्थान प्रयोग कर विशिष्ट सामाजिक स्थितियाँ तथा भ्रष्ट अनुशासनहीन व्यवस्था का पर्दाफाश भी किया है, जैसे–

''पोदन–पोदन हाय–हाय।''[५६]

'घोड़ों का खाना नहीं चलेगा।'

'मुर्दाबाद, जिंदाबाद, हाय-हाय।'

'से नो टु पॉलीथीन बॅग्ज'

'लड़की-शक्ति मूर्दाबाद'

' लड़की-शक्ति जिंदाबाद'

'तुम हमें विज्ञापन दो, हम तुम्हें फाँसी देंगे।'

४.५.१.१८ शेरो-शायरी :

लेखिका के शेरो-शायरी के प्रयोग से भाषा में सुंदरता की छवि प्रतित होती है । 'लव स्टोरीज़' कहानी में एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

'' वो जा रहा था, मैं बुला रही थी,
वह डाल रहा था, मैं चिल्ला रही थी।''[५७]

४.५.१.१९ चौपाई :

लेखिका परशक्ति के आराधना का चेतनामयी मार्ग चौपाई द्वारा दिखलाती है-

'' प्रबिस नगर की जे सब काजा
हृदय राखि कौसलपुर राजा। '' [५८]

४.५.१.२० शब्द प्रयोग :

क्षमा जी ने पात्रों की स्थिति को वास्तविकता प्रदान करने के लिए अन्य भाषा के शब्दों का साभिप्राय प्रयोग किया है, विशेषकर अंग्रेजी एवं उर्दू भाषा के शब्द। कुछ शब्दों को यहाँ दिया जा रहा है-

➢ **अंग्रेजी वाक्य :**

क्षमा जी की कहानियों में महानगरीय परिवेश और सुशिक्षित पात्र इनकी अहम् भूमिका है। इस वजह से अंग्रेजी शब्दों एवं वाक्यों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। जिस से भाषा में स्वाभाविकता आ गई है जैसे 'इक्कीसवीं सदी का लड़का ' कहानी संग्रह से–

'आई कैन एश्योर यू इट इज नाट हार्मफुल, बेटा।'

'इंडिया विल विन'

'यस,वी नो द रीयल टेस्ट। नाऊ गेट लॉस्ट।'

'एक्सपोजर मीन्स सर्कुलेशन, मीन्स मनी, मीन्स पावर, मीन्स फेम ! अंडरस्टैंड।'

'कूल, कैलकुलेटेड, नॉनकमिटल,रूथलेस।'

'वन कैन नॉट फरगॉट द पास'

'पाइंट टु लूज, पाइंट टु विन'

'हैप्पी मैरिज एनीवर्सरी।'

'आफ्टर आल आई एम एन इंडिविज्युअल।'

'यू आर ए ब्रिलिएंट चाइल्ड'

'शी इज ए वेल क्वालिफाइड लेडी'

'फर्स्ट यू लिसन टु मी'

'टीचर मे आय गो'

'लव स्टोरीज़' कहानी संग्रह से –

'शी इज वैरी चीप। शी गोज आऊट विद एवरी बडी।'

'आय एम् ए सेल्फमेड मैन।'

'यस सर,राइट सर. . .वेरी वैल सर।'

'रियली, यू हेट मी।ओ बेबी . . . '

'यस . . . यस नो बडी इज वेटिंग फार अस।'

'दे आर द टू आईज आफ द चैअरमैन एंड द डायरेक्टर।'

'ही इज वेरी चाइल्डिश।'

➢ **अंग्रेजी शब्द :**

ब्रीफकेस	हेयरडाई	मशीन	इंश्योरेंस	प्रीमियम
टिफिन	टिशू पेपर	ग्रीजींग	चार्टर्ड बस	रिजल्ट
पाउडर	पेन	स्कूटर	इन्कमटैक्स	क्रेच
रिटायरमेंट	ओ.के	ड्राइवर	एक्सीलेटर	रियलिटी
पेंशन	बाय	केबिन	पायलट	कैबिनेट
पी.एफ.	सी.यू	क्लच	कैसेट	प्रिडेक्टेबिल
एलीयनेशन	टाटा	ब्रेक	एल.आई.सी.	कॉलेज
केअरटेकर	स्टुपिड	डायरी	सैक्रीफाइस	रिवोल्युशन
आइ.ए.एस.	डायलॉग	पार्क	जस्टीफिकेशन	कैंटीन

➢ **उर्दू – फारसी के शब्द :**

जुदा	फुरसत	मर्द	शरमाना
जमाना	खूबसुरत	तिलिस्मी	खिसकना
कातिल	इजाजत	पर्दानशी	खैरियत
जनान्नी	बेतरतीब	अकसर	ताज्जुब
मुसकाना	दास्तान	खल्लास	मातम
बेहतर	हसीना	उखाड़ना	इज्जत
नीलामी	नजर	कुर्बान	नफीस
शीशा	छेड़खानी	शराबी	नफासत
लिफाफा	इशारा	माल	निजामुद्दीन
जमानत	गफलत	शर्म–लिहाज	शीरीं–फरहाद

➢ **तत्सम शब्द :**

कुंडल	विद्वान	आश्चर्य	अन्याय	कंठस्थ

माला	चतुर	ईर्ष्या	गुरू	आभूषण
यक्ष	परिश्रम	धैर्य	परीक्षा	तिलक
गति	शास्त्र	दुविधा	वज्रपत	सरिता
मुग्ध	परब्रह्म	साक्षात्	नृत्य	विष्णु
मूर्ख	रक्षक	पक्ष	संस्कार	स्वर्णिम
जनक	दर्पण	भोजन	अद्वितीय	निर्जल
निर्वस्त्र	श्रृंगार	शगुन	भूमि	द्विगुणित
देह	निरभ्र	श्वेत	धारा	शक्ति
ईश्वर	व्याकुल	दीन	चित्र	भयावह

➢ **तद्भव शब्द :**

लतियाना	इकिलखुरा	पोतना	बुराई
तरेरता	गलियाना	गवारा	तपाक
गड्डमड्ड	बुढ़िया	उमर	सोहबत
खुर्राट	बुनावट	पैदा	कहिएगा
कौंपले	जनम	नथुने	वर्ना
झन्नाटेदार	कलिख	कतई	कनखी
पिएगी	किसकी	जालिम	कमाई
रोई–धोई	मजूरी	मटकती	करियो
डपटा	मंगाती	होड़	करवातीं
करम	कमाई	डकार	कामधाम
निबटा	बरांडा	बगल	खूब

➢ **संयुक्त शब्द :**

चश्मे – वश्मे	मीन – मेख	भाग – दौड़
घिस – मिट	हट्टा – कट्टा	शादी – ब्याह

सास – बहू	दौड़ – धुप	आस – पास
चिक – चिक	रात – दिन	झाड़ू – बुहार
क्रिया – कर्म	कचर – पचर	पढ़ना – लिखना
दान – दक्षिणा	झूठी – मूठी	अनुनय – विनय
छुआ – छुई	अनाप – शनाप	रोऊँ – गिड़गिड़ाऊँ
आँख – मिचौनी	छुपम – छुपाई	आर – पार
डाँट – डपट	गुड़ी – मुड़ी	मान – मनोव्वल
किड़े – मकौड़े	रोकना – टोकना	इर्द – गिर्द
लिये – दिये	धमा – चौकडी	नाक – नक्शा
मेल – मिलाप	साफ – सुथरे	सुबह – शाम

➢ **विशेषणयुक्त शब्द :**

क्षमा जी की कहानियों में विशेषणयुक्त अनेक शब्द सहज रूप में बिखरे हुए हैं। उन्होंने विशेषणों का प्रयोग कर बड़ी सहजता से अपनी भाषा को अधिक सक्षम, सशक्त और समृद्ध बनाया है। 'आँखे' शब्द के साथ विभिन्न भाव – भावनाओं को व्यक्त करने वाले अनेक विशेषणों का प्रयोग द्रष्टव्य है –

दिपदिपाती आँखे	चुटिली आँखे	भावहीन आँखे
खंजन जैसी आँखे	गहरी आँखे	घप्प आँखे
कमजोर आँखे	करारी आँखे	

और अन्य :

उम्रदराज आदमी	उफनती–सी साँसें	अजस्त्र धारा
ऊबाऊ बहस	झन्नाटेदार तमाचा	घुँघराले बाल
वक्र मुलाकात	इकिलखुरे विद्रोह	खूँखार जनानी
पेड़ परेशान	अनजाना शहर	कृपापात्र कंपनी
क्रूर बरताव	बदहवास सड़क	कुशल प्रबंधन

भिनाभिनाती लडकियाँ	कृशकाय चेहरा	दक्ष कर्मचारी
क्रूड़ विज्ञापन	बर्बर समाज	मॉरलिस्ट लोग
खिचड़ी दाढ़ी	लच्छेदार पेय	स्थायी काम
कातर निगाहे	इमारतें हैरान	

- **विशेष शब्द :**

कुछ ऐसे अलग शब्द भी मिलते हैं जिनका प्रयोग लेखिका ने किया है –

लब्बो – लुवाब	कटखनापन	झुटपुटा	अकबकाकर
बुदबुदाई	बरजना	कुनमुनाई	हाऊ–हप्प
रूंध	ऊलजुलूल	सुगबुगाहट	कारगुजारियाँ

- **फूलों के नाम :**

क्षमा जी पर्यावरण प्रेमी है, इसीलिए उनकी रचनाओं में जगह–जगह फूल, पेड़– पौधों के संदर्भ दिखाई देते हैं।

जीनीया	डॉगफ्लॉवर	क्रोटन	पाम
लिली	गुलाब	चमेली	नागफणी
पापीज	कैक्टस	रजनीगंधा	सूरजमुखी

- **पेड़ – पौधों के नाम :**

कीकर	मनीप्लांट	नीम	पीपल
गुलमोहर	अमरूद	अमलताश	शिरीष
सेमल	बुरांश	इमली	

उपर्युक्त भाषिक प्रयोगों को देखते हुए कहा जा सकता है क्षमा जी की भाषा विविध रूप रंग लिए हुए है। तथा कई प्रकार के भाषा प्रयोग करके उन्होंने भाषा पर अपना अधिकार दिखा दिया है। उनके कहानी साहित्य की भाषा में जो सरलता, सहजता और स्वाभाविकता है, वह पाठक को तन–मन की अंतरंग दुनिया में ले जाती है। लेखिका के रचनाओं में अंग्रेजी, उर्दू–फारसी, तत्सम्, तद्भव

शब्दों का प्रयोग पात्रानुकूल हुआ है। उनकी भाषा में पात्र, स्थान, प्रसंग एवं भाव के अनुसार सूक्तियाँ, विज्ञापन, अलंकारिकता, मुहावरें–कहावतें, इनका सार्थक व सटीक प्रयोग हुआ है।

४.५.२ शैली–पक्ष :

क्षमा जी की कहानियों में शैली द्वारा लेखक किसी विषय की गहराई में उतरकर अपने अंत:करण का उद्‌घाटन करता है। शैली वह भाषिक वैशिष्ट्य है जो किसी रचनाकार के भावों और विचारों को यथातथ्य रूप में प्रकट करती है। अत: शैली लेखक की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा के अनुसार, ''भाषा को यदि साहित्य का शरीर मानें तो शैली को उसके शरीर की गठन मानना होगा। ''[५९] साहित्य में शैली ही ऐसा तत्त्व है, जिससे लेखक के व्यक्तित्व की झलक मिलती है। विषय–वस्तु और शैली दोनों एक–दूसरे के पूरक है। रचनाकार को विषय के अनुरूप ही शैली अपनानी पड़ती है। क्षमा जी की कहानियों में निम्नलिखीत शैलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं।

४.५.२.१ वर्णनात्मक शैली :

कहानी लेखन में सर्वाधिक लोकप्रिय शैली वर्णनात्मक शैली है। क्षमा जी ने अपनी कहानियों में इस शैली का भरसक प्रयोग किया है। इस शैली की दृष्टि से 'लव स्टोरीज़' कहानी का उदाहरण द्रष्टव्य है – ''हर्षद मेहता आ चुका था। प्रधान मंत्री लालकिले से चौथी बार भाषण दे चुके थे। याकूब मेमन की गिरफ्तारी हो चुकी थी। फिल्मी दुनिया में हडकम्प था। वर्ल्ड बैंक और मल्टीनेशनल्स का विरोध था। तीन सौ लोगों के हाथ में तख्तिया झंडे थे। ग्लोबल बँक के दो करोड़ साठ लाख शेयर्स थे।''[६०] इस उदाहरण में लेखिका पात्रों को किनारे कर वर्णनात्मक शैली में अभिव्यक्त होती है।

'दुमुँही' कहानी में नायिका का रूप वर्णन बड़े सुंदर ढंग से किया है। 'पापा के एपिसोड में बेटा' कहानी में शोभा की विपदा और संघर्ष का वर्णन बड़े सहज और मार्मिक ढंग से किया है।

'बराबर', 'टयूबेक्टामी', 'मौज की रोटी', 'बिखरी हुई जिंदगी' आदि कहानियों में लेखिका की वर्णनात्मक शैली बड़ी ही सहज और अनूठी बन पड़ी है।

४.५.२.२ विश्लेषणात्मक शैली :

इस शैली में रचनाकार घटनाओं,चरित्रों आदि के विश्लेषण में अधिक रूचि लेता है । क्षमा जी की रचनाओं में विश्लेषणात्मक शैली सौंदर्य भी अत्यंत विशद रूप में व्यक्त हुआ है। इस सन्दर्भ में 'आवाजें' कहानी का उदाहरण प्रस्तुत है। इसमें नायिका अपने पति की निरंतर व्यस्तता और माँ-पिता के विरह से उत्पन्न हुए अकेलेपन से निराश होकर घुटने लगती है- '' कभी-कभी लगता है इस घर में आकर मैंने गलती की घर की दीवारें भी मुझे माँ की तरह टोकती हैं। माँ और पापा हर वक्त मेरी आँखों के सामने आ खड़े होते हैं। मैं उन्हें छूने की कोशिश करती हूँ उनसे बात करने की कोशिश करते - करते मेरे आँसू बहने लगते हैं।''[६१]

'अगली सदी की लड़की' कहानी में नारी के 'शक्ति' स्वरूप को उद्घाटित किया गया है। 'इक्कीसवीं सदी का लड़का' कहानी में पुरूष की उदात्त और संकीर्ण मनोवृत्ति के साथ ही दहेज जैसी अपप्रवृत्ति का विश्लेषण किया है। 'गोष्ठी' कहानी में नायिका की मार्मिक पीड़ा की अभिव्यक्ति की गई है। 'बया' कहानी की रिपु निर्जीव चीजों में भी अपनत्व लिये रहती है। इन मानवीय रिश्तों के शिथिल पड़ते ही गाँव के मकान, गली, सड़क, पेड़-पौधों के रूप में उसे जो अपना लगता था, उसमें अब परायेपन की गंध आने लगी है।

४.५.२.३ आत्मकथनात्मक शैली :

आत्मकथनात्मक शैली में रचनाकार कथा के नायक-नायिका का अथवा अन्य किसी भी पात्र का स्थान स्वयं लेकर कथा में संयोजित प्रत्येक घटना का वर्णन स्वयं करता चलता है। प्रस्तुत शैली में आत्मकथा की भाँति प्रथम पुरूष के रूप में कथा का वर्णन होता है। आत्मकथा मुख्यत: रचनाकार के जीवन से संबंधित होती है। वह अपनी भावनाओं को किसी पात्र के माध्यम से अभिव्यक्त करता है, जिससे पात्रों का चरित्र-चित्रण भी प्रभावशाली ढंग से हो जाता है। 'शाम

पकड़ लो अरूणिमा को' कहानी में नायिका के अंतर्मन का आत्मकथनात्मक शैली में परिचय मिलता है – ''यह दिल भी वैसे ही धडकता है, जैसे सोलह साल में धड़कता था। अब भी किसी का इन्तजार करता है। अब भी लगता है कि जिसे चाहा गया है, वह भी वैसे ही चाहता है। बाकियों से तो दीपांकर टाइम पास गेम खेल रहा है। असली सिंसियरटी तो यहीं है।''[६२]

'बया' कहानी का आत्मकथ्य कि 'शादी से पहले लड़कियाँ शादी के बाद के परायेपन को जान नहीं सकती' बड़ा साधारण–सा होते हुए भी विराट दर्द को अपने में समेटे हुए हैं। 'खेल' कहानी में नारी के परिवर्तित रूप को चित्रित किया गया है। यहाँ समय की रफ्तार से भी ज्यादा तेजी से बदलते संबंधों और पीढी अंतराल को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'बेघर' कहानी उन हजारों महिलाओं के वेदना की अभिव्यक्ति है जिनकी कुछ बनने की चाह चूल्हे–चक्की के चक्कर में पड़ कर दम तोड़ देती है।

४.५.२.४ संवादात्मक शैली :

संवाद कहानी कला का महत्त्वपूर्ण अंग है। जिसके अभाव में कहानी केवल वर्णनप्रधान होकर अकलात्मक सिद्ध होती है। पात्रों के परस्पर संवादों से कहानी में मुखरता आती है। क्षमा जी ने भी अपनी कहानियों को वर्णनात्मकता की नीरसता से बचाने के लिए प्रसंगानुरूप संवाद शैली को अपनाया है। इस दृष्टि से क्षमा जी के 'एक प्रेम–पत्र' कहानी का उदाहरण द्रष्टव्य है–

'' 'यह किसने काटा ?' 'तुम लोगों ने इस चिटठ्ी को पढ़ा है?'

'हाँ !' मीनू और रोमा की बात सुन वह हतप्रभ रह गई। चोरी और सीना जोरी।

'क्यों पढ़ा?'

'इसलिए कि तुम्हारा नुकसान न हो।'

'पर्सनल लैटर्स इस तरह पढ़ना चाहिए ? यही मैनर्स है तुम्हारे ?'

'क्या हमने आज तक तुम्हारी कोई चिट्ठी पढ़ी है?'

'तो अब क्यों पढ़ी?'

'हम नही चाहते कि अरविन्दसे तुम्हारी दोबारा लड़ाई हो जाए।' ''[६३]

प्रस्तुत संवादों से कहानी की प्रभावोत्पादकता बढ़ गई है। 'अगली सदी की लड़की' कहानी में नायिका और उसके बेटे में चल रहे गम्भीर संवाद की झलक उल्लेखनीय है। 'कौन है कि जो रोता है' कहानी बड़े विजन को लेकर लिखी गई है। इसमें पात्रों के संवादों के माध्यम से आतंक, शोषण,कत्ल और युद्ध का फांसीवाद सामने आता है। कहानियों की संवादरूपी विशेषतासे दु:ख में मुस्कुराने और जीने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

४.५.२.५ पूर्वदीप्ति शैली :

इस शैली को फ्लैशबैक शैली भी कहते हैं। इसमें पात्र अतीत की स्मृतियों में खो जाता है और उन सन्दर्भो से आगे की कथावस्तु को जोड़ता है। अनुभूतिकी प्रधानता के कारण यह शैली चमत्कार उत्पन्न कर पाठकों के ह्रदय पर प्रभाव डालने में सफल हो जाती है। क्षमा जी की कहानियों में इस शैली का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। इस दृष्टि से उनकी 'अलविदा' कहानी विशेष उल्लेखनीय है। यह पूरी कहानी फ्लैशबैक में ही चलती है। पर वहाँ से जो कराह निकलती है वह शायद आज भी स्त्री जीवन से कहीं न कही संगत कर रही है। कहानी का एक अंश है- ''बस आठवीं पास कर ले तो कोई छोरा पकड़कर इसका मुँह काला करो। हमारे जमाने में तो लड़कियों की पढ़ाई-लिखाई कोई पूछता तक नहीं था। आज तो सबको दसवीं पास चाहिए। सब दिनों का फेर है।''[६४] 'उत्तरार्ध' केवल ऐसी कहानी है जिसमें स्त्री पात्र अतीतजीवी है। वह दिवंगत पति की स्मृतियों में खोई रहती है, लेकिन अंत में वह जटिल मानसिक द्वंद्व की कहानी बन जाती है। 'बर्फ होती मुलाकात' कहानी में स्मृतियों का वह दर्दनाक रूप है जो गहरे तक धँस जाता है। 'पिता' कहानी में वसुधा वर्तमान को देख रही है। उसे समझ रही है पर अतीत की स्मृतियाँ उसे इतना विवश कर रही है कि जिंदगी के सुखद क्षणों को पाने के लिए उसकी इच्छा बार-बार पीछे लौटने की हो जाती है।

४.५.२.६ मनोविश्लेषणात्मक शैली :

कहानी में पात्रों के मन की गुत्थियों को सुलझाने के लिए मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। आधुनिक कथा साहित्य में इसका प्रयोग प्रमुख रूप से किया जाता है। क्षमा

जी की कहानियों में इस शैली का निर्वाह किया गया है। इनमें 'किसको बताऊँ और छोर' कहानी प्रमुख है। स्त्री की मानसिक ऊहापोह के ताने-बाने से बनी यह कहानी किसी भी स्थापित मान्यता के लिए चुनौती हो जाती है। स्त्री के मनोभाव खुलकर यहाँ मुखरित होते हैं। ''कोई मनोविज्ञानी इस तरह के विचारों के हजार कारण गिनाये मगर उषा का मन नहीं मानता कि वह ऐसे किसी विश्लेषण की सरहदों में कैद हो सकती है।''[६५]

'डर' कहानी में बारह वर्ष की अल्पवयस्क लड़की के वयस्क होने की मन:स्थिति और मनोविश्लेषण की व्याख्या की गई है। 'जय श्रीराम' कहानी में एक महत्वाकांक्षी पर उपेक्षित लेखक की मन:स्थितियों को शब्दांकन के माध्यम से उभारा गया है। 'कस्बे की लड़की' कहानी में लेखिका ने आत्मविश्लेषण की जटिलता से जूझते हुए जीवन के उन पहलुओं को शब्दों में बांधने की सफल कोशिश की है।

४.५.२.७ व्यंग्यात्मक शैली :

लेखिका के कहानियों में व्यंग्यात्मक शैली के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। समाज और जीवन से सम्बन्धित विविध पहलुओं पर तीखा प्रहार करने से भी वे पीछे नहीं हटती। उनके कुछ व्यंग्य गहराई में पीड़ा उत्पन्न करने के साथ होठों पर हास्य भी उत्पन्न करते हैं।

टी.वी. प्रोग्राम की सहज रौ में 'दादी माँ का बटुआ' यह कहानी हमारे समाज की बीभत्स तस्वीर व्यंग्यात्मक शैली में हमारे सम्मुख रखती है- ''मैंने सोचा कि जब छोरियों को कोई चाहे ही नहीं तो वे धरती पर आएँ ही क्यों ? बड़े होकर कोई दहेज के लिए मार दे या इज्जत लूटकर कत्ल कर दे, तो बेहतर ही है, पैदा होने से पहले ही मरना।''[६६] इसी सन्दर्भ को देखते हुए महेश दर्पण कहते हैं- ''अपनी बात कहने के लिए कथाकार ने आधुनिकतम रूपों का इस्तेमाल खुलकर किया है। 'दादी माँ का बटुआ' टी.वी. प्रोग्राम की स्टाईल में स्क्रिप्ट की तरह सामने आयी कहानी है।''[६७]

'सेमिनार' कहानीं में उम्रदराज लोग बच्चों के विषय में जो सोचते हैं वह बहुत ही अवास्तविक और यथार्थ के विपरित होता है। इस कहानी में लेखिकाने सेमिनार कल्चर को व्यंगात्मक शैली में

बेनकाब किया है। 'सीधा प्रसारण', 'मास्टर तोताराम' और 'अनुभव जी' आदि कहानियों में भी व्यंग्य का पुट दिखाई देता है।

४.५.२.८ प्रतीकात्मक शैली :

विवेच्य शैली में प्रतीकात्मक चरित्रों के माध्यम से ही जिंदगी के कटु-मधुर अनुभवों को अभिव्यक्त किया जा सकता है। आज के जीवन में व्याप्त विघटन, संत्रास, अजनबीपन, मूल्यों का टूटना आदि को लेखिका ने प्रतीकात्मक शैली में व्यक्त किया है। उनकी कहानियों में प्रयुक्त कुछ प्रतीक इस प्रकार हैं –

'कस्बे की लड़की' कहानी की लड़की कस्बे की होती हुई भी हमारे नगरों और गाँवों के एक बहुत बड़े हिस्से की लड़की हो गयी है। यह शब्द कि –''कोई औरत की प्रगति की बात कितनी ही करे, लेकिन धरातल आज भी वहीं है जहाँ औरत थोड़े सोफेस्टिकेटेड तरीके से सती की मान्यता को स्वीकार करे।''[६८] उसे कस्बे से निकालकर पूरे नारी समाज के बीच प्रस्तुत कर देते हैं। कस्बे का यह चरित्र उस मानासिकता का प्रतीक है जो न तो विकसित है और न अविकसित।

'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' यह कहानी उस प्रतीक वृत्ति का कथावृत्त है, जो आज हर कहीं, प्रत्येक जगह पर काबिज है–'अंधेरा कायम रहे' का उद्घोष करती हुई। यह कहानी बेहद महत्त्वपूर्ण और दिलचस्प है। 'जिन्न' कहानी उस भय का प्रतीक है जो स्त्री के अस्तित्व से ही जुड गया है। पूरी सामाजिक संरचना और सोच की पृष्ठभूमि ऐसी बना दी गई कि हर स्थिति, हर क्षण उसमें नए-नए भय उत्पन्न करता रहता है। हर बार खामोशी और पलायन का विकल्प ही उसके लिए छोड़ा जाता है।

४.५.२.९ प्रश्नोत्तर शैली

क्षमा जी की रचनाओं में प्रश्नोत्तर शैली के विभिन्न रूप देखने मिलते हैं। इस शैली के अंतर्गत प्रश्न पूछे जाते हैं और उत्तर के रूप में दूसरे पात्र का जो कथन होता है वह प्रश्नोत्तर शैली का रूप ले लेता है। 'बिन्दास' कहानी में अनुभा और नायक के बीच चल रहे हल्के-फुल्के सवाल-जवाब सहज और रोचक है। जिसकी एक झलक दृष्टव्य है– '' 'टाइम हो तो कहीं चले ?'

'टाइम, हाँ शायद एक घंटा, कहाँ चलोगे ?'

'कहीं भी, माई प्लेजर।'

'मगर फिर क्या हम अलग-अलग गाड़ियों में चलेंगे?'

'नहीं तुम अपनी गाड़ी यहीं छोड़ दो।'

'क्यों न हम इसी होटल में बैठ जाएँ ?'

'हाँ, यह भी ठीक है। चलो। क्या नाम है?'

'कुछ भी, वैसे राजू कहो। ' ''[६९]

'नेमप्लेट' कहानी में इस शैली का बड़ा ही विस्तृत प्रयोग हुआ है। 'एक है सुमन', 'खलनायक', 'बहन', 'एक लड़की और सत्रह किस्से' कहानी में प्रश्नोत्तर शैली के अनेक उदाहरण हैं।

४.५.२.१० सरल शैली :

लेखक और पाठक के बीच आत्मीयता स्थापित करने के लिए सरलीकरण का होना आवश्यक है। शैली की सरलता से तात्पर्य है कि लेखक जो कुछ कहना चाहता है वह इतना स्पष्ट एवं सरल हो कि पाठक को समझने में असुविधा न हो।

आधुनिकता का लिबास ओढ़ी 'ईको फ्रेंडली' यह कहानी जिसकी चंचल, सहज, सरल भाषा तथा परिचित शब्दों में सधी हुई शैली पाठक के अंत:करण को बेधती है। उदाहरण के लिए इस कहानी का ये अंश देखा जा सकता है- ''बस मुझे इसी बात का अफसोस होता है कि तुम लोगों की महीनों की मेहनत की लाइफ कितनी कम होती है . . . कुछ घण्टे... या एक दिन। बल्कि एक दिन भी ज्यादा है। फिर सारे अच्छे आर्टिकल्स के लिफाफे बन जाते हैं और तुम लोग समझते हो कि तुम्हारे लिखने से दुनिया बदल सकती है।''[७०]

'बया', 'मातृ-ऋण', 'और अब', 'तसवीर', 'व्यूह', 'डोर' आदि कहानियों में इस शैली के उदाहरण मिलते हैं जिससे परिवेशगत यथार्थ और भाषागत सक्षमता स्पष्ट हो जाती है।

४.५.२.११ संकेत शैली :

संकेत शैली में रचनाकार संकेत के माध्यम से पाठकों को सोचने-समझने के लिए प्रेरित करता है। इसमें रचनाकार संकेत के रूप में बहुत कुछ कहता है और पाठक चिंतन की ओर बाध्य हो उठता है। 'काला कानून' इस कहानी में सच की पारदर्शिता और कड़वापन उज्वल हुआ है। कहानी का संदेश वास्तव में प्रेम के सच्चेपन की ओर संकेत करता है। 'कस्बे की लड़की' कहानी की बुनावट सांकेतिक है। कहानी में मर्दवादी समाज में स्त्री की स्थिति पर लेखिका बड़ी बारीकी से चोट करती है। ''आदमियों की इस दुनिया में औरत ही तो है जो एक जानवर से भी अधिक असुरक्षित प्राणी है। जिसका पूरा अस्तित्त्व काँच के गिलास जैसा है जो सिर्फ एक कंकरी भर से खंड-खंड हो सकता है।''[७१] कहानी में वर्तमान नारी वर्ग के असंतोष की ओर संकेत किया है जो प्रदत्त परेशानियों से सहमी हुई है। 'जिन्न' कहानी में लेखिका आज की नारी को विध्वंस, आक्रोश तथा असंतोष का भाव निर्माण करनेवाले अवसरवादी व्यक्ति के चंगुल से बचने के ओर संकेत करती है।

४.५.२.१२ यात्रा शैली :

इस शैली के अंतर्गत यात्रा संबंधी रोचक अनुभव, सुंदर प्राकृतिक दृश्य, नदियाँ-झरनों, पर्वत मालाओं, स्थलों के वर्णन और उनका विस्तृत परिचय मिलता है। इसमें वर्णन शैली की प्रमुखता होती है। यात्रा वर्णन में ही घटनाओं आदि का सुंदर यथार्थ चित्रण होता है।

''लेकिन बड़े स्टेशनों पर ऐसा नहीं होता वहाँ हर समय आपा-धापी मची रहती है। लोगों का समुद्र अचानक राजस्थान के समुद्र की तरह बाष्पित हो जाता है फिर एक नया समुद्र उग आता है। पल-पल सब कुछ बदलता हुआ। बदलने में करोड़ो वर्ष नहीं लगते।''[७२] इस कहानी में नायिका सेमिनार जाने के लिए रेल यात्रा कर रही है। जहाँ उसे एक सोया हुआ समाज दिखाई दे रहा है जो जीवन की गती में शामिल होने के लिए व्याकुल है।

'बूढ़ी औरत' कहानी में लेखिका ने यात्रा में आने वाली विविध परेशानियों को व्यक्त किया है तथा यात्रा में आयी हुई दुविधाग्रस्त स्थिति का चित्रण प्रस्तुत किया है। 'पिता' कहानी में यात्रा प्रसंग का बड़ा ही कलात्मक और सौंदर्यपरक वर्णन है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि क्षमा शर्मा की कहानियों में भाषा एवं शैली की दृष्टि से पर्याप्त विविधता मिलती है। उनकी कहानियों में भाषा के अनेक स्तर पाए जाते हैं। पात्रों तथा विषय के अनुसार उनकी भाषा में अंतर देखा जा सकता है। क्षितिज शर्मा के अनुसार, ''कालखंड के हिसाब से करीब २०–२५ वर्षों के समय में लिखी गई ये कहानियाँ अपने समय की विडंबनाओं और समय की मार में मानव मन की परतों पर बार–बार दस्तक देती है। इनकी भाषा और प्रस्तुतीकरण की शैली भी समयानुकूल है।''[७३]

४.६ शीर्षक योजना :

४.६.१ शीर्षक योजना का महत्त्व:

'शीर्षक' का प्रत्येक रचना में बड़ा महत्त्व होता है। शीर्षक की स्पष्टता पाठकों को अपनी ओर प्रभावित करती है। पाठक की दृष्टि सबसे पहले इसी पर जाती है। शीर्षक से ही रचनाकार के व्यक्तिगत प्रवृत्तियों का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। कहानी के तत्त्वों में शीर्षक के स्थान को लेकर विद्वानों में मतभेद है। उत्तम कोटी का शीर्षक पाठक के मन में जिज्ञासा, औत्सुक्य और आकर्षण जगाने का कार्य करता है। शीर्षक को देखते ही पाठक रचना के प्रति अनुमान लगा लेता है। साहित्य प्रेमी के लिए शीर्षक विशेष महत्त्व रखता है, वह शीर्षक की आकर्षकता से आकृष्ट होता है अथवा रचना के गति का अनुमान लगाता है। क्षमा जी की कहानियों के शीर्षक विषयानुकूल है। शीर्षक कहानी साहित्य का प्रमुख एवं अनिवार्य तत्त्व होने के कारण उसमें संक्षिप्तता, सांकेतिकता, व्यंग्यात्मकता, प्रतिकात्मकता तथा काव्यात्मकता आदि विशेषताओं का होना आवश्यक है।

४.६.२ क्षमा शर्मा की कहानियों के शीर्षक :

- **संक्षिप्तता :**

संक्षिप्तता शीर्षक तत्त्व की प्रथम विशेषता मानी जाती है। शीर्षक पाठक का ध्यान अपनी और आकर्षित करता है। क्षमा जी के कहानी साहित्य के अधिकांश शीर्षक संक्षिप्त हैं जैसे – 'खेल', 'गन्दगी', 'फादर', 'बेघर', 'दोस्त', 'सन्दर्भहीन', 'बया', 'पिता', 'जिन्न', 'बिंदास',

'घिराव', 'मोर्चा', 'व्यूह', 'डोर', 'खामोशी', 'खंडहर', 'लड़की', 'गोष्ठी', 'खुशी', 'नायक', 'दलदल', 'माँ', 'डर' आदि कहानियाँ। उपर्युक्त कहानियों के शीर्षक संक्षिप्त होते हुए भी सार्थक हैं।

➢ **प्रतीकात्मकता :**

प्रतीकात्मक शब्दों के प्रयोग से उस वस्तु या भावना का सजीव चित्र उपस्थित होता है, जिसके वे प्रतिरूप होते हैं। क्षमा शर्मा के कहानियों के शीर्षकों की दूसरी विशेषता है कि वे प्राय: प्रतीकात्मक हैं। 'चार अक्षर', 'रसोईघर', 'कार्ड', 'तस्वीर', 'अलविदा', 'कब्रगाह', 'एक प्रेम पत्र', ' प्रेम के बीच', 'क्रिकेट' आदि रचनाएँ। 'खलनायक' कहानी में नायिका प्रेम में अपना सर्वस्व हारकर भाग्य भरोसे नहीं बैठ जाती बल्कि मौका मिलने पर प्रतिहिंसा पर उतारू होने का प्रतीक है। 'बिंदास' कहानी उस पुरूष समाज का प्रतीक है जो दो मुट्ठियों में दो दुनिया रखना चाहता है। 'संदर्भहीन' कहानी ऐसी चीजों का प्रतीक है जो संदर्भहीन होते हुए भी परस्पर जुडती चली जाती है। 'खेल' कहानी जिंदगी के ऐसे खेल का प्रतीक है जिसमें शुरूआत से ही पुरूष की जीत होती है।

➢ **सांकेतिकता :**

क्षमा शर्मा की कहानियों के शीर्षक कहीं मुख्य भाव को प्रकट करते हैं तो कहीं किसी घटना की और संकेत करते हैं। 'बूढ़ी औरत', 'मातृ-ऋण', 'एक शहर अजनबी', 'कस्बे की लड़की', 'काला कानून', 'अंतिम चरण', 'सेमिनार', 'सुबह से शाम तक', 'लौटते हुए', 'बिखरी हुई जिंदगी', 'घर-की बातें', 'और अब' आदि कहानियों के शीर्षक सांकेतिक हैं। 'वेलेंटाईन डे' कहानी ऐसी नायिका की ओर संकेत करती है जो पुराने प्रेमी को दुत्कारती है। 'बराबर' कहानी आज की युवतियों के बराबरी की भावना की ओर संकेत करती है जो उनमें कूट-कूटकर भरी है। 'अगली सदी में लड़की' कहानी एक उम्रदराज महिला की ओर संकेत करती है जो विवाह योग्य आधुनिकता का वैचारिक पिछड़ापन खोलती है। 'खेल' कहानी ऐसी स्त्री की ओर संकेत करती है, जिसका स्वतंत्र व्यक्तित्व, अस्तित्त्व और निर्णय हो सकता है। 'न्यूड का बच्चा' कहानी ऐसी नायिका की और संकेत करती है जो बने-बनाये संकोच के दायरे से बाहर निकलने की कोशिश करती है।

➢ **व्यंग्यात्मकता :**

व्यंग्य को हिन्दी शब्दकोश में गूढ़ार्थ, ताना, आक्षेप आदि नामों से अभिहित किया जाता है। 'दादी माँ का बटुआ', 'दयाल वेड्स कमलिनी', 'सीधा प्रसारण', 'मंड़ी हाऊस', 'दुमुँही', 'लव स्टोरीज़', 'मेरी बहू', 'छिनाल', 'बुढ़िया कहीं की' आदि कहानियाँ व्यंग्य से ओतप्रोत हैं। 'मास्टर तोताराम', 'मौज की रोटी' कहानियों का व्यंग्य कहीं विनोद के लिए है तो कहीं तानों से भरा है। 'अनुभव जी' कहानी में औरतों के बारे में व्यक्त हुए तथाकथित प्रगतिशील मर्दों के नजरीये पर व्यंग्य किया है। 'बिखरी हुई जिंदगी' में भी प्रकारांतर से पुरूष-प्रधान समाज में नारी की स्थिति पर व्यंग्य कसा गया है। 'एक अधूरी प्रेम कहानी' में विनोद का खिलदंड़ चरित्र अद्‌भुत है। 'मोर्चा' कहानी में स्त्रियों के बीच आए दिन होने वाली नोंक-झोंक, एक-दूसरों को नीचा दिखाने की मनोवृत्ति जैसी नारी सुलभ स्वभाव से जुड़ी घटनाओं पर व्यंग्य किया गया है। 'युग पुरूष', 'इसके बाद', 'खण्डहर' कहानियों में पुरूष पात्रों की सामान्य मनोवृत्तियों पर व्यंग्य किया है।

➢ **काव्यात्मकता :**

काव्यात्मकता का अर्थ काव्य से परिपूर्ण होना है। क्षमा जी की कुछ कहानियों के शीर्षक काव्यमय हैं। जैसे - 'स्मृतियों के शिलालेख','एक अधूरी प्रेम कहानी','यहीं कहीं है स्वर्ग', 'बर्फ होती मुलाकात','एक है सुमन', 'कौन है कि जो रोता है', 'शाम पकड़ लो अरूणिमा को', 'इश्क बरिश्ता ', 'उड़ान', 'नगाड़ा बजा', 'धूप है कि खिल उठी' आदि।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर कहा जा सकता है कि लेखिका की कहानियों के शीर्षक वैविध्यपूर्ण हैं। लघु शीर्षक से लेकर विस्तृत शीर्षक भी उनकी रचनाओं में परिलक्षित होते हैं। इन्हीं शीर्षकों को देखकर राधारमण जी ने कहा है, ''क्षमा जी की कहानियाँ महिलाओं की आवाज को गति देने की कोशिश है। जगह-जगह व्यंग्य का पुट हो जाने से लेखिका की लेखनी और धारदार हो गयी है।''[७४] क्षमा जी की कहानियों के शीर्षक संक्षिप्तता, मौलिकता, रोचकता,विश्वसनीयता, उत्सुकता, प्रभावोत्पादकता के गुणों सें युक्त हैं।

४.७ क्षमा शर्मा के कहानी साहित्य में उद्देश्य :

कोई भी रचना बिना किसी उद्देश्य की नहीं होती। प्रत्येक साहित्यिक सर्जना का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। वास्तव में साहित्यकार जीवन के जिस लक्ष्य की ओर संकेत करता है, अथवा जो आदर्श हमारे सामने प्रस्तुत करता है उसी को उद्देश्य कहते हैं। डॉ. प्रतापनारायण टंडन के अनुसार, '' सैद्धांतिक दृष्टिकोण से प्रत्येक कहानी की रचना का एक उद्देश्य होता है। यह उद्देश्य पाठक के मनोरंजन से लेकर गम्भीर समस्या का निरूपण तक हो सकता है।''[७५] क्षमा जी की सभी कहानियाँ किसी न किसी उद्देश्य को सफलतापूर्ण रेखांकित करती है।

नारी स्वातंत्र्य का प्रश्न समाज से नहीं नारी की मानसिकता से भी जुड़ा हुआ है। जैसे–'न होने का अहसास' कहानी बाल–विधवा की अभाव भरी जिंदगी को दर्शाती है। 'किसको बताऊँ ओर छोर' कहानी में नारी जीवन का ओर छोर ही नहीं है। तभी तो उस पर शंकालु दृष्टियाँ हमेशा जड़ी रहती है। 'कस्बे की लड़की' में निरपराध लड़की को ब्लैकमेल किया जाना वर्णित है। 'बिखरी हुई जिंदगी' नारी जीवन के अन्त:करण को स्पष्ट करने वाली सशक्त व मार्मिक व्यथा है। 'लौटते हुए' कहानी में नारी के असफल प्रेम को दिखाया गया है। उसे अपना बनाने वाला एक दिन कहता हैं, 'अरे वह रिप्पी न जाने रात में कहाँ–कहाँ घूमती फिरती है।' पुरूष की बेवफाई सिद्ध कर रहा है। 'पापा के एपिसोड में बेटा' कहानी में लेखिका उस औरत की त्रासदी बताती हैं, जिसका पति और बेटा दोनों अपने स्वार्थों के कारण उसे अँधे मोड पर छोड कर चले जाते हैं। इन कहानियों द्वारा नारी जीवन की विसंगतियों को दर्शाकर पुरूषप्रधान समाज के चेहरे का नकाब हटाना ही क्षमा जी का मुख्य उद्देश्य रहा है।

क्षमा जी सामाजिक सरोकारों को उद्घाटित करना अपने साहित्य का उद्देश्य मानती है। 'सेमिनार' कहानी बड़ों की दुनिया के छद्म पर हँसोड़ किस्म की मारक टिप्पणी है। 'मास्टर तोताराम' के माध्यम से कथाकार ने छुआछूत, जात–पात, भेदभाव एवं कर्मकाण्ड के ढकोसले पर जमकर प्रहार किया है। 'मौज की रोटी' कहानी में छिद्दा गुरू पिता की कमाई मौज मस्ती में उड़ा देता है और लखपति बनने की चाह में चोर बन जाता है। 'युग पुरूष' कहानी में प्राध्यापक हमेशा प्रबंध समिति, प्रधानाचार्य आदि की चापलूसी में ही लगा रहता है। 'इसके बाद' कहानी में पिता

तिकड़मबाजी से एक्जीक्यूटिव्ह डायरेक्टर बन जाता है, और वह अपने बेटे से भी यही करवाता है। इस प्रकार समाज की त्रासदि पर प्रहार कर समाज के संकीर्ण दृष्टिकोण के प्रति क्षोभ व्यक्त करना ही उनकी कहानियों का उद्देश्य है।

'और अब' कहानी में घर में तीन लड़कीयाँ बोझ समझी जाती है और फिर भी पुत्र की कामना की जाती है। कहानी में इस दकियानूसी विचार की धज्जियाँ उड़ाई गई हैं। स्त्री की इच्छा-आकांक्षा, प्रेम-वात्सल्य, परंपरा-मर्यादा, अधिकार एवं विद्रोह को प्रमुखता से स्वर देना ही इन कहानियों का प्रमुख उद्देश्य है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट होता है कि क्षमा जी समाज के प्रति स्वयं को उत्तरदायी मानने वाली लेखिका हैं। ज्ञानप्रकाश विवेक के अनुसार ''संग्रह में स्त्री-संसार की विभिन्न छवियाँ हैं। यहाँ स्त्रियाँ अकेली होती हैं। मन में हाहाकार लिए जद्दोजहद और अन्तर्द्वंद्व में घिरी हो सकती हैं, लेकिन चुनौतीयाँ स्वीकार करती हैं। वे पुरूष द्वारा ठगी जाती हैं, इसके बावजूद अपने होने का एहसास दिलाती हैं।''[७६] क्षमा जी की कहानियाँ स्त्री संघर्ष की महागाथा बेशक न हों, स्त्री संसार के भीतर झाँकने, उसके लिए चिंतित होने तथा आत्मचिंतन के लिए विवश जरूर करती हैं। लेखिका इन कहानियों के जरिए पुरूष समाज और उसकी सत्ता पर सवाल उछालती हैं। संग्रह की कहानियाँ पढ़ चुकने के पश्चात् प्रश्नवाचक विचार पीछा करते रहते हैं। यह इन कहानियों का सशक्त पहलू है।

निष्कर्ष :

कथाकार क्षमा शर्मा के उपन्यास और कहानी की भाषा-शैली निर्विवाद रूप से प्रशंसनीय है। प्रौढ़, समर्थ तथा विवेचनात्मक भाषा-शैली के दर्शन होते हैं। इसके साथ ही लेखिका की कथा भाषा में अलंकारिकता, चित्रात्मकता, प्रतीकात्मकता, सूक्तिमयता, मुहावरें-कहावतें, तत्सम-तद्भव शब्द, अंग्रेजी आदि भाषागत रूपों की झलक लक्षित होती है। उनके कथा-साहित्य में वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, विशेषणात्मक, पूर्वदीप्ति आदि विभिन्न शैलियों का सहज स्वाभाविक प्रयोग दिखाई देता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि शिल्प–योजना की दृष्टि से क्षमा जी का साहित्य उत्कृष्ट है। यद्यपि अपने उपन्यास तथा कहानी साहित्य के सन्दर्भ में शिल्प सौष्ठव उनका लक्ष्य नहीं है। तथापि इन विधाओं के शिल्प के प्रति वे पर्याप्त सजग है। क्षितिज शर्मा के अनुसार, '' अपने शिल्प के प्रभाव के कारण कहानी जड़ और अमानवीय प्रवृत्तियों पर तो प्रहार करती है, इस विकृति के उत्पन्न होने के कारणों का भी विश्लेषण करती है। साथ ही उन तथाकथित ताकतों को भी बेनकाब करती है, जो रोग के निदान पर विचार करने की जगह समाज के उस अंग को काट देने पर ही उतारू हो रही है। ''[७७]

लेखिका उस परम्परा की पक्षधर है जो साहित्य में कलात्मकता की अपेक्षा भावात्मकतापर अधिक बल देती है। अत: कथ्य के मूल्य पर वे शिल्प का कलात्मक संस्कार नहीं करती, फिर भी कलात्मकता की दृष्टि से उनके साहित्य में वे सारी विशेषताएँ मौजूद हैं जो किसी साहित्य को उत्कृष्ट श्रेणी प्रदान करती है।

सन्दर्भ : चतुर्थ अध्याय

१. वर्मा धिरेन्द्र (सम्पा.)–हिंदी साहित्य कोश, पृ.५८

२. वर्मा धिरेन्द्र (सम्पा.)–हिंदी साहित्य कोश, पृ.२७४–२७५

३. वर्मा धिरेन्द्र (सम्पा.)–हिंदी साहित्य कोश, पृ.२७४–२७५

४. शर्मा क्षमा–नेमप्लेट, पृ.४२

५. शर्मा क्षमा–लड़की जो देखती पलटकर, पृ.७

६. शर्मा क्षमा–लड़की जो देखती पलटकर, पृ.४५

७. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.९४

८. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.४२

९. रंजन प्रभात–राष्ट्रीय सहारा, ६मई,२००७, पृ.१९

१०. डॉ. टंडन प्रतापनारायण–हिंदी कहानी कला, पृ.२७१–२७२

११. प्रेमचन्द–साहित्य के उद्देश्य, पृ.७

१२. डॉ. शर्मा प्रदीपकुमार–हिंदी उपन्यासों का शिल्प–विधान, पृ.६०

१३. गौरीनाथ–इंडिया टुडे, १२ मई, १९९९, पृ.५१

१४. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.९४

१५. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.४५

१६. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.७५

१७. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.५१

१८. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१८८

१९. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.७०

२०. व्यास विनोद शंकर–कहानी–कला, पृ.६३

२१. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.४७

२२. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.१५१–१५२

२३. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.८९–९०

२४. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.२१९–२२०

२५. वही, पृ.२५१–२५२

२६. वही, पृ.१५७

२७. डॉ. शुक्ला रामलखन–हिंदी उपन्यास कला, पृ.४१

२८. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१०३

२९. विवेक ज्ञानप्रकाश–अमर उजाला, ४ जुलाई, १९९९, पृ.२१

३०. डॉ. टंडन प्रतापनारायण–हिंदी कहानी कला, पृ.३६३

३१. विवेक ज्ञानप्रकाश–अमर उजाला,४ जुलाई, १९९९, पृ.२१

३२. जोशी संदीप–अहा जिंदगी, जून २००७, पृ.५८

३३. शर्मा क्षमा–घर–घर तथा अन्य कहानियाँ, पृ.२३

३४. मिश्र जनार्दन –राष्ट्रीय सहारा, १७ दिसंबर, २०००, पृ.१८

३५. शर्मा क्षमा–लड़की जो देखती पलटकर, पृ.९

३६. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.९२

३७. शर्मा क्षमा–लड़की जो देखती पलटकर, पृ.२७–२८

३८. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१२८

३९. शर्मा क्षमा–लड़की जो देखती पलटकर, पृ.५३

४०. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.७६

४१. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१४

४२. विवेक ज्ञानप्रकाश–अमर उजाला,९ अगस्त, १९९८, पृ.१८

४३. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.२४७

४४. शर्मा क्षमा–नेमप्लेट, पृ.८५

४५. शर्मा क्षमा–लड़की जो देखती पलटकर, पृ.२५

४६. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१०१

४७. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.२०८

४८. शर्मा क्षमा–काला कानून, पृ.६९

४९. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.२०३

५०. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१४०

५१. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.४४

५२. गुप्ता रजनी–वर्तमान साहित्य, जून, २००९, पृ.२७

५३. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.९

५४. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१२३

५५. विवेक ज्ञानप्रकाश–अमर उजाला, ९अगस्त, १९९८, पृ.१८

५६. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.१५५

५७. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.३५

५८. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.६५

५९. डॉ. शर्मा ज्योत्स्ना–शिवानी का हिन्दी साहित्य : सामाजिक परिप्रेक्ष्य में, पृ.१०७

६०. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.२५१

६१. शर्मा क्षमा–लड़की जो देखती पलटकर, पृ.३९

६२. शर्मा क्षमा–लड़की जो देखती पलटकर, पृ.३०

६३. शर्मा क्षमा–घर–घर तथा अन्य कहानियाँ, पृ.४१

६४. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.२०५

६५. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.८३

६६. शर्मा क्षमा–नेमप्लेट, पृ.१२

६७. दर्पण महेश–कथादेश, मई,२००७, पृ.९०

६८. शर्मा क्षमा–कस्बे की लड़की, पृ.९३

६९. शर्मा क्षमा–नेमप्लेट, पृ.१४८

७०. शर्मा क्षमा–लड़की जो देखती पलटकर, पृ.१२

७१. शर्मा क्षमा–कस्बे की लड़की, पृ.९३

७२. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.१७८

७३. शर्मा क्षितिज–इंडिया टुडे, २५ जून, २००९, पृ.१०२

७४. राधारमण–अक्षर भारत, २७ दिसंबर, १९९९, पृ.२४

७५. डॉ. टंडन प्रतापनारायण–हिंदी कहानी कला, पृ.४४२

७६. विवेक ज्ञानप्रकाश –अमर उजाला, ४ जुलाई, १९९९, पृ.२१

७७. शर्मा क्षितिज–इंडिया टुडे, २४ जून, २००९, पृ.१०२

अध्याय पंचम

क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य में नारी-चेतना

५.० प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में आलोचना के क्षेत्र में कुछ समीक्षक अधिकांश लेखिकाओं को स्त्रीवादी घोषित करते हैं तथा उसी रूप में उनके साहित्य की समीक्षा करते हैं। इसके पूर्व अध्यायों में यह देखा गया है कि क्षमा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री-जीवन से संबंधित समस्याओं तथा त्रासदियों का चित्रण विशेष रूप से मिलता है। क्षमा शर्मा के साहित्य में नारी-चेतना के इस पहलू को देखकर हिंदी के कुछ समीक्षकउन्हें स्त्रीवादी महिला लेखिका के रूप में विवेचित करते हैं। परंतु सूक्ष्मता से देखा जाए तो क्षमा जी प्रचलित अर्थ में स्त्रीवादी लेखिका नहीं हैं। ऐसा नहीं है कि उनका स्त्रीवाद से कोई संबंध ही नहीं है। है, लेकिन प्रचलित अर्थ वाले स्त्रीवाद से अलग-भारतीय परिवेश के अनुकूल नारी-चेतना से उनका गहरा संबंध है।

५.१ चेतना : अवधारणा :

भारतीय नारी का समीकरण ही परिवार से बनता है और खत्म होता है। नारी के अनेक रूप हैं-पत्नी, प्रेमिका, बहन, माँ, गृहिणी, मित्र, सहेली, कामकाजी आदि। कामकाजी महिला के अलावा सारे ही रूप परिवार से जुडे हैं। स्त्री आर्थिक रूप से भले ही स्वावलंबी हो पायी हो, पारिवारिक रुढ़ियों, प्रथाओं, मान्यताओं, मर्यादाओं से वह मुक्त नहीं हो पायी। वैयक्तिक, वैचारिक चेतना के बावजूद इन सबसे जुडे अनेक प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उसमें तनाव और द्वंद्व की स्थिती कायम है। लेकिन कुछ कारणों से उसमें नारी चेतना जागृत होकर परिवर्तन संभव हो पाया है।

इस बारे में डॉ. गणेशदास ने नारी चेतना विषयक कथन में कहा है कि, ‘‘राजनीति के साथ-साथ अतिरिक्त अधिकार तथा संगठन, सुविधाएँ भी स्त्रियों को मिली है। उदा. ‘अखिल भारतीय महिला सम्मेलन’, ‘राष्ट्रीय महिला परिषद’, ‘भारतीय ग्रामीण महिला संघ, ‘भारतीय राष्ट्रीय

महिला संघ' आदि। भारतीय नारी पर सन १९७५ में विश्वस्तर पर मनाए गए 'आंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष' का प्रभाव भी महत्त्वपूर्ण रहा है।''[१]

५.१.१ चेतना : अर्थ एवं स्वरूप

➢ चेतना : अर्थ

नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार 'चेतना' का अर्थ है- ''बुद्धि, मनोवृत्ति, ज्ञान, स्मृति, सुधि, संज्ञा, होश, सावधान होना और समझना आदि।''[२] ''अंग्रेजी में 'चेतना' शब्द का समानार्थी शब्द 'कांशसनेस' है, जो मस्तिष्क की जाग्रतावस्था, किसी वस्तु के विषय में ज्ञान, जानकारी अथवा विचारों को घोषित करता है।''[३] मनुष्य चेतनायुक्त प्राणी है, अतः कोई भी क्रिया करने से पूर्व उसके परिणामों के बारे में भली प्रकार सोच लेता है।

➢ चेतना : व्युत्पत्तिपरक अर्थ

''चेतना = सं. चेतति। प्रा.- चित्तई = चेत्तई = है, ४/२३०, १/८४, ८५ > चेतई।''[४]

➢ चेतना : पर्यायवाची शब्द

''संवेदना, ज्ञान, प्रतिबोध, सजीवता, सप्रमाणता, बुद्धिमत्ता, तर्क, शक्ति, चेतस, आदि।''[५]

➢ चेतना : परिभाषाएँ

भारतीय दार्शनिकों के अनुसार ''चेतना वह तत्त्व है, जिसमें ज्ञान की, भाव की और व्यक्ति अर्थात क्रियाशीलता की अनुभूति है जब हम किसी पदार्थ को जानते हैं, तो उसके स्वरूप का ज्ञान हमें होता है।''[६]

''चेतना जीवधारियों में रहने वाला वह तत्त्व है जो उन्हें निर्जीव पदार्थों से भिन्न बनाता है। दूसरे शब्दों में हम उसे मनुष्य की जीवन क्रियाओं को चलाने वाला तत्त्व कह सकते हैं।''[७] अर्थात चेतना स्वयं को अपने आस-पास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है।

उपर्युक्त परिभाषाओं को देखते हुए चेतना का अर्थ हम मानव मन की समझने-बूझने की शक्ति से, बौद्धिक प्रवणता, प्रविणता, प्रेरणा अथवा भावना के रूप में प्रयुक्त करते हैं। चेतना का सीधा संबंध मानव की बुद्धि से होता है और यह मानव प्राणी में ही संभव है।

➢ **चेतना : स्वरूप**

'चेतना' शब्द की उत्पत्ति ''चित् युच-अन्-टाप के सहयोग से हुई है।''[८] जिसका अर्थ ज्ञानात्मक मनोवृत्ति से समझा जाता है।

चेतना को समझने के लिए हमें चेतना के क्रिया-व्यापारों को समझना आवश्यक प्रतीत होता है। हम दैनिक जीवन में जो प्रवृत्तियाँ करते हैं, उसके मूल में हमारी चेतना रहती है। 'चेतना' मानव में एक ऐसी क्रिया शक्ति है, जिसके बिना मनुष्य कोई काम नहीं कर सकता। चेतना का अर्थ सजगता और चैतन्यता से है, परंतु इसका आशय एक ही रहता है कि किसी भी विषय में सावधानी, होशियारी और सजगतापूर्वक कार्य करना आवश्यक है।

चेतना मानव प्राणी में ही संभव है। सुप्रसिद्ध रचनाकार डॉ. रामदरश मिश्र जी के अनुसार चेतना का तात्पर्य है, संसार में 'स्व' से 'पर' और 'अहं' से 'इदम्' और निरंतर बढते रहने की जागरूकता। ''मानवेतर जो चेतना के वरदान से वंचित हैं 'स्व' की निर्मिति में इतने व्यस्त रहते हैं, कि बाधक होने पर 'पर' का संहार करते हैं, किंतु मानव चेतनाशील प्राणी है और उसी चेतना के वरदान के कारण वह अपने 'अहम्' के कंचुल से निकल कर 'इदम्' की ओर निरंतर अग्रसर होता है।''[९] इससे स्पष्ट होता है कि चेतना का सीधा संबंध मानव की बुद्धि से है।

चेतना एक प्रक्रिया एवं जीवन दृष्टि है। जिसका संबंध मनोविज्ञान से है। चेतना की प्रमुख विशेषताएँ हैं- ''निरंतर परिवर्तनशीलता अथवा प्रवाह, इस के साथ-साथ विभिन्न अवस्थाओं में एक अविच्छिन्न एकता और साहचर्य। चेतना का प्रभाव हमारे अनुभव वैचित्र्य से प्रभावित होता है और चेतना की अविच्छन्न एकता हमारे व्यक्तिगत तादात्म्य के अनुभव से।''[१०]

५.२ हिंदी साहित्य में नारी चेतना :

हर युग में नारी की स्थिति परिवर्तित हुई है। कभी तो समाज ने उसकी प्रशंसा की है तो कभी उसे दासी समझकर उसकी अवहेलना की है। मनुस्मृति में लिखा है, ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवतः।''[११] अर्थात् जहाँ स्त्री की पूजा की जाती है, वहाँ देवता वास करते हैं। प्रभुत्वशाली पुरूषवादी समूह ने नारी को अबतक समाज एवं साहित्य से बहिष्कृत रखा था। उनके द्वारा निर्मित साहित्य में भी नारी का जो रूप उभरा वह परंपरागत था। पुरूष लेखकों ने अपने साहित्य में नारी चरित्रों में जिन मूल्यों एवं तत्त्वों के दर्शन कराए हैं, वहाँ समानता के लिए नारी का संघर्ष भूल-सा प्रतीत होता है। इन स्थितियों को देखते हुए ही महिला रचनाकारों ने हिंदी साहित्य में अपने अनुभवों को व्यक्त किया। नारी साहित्य स्त्री की अस्मिता एवं अनुभवों को सर्वाधिक महत्त्व देता है। आज महिला रचनाकार भी साहित्यिक तेजस्विता की भागीदार तेजी से और बहुत तादाद में बन रही है।

अन्य साहित्य की भाँति स्त्री साहित्य का आरंभ कविता से हुआ। किंतु आधुनिक काल में गद्य का अविर्भाव और अभिव्यक्ति के लिए एक और माध्यम उपलब्ध हुआ। कविता की धारा अपनी दिशा में बहती रही किंतु गद्य के माध्यम से स्त्रियों ने अपना संघर्ष जारी रखा। हिंदी उपन्यास और कहानी दोनों ही विधाओं में लेखिकाओं की बराबर की साझेदारी है। इन लेखिकाओं ने प्राचीन मर्यादाओं और रिवाजों को बरकरार रखकर स्त्री की अस्मिता को उभारने का प्रयास किया है।

भारतीय समाज में स्वतंत्रता के बाद महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए प्रयास होने लगे। स्त्री के पाँव हर क्षेत्र में पडे और इससे यह भ्रम टूटने लगा कि नारी होने मात्र से उसे किसी कार्य विशेष को करने से रोका जा सकता है। स्वयं महिलाओं में यह चेतना जागी है कि उनका उद्धार उनके अपने ही प्रयासों से संभव है। उन्होंने आत्मसजग होकर व्यक्तित्त्व को विकसित करने का ध्येय रखा है। इसी आत्मसजगता और व्यक्तित्त्व की खोज में बड़ी संख्या में महिला रचनाकार सामने आई। इन महिला रचनाकारों के संबंध में ममता कालिया जी का कथन है, ''जाहिर है, महिला-लेखन में विलक्षण पठनीयता, विश्वसनीयता, जिजीविषा और मार्मिकता के कारण ही इसे विशाल पाठकवर्ग मिला है। आत्माभिव्यक्ति की आकांक्षा के साथ-साथ आत्मसजगता और परिवेश चेतना महिला कहानीकार के रचनात्मक सरोवर का केंद्रिय बिंदु रहा है।''[१२]

➢ **स्वातंत्र्योत्तर काल में नारी चेतना :**

स्वातंत्र्योत्तर काल में स्त्री साहित्य ने जीवन के गंभीर से गंभीर विषयों को भी बड़ी सहजता और सामान्य रूप से उठाया है। इस युग की सशक्त लेखिकाओं में शिवानी, उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, नमिता सिंह, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, मंजुल भगत, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, सुधा अरोड़ा, शशिप्रभा शास्त्री, कुसुम बंसल, सूर्यबाला आदि अनेक लेखिकाओं ने अपने अनुभवों के आधार पर आज की नारी की सामाजिक नियती और मानसिकता को बड़ी गहराई से व्यक्त किया है। नारी ने नारी की मनःस्थिति को जिस विशिष्टता से पहचाना है और जिस निपुणता से वह साहित्य में अभिव्यक्ति दे रही है, वह सचमुच ही प्रशंसनीय है। आज नारी अपने अस्तित्त्व की सुरक्षा के लिए परंपरागत मूल्यों से लड रही है। इन लेखिकाओं की नारियाँ 'आँचल में है दूध और आँखों में है पानी' लेकर नहीं बढ़ती, बल्कि अधिकांश रचनाओं की नारी अपने अधिकारों के लिए भी विद्रोह करती है।

उषा प्रियवंदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, शिवानी आदि ने नारी मुक्ति की छटपटाहट को अपने साहित्य में व्यक्त किया है। चित्रा मुद्गल, राजी सेठ और मालती जोशी ने कामकाजी नारी की विभिन्न स्थितियों से साक्षात्कार कराया है। मृदला गर्ग की रचनाओं में यौन-प्रश्नों, कुंठाओं के संदर्भ में नारी की मानसिकता को वास्तविकता के धरातल पर उतारने का प्रयास किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन लेखिकाओं ने विविध विषयों को समेटा हुआ है।

इसी संदर्भ में चित्रा जी के अनुसार ''दरअसल मैं 'सोने की चिडिया' कहलाने वाली सभ्यता कला, संस्कृति के सर्वोच्च शिखर पर आरूढ़ आर्यावर्त में 'शक्ती', 'सती', 'देवी' के रूप में महितामंडित भोग्या नारी की गौरवगाथा गाने की उत्कंठा से सर्वथा विरक्त चमत्कृत हूँ कि उत्पीड़न के घोर नरक को भोगने के बावजूद किसी भारतीय नारी ने अपने वर्तमान में विद्रोह के स्वर बुलंद क्यों नहीं किए? माधवी, द्रौपदी, मीरा जैसी स्वतंत्रचेता नारियों के उल्लेख पुराणों, इतिहासों में अधिकाधिक क्यों नहीं मिलते? इन स्वाभिमानी नारियों ने उत्पीड़क समाज में नारी शोषण के विरूद्ध किसी संगठित आंदोलन का बीजारोपण क्यों नहीं किया? ये विद्रोहनियाँ आम भारतीय नारी के लिए सीता-सावित्री जैसी अनुकरणीय प्रतिमान क्यों नहीं बन पाई?''[१३]

➢ **आधुनिक काल में नारी चेतना :**

इसमें बिलकुल भी संदेह नहीं है कि प्रारंभ में नारी केवल काव्य-सृजन में ही कार्य करती रही है, किंतु कालांतर में साहित्य की अन्य विधाओं में भी उसके विभिन्न रूपों का चित्रण होने लगा है। इन सभी विधाओं में महिला रचनाकारों का विशेष योगदान होते हुए भी नारी साहित्य को पहले से ही दुय्यम दर्जा दिया जाता रहा है। लेकिन गहराई से विचार करने पर साफ समझ में आता है कि शुरू से ही अलोचकों का स्त्री साहित्य के प्रति देखनेका नजरिया शंकित हो तो उनसे निष्पक्ष आलोचना की उम्मीद कैसे की जा सकती है? वस्तुतः इस विषय वर विचार मंथन करना चाहिए कि महिला लेखन के सरोकार किस रूप में अलग हैं? इन परंपरागत मानदंडों की विषमता को समाप्त करने पर ही नारी साहित्य को इंसाफ मिल सकता है। इस प्रकार हम कह सकतें हैं कि साहित्य की मुख्य धारा ने स्त्री की अस्मिता, आकांक्षाओं, इच्छाओं, जरूरतों, अनुभवों एवं मनःस्थिति की कुल मिलाकर उपेक्षा ही की है। कितनी ही लेखिकाओं ने उच्च कोटी का साहित्य रचा है और अपना एक वजूद बनाया है। लेकिन पुरूष रचनाकारों ने उनके साहित्य की आलोचना कर, उनकी गरिमा और अस्मिता को कुचला है। ऐसी स्थिति में इन परंपरागत मापदंडों को छोड़कर साहित्य की समीक्षा के लिए नए मानदंड की खोज आवश्यक हो जाती है।

५.३ क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य में नारी चेतना :

क्षमा जी की रचना-दृष्टि पूर्णतः नवीन है। क्षमा जी ने अपने उपन्यास और कहानी साहित्य में परिवारगत संदर्भों में स्त्री-पुरूष के बदलते संबंधों को चित्रित एवं विश्लेषित किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में दुर्बल नारी के अतिरिक्त आर्थिक एवं मानसिक गुलामी से मुक्ति पाने की छटपटाहट को महसूस करती हुई, अपने स्वावलंबन का परिचय देने वाली नारी का चित्रण भी किया है। उनकी कुछ रचनाओं में नारी इतनी स्वतंत्र है कि विवाहित होते हुए भी पर-पुरूष के साथ संबंध प्रस्थापित करने में कोई हिचक नहीं दिखाती। जबकि अधिकांश रचनाओं में उसे अपनी भावनाओं और इच्छाओं को प्रकट करने की भी स्वतंत्रता नहीं है। नारी स्वतंत्रता के विषय में क्षमा जी का कहना है, ‘‘नवीन उपलब्ध स्वातंत्र्य भावना ने नारी को भी अपनी अस्मिता को पहचानने की शक्ति

दी है। फलस्वरूप नारियों में अपने 'स्व' के प्रति गहरी आस्था जन्म लेने लगी है।''[१४] इसी आशय में कमलेश्वर की निम्नलिखित पंक्तियाँ विचारणीय हैं, ''आधुनिक नारी अब अपनी पूरी गरिमा, देह सम्पदा और वास्तविक सम्मान के साथ आयी है।''[१५]

भारत में नारी जागरण या नारी स्वतंत्रता संबंधी जैसे-जैसे प्रयास शुरू हुए, वैसे-वैसे नारी में 'स्व' की भावना जागृत होने लगी है। अब वह अपनी अस्मिता को पहचानने लगी है। क्षमा जी विवाह संस्था के वृत्त में फँसी नारी को उस शोषण से मुक्त कराने और उसकी स्वतंत्र अस्मिता को स्थापित करने का प्रयास करती हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में ऐसी स्त्री की छवि अंकित की है जो स्वयं के बारे में जानती है, जो आत्मसजग है और स्वाधीनता की बात करती है, जो दर्द से उपजे संघर्ष और आत्मचैतन्य को महसूस करती है और अपनी लडाई स्वयं लड़ती है। क्षमा जी के साहित्य में यह प्रश्न उठता है कि, ''लोकलाज का बंधन सिर्फ महिलाओं के लिए ही क्यों? क्या पुरूषों का दायित्व नहीं बनता कि वे महिलाओं को मर्यादित और उनके मन की जिंदगी जीने दें। क्षमा जी पूछती है कि 'जब इक्कीसवीं सदी का लड़का ' अपने मनमाफिक स्वच्छंद जीवन जी सकता है तो 'इक्कीसवीं सदी की लड़की' क्यों नहीं ?''[१६] क्षमा जी के कथा-साहित्य में स्त्री-चेतना, स्त्री जीवन की व्यथा के रूप में चित्रित हुआ है। इस चित्रण में स्त्री जीवन से जुड़ी समस्याएँ, संघर्ष, स्वतंत्रता, अधिकार, चेतना, स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता, अस्मिता आदि स्त्री चेतना के कई तथ्य सामने आते हैं। लेखिका का कथा-साहित्य यह प्रमाणित करता है कि भारतीय स्त्री-पुरूष के लगभग सभी संभावित पहलुओं को उन्होंने बड़ी बेबाकी के साथ व्यक्त किया है। उन्होंने अपने साहसपूर्ण मौलिक दृष्टि के साथ जीवन की विषमताओं को अपनी कृतियों में विश्लेषित किया है।

५.३.१ शोषित-पीड़ित नारी और मुक्ति की चाह :

सृष्टी के मूल में स्त्री और पुरूष दो ऐसे तत्त्व हैं जिनके आपसी सहयोग से ही सृष्टी विकास होता है। नारी और पुरूष जीवन की ऐसी दो रेखाएँ हैं जो यदि मिल जाती हैं तो कोण, त्रिकोण या चतुर्भज, बहुभुज बना देती है और यदि न मिल सकी तो समानान्तर रेखाएँ बनकर अनंत काल तक विलगाव की स्थिती पैदा कर सकती है।''[१७] सृष्टि के प्रारम्भ में नर और नारी समानाधिकारी थे।

सामाजिक उत्थान के साथ पुरूष की स्वार्थपरता की भावना बढ़ती गयी और स्त्री की स्वतंत्रता क्षीण होती गयी। अपने आप को सबल बता कर पुरूषों ने नारियों को सामाजिक बन्धनों में जकड़ दिया और उन्हें पुरूषों की बनाई संकीर्ण लीक पर चलने को मजबूर किया। परिणाम यह हुआ कि स्त्री की सामाजिक स्थिति पुरूष की तुलना में निम्न स्तर की हो गयी है। महाभारत की सूक्ति- 'अर्ध्द भार्या मनुष्यस्य, भार्या श्रेष्ठतम सखा' शनैः शनैः धूमिल होती गयी और नारी पुरूषों की निर्मम चक्की में पिसती रही, शोषित और प्रताड़ित होती रही, अपमान के घूँट पीती रही है।

नारी और पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं परंतु इस पुरूष प्रधान संस्कृति में पुरूष ने हमेशा ही स्त्री को दासी समझा है। सीमोन द बोउवार लिखती हैं ''पुरूष जान-बूझकर स्त्री को बौना रखता है। स्त्री न देवी है, न राक्षसी, वह मानवी है जिसे समाज की फूहड़ प्रथाओं ने दासता में जकड़कर रख दिया है।''[१८] पुरूष ने जब नारी पर शोषण और अत्याचार करना प्रारंभ किया, उसे व्यक्ति से वस्तु समझा तभी नारी ने उसके अत्याचारों और शोषण का सक्रिय विरोध करने के लिए आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का प्रयत्न किया। इसी स्वावलंबन ने उसका सर्वांगीण विकास कर, उसे पराधिनता तथा अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाने की ताकद दी। लेखिका की बहुतसी रचनाओं की नारी परिवार द्वारा शोषित और पीड़ित है। उसके सहनशक्ति की सीमा जब समाप्त हो जाती है, तब वह कभी-कभी परिवार से पलायन या मृत्यु की चाह भी रखती है।

क्षमा जी की रचनाओं में घरेलू नारी के अतिरिक्त कामकाजी नारी भी बंधनों से मुक्त नहीं है। आत्मनिर्भर और पराधीन नारी निराश व चिंतीत होकर जिंदगी से मुक्ति की कामना करती है।

'मोबाइल' उपन्यास में नायिका मधु ने अपने माँ की विवंचना स्पष्ट की है। ''पापा ने ताईजी को कभी जवाब नहीं दिया था। उन्होंने माँ से भी यही चाहा था कि वह उन्हें जवाब न दें।''[१९] ताईजी कितनी भी गलत बात करे, कितना ही दुर्व्यवहार करे, पिताजी उलटकर कुछ नहीं कहते और यह सब माँ को सहना पड़ता है। यहाँ पर नारी की कुंठा को व्यक्त किया है। वह पति पर पूर्णरूप से आश्रित पत्नी है, जो निरंतर पति के सामने दबी हुई दिखाई देती है। पति द्वारा उपेक्षित होकर भी उसकी हर आज्ञा का पालन करती है। अपनी नापसंद बातों का विरोध करना तो चाहती है, लेकिन डर और आशंका से कर नहीं पाती। पति के एकाधिकार की भावना से आहत तथा रोजमर्रा के जीवन

से त्रस्त पत्नी की चिंताएँ निरंतर बढती ही रहती है। चिंतित पत्नी इस दुनिया से पलायन तो करना चाहती है लेकिन गृहस्थी की बेडियाँ उसके पैरों से छूट नहीं पाती।

'चार अक्षर' कहानी में सरोज को विवाह के ठीक पंद्रह दिन बाद डिप्रेशन का गहरा झटका लगा था। वह पागल हो गई थी। ''कम बोलनेवाली सरोज जीजी डिप्रेशन के कारण इतना अधिक बोलने लगी थी कि सचमुच सुनते-सुनते सिर दर्द होने लगता था। मानस की चौपाईयाँ, उर्दू की शेरो-शायरी, गझल और दूसरी ओर भूत-चुड़ैल उतारनेवाला ओझा ज्योतिषि पंडित, पीर-फकीर और कौन-कौन नहीं।''[२०] और कुछ सालों बाद उसकी मौत हो गई। आखिर तक पता नहीं चला कि क्या बात थी? इतनी खुशहाल लड़की की जिंदगी इतनी घुटन भरी क्यों हो गयी? काश उसे अपने पति से आत्मीयता प्राप्त होती तो वह सदा निराश और चिंतित ना रहती और असामंजस्य के कारण एक जिंदगी यू बर्बाद न होती। एक उर्दू शायर ने लिखा है- 'दर्द का हद से गुजर जाना ही दवा हो जाना है।' अमित कुमार जी के अनुसार, ''हम क्षमा जी की आँखों से स्त्री जीवन के ऐसे ही वैविध्यपूर्ण संसार से परिचित होते हैं। यह परिचय न सिर्फ स्त्री जीवन को देखने के पुरूषवादी मानसिकता वाले रूझानों को तोड़ती है, बल्कि पारंपारिक स्त्रियों से परे बूढ़ी, जवान और बच्ची सभी समूहों की गाथा को अपने में समेटती हैं।''[२१]

'इसके बाद' कहानी में नायिका अपने पति के एकाधिकार से त्रस्त है। उसकी स्थिति परिवार में एक नौकरानी की तरह है, जिसे मानो दो समय के खाने-कपड़े की शर्त पर अपने कर्तव्य को निभाना है। नायक अपनी शान बघारते हुए पत्नी को हमेशा छोटा सिद्ध करता रहता है। अजीब विरोधों से भरा था उनका व्यक्तित्त्व। ''एक तरफ कम पढ़ी-लिखी, साधारण शक्ल-सूरत वाली पत्नी उन्हें बोझ लगती है तो दूसरी तरफ आधुनिक औरतें जैसे उन्हें सारे जहान के लिए खतरा दिखाई देती।''[२२] नायिका जैसी अनेक स्त्रियों की व्यथा-कथा हमें हमारे आस-पास दिखाई देती है जो पहले अबला थी, अब वह अकेली होने के साथ असहाय भी है, जो हमें मैथिलीयरण गुप्त की इन दो पंक्तियों की याद दिलाती है-

'अबला जीवन! हाय तुम्हारी यहीं कहानी
आंचल में है दूध और आँख में पानी।'

'रसोईघर' कहानी में नायिका सूबे की पहली कलेक्टर बनी है। साथ ही उसने वहाँ की लडकियों को पढाने में मदद की है। लेकिन अब यह पढ़ी-लिखी लडकियाँ अनपढ़ लडकियों को अपने से कम मानने लगी है। ''कल तक वैसी वे खुद थीं आज वैसी लडकीयों से बात तक नहीं करती थीं। उनके सामने अपने हुनर और पढाई-लिखाई को बढ़-चढ़कर बताती थी। लड़ाई के वक्त अपने को श्रेष्ठ साबित करने के लिए गाली-गलौज तक की भाषा पर उतर आती थी।''[२३] और यहीं स्थिति नायिका के घर में भी नजर आती है। उसकी चचेरी-ममेरी बहने उससे ईर्ष्या करती हैं, तुलना करती हैं और नफरत प्रतिहिंसा भी करती हैं। सच है, नारी स्वतंत्रता की ललक को उच्छृंखलता का आग्रह मानकर सदियों से दबाया जाता रहा है।

'बया' इस कहानी में सुशिक्षित रिपु शहर में अपनी घर-गृहस्थी सँभाले हुए है। लेकिन गाँव के जमीन-जायदाद पर भाभी उसका हक गवारा नहीं समझती। मीठे-मीठे शब्दों से उसे घायल कर देती है। जैसे कि ''तुम्हारे भैय्या ने शायद कागज़ तैयार कराए हैं। मकान बेचने के लिए तुम्हारे दस्तखत चाहिए। मैंने तो कह दिया हमारी रिपु भाई-भाभी के लिए जान दे देगी, मकान में हिस्सा माँगने की बात तो वह सोच भी नहीं सकती।''[२४] अपने उलाहना भरे व्यवहार से बद्ध करके रिपु को आतंकित करती है। नायिका अपना हिस्सा माँगना चाहती है, लेकिन हताश होकर भविष्य का विचार कर भाभी द्वारा प्रस्तावित विकल्प स्वीकार कर लेती है। लेकिन वास्तव में क्या रिपु अपने दिल से इस कसक को भूल पाएगी? उसके जख्म नासूर बनकर तिल-तिल याद दिलाते रहेंगे।

इसी तरह 'इंडिया विल विन', 'डर', 'वह पीछा करती है', 'छिनाल', 'वह जो एक भाई था', और 'बुढ़िया कहीं की' आदि कहानियाँ महिलाओं की व्यथा-कथा कहती प्रतीत होती हैं। क्षमा जी की रचनाओं में शोषित, पीड़ित नारी घर और परिवार से पलायन की कल्पना अवश्य करती है परंतु वास्तविक रूप में उसे क्रिया में नहीं उतार पाती। उनकी नारियाँ जिम्मेदारीयों के प्रति सजग दिखाई देती हैं। जीवन से निराश और हताश होकर भी परिस्थितीयों से समझौता कर लेती हैं।

५.३.२ विवाह पद्धति एवं परिवार संस्था का समर्थन :

क्षमा जी विवाह पद्धति एवं परिवार संस्था का समर्थन करती हैं। उनकी दृष्टि में स्त्री और पुरूष मिलकर ही परिवार बनता है। प्राचीन काल से विवाह प्रथा को हिंदू-संस्कारों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। परिवार की नींव 'विवाह' पर स्थित है। ''वास्तव में नारी परिवार का प्राण होती है।''[२५] विवाह अपने सहयोगी, परिवार, समाज तथा संसार के कल्याण के लिए स्वेच्छापूर्वक त्याग है, आत्मसमर्पण है। पति और पत्नी दांपत्य के अविभाज्य अंग हैं। पति के बिना पत्नी निराश्रित एवं अपूर्ण है और पत्नी के बिना पति एकाकी। इसीलिए भारतीय जीवन पद्धति में विवाह-बंधन को अनिवार्य माना गया है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक 'विवाह-संस्था' को अनन्यसाधारण महत्त्व एवं स्थान प्राप्त हुआ है। विवाह संस्था के कारण ही पति-पत्नी में उत्तरदायित्व बढ़ता है। विवाह व्यक्तिगत और सामाजिक विकास की दृष्टि से महत्त्व रखता है। लेखिका ने अपनी कुछ कहानियों में विवाह संस्था का समर्थन किया है। उन्होंने अपने इन विचारों की प्रस्तुति पात्रों के माध्यम से की है।

मानव अपना धर्म त्याग सकता है किन्तु स्त्री अपना धर्म नहीं छोड़ सकती। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

'धीरज, धर्म, मित्र अरू नारी
आपद काल परखहिं चारी।'

जिस धर्म को नारी ने प्रेमवश अपने ऊपर धारण किया था, वह पुरूषों की स्वार्थ परायणता के कारण उनके ऊपर लादा जाने लगा। जैसे कि क्षमा जी 'समाप्त पीढ़ी' कहानी में लिखती हैं- ''माँ पिता को कुछ ऐसे उद्धृत कर देती है कि जिस दिन उनकी मृत्यु हो गई उसका जीवन तो उसी दिन अधुरा रह गया, एकदम श्रीहीन। बस अब तो वह अपने कर्मों का फल भोग रही है ..... जब तक भोगना लिखा है।''[२६] पिछले पाँच वर्षों ने न उसने ढंग से खाया है न पहना है। मोतियाबिंद के साथ-साथ जोड़ों के दर्द की तकलीफ है उसे। डॉक्टर ने कहा है कि नियमित रूप से दवा के साथ-साथ उसे अच्छी खुराक भी खानी चाहिए, पर भाई के तमाम प्रयत्नों के बावजूद वह न दवा खाती है, न खुराक। माँ शास्त्रोंद्वारा बनाए गए नियमों को तोड़ नहीं सकती।

जीवन विषमतामय है इस तथ्य को झेलते हुए आज के पति–पत्नी जहाँ फूलभरी राह में चलते हैं वहीं काँटों की चुभन भी महसूस करते हैं। 'पापा के एपिसोड में बेटा' कहानी में शुभा की जिंदगी का हाल भी कुछ ऐसा ही है। ''जब बाबू के पिता ने यह जानकर कि वह गर्भवती है, एक रात हौले से फुसफुसाकर उसने कहा था कि वह उनकी दूसरी पत्नी है, एक पत्नी गाँव में है, दो बच्चों समेत।''[२७] तब वह इतने बड़े धोखे को भी धोखा नहीं कह सकी। आखिर जीवन ने मजाक के लिए उसे ही क्यों चुना? वह सबकुछ छोड़कर जा नहीं सकी। क्योंकि वह विवाह को बंधन न मानकर एक संस्कार मानती है और अपने पति की आँखों में अपनापन तलाशती है।

नारी का सम्मान और अधिकार उसकी विवाहिता पत्नी बनने पर ही है। यदि बिना शादी किए वह पुरूष के साथ रहती है, उसकी खूब सेवा भी करती है लेकिन तब भी उसे वह सम्मान नहीं मिलता जो उसकी पत्नी को मिलता है इसी तथ्य को 'काला कानून' कहानीद्वारा प्रस्तुत किया गया है। ''मेरी महेश से शादी नहीं हुई थी। इसलिए ही उनकी पत्नी आ गई है। तलाकशुदा ही सही, लेकिन है तो उनकी पत्नी। कानूनन में तो कुछ भी नहीं। कानून की निगाह में तो चुन्नू मेरी अवैध संतान है। उनकी विवाहिता पत्नी की लडकी का अधिकार पहले बनेगा, चुन्नू का नहीं।''[२८]

सुख के इन्द्रधनुष जहाँ एक ओर दम्पति का स्वागत करते हैं वहीं दु:ख की बौछारें भी उन्हें झेलनी पड़ती हैं। 'उत्तरार्ध' कहानी में नायिका भी इसी बात से गुजरती हुई दिखाई देती है। नायिका का पति जब लिखने बैठता है तो घोंघे की तरह हो जाता है, अपने शैल में बंद। जहाँ उसे कोई भी पसंद नहीं है, न बच्चे, न पत्नी। उसकी आँखों में पागलपन समा जाता है। ऐसा लगता है कि यदि उस वक्त उसे न लिखने दिया तो वह किसी और का तो क्या अपना ही गला रेत देगा। ऐसी स्थिति में भी वह नायिका दाम्पत्य जीवन में तनाव ना लाते हुए हास्य के सुमधुर ठहाकों से जीवन सुख की ओर उन्मुख होती है।

क्षमा जी विवाह–पद्धति तथा परिवार संस्था की कट्टर समर्थक है। उनके विचारनुसार सारे विश्व का ढाँचा विवाह–संस्था के कारण ही टिका हुआ है। विवाह संस्था न होती तो सभ्यता, संस्कृति का कोई अर्थ नहीं होता। विवाह–संस्था के कारण मनुष्य विभिन्न भूमिकाओं में व्यस्त रहता

है। विभिन्न उत्तरदायित्त्वों को वहन करता है। विवाह-संस्था के कारण ही पीढियाँ विकसित होती रहती हैं, मानवता का विकास होता है। अतः विवाह का क्षमा जी जोरदार समर्थन करती है।

५.३.३ स्वतंत्र, स्वाभिमानी और मुक्तिकांक्षी स्त्री :

आजकल स्त्री-स्वतंत्रता को बहुत ही सिमित अर्थ में लिया जाता है। स्त्री स्वतंत्रता का अर्थ किसी स्त्री द्वारा किसी भी बंधन को न मानना, इस रूप में लगाया जाता है। इसमें स्त्री को आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त होते ही समाज के सभी नियमों को ठुकराकर स्वच्छंद आचरण करने का बल मिलता है। क्षमा जी अपने कथा-साहित्य के माध्यम से स्त्री स्वतंत्रता को वास्तविक तथा तर्कशुद्ध रूप में प्रस्तुत करती हैं।

शिक्षा के आधारपर प्राप्त नौकरियों ने आज की नारी को आत्मविश्वास, आर्थिक सुरक्षा तथा आत्मसजगता प्रदान की है। इस आत्मसजगता के कारण उसका संघर्षशील रूप आज प्रखर होता जा रहा है। किसी भी रूप में अपने आप को पुरूष से हीन मानने को वह तैयार नहीं है। यह नारी शिक्षित-दीक्षित होकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पुरूषों के समान अधिकारों और पदों को प्राप्त कर रही है। भले ही ऐसी नारीयों का प्रतिशत अत्यल्प क्यों न हो पर उच्चवर्गीय, मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय सभी नारियों में यह नारी-चेतना निर्माण हो चुकी है कि उनका भी अस्तित्त्व पुरूषों के समकक्ष है। आज की नारी के संदर्भ में स्वप्न तो यह देखा गया है-

> ''जगजीवन मानव के संग, हो मानवी प्रतिष्ठित
> प्रेम स्वर्ग हो धरा मधुर, नारी महिमा मंडित।
> नारी सुख की नवकिरणों से, युग प्रभात हो ज्योतित।।''[२९]

आज की नारी का पारिवारिक जीवन के प्रति दृष्टिकोण पारम्पारिक नहीं है। वह नये युग की नये मूल्यों की पक्षधर है यहीं हमें 'समाप्त पीढ़ी' कहानी द्वारा ज्ञात होता है। जब पिताजी माँ से बोले-क्या बनेगी वह पढ़-लिखकर। आगे जाकर घर गृहस्थी ही सँभालनी है। अपने साथ रखकर कुछ काम धंधा सिखाओ। पिताजी की बात खत्म नहीं हुई कि माँ बोली- ''मैं नहीं चाहती कि इसे भी आगे चलकर जिंदगी सिर्फ घर के अंदर बंद होकर गुजारनी पड़े। अपनी तो कट गई। आगे क्या

होगा कौन जाने? इसे मैं आगे जरूर पढाऊँगी।''[३०] कहानी की नायिका ने अपने स्वाभिमान को टिकाए रखा है और अपने कर्तव्यों के प्रति अधिक गंभीर हो गयी है।

'कमीज पहन रहा है जैक द रिपर' कहानी में लेखिका पुरूष वर्ग की मानसिकता को स्पष्ट करती है। पुरूष की नारी लोलुप प्रवृत्ति स्त्री को अपना कार्य ठीक तरह से नहीं करने देती। पुरूष वर्ग स्वतन्त्र एवम् अकेली, आत्मनिर्भर स्त्रियों के लिए विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न कर उन्हें शारीरिक एवं मानसिक विसंगतियों को स्वीकार करने के लिए विवश कर देता है, किन्तु ऐसे विषम वातावरण में भी स्त्री अपने बुद्धिबल और कुशल व्यावहारिकता से अपने को बचाकर स्वयं को स्थापित करने सक्षम हो जाती है। उसकी प्रतिभा ही उसे स्थापित करती है। जैसे कि,''ये इक्कीसवीं सदी के शुरू के वर्ष थे जो स्त्रियों के नाम थे। संयुक्त राष्ट्र ने अपने नए प्रस्ताव में कह दिया था कि यह सदी स्त्रियों की है। मर्दों की दुनिया में बौखलाहट थी। मर्दों की सदियों से बनी दुनिया उलट रही थी। वहाँ खलबली थी। औरतें नौकरी कर रही थी और काबू से बाहर थी। मर्दों के अब तक के बनाए सारे हथियार भोथरे हो गए थे। स्त्रियों ने उनसे डरना छोड दिया था। अब वे लज्जित होना भूल गई थी।''[३१]

'मोबाइल' उपन्यास की नायिका अविवाहित और आत्मनिर्भर है, जो बडी लगन, परिश्रम और ईनामदारी से एक कामयाब जिंदगी जिना चाहती है। किसी पुरूष के बंधन में सुरक्षित रहने से अधिक वह नौकरी के दायरे में सुरक्षित रहना ज्यादा बेहतर समझती है। जब वह नौकरी के लिए गाँव से शहर की ओर निकलती है, तब उसकी खूसट ताईजी कहती है, 'मधु तेरे लक्षण बता रहे हैं कि तेरी सास न चोटी खींचकर बाहर निकाले तो मेरा नाम बदल देना।' तब स्वाभिमानी नायिका की वाणी तीर की तरह चलती है, ''पहली बात तो ताईजी अपनी चोटी ही नहीं है। फिर हमारी दादी ने आपको नहीं निकाला तो मेरी सास मुझे कैसे निकाल देगी?''[३२]

'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास में विभा सामाजिक विषमताओं एवं विसंगतियों से ग्रस्त अत्यंत असंतुष्ट जीवन व्यतीत कर रही है। लेखिका द्वारा नायिका की अतृप्ति, व्याकुलता, कुंठा, अभाव, आक्रोश तथा सामाजिक, आर्थिक-राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह अंकन मार्मिक रूप से किया गया है।

'वेलेंटाइन डे' कहानी में लेखिका ने नये सामाजिक संदर्भों, संस्कारगत मान्यताओं और आज के शिक्षित एवं विशिष्ट संस्कारों में पले स्त्री-पुरूषों के संबंधों को गहराई के साथ परखा है। जहाँ नायिका अपने प्रियतम के बढ़ावे को नकारते हुए पति की उदारता का चित्रण करती है। ''कहना चाहते हो मुझे छुकर क्या करोगे! मुझ में अब बचा भी क्या है? तो तुम में भी क्या बचा है?''[३३] आदमी हमेशा जवान बना रहे, और औरतें बूढी हो जाए, इस मिथ को तो नई खोजों ने तोड़ ही दिया है और हाँ यह कोई ओ हेनरी की कहानी नहीं है, जिसका अन्त हमेशा चौंकानेवाला हो। लेकिन मुझे तुममें रत्ती भर भी दिलचस्पी नहीं है। तुम मेरी जिन्दगी के हिस्से भी थे कभी इसे मैं भूल चुकी हँ।

५.३.४ पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित नारी :

इस युग की नारियों के सम्बन्ध में यह कहना अति उत्तम होगा कि ''निषेध तत्त्व ही नारी है ..... जहाँ कहीं अपने आप को उत्सर्ग करने की, अपने आप को खपा देने की भावना प्रधान है वहीं नारी है। ..... जहाँ कहीं दुःख-सुख की लाख धाराओं में अपने को दलित द्रष्टा के समान निचोड कर दूसरे को तृप्त करने की भावना है, वह नारी तत्त्व है ..... नारी निषेध रूप है। वह आनंद भोग के लिए नहीं आती आनंद लुटाने के लिए आती है।''[३४] महात्मा गांधी ने भी नारी के आदर्श के विषय में कहा है कि नारी त्याग की मूर्ति है। जब वह कोई चीज शुद्ध और सही भावना से करती है, तब पहाडों को भी हिला देती है। वे स्त्री को सेवा और त्याग की भावना का अवतार मान कर उसकी पूजा करते हैं।

सभ्यता के विकास के साथ स्त्रियों के विचार एवं दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन लक्षित होने लगा। स्त्रियों को यह बोध हो गया कि त्याग, बलिदान, सहनशीलता आदि परम्परागत स्त्री सुलभ गुणों से नारी का उत्थान असंभव है। परिणाम स्वरूप भारतीय स्त्री भी एक दिन विद्रोह कर ही उठी। उसने भी पुरूष के प्रभुत्व का कारण अपनी कोमल भावनाओं को समझा और उन्हीं को परिवर्तित करने का प्रयत्न किया। अनेक सामाजिक रुढ़ियों और परंपरागत संस्कारों के कारण उसे पश्चिमी स्त्री के समान न सुविधाएँ मिलीं और न सुयोग, परन्तु उसने उन्हीं को अपना मार्ग-दर्शक बनाना निश्चित किया।[३५] इसके फलस्वरूप अधिक शिक्षित नारियाँ तेजी से भोगवाद की ओर अग्रसर हो रही हैं। वे

फैशन और आडम्बर को ही जीवन का सार समझकर सादगी से विमुख होती जा रही हैं। अधिक पैसा कमाने की होड में अनैतिकता की ओर उन्मुख हो रही हैं। इसी बात को लक्ष्य कर कवि 'पंत' नारी को चेतना देते हुए कहते हैं–

'तुम सब कुछ हो फूल लहर, विहगी, तितली, मार्जारी।
आधुनिके। कुछ नहीं अगर हो तो केवल तुम नारी।।'

नारी, नारी ही बनी रहकर सबकी श्रद्धा और सहयोग अर्जित कर सकती है। तितली बनकर वह स्वयं तो डूबेंगी ही, समाज को भी डूबोएगी। भारतीय नारी युरोपीय संस्कृति के व्यामोह में न फँसकर यदि अपने को भारतीय बनाये रखे तो इससे उसका तथा समाज का दोनों का हित साधन होगा और वह उत्तरोत्तर प्रगति करती जाएगी।

'न्यूड़ का बच्चा' कहानी में देहसाधना और देहभोग के अतिरेक से आयी सामाजिक विकृतियों को दर्शाया गया है। जहाँ नायिका अर्थार्जन के लिए न्यूड फोटोग्राफी का समर्थन करते हुए दिखाई देती है। उसके विचार कुछ ऐसे हैं कि,एक साथ तोलो और आजादी का सुख जब तक हो, तब तक पाओ। अभी तक तो गृहस्थी के झंझटों ने पीछा ही नहीं छोड़ा है। ''बच्चों को अपना गार्डियन क्यों मान ले? बड़े होकर ज्यादा चूं-चां करेगा तो अपने रास्ते जाएगा। आजकल के बच्चों से उम्मीद भी कैसी?''[३५] 'अर्थ' के पीछे नायिका की यह अनियन्त्रित आसक्ति ही उसे तबाही की ओर ले जा रही है।

'अगली सदी की लड़की' कहानीद्वारा ज्ञात होता है कि पाश्चात्य और भारतीय संस्कृतियों में जो दृष्टिगत अन्तर है उसी वजह से भारतीय नारी की अस्मिता पाश्चात्य नारी की अस्मिता से पूर्णतया भिन्न है। कहानी में होनेवाली बहू दहेज को 'प्रॉपर्टी राईटस्'मानती है और दहेज विरोधी सास का बहू से कहना है, ''आप जो भी कहें, मुझे विवाह में होने वाले इस दिखावे से घोर नफरत है। घोड़ी, बैंड, जेवर, शराब, अश्लीलता से भरे नाच ..... इसीलिए मैंने आपके माता-पिता से कोर्ट या मंदिर में विवाह करने को कहा था।''[३६] यह वाक्य ही अगली सदी की लड़की की पहचान दर्शाता है।

'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास में सामाजिक व्यवहारों और आदर्शों में होता परिवर्तन अंकित किया गया है। लेखिकाद्वारा नारी वर्तन में होता विराट परिवर्तन लक्षित होता है। विभा और विनिता एक-दूसरे से कहती है, 'और सुन तो बात-बात पर माँ-बहन की करते है वह जो है न हमारे यहाँ दुनिया का सबसे बड़ा गरीब कह रहा था, यहाँ की महिलाएँ तो ऐसी हैं कि हरामी और हरामज़ादे तक परहेज़ नहीं करती। और हमारे यहाँ वह जो है, उसने कहा कि जब उसने हरामजादे की गाली मेरी जुबा़न से सुनी तो हत्प्रभ रह गया।' 'हाँ, शालीनता का जनाजा निकल गया होगा'। विनिता बोली।

'जिंदा है प्रतिभा बर्मन' कहानी में भारतीय समाज की परम्परागत् मान्यताएँ एवं नैतिक भाव-बोध परिवर्तित होते नजर आते हैं। पाश्चात्य सभ्यता और दर्शन के प्रभाव के परिणामस्वरूप आज के युवा वर्ग एवं शिक्षित स्त्रियों में जीवनगत आस्था कुछ इस प्रकार दिखाई देती है, स्त्रियाँ भी स्त्रियों के बारे में ऐसा कहती हैं। ''अपने साथ जो लड़का बैठा है- वह है माई फर्स्ट कर्जन, माई फ्रेंड और जो अगर किसी दूसरी लड़की के साथ कोई लड़का बैठा हो तो जरूर वे किसी ऐसे कमरे के बारे में डिस्कस कर रहे होंगे, जहाँ जाकर 'एनजाय' कर सकें।''[३७] अपने सारे समझौते मजबूरियाँ हैं, और अपने साथ बैठनेवाला पडोसी कुछ ऐसा ही कर बैठे तो वह नम्बर वन का करप्ट है।

'बिंदास' कहानी की अनु आधुनिकता, नवीनता, विकास आदि को गले लगा कर नया जीवन जीना चाहती है। वह अतीत एवं वर्तमान के जीवन मूल्यों के जबरदस्त संघर्ष से गुजरती नजर आ रही है। महेश दर्पण के अनुसार,''अनु होना दरअसल, ऐसी लड़की होना है जो दूसरों के इशारों (विशेषकर पुरूष) पर न नाचे। जो यह सोचे कि नहीं बदली, तो दुनिया जाये भाड़ में। उपरी तौर पर बेहद बिंदास यह चरित्र जहाँ बेहद प्लेफुल और खुला नजर आता है, भीतर से उतना ही अकेला और अपने में छूट गया है। शायद इसीलिये वह अपनी प्रायवेसी बहुत जल्दी शेअर नहीं करती।बाहर से भीतर की ओर झाँकती कहानी है, 'बिंदास' जो अंत तक आते-आते चरित्र के एकदम करीब ला खड़ा करती है पाठक को।''[३८]

वर्तमान में नारी के व्यक्तित्त्व से सम्बन्धित पाश्चात्य विचार नयी प्रेरणा के स्त्रोत को लेकर उपस्थित हुए प्राचीन मान्यता 'न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति' वाली सूक्ती बिल्कुल ही अप्रासंगिक लगने

लगी है। वस्तुतः पाश्चात्य आन्दोलनों ने भारतीय नारी के मानसिक, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर को परिवर्तनोन्मुख कर उसे पूर्ण रूप से सक्षम बनाने का प्रयत्न किया। पाश्चात्य शिक्षा का बहुत अधिक प्रभाव भारतीय नारी पर पड़ा। पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित भारतीय नारी पारिवारिक एवं सामाजिक जीर्ण मान्यताओं से अपने आप को मुक्त करती गयीं। परिणामस्वरूप नारी शिक्षा प्राप्त कर समाज के सीमित दायरे से बाहर निकलने लगीं। परिवार के केन्द्र बिन्दु के रूप में स्त्री का जो स्थान था वह पुनः रूपायित होने लगा। आर्थिक उन्नति और उच्च शिक्षा के प्रभाव ने नारी को परम्परा के रूढ़िग्रस्त मान्यताओं के शिकंजों से मुक्त किया। आज भारतीय समाज में स्त्री को एक हद तक विशिष्ट मान्यता प्राप्त होने लगी है।

५.३.५ वैवाहिक संबंधों के प्रति नया दृष्टिकोण :

विवाह के संदर्भों में अनेक परिवर्तन हुए हैं और हो रहे हैं। जीवन में यांत्रिक व्यवस्था एवं भावशून्यता तथा मूल्य विहीनता के विकसित होने के परिणाम स्वरूप समाज में जीवन अत्यन्त जटिल हो गया है। मानव सम्बन्ध अनिश्चित होने लगे। विवाह जो सात जन्मों का साथ माना जाता था, आज समझौता मात्र माना जाने लगा है। स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में बिखराव अधिक दिखाई देने लगे हैं। अब स्त्री आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का प्रयास कर रही है। स्त्री जीवन साथी के चयन में अपने यथोचित अधिकारों का प्रयोग करना चाहती है। अपने अधिकारों के प्राप्ती के लिए स्त्री ने मुक्ति-संग्राम छेड़ दिया है। यह नये युग की नई नारी पुरूष समाज द्वारा नियंत्रित नहीं होना चाहती। वह स्वशासन प्रिय पुरूष निरपेक्ष स्त्री समाज के निर्माण में रत हो चुकी है।

आज की नारी अपनी स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखना चाहती है। वह रूढ़ीवादिता को नहीं स्वीकार करती। स्त्री की आत्मनिर्भरता ने पुरूष के साथ उसके सम्बन्धों को बदला है। इस परिवर्तित स्थिति में एक ओर दुविधाओं का सिलसिला अपनी जगह विद्यमान है तो दूसरी ओर इन सम्बन्धों में रिक्तता, विसंगति, शून्यता आदि भाव गहरे होते जा रहे हैं। आज विधवा विवाह, प्रेम, अर्न्तजातीय विवाह को मान्यता मिलने लगी है। विवाह-विच्छेद की समस्या का चित्रांकन भी लेखिका द्वारा किया गया है। क्षमा जी ने विवाह के सम्बन्ध के अनेक बदलते दृष्टिकोणों को स्पष्ट किया है।

हॉस्टेल के जीवन पर लिखी गई 'एक प्रेम-पत्र' कहानी में लेखिका ने बहुविवाह प्रथा को महत्त्व न देते हुए उससे गुजरते परिवार के मानसिकता का अंकन किया है। विवाहित नायिका अपने मामा-मामी के देहांत के उपरांत उनके इकलौती बेटी को अपने घर ले आती है। कई लोगों ने उन्हें यह करने से मना किया लेकिन वह नहीं मानी। अखिरकार कुछ सालों बाद वहीं हुआ जिसका लोगों को डर था। नायिका के पति उस लड़की के साथ रहने लगे, फिर भी नायिका अपने बच्चों के भविष्य से चिंतित होकर अपनी सारी जिम्मेदारी पूरी निष्ठा से निभा रही है। नायिका की बेटी का कहना है, डैडी ने जब से मौसी के साथ रहना शुरू किया है तब से घर में लगता है जैसे सब चुप रहकर भी एक-दूसरे से लड़ रहे हैं! ''मम्मी तो वही हैं जिनसे घर चल रहा है। डैडी की नौकरी छूट गई। मौसी की रोज की माँगे। उपर से प्रेगनेंट भी है।''[३९] नायिका इस सम्बन्ध को गौण मानते हुए अपने वजूद को प्रधानता देती है। यह एक ऐसी शिक्षित, आत्मनिर्भर नारी है, जो नए जीवनमूल्यों का बोध कराती है।

'शुरुआत' कहानी में लेखिका ने प्रेम विवाह का चित्रण किया है। लोगों की सामान्यतः यह मान्यता होती है कि प्रेम विवाह अधिकांश असफल ही होते हैं। लेकिन कहानी की उच्च शिक्षित सुसंस्कारित नायिका मनपसंद लड़के से शादी के लिए अपने भाई की स्वीकृती चाहती है तब भाई कहते हैं, 'आधुनिक होने के बावजूद तुम अपनी तथाकथित मर्यादा को स्थापित रखना चाहती हो। नहीं तो तुम दो साल पहले से नौकरी कर रही हो। चाहती तो शादी करके आशीर्वाद माँगने भी आ सकती थी, पर तुमने यह नहीं किया।' विवाह के संदर्भ में नारी अब जाति एवं वर्ग के बंधनों से उपर उठ गयी है। अपने विवाह का निर्णय वह स्वयं लेने लगी है और भारतीय संस्कृति के धरोहर को साथ लेते हुए वह परिवार के स्विकृति को भी महत्त्व देती है।

वर्तमान में बदलती परिस्थितियों ने विवाह के उम्र में मानों स्वयं ही वृद्धि कर ली है। आज के युग में युवक व युवतियाँ देर से विवाह करना उपयुक्त समझतें हैं। पालने में शादी होने के दिन बीत गये हैं, किन्तु बढ़ती उमर की भी एक सीमा होती है जिसे पार करने के बाद युवक तथा युवती के लिए चुनाव का प्रश्न नहीं रह जाता। एक स्थिति वह आती है कि युवती सोचने लगती है कि उसकी बाह थामने वाला कोई मिल सकेगा? 'किसको बताऊँ ओर-छोर' कहानी की नायिका शिक्षित,

कामकाजी और अविवाहित है। आर्थिक स्वावलंबन होने के बावजूद उसे दुनियादारी के ताने सहने पडते हैं, ''माँ-बाप हैं नहीं। भाई-भाभी इसका ध्यान कब तक रखें। क्या करें ..... इस उम्र तक कोई हाथ थामनेवाला न मिला ..... ''[४०] उसे समाज से प्रेम, स्नेह और आत्मियता की अपेक्षा है लेकिन उसी समाज के तिरस्कारयुक्त उलाहने सुनकर उसकी भावना को गहरी ठेंस पहुँचती है। पर फिर भी अनचाहे पति से अविवाहित रहना वह अधिक उचित समझती है।

'प्रेम के बीच' कहानी में लेखिका ने पुनर्विवाह का चित्रण किया है। पत्नी के असमय मृत्यु की वजह से नायिका के पिता प्रौढावस्था में जब दूसरी शादी करते हैं तब वह अपनी सौतेली माँ से काफी क्रूरता से बर्ताव करती है। उसे समझाते हुए उसकी मौसी कहती है, ''उम्र से मन का क्या रिश्ता है? दरअसल हमारी पूरी सोच-समझ इस कदर शरीर के इर्द-गिर्द घूमती है कि हम शरीर के साथ मन को भी बूढा मान लेते हैं।''[४१] यहाँ पर बदलते दौर से गुजरती नारी की बदलती हुई मानसिकता स्पष्ट होती है, जो विकास का निर्देश कर रही है।

''सामाजिक एवं कानूनी रूप से पति पत्नी के विवाह सम्बन्धों का समाप्त हो जाना ही विवाह विच्छेद कहलाता है। पति-पत्नी के वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में असामंजस्य एवं असफलता का सूचक है, विवाह विच्छेद।''[४२] 'पापा के एपिसोड में बेटा' कहानी में लेखिका ने विवाह विच्छेद की समस्या को उठाया है। जहाँ पति अपने पूर्व प्रेम की प्राप्ति के लिए अपनी पत्नी को त्यागता है। लेकिन यह नारी आज की नारी है। वह असहाय और अकेली होने के बावजूद स्वाभीमान के बलबूतेपर अपनी जिम्मेदारियाँ बखूबी निभाती है।

इस प्रकार कहीं सामाजिक स्थिति का यथातथ्य चित्रांकन कर, कहीं सुधारवादी अथवा समन्वय वादी दृष्टि अपनाकर और कहीं परिवर्तन की आकांक्षा और विद्रोह के माध्यम से लेखिका ने आज के वैवाहिक सम्बन्धों के प्रति नये दृष्टिकोण पर अपनी लेखनी निर्भिकता एवं सफलता पूर्वक चलाई है।

५.३.६ नई दिशा की ओर प्रेरित नारी :

बाबा तुलसी ने मानस में लिखा है- 'जाकी रही भावना जैसीं प्रभु मूरत देखी तिन तैसी' अपनी भावना और प्रवृत्ति के अनुसार व्यक्ति जीवन को देखता है। आधुनिक नारी संकल्प शक्ति के साथ जीने की जद्दोजहद में लगी है। समाज में अपने स्वतंत्र अस्तित्त्व की रक्षा के लिए नारी को कदम-कदम पर विद्रोह और संघर्ष करना पड़ रहा है। आज की नारी शिक्षित होने के कारण अपने व्यक्तित्व को जानने लगी है। पुरूष की भाँति वह भी समाज में अपनी स्वायत्तता स्थापित करना चाहती है। अपने अधिकारों के प्रति वह सचेत हो चुकी है। महादेवी वर्मा के अनुसार, ''नारी अपने अधिकारों की इच्छा न करे, अधिकारी भी बने, अधिकार के इच्छुक व्यक्ति को अधिकारी भी होना चाहिए।''[४३] अर्थात इच्छा को पूर्ण करने के लिए कृति की आवश्यकता होना जरूरी है। क्षमा जी की रचनाओं में ऐसी भी नारियाँ हैं जो काबिलियत और योग्यता होते हुए भी अपने व्यक्तित्त्व से अनजान हैं। लेकिन जैसे ही उन्हें अन्य व्यक्ति द्वारा मागर्दशन प्राप्त होता है, तब उन्हें एक नई प्रेरणा प्राप्त होती है और वह नई दिशा की ओर प्रेरित होती हैं। इस कार्य के लिए वह परिवार का विरोध भी करती है।

'बया' कहानी की नायिका रिपु स्वावलम्बन का परिचय देनेवाली नारी है जो आधुनिक बोध के विकास प्रक्रिया के साथ परम्परागत जीवन मूल्य पीछे छोडे जा रही है। जो मायके के सम्पत्ति में रस न लेते हुए भाई को जायदाद का पूरी तरह अधिकार दे देती है। गाँव से शहर आते हुए माँ का अहसास कोमल हृदय में बसा लेती है। ''रिपु की आँखे भर आई हैं ..... उसे लगता है कोने पर खड़ी माँ देख रहीं है.... माँ अब कहाँ ..... अब तो यह कोना भी मकान के साथ-साथ किसी और का हो जाएगा।''[४४] रिपु और माँ, माँ और अप्पी, अप्पी और भाई, भाई और भाभी सबकी स्निग्धता माँ अपने साथ समेट ले गई है। रिपु सिर झटकती है, वह शहर की तरफ देखती है, सडकों पर गड्ढे हैं! लेकिन अब वह गिरेगी नहीं, आगे देखकर चलेगी क्योंकि पीछे देखने को अब कुछ बचा ही नहीं है।

'एक शहर अजनबी' कहानी की नायिका अपने व्यक्तित्त्व को जानने लगी है, अपने व्यक्तित्त्व को जानने और अस्तित्त्व को बनाए रखने के लिए अब वह संघर्षरत है। नायिका का

अबतक मायके के सदस्यों ने तिरस्कार ही किया था। परंतु अब उसे किसी की चिंता नही हैं। उसका कहना है, ''वर्तमान में सेंध लगाकर कोई भूत, भविष्य को नहीं पछाड सकता। मुझे वापस जाना है। घर जाना है। जहाँ सबको मेरे लौटने का इंतजार है। जहाँ अपमान हवा में नहीं तैरते ..... जहाँ कोई स्त्री दया की भीख नहीं माँगती।''[४५] वह चेतना संपन्न नारी है, जो विद्रोह पर उतर आयी है। जो दुःखमयी स्मृतियों को पीछे छोड़ सुखमयी उजाले की ओर आगे बढ़ रही है।

'नेमप्लेट' कहानी की नायिका शिक्षित, चतुर और कुशाग्रबुद्धि की ऐसी नारी है जो आँखे मूँदकर शादी से नकारे हुए अपमान का स्वीकार नहीं करती। अपनी सोच और कुशाग्रता से वह राहुल वर्मा को साफ शब्दों में कहती है- ''मि. वर्मा देखिए। मैंने आपकी सारी बातों को टेप कर लिया है। कॉलेज के जमाने में रहे होंगे आप नम्बर वन फ्लर्ट, लेकिन अब आप किसी लड़की का अपमान नहीं कर सकते। मुझे कल तक शादी की डेट चाहिए। जल्दीसे जल्दी। यह डेट मैं कोई बन्दूक के जोर पर नहीं, तुम्हारे बयानों के आधार पर ही माँग रही हूँ।''[४६] निर्मल-राहुल वर्मा का कथान्त संवाद बताता है कि आप लड़की कों भेड़ नहीं समझ सकते। वह आप से आँख में आँख डालकर न सिर्फ बहस कर रही है, बल्कि यह अहसस भी करा रही है कि गया वह जमाना जब लड़के हमेशा विजेता हुआ करते थे। अब वह अपनी स्वतंत्र दुनिया खड़ी करने नई दिशा की ओर चल पड़ी है।

'एक है सुमन' कहानी की नायिका शिक्षा तथा नवीन युगबोध से प्रभावित होकर विवाह को जीवन का केंद्र मानने से अस्वीकार कर रही है। साथ ही शादी न करते हुए वह रिटायर बूढ़े दुबे जी के साथ खुश है। उनकी सम्पत्ति तो क्या उनके नाम पर भी वह हक नहीं जताना चाहती। वह कहती है, ''मुझे दुबे जी की प्रापर्टी से कुछ नहीं चाहिए। मेरा अपना घर है। अच्छी-भली नौकरी है। मैंने उनसे कह दिया है जमीन, जायदाद, खेती-बाड़ी और दुबे जी का नाम भी तुम रखो। मुझे तो सिर्फ दुबे जी दे दो।''[४७] एक बूढ़ा व्यक्ति जो रिट़ायर हो चुका है, जिसकी पत्नी नहीं है, उसकी जरूरत किसी को क्यों होगी? इससे तो यहीं कह सकते हैं कि आज की नारी अपने जीवन के प्रति आत्मनिर्णायक बनने लगी है।

'तस्वीर' कहानी की मिसेस शुक्ला क्रमशः कैसे शुक्ला अंटी में तब्दील हो जाती है, यह देखना एक दिलचस्प, लेकिन संजीदा अनुभव है। समय के साथ बदलती इस स्त्री में गजब का

आकर्षण है। एक तरफ तो वह बरसो पहले पति की बातों से अनुकूलित हुई गैस लाइटर की जगह माचिस जलाती है और दूसरी तरफ बहू के विधवा हो जाने पर उसका अबॉर्शन करा, दुसरा विवाह भी करा देती है। राधारमण जी के अनुसार,'' लेखिका की लेखनी का यह कमाल ही कहा जाएगा कि ये कहानियाँ आज भी उतनी ही उपयोगी और पठनीय है, जितनी लिखते समय थीं। उनकी जीवंतता में कोई आँच नहीं आ पाई है।''[४८]

५.३.७ स्वत्व के प्रति सचेत नारी :

भारतीय समाज में साठ के दशक से नारी मुक्ति की चेतना उत्तरोत्तर विकास की दिशा में अग्रसर हुई। स्वाधिनता प्राप्ति से वह अपने ढंग से अपना जीवन व्यतीत करने पर बल दे रही है। शिक्षा प्राप्त कर वह अपने स्वाधीन व्यक्तित्व के विकास पर बल दे रही है और स्व अस्तित्त्व के बल पर उभरती प्रवृत्तियों को व्यक्त कर रही है। क्षमा जी की कृतियों में स्त्री के स्वतन्त्र व्यक्तित्व को स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। आज के परिवेश में पति और पत्नी दोनों ही अपने अपने व्यक्तित्व को स्वतन्त्र रखना चाहते हैं। पुरूष की भाँति स्त्री भी समाज में अपनी स्वायत्तता स्थापित करना चाहती है। रुढ़िवादी सामाजिक संस्कारों के प्रति अब नारी जागृत हो रही है। वह अपने स्वत्व के स्थापना का पूर्ण प्रयास कर रही है।

क्षमा जी ने नारी की स्वायत्तता को अनेक रूपों में चित्रित किया है। जहाँ एक ओर नारी के व्यक्तित्व को घर में कैद करती नारियाँ हैं, उसी प्रकार नारी जाति की अस्मिता के प्रति सजग सन्नारियाँ भी हैं। वह अपने जीवन में अपने संगी साथियों के चयन में स्वतन्त्र विचार रखना चाहती हैं। अब नारी अपने स्वत्व के लिए समाज में आमूल परिवर्तन की कामना करती है। वह अपनी समस्याओं का सामना पूर्ण सक्षमता से कर रहीं है। आर्थिक आत्म-निर्भरता और मानसिक स्वतन्त्रता से वह अपने जीवन की गुत्थियों को स्वयम् सुलझाने में समर्थ है। इस तरह हम देखते हैं कि ''घर की चारदीवारीयों में बन्द रहने का मुहावरा स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय नारी के सन्दर्भ में अर्थहीन और विगत की बात बन कर रह गया। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में वह अपना विशिष्ट स्थान

बनाने लगी है। The hand that rocks the cradle rules the world कि उक्ति स्वतन्त्र भारत की नारी को लेकर शब्दशः सार्थक होने लगी।''[४९]

'मोबाइल' उपन्यास में नायिका की माँ नारी जागरण से प्रभावित घर गृहस्थी में रमी हुई है जो अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करनेवाली आत्मसजग नारी है। वह कभी नहीं चाहती कि उनकी वजह से किसी का समय बर्बाद हो। इसी संदर्भ में नायिका अपनी सहेली को बताती है, ''माँ को कभी अच्छा नहीं लगेगा कि हम अपना काम-धाम छोडकर उन्हें लेने जाएँ। बहुत इंडिपेंडेंट किस्म की हैं। बल्कि उन्होंने मुझे बचपन से सिखाया कि अपने पैरों पर खड़े हों, तभी आत्मनिर्भर हो सकते हैं।''[५०]

'खेल' कहानी में लेखिकाने नारी के इंद्रधनुषी रूप को साकारा है। रेल प्रवास में मिले साथ वाले सीट पर पूर्व प्रेमी को देखते हुए नायिका सोचती है कि एक वक्त था कि जब वह उसके बिना जिन्दा नहीं रह सकती थी और आज उसके विकृत चेहरे और पुरूष होने के अभिमान को देखकर वह हैरत में पड़ गयी है। स्त्री-मुक्ति राह पर चलती नायिका उसके साथ पूरा सफर किसी कीमत पर नहीं करना चाहती। ''क्या मुझे दोबारा वहीं जाना पड़ेगा उसी नर्क में। जिसे छोड़े इतने वर्ष हो गए। मैं उस आदमी को दोबारा देखना भी क्यों चाहूँ बात करना तो दूर। ठीक है, वहाँ बैठने के बजाय मैं खड़े रहकर जाना पसन्द करूँगी।''[५१] आज की नारी प्रेमी की उपेक्षा में आँसू की नदियाँ नहीं बहाती, प्रत्युत ईंट का जवाब पत्थर से देती है।

'पापा के एपिसोड़ में बेटा' कहानी में पति को किसी दूसरे को प्रेम करते देख नायिका में प्रतिशोध की भावना उत्पन्न नहीं होती, प्रत्युत वह नियति की इस विडम्बना को शान्त निर्विकार भाव से ग्रहण करते हुए अपने बेटे को बड़े लाड़-प्यार से बड़ा करती है। युवावस्था में पहुँचा बेटा जब अपने वृद्ध और धनवान पिता के पास जाने की बात करता है तब उसके पैरों तले जमीं खिसक जाती है। वह देखते ही रह जाती है कि, अगर वह उसे छोड़कर चली जाती, अपना नया घर-बार बसाती तो यह दुनिया उसे क्या न कहती। आज जब वह अपना जीवन खो चुकी है तो यह लड़का उसे जिंदा रहने के तौर-तरीके सिखा रहा है। जो दुनिया उसे स्वार्थी कहती, उसने उसे तथाकथित

त्याग के बदले क्या दिया ! वह इतना कह पाती है, बाबू, तुम वहाँ जाना चाहतें हो तो शौक से चले जाओ। लेखिका ने यहाँ मानव–मन के अछूती भाव–भूमियों को स्पर्श किया है।

'एक है सुष्मिता' कहानी में अंग–प्रदर्शन स्त्री की सामाजिक छवि, अश्लीलता और कलात्मकता आदि को लेकर वैचारिक बहस है। कहानी में लेखिका ने नारी देह प्रदर्शन को लेकर अपने विचार रखे हैं। इस कहानी में सुनिता देह–प्रदर्शन को स्त्री की मुक्ति–चेतना समझ रही है, लेकिन असलियत में वह स्त्री की गुलामी का नया संस्करण है। सुनीता के इस व्यवहार के चलते उसकी माँ चीखती–पुकारती हुई नायिका को आकर कहती है, ''क्या बताऊँ ! उस लौंड़िया ने मुँह काला करा दिया। फोटू उतारने वाले ने झांसे में देकर उसके गंदे–गंदे फोटो खींच लिए। कहीं से पुलिस को खबर हो गई। वह कुतिया का जाया पकड़ा गया सो पकड़ा गया, सुनीता की भी जिंदगी खराब कर दी।''[५२] अब सुनीता के इच्छाओं का आकाश यकायक उसके लिए सिमटता जा रहा है और नायिका सोच में डूबी है कि स्त्री की सुन्दरता उसके वस्त्रों के कारण बढ़ती है, न कि उतारने के कारण।

'फिर भी' कहानी में नायिकाद्वारा बताने की कोशीश है, कि इस नारी–जागरण के युद्ध में भी यदि पुरूष आप में आत्ममुग्ध होकर रह जाएगा तो न उस नारी जागरण का कोई मतलब रह जाएगा और न ही नारी कभी दासता के बंधनों से मुक्त हो पाएगी। नायक अपनी पत्नी से नायिका के बारे में अत्यंत अपमान और उपहास भरे शब्दों में कहता है, 'देखो, यह कितनी खूबसूरत और स्मार्ट है। बोरी भरकर रूपये भी कमाती है। मगर फिर भी मैंने तुम्हें चुना।' स्त्री चेतना से सम्पृक्त नायिका उन शब्दों को झेल ही नहीं पाती। वह आवेशपूर्वक नायक से कहती है, 'अपनी इस बकवास को बन्द करो। समझे? समझते क्या हो अपने को? किस बात की श्रेष्ठता है? किस बात में ज्यादा हो?' कहते हुए वह दौडकर सामने आती बस में चढ़ जाती है। हालाँकि यह बस उसके घर नहीं जाती। लेखिका ने कहानी में नायिका के अन्तर्द्वंद्व का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है।

परिस्थितियों की प्रेरणा और सहयोग से नारी का स्वाभिमान एक नई दिशा की ओर करवट बदल रहा है। परतंत्रता की बेडियों को तोड़कर आत्मनिर्भर बनने की आकांक्षा उसके जागृत मन में उठने लगी है। आत्मनिर्भर बनने के लिए शिक्षा में अग्रसर होकर वह समाज में अपना स्वतंत्र

अस्तित्त्व स्थापित करना चाहती है। आज की स्वतंत्रचेता नारी सभी क्षेत्रों में पुरूषों की बराबरी कर रही है। राजनीति, पुलिस, सेना आदि क्षेत्रों में पुरूषों के समान उच्च पदों पर स्त्रियाँ भी आसीन हैं। प्रधानमन्त्री के रूप में राष्ट्र के सर्वोच्च पद पर श्रीमती इंदिरा गांधी का एवं राष्ट्रपती पद पर श्रीमती प्रतिभाताई पाटील का आरूढ़ होना, स्वतंत्र भारत की महिलाओं के लिए एक महान उपलब्धि है।

५.३.८ आधुनिक स्त्री के संदर्भ में भारतीय जीवन दर्शन :

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के साथ सामाजिक आन्दोलन का भी सूत्रपात हुआ। राजा राममोहन रॉय, महर्षि दयानन्द, महात्मा फुले जी ने समाज सुधार की दिशा में बड़ा काम किया। सती प्रथा कानूनों द्वारा बन्द करा दी गई। बाल-विवाह पर रोक लगी। आगे चलकर महात्मा गांधी जी ने स्त्री सुधार की दिशा में बहुत काम किया। नारी की दीन हीन दशा के विरूद्ध 'पन्त' कवि का आक्रोश प्रकट हो उठता है।

'मुक्त करो नारी को मानव,
चिरवन्दिनी नारी को'

आज नारी को पुरूष के समान अधिकार प्राप्त हैं। उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता भी मिली हुई है। स्त्रियाँ अध्यापिका, डॉक्टर, इंजिनियर, वैज्ञानिक, वकील, जज ही नहीं अपितु पुलिस तक में नीचे से ऊपर तक विभिन्न कार्य कर रही हैं। समाज में नारी की साक्षरता, शिक्षा व चेतना में हुए फैलाव के कारण उसके प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में भी बदलाव आया है।

इस कारण महिलाएँ पहले की तुलना में अधिक निर्भिक, स्वावलम्बी, अधिकार चेता, अस्मिता व अस्तित्त्व के प्रति सजग एवं संवेदनशील दिखाई देती हैं। उनमें आ रहा यह सकारात्मक परिवर्तन एक विचित्र स्थिति से गुजर रहा है। उनके एक ओर शिक्षा, नौकरी, जीवन-मूल्यों में बदलाव की स्थिति है तो दूसरी ओर परम्परागत संस्कार हैं। क्षमा जी ने आधुनिक भारतीय नारी के मन में चल रहे इस अन्तर्द्वंद्व का विवेचन-विश्लेषण कर आधुनिक स्त्री के संदर्भ में भारतीय जीवन दर्शन कराने का प्रयास किया है।

'किसको बताऊँ ओर-छोर' कहानी में नायिका द्वारा आधुनिक नारी की सच्ची अस्मिता व्यक्ति के रूप में उसकी सार्थक और वास्तविक परिस्थिति की तलाश अभिव्यक्त हुई है। ''अगली सुबह चपरासी एक टाइप किया पत्र थमा गया था कि आप लडकियों को भड़काती हैं। यह वुमेनलिब यहाँ नहीं चल सकता। आप चौबीस घंटे के अंदर होस्टल छोड़कर अपने रहने की व्यवस्था कहीं और कर लें।''[५३] पत्र पर प्रिंसिपल के हस्ताक्षर हैं। उसके सामने उनका वह चेहरा घूम रहा है। जब वह कहीं भाषण दे रहे होते हैं कि वहीं सच्चा इंसान है जो न्याय के लिए मर-मिटे, संघर्ष करे और वह जो लगातार यह सोचती रही कि दुनिया में कुछ भी हो उसे क्या, वह तो सुरक्षित है। न्याय के लिए किसके पास जाती इस वक्त वे जो खुद अपराध भी करते हैं और न्यायप्रियता का ठेका उठा लेते हैं। शायद उसके अकेलेपन का सबसे भयानक रूप उसके सामने था जहाँ उसकी बेटियाँ भी थोक के भाव बिक जाती। वह सामान बाँधने लगी तो लडकियाँ इकट्ठी होकर कहने लगी, मैडम आप कहाँ जा रहीं हैं, आप दोपहर का प्रोग्राम भूल गई?' और मेज पर रखा वह पत्र अचानक तेज झोंके से खिडकी से बाहर उड़ गया। इसतरह आज की पढ़ी-लिखी लड़की यदि समाज में व्याप्त रूढ़ियों अथवा महिला अधिकारों की बात भी करती है तो उसे जवाब में छल-कपट के सिवा कुछ नहीं मिलता।

'बर्फ होती मुलाकात' कहानी की नायिका आर्थिक स्वावलम्बन तथा मानसिक स्वतंत्रता के कारण आत्मनिर्भर है। बदली हुई नई स्थितियों ने उसके स्वरूप और मानसिकता को पूर्ण रूप से बदल दिया है। वह वर्षों बाद मिले विक्रम से कहती है, ''विक्रम बदलने में मुझें तो वर्षों लग गए। अपनी बताओ, तुम कैसे बदल गए, सिर्फ एक दिन में। सही बात का दावा करने वाले तुम! सही का पक्ष लेना तो दूर, सच को सच भी नहीं कह सके।''[५४] इसलिए कि मुझसे तुम्हारा कोई स्वार्थ न सधता। माँ-बाप-भाई से बनाकर रखने में तो तुम्हें फायदा ही फायदा है। बदली हुई परिस्थितियों ने नारी की सामाजिक भूमिका को पर्याप्त प्रभावित किया है। उसमें अब स्वाभिमान की भावना पनप रही है। उसने अब हर क्षेत्र में प्रगति कर ली है। यहाँ तक की पुरूष प्रधान क्षेत्रों में प्रवेश करके उसने संपूर्ण पुरूष वर्ग को खुली चुनौती दी है। वह इस प्रकार पुरूष के अत्याचारों का सामना कर रही है और अभी तक समाज से टक्कर ले रही है और आगे बढ़ रही है।

अपने को सभ्य और सुसंस्कृत कहने वाला यह मर्दवादी समाज पशु से भी निम्न स्तर का है। भले ही वह साइकिल सवार हो या कारवाला, बालक हो या वृद्ध किसी भी स्त्री को अपना शिकार बनाने से नहीं चूकता। इस तरह संक्रमण की इस स्थिति में कामकाजी महिलाएँ दुविधाग्रस्त एवं असुरक्षित हो गई हैं,फिर भी तथाकथित पुरूष क्षेत्रों में उनकी हिस्सेदारी तेजी से बढ रही हैं। आधुनिक काल में जीने का ढंग, मूल्य, उद्देश्य सब कुछ बदल गया है। वास्तव में आधुनिक युग में समग्र जीवन–दर्शन बदल गया है।

प्रेम मानव मन की कोमल मनोभावना है विभिन्न व्यक्ति इसका विभिन्न रूपेण अनुभव करते हैं, विभिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं एवं विभिन्न अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। कुछ प्यार को उदार बनाने वाला मानते हैं तो कुछ स्वार्थी बनाने वाला। यथार्थ में प्यार पूर्ण समर्पण की अपेक्षा रखता है। एकाधिकार एवं पूर्णाधिकार चाहता है। प्रेम एक सागर है और वह हृदय को उदार बनाता है। लेखिका ने 'शुरूआत' कहानी में प्रेम विवाह का वर्णन किया है। ''जानती हो अनीता, मैं तुम्हें एकटक देखने लगा था। मैंने रानी की तरफ देखा तो उसकी नज़र मुझे एकदम ठंडी लगी थी। न जाने क्यों मुझे लगा, भले ही तुमने रवि से प्रेम विवाह किया था, लेकिन तुम्हें मन में रवि से अधिक पढ़े–लिखे होने का गर्व और गाहे–बगाहे उसे अपमानित करने की क्षमता जरूर थी।''[५५]

लेखिका का मंतव्य यही है कि यद्यपि आज लड़की प्रेम के प्रवाह में बंधकर अपनी सुधबुध खो बैठती है और अपनी मर्जी से विवाह करती है लेकिन बाद में विवाह के पश्चात् जब वह यथार्थ के धरातल पर आती है तो वहीं बातें जो पहले नजर अन्दाज कर दी जाती हैं वे सब बुरी लगने लगती हैं। जो लड़का उसके लिए सर्वस्व था वही अब नजरों में खटकने लगता है।

क्षमा जी ने अपने कथा–साहित्य में दाम्पत्य सम्बन्धों की अपूर्णता, रिक्तता बोध और एकाकीपन के दंश से अनेक वैवाहिक संबंधों को असफल सिद्ध किया है। लेकिन इस विष को पीकर जीवन व्यतित करने की नारी की विवशता को खंडित कर एक जीवन को नवीन आयाम दिया है। 'बहन' कहानी की बानी भौतिक सुख–सुविधाओं के समस्त साधनों से सम्पन्न तथा सामाजिक दृष्टि से परिपूर्ण है जो वैचारिक तथा मानसिक रिक्तता से भरी है। जो अपने पति अनुराग से असंतुष्ट हो विपिन के साथ चली जाती है। उसके खंडित प्रेम की व्यथा चित्कार रही है, 'क्षमा शर्मा की यह

बानी सिर्फ तकलीफ झेलती स्त्री नहीं है, उसमें अपने अस्तित्व और बेहतर जीवन के लिए एक आत्मीय ललक है। इस कहानी द्वारा युग चेतना के स्वरूप और उसके विविध आयामों पर प्रकाश डाला गया है। आधुनिकता को लेकर चर्चा की गई है। नारी-मुक्ति की समस्या और उसके अस्तित्व की स्वीकृति के स्वर दर्शाये गए हैं।'

५.३.९ नए सम्बन्ध मूल्यों का सृजन :

समाज में समय के अनुसार परिवर्तन होता रहता है। कभी यह परिवर्तन सकारात्मक होता है, तो कभी नकारात्मक। नकारात्मक परिवर्तन हमारे वश में नहीं होता। वह तो आधुनिकता की जैसी आँधी चलेगी। उसके अनुसार बवंडर के रूप में वह आगे बढ़ता है। सकारात्मक परिवर्तन अवश्य हमारे हाथ में होता है। मूल्य संक्रमण की इन परिस्थितीयों से गुजरते हुए क्षमा जी ने यह महसूस किया कि परम्परागत मूल्यों का समसामायिकता से कोई संबंध नहीं है। परिवर्तित हो रही नयी परिस्थितीयों में नयी पीढी ने एक ऐसी मूल्य संहिता को जन्म दिया है जो परम्परागत मान्यताओं को नकारती हुई आधुनिक विसंगतियों के बीच से होकर गुजरने में उसके लिए अधिक सहायक सिद्ध हुई। ''जीवन व्यवस्था में पिता और पुत्र, पति और पत्नी, सम्बन्धी और नातेदार अब पुरानी मान्यताओं के सहारे नहीं चल पा रहे हैं। पुत्र अब परलोक के लिए नहीं, इस लोक के लिए जरूरी हो गया है क्योंकि वृद्धावस्था की कोई सुरक्षा आज के वृद्ध के पास नहीं है।''[५६]

नवचेतना जागरण के साथ-साथ परम्परागत मान्यताएँ एक-एक कर टूटती जा रही हैं। इन टूटी हुई मान्यताओं के खण्डहर पर खड़े होकर पुरानी पीढ़ी परम्परागत जर्जर मूल्यों से चिपके रहने का आग्रह करती है, जबकि नयी पीढ़ी इस आग्रह को ललकारती है। मूल्य विघटन और नव निर्माण की नयी स्थिति को लेखिका ने व्यापक आयाम प्रदान किया है।

एक नारी जब बाहरी दुनिया में प्रवेश करती है, अपनी सामाजिक पहचान बनाना चाहती है तो उसे अनेक परेशानियों से गुजरना पडता है। ऐसे में कुछ तो हिम्मत हार बैठती हैं लेकिन कुछ अपना संघर्ष जारी रखती हैं लेकिन जब सारे रास्ते ही बन्द नजर आते हैं तो वह अपना शरीर तक बेचने के लिए मजबूर हो जाती हैं। लेखिका 'न्यूड़ का बच्चा' कहानी में कहती हैं- 'वह कहाँ जाए?

किसके पास? तब उसने दिल्ली की तरफ मुँह किया था। किन-किन कठिनाइयों, डिप्रेशन, मान-अपमान नैतिकता के प्रश्नों से गुज़री।' दो-चार साल में वह इस स्थिति में आ गई कि अपना घर चला ले।

उसके सामने यह रहस्य खुल चुका है कि यह शरीर ही अपना है। यह सच है, वह चाहे तो इसके जरिए कुछ भी पा सकती है। पति के बाद जब वह अकेली थी, जीवन-संग्राम में जूझ रही थी तो यह शरीर ही सहारा बना। कौन सच हुआ, ईश्वर, नैतिकता के ठेकेदार, मोर्चे खोलने वाले, स्त्रियों को वेश्या बनाकर ठगने वाले यह शरीर? उसका अपना शरीर, जिसने उसे और उसके बच्चे को जिंदा रखा। '' तब जब कोई और सहारा नहीं था उसके पास। इस शरीर से घृणा कैसी? इसके इस्तमाल पर शर्म क्यों? आखिर यह शरीर ही तो अपना सबसे बडा सखा बना था।''[५७] एक नारी जब समाज द्वारा दी गई कठिनाइयों से तंग आ जाती है, जब उसके पास पेट भरने तक का कोई साधन नजर नहीं आता तो वह अपने शरीर को ही इस्तेमाल करती है। आख़िर क्या करे? वैसे भी अकेली स्त्री को यह समाज जीने भी नहीं देता, जब यह समाज ही स्त्री को वेश्या बनने के लिए मजबूर कर देता है तो फिर वह अपनी स्वीकृति से यह काम क्यों न करे।

'कमीज पहन रहा है जैक द रिपर' कहानी में चालीस साल की नायिका का दिमाग फटा-फटा जाता है। वह क्या करे क्या न करे? क्या नौकरी छोड दे? भाग जाए? वह काम करती थी तो अधिकारियों को खुश करने के लिए नहीं करती थी, तो सहकर्मियों पर बोझ डालने के लिए। छुट्टी लेती थी तो बहाने बनाकर, नहीं लेती तो किसी के जीवन में बहार लाने के लिए। लोगों की मेज के सामने लगे धनिए-पोदीने के पेडों को हरा-भरा बनाने के लिए। उसे अगला प्रमोशन चाहिए था वह घात लगाए है। वह कुछ भी कर सकती है। मर्दों की दुनिया में काम करने को मजबूर वह औरत, जैक के लिए बिल्कुल चुनौती बन गई है। जैक उस पर निशाना साधते हुए कहता है, 'अरे, रे ...च्यु ... च्य ... च्य ... बेचारी ! अबला ! बूढ़ा गई, गाल लटक गए तो क्या इसे अपने मर्द का सहारा न हो ..... अकेली हो तो .....' जैक ने लार टपकाई। जल्दी से लार को जीभ से साफकर उसने फिर उसी छत फाड़, ठहाकेदार आवाज में गाया, आ मेरी गोदी में बैठ जा, आ मेरी गड्डी में बैठ जा, ''..... साली ये औरतें, पल में तोला, पल में माशा। बिलकुल टिपीकल कैरेक्टर ..... कभी कट

स्लीव ब्लाऊज, कटे बाल, कभी टोकरी-भर आँसू, मर्दों के साथ चाय-नाश्ता, बिना लंच ..... नए टोटके फंसाने के। एक पैर सती सावित्री के बाडे में तो दूसरा अपने हाथ से अपनी ब्रा खोलती।''[५८]

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक नारी अपनी सामाजिक पहचान प्राप्त करने के लिए लगातार इस पुरूष प्रधान समाज से टक्करें ले रही है लेकिन फिर भी वह हिम्मत नहीं हारती। उसके हौसले बुलन्द हैं। आज की नारी पुरूष के अत्याचारों को आँख बंदकर नहीं सहती वरन् उसका विरोध करती है। उसमें आत्मविश्वास जगा है। अब वह किसी के आगे हाथ पसारे दया की पात्र नहीं रही। वह समर्थ है और देखना है कि भविष्य में वह कहाँ पहुँचती है। हमें अतीत नहीं भविष्य देखना है जो नारी का भविष्य उज्वल है।

मन की कोमल मनोभावना है प्रेम। विभिन्न व्यक्ति इसका विभिन्न रूपेण अनुभव करते हैं, विभिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं एवं विभिन्न अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। कुछ प्यार को उदार बनाने वाला मानते हैं तो कुछ स्वार्थी बनाने वाला। यथार्थ में प्यार पूर्ण समर्पण की अपेक्षा रखता है। 'न्यूड़ का बच्चा' इस कहानी में लेखिका ने प्रेम भावना को शब्दों में पिरोया है। ''तब जब वह प्रेम करती थी और प्रेम पत्र गुलशन नन्दा के उपन्यासों के पृष्ठों मे छिपकर यहाँ से वहाँ तक की सैर करते थे। तब जब वह कॉलेज जाने के बहाने पिक्चर हॉल में पहुँच जाती थी। सहेली को फोन करने के बदले पार्क की बैंच पर बैठी गुलाब का फूल हाथ में लिए मिलती थी।''[५९] लेखिका का मंतव्य यही है कि यद्यपि आज लडकी प्रेम के प्रवाह में बहकर अपनी सुधबुध खो बैठती है और अपनी मर्जी से विवाह करती है लेकिन बाद में विवाह के पश्चात् जब वह यथार्थ के धरातल पर आती है तो वही बातें जो पहले नजर अन्दाज कर दी जाती हैं वह सब बुरी लगने लगती है। जो लड़का उसके लिए सर्वस्व था वही अब नजरों में खटकने लगता है।

भारतीय नारी की छवि है कि लज्जा व उचित संस्कारों से युक्त हो, व्यर्थ का अहंकार तो आने ही नहीं देना चाहिए। लेकिन, लेखिका 'दुमुँही'कहानी से एक ऐसी नारी का वर्णन करती है जो अपनी सुन्दरता के कारण मूल्यच्युती के मार्ग पर अग्रस्थ हो रही है। वह कहती है, मैं सुन्दर हूँ, सुन्दरता के सारे मानदंड गोरा रंग, बड़ी आँखे, धनुषाकार भौंहे, लम्बी बरौनियाँ, तोतापुरी नाक,

पतले गुलाबी होंठ, लम्बी गर्दन और छत्तीस-चौबीस के नाप के साथ पांच फुट चार इंच का कद, उस पर उसकी माँ के तैयार किए हुए काले बाल, अप्रतिम सुन्दरी बना देते हैं उसे। इस रूप से उसे बेहद प्यार है। ''लेकिन मेरे व्यक्तित्व की यह बात भी विचित्र है कि जब भी मैंने किसी से प्यार किया पूरी शिद्दत के साथ किया। हर बार मन में वैसा ही कम्पन और मिलने की ललक भी पैदा हुई। लेकिन दूर चले जाने के बाद मैंने उस व्यक्ति को दोबारा याद करने की कोशिश भी नहीं की।''[६०] यह संस्कार उसमें कैसे आया वह नहीं जानती। उसे इसमें क्या आनन्द आता है यह भी उसके सामने स्पष्ट नहीं है।

विधाता ने नारी को सौन्दर्य प्रदान किया। वह तन-मन दोनों से सुन्दर है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह अपनी सुन्दरता को गलत अर्थों में प्रयोग करे। नारी सृष्टी की सुन्दर कृति है। हमारे साहित्यिकों ने नारी का आसन बहुत उँचा कर दिया है। स्वर्गीय 'प्रेमचंद' एक स्थान पर अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' में लिखते हैं- संसार में जो कुछ सत्य है, सुन्दर है, नारी को मैं उसका प्रतीक समझता हूँ। भारतीय सभ्यता का मूलमंत्र 'सादा जीवन उच्च विचार' था, परन्तु आज की नारियाँ सादा जीवन से बहुत दूर जा रही है। आज के संक्रान्ति काल में, जब देश के हजारों व्यक्तियों के पास न खाने को अन्न है और पहनने के लिए कपडा, वे राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति अपने शृंगार-साधनों में नष्ट कर देती हैं। पुरूषों को मोहित करने के लिए अपने आपको सजाने एवं सँवारने की पुरातन प्रकृति को वे आज भी नहीं छोड सकी हैं।

'आवाजें' कहानी में पुरोगामी वर्ग का कुटुम्ब दिखाई देता है। जहाँ स्वैराचार और स्वतंत्रता में फर्क तो किया जाता ही है, साथ ही व्यक्तिस्वतंत्रता को भी प्रधानता दी जाती है। लड़की है इसलिए मन के ताले बंद किए जीना वहाँ मना है। जिंदगी का आनंद ही वहाँ महत्त्वपूर्ण है। माँ ने उनकी किसी भी इच्छा पर कोई पाबन्दी नहीं लगाई, रोका-टोका नहीं। कभी यह नहीं कहा कि वह क्या चाहती है, बल्कि अकसर पूछती थीं कि नायिका क्या चाहती है। माँ को लगता था कि बच्चों को ज्यादा रोकना-टोकना नहीं चाहिए। उन्होंने कभी किसी जासूस की तरह उनसे यह भी नहीं पूछा कि किसका फोन था, किससे बातें कर रहीं थीं या कि इतनी देर तक कहाँ थीं? इस तरह आज की

परिवर्तित परिस्थितियों और परिवेश में व्यवहारिक जीवन का सत्य नारी के सामने आ रहा है जिसके परिणामस्वरूप नए आदर्शों एवं मूल्यों की स्थापना हो रही है।

'लड़की जो देखती पलटकर' कहानी में महेंद्र नायिका पर निशाना साधते हुए उसे उपहासपूर्ण शब्दों से अपमानीत करता है इस बात पर नायिका का मन छिन्न-विछिन्न हो जाता है। अब महेंद्र के लिए उसके जज्बात बिखर चुके हैं। महेंद्र की उस उपहासपूर्ण नजर ने उसे सफलता की उच्चतम श्रेणी प्राप्त करने का नशा दे दिया है। वह अपने अधिकारों के लिए लड़ सकती है। उसकी अपनी स्वतंत्र सत्ता है। वह कहीं अधिक सशक्त एवं अपने हक के प्रति झुकना नहीं, तनकर खड़ा होना सीख चुकी है। कुल मिलाकर यह कहानियाँ स्त्रियों को घर की देहरी लांघकर आत्मनिर्भर बनाने की प्रेरणा देती प्रतीत होती है और यही लेखिका का ध्येय भी है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि वर्तमान में नारी की भावनाओं, विचारों और विवाह, प्रेम, यौन-सम्बन्धों, सामाजिक परम्पराओं धार्मिक विश्वासों तथा स्त्री चरित्र की नैतिकता के प्रति दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन आया है। इस दृष्टिकोण ने सदियों से स्थापित 'भारतीय नारी' के जीवन मूल्यों को, जिन्हें हम तथाकथित 'शाश्वत मूल्यों' के नाम से पुकारते आए हैं, जबरदस्त चुनौती दी है। आज की नारी पति को 'भगवान' मानने को तैयार नहीं। उसकी एक तरफ मनमानी को 'भगवान की इच्छा' या 'भाग्य का फल' समझकर सिर झुकाने को तैयार नहीं। भारतीय नारी अपने उपर होने वाले अत्याचारों के दबाव से सहम नहीं रही बल्कि मुक्ति की चाह में अब नये रास्ते तलाश कर रही है। पुराने आदर्श और नवीन जीवन मूल्यों में टकराव की स्थिति साफ देखी जा सकती है। समय के परिप्रेक्ष्य में नये संदर्भों से जुड़ना एक अनिवार्यता हो गई है। बुद्धि और विवेक से संचलित नारी शक्ति अपनी सही पहचान बनाने के लिए अधिकाधिक जागरूक हो गई है।

क्षमा जी की नारी चेतना, व्यक्ति स्वातंत्र्य का सम्मान करती है, किन्तु साथ ही वे इस बात का भी आग्रह करती हैं कि हमारा व्यक्ति-स्वातंत्र्य सामाजिक हित में बाधा न बने। समाज व्यक्ति के लिए व्यापक सुरक्षा कवच है। उसके अपने कुछ नियम हैं। व्यक्ति समाज का अनिवार्य अंग है। अतः व्यक्ति का व्यवहार समाज के नियमों के अनुकूल होना चाहिए। स्त्री-पुरूषों के सन्दर्भ में यदि यह

नियम थोडे-बहुत अलग हैं तो इनके पीछे की भूमिका अवश्य सकारात्मक होगी। विवाह-संस्था या परिवार समाज को सुचारू ढंग से नियमित करने वाली संस्थाएँ हैं। इन संस्थाओं से समाज के व्यापक हित की रक्षा होती है। इन संस्थाओं के प्रति उत्पन्न होने वाला अविश्वास समाज में अव्यवस्था पैदा कर सकता है। अत: इनके संकेतों का पालन होना चाहिए। लेखिका ने अपवादात्मक स्थितियों में ही इनसे विरोध की बात स्वीकार की है।

स्त्री चेतना की दृष्टि से उनके कथा-साहित्य पर विचार किया जाए तो दृष्टिगोचर होता है कि उनके कतिपय नारी पात्रों की चेतना विचार या छटपटाहट तक सीमित रहती है, जबकि कुछ पात्रों की चेतना सकारात्मक विद्रोह का रूप धारण करती है। उनके कुछ नारी पात्र अन्दर ही अन्दर घुटते हुए नजर आते हैं। चाहे वह 'पापा के एपिसोड में बेटा' की शुभा हो या 'चार अक्षर' कहानी की सरोज। इसके पीछे शायद सामाजिक नियमों को तोडने का साहस है जो उनके मानस को पंगु बना देता है। एक बात यह भी उल्लेखनीय है कि आत्मनिर्भर स्त्री की चेतना गृहिणी, महिलाओं की अपेक्षा अधिक मुखर है और इसे 'मोबाइल' उपन्यास की मधु तथा 'शुरूआत' कहानी की अनिता ने प्रमाणित किया है। 'बया' कहानी की रिपु तथा 'नेमप्लेट' कहानी की नायिका भी वैचारिक धरातल पर चेतना से परिपूर्ण हैं। परिवेश तथा स्थितियाँ भिन्न-भिन्न होने के पश्चात् भी हर नारी कहीं न कहीं अनुभूति में साम्य रखती है। नारी होने के कारण प्राप्त बंधनों को यहाँ हर कोई कम-अधिक मात्रा में सहन कर रहा है। मानसिक, जैविक, शारीरिक, आर्थिक तथा राजनीतिक शोषण का शिकार होना इनकी नियति है। लेकिन एक बात निश्चित है की शोषण का सामना करने का हर एक का मार्ग अलग-अलग है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि क्षमा जी का कथा-साहित्य व्यापक अर्थ में स्त्री-चेतना से परिपूर्ण है।

सन्दर्भ : पंचम अध्याय

१. डॉ. गणेशदास–स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी के विविध रूप, पृ.७८

२. श्री.नवल जी (सम्पा.)–नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ.१३८८

३. पटेल राजेश–निराला के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, पृ.१३

४. आचार्य बच्चूलाल (सम्पा.)–हिंदी व्युत्पत्तिकोश, पृ.१३५७

५. चातक गोविंद (सम्पा.)– आधुनिकी हिंदी शब्द.कोश, पृ.७५

६. वर्मा फूलचंद (सम्पा.)–हिंदी विश्व कोश, पृ.२८३

७. वर्मा फूलचंद (सम्पा.)–हिंदी विश्व कोश, पृ.२८२

८. डॉ. सक्सेना सुनिता–हिंदी उपन्यास : आधुनिक संदर्भ, पृ.४२

९. डॉ.मिश्र रामदरश–साहित्य संदर्भ और मूल्य, पृ.९३–९४

१०. डॉ. वर्मा धीरेन्द्र (सम्पा.)–हिंदी साहित्य कोश, पृ.२८९

११. मनुस्मृति–मन्वर्थ मुक्तावली, पृ.११३

१२. कालिया ममता (सम्पा.)–नई सदी की पहचान : श्रेष्ठ महिला कथाकार, पृ.७८

१३. डॉ. थोरात गोरक्ष–चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन, पृ.१९२

१४. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि.६ अप्रैल, २०१४

१५. कमलेश्वर–नयी कहानी की भूमिका, पृ.१८

१६. राधारमण–अक्षरभारत,२७ दिसंबर, १९९९, पृ.२४

१७. मित्तल सुशीला –आधुनिक हिन्दी कहानी में नारी की भूमिकाएँ आमुख, पृ.५–६

१८. संचेतना, दिसंबर, २००१, पृ.२३

१९. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.२६

२०. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.२३०

२१. कुमार अमित–हिन्दुस्तान,२९जुलाई,२००७, पृ.१७

२२. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.६८

२३. शर्मा क्षमा–नेम प्लेट, पृ.११४

२४. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.१४

२५. डॉ. शर्मा ओम प्रकाश–समकालीन महिला लेखन, पृ.१०७

२६. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.३४

२७. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.९०

२८. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.३७

२९. पाठक कल्पना–अपने अस्तित्व के लिए लड़ती नारियाँ, ८अगस्त,१९९१, पृ.१२

३०. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.३७

३१. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१३४

३२. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.२४–२५

३३. शर्मा क्षमा–नेम प्लेट, पृ.५१

३४. डॉ. शर्मा सरनाम ''अरण''–कृति और कृतिकार, पृ.१०४

३५. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१२३

३६. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१५२

३७. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.५१

३८. दर्पण महेश–कथादेश, मई, २००७, पृ.९१

३९. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ १५८

४०. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ.८४

४१. शर्मा क्षमा–थैंक्यू सद्दाम हुसैन, पृ.१०५

४२. डॉ. वर्मा शीलप्रभा–महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृ.६९

४३. वाणी, मार्च, २००८, पृ.५०

४४. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.१५

४५. शर्मा क्षमा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग, पृ.९५

४६. शर्मा क्षमा–नेमप्लेट, पृ.९३

४७. शर्मा क्षमा–नेमप्लेट, पृ.१०७

४८. राधारमण–अक्षरभारत,२७ फरवरी, १९९९, पृ.२४

४९. मित्तल सुशीला–आधुनिक हिन्दी कहानी में नारी की भूमिकाएँ, पृ.८१–८२

५०. शर्मा क्षमा–मोबाइल, पृ.१२

५१. शर्मा क्षमा–नेम प्लेट, पृ.२१

५२. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.९३

५३. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ ३१९–३२०

५४. शर्मा क्षमा–लड़की जो देखती पलटकर, पृ.४६

५५. शर्मा क्षमा–लवस्टोरीज़, पृ ८८

५६. कमलेश्वर–नयी कहानी की भूमिका, पृ.१५९

५७. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१२१

५८. शर्मा क्षमा–इक्कीसवीं सदी का लड़का, पृ.१३८

५९. शर्मा क्षमा–नेम प्लेट, पृ.७९

६०. शर्मा क्षमा–लव स्टोरीज़, पृ ४०

षष्ठ अध्याय

क्षमा शर्मा का योगदान

क्षमा शर्मा उन आधुनिक महिला कथाकारों में से हैं जिन्होंने कथा साहित्य के क्षेत्र में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली है। आधुनिक कथा साहित्य में उनका विशेष स्थान है। क्षमा जी उपन्यासकार, कहानीकार, वक्ता, संपादक तथा उच्च कोटी की संवेदनशील चिंतक भी हैं। प्रतिभा की धनी तथा भाषा पर प्रभुत्व रखनेवाली लेखिका क्षमा शर्मा ने भिन्न-भिन्न विषयों पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति की है। उनका मानना है कि साहित्यिक रचना का समाज पर प्रभाव धीरे गति से होता है, फिर भी समाज चेतना तथा संस्कार बदलने का सामर्थ्य साहित्य कृति में होता है इसीलिए सृजनशील साहित्यकार बाधक रुढ़ियों में बदलाव लाने का प्रयास करता है। क्षमा जी भी नयी मूल्य व्यवस्था का निर्माण करना चाहती है जो सामाजिक न्याय पर आधारित हो।

क्षमा जी कथा-साहित्य के विविध आयामों को स्पर्श करती है। साथ ही सशक्तिकरण की एक प्रबल आवाज भी देती है। उनका कहना है, 'बेशक दुनिया जल्दी में उस तरह नहीं बदली जा सकती जिस तरह हम स्त्रियाँ चाहती हैं लेकिन दुनिया बदलेगी ही नहीं, ऐसा हो नहीं सकता। फैज का एक प्रसिद्ध शेर है- 'एक खेत नहीं, एक बाग नहीं, हम सारी दुनिया माँगेंगे।' एक महिला लेखिका की हैसियत से क्षमा जी स्त्रियों की पीड़ा को समझती हैं तथा स्त्री मुक्ति के उपायों को खोजने की कोशिश करती हैं। नारी हित से प्रेरित कोरे सिद्धांतों के बजाय उनको व्यवहार में लाना जरुरी समझती हैं और इन सिद्धांतों की उपयोगिता स्थापित करती हैं।

हिंदी साहित्य में आधुनिक महिला रचनाकारों का रथ अनेक दिशाओं में जा रहा है और उसे कामयाबी भी प्राप्त हो रही है। इसी दौर के ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, दीप्ति खंडेलवाल, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, मंजुल भगत, सुधा अरोड़ा, शशिप्रभा शास्त्री तथा क्षमा शर्मा आदि विशेष उल्लेखनीय नाम हैं, जिन्होंने स्त्री जीवन से संबंधित अनेकानेक सवाल बड़ी गहराई से प्रस्तुत किए हैं, जिन्हें व्यावहारिक नजरिये से देखा जा सकता है।

इस संदर्भ में साधना अग्रवाल क्षमा जी के मोबाइल उपन्यास के बारे में कहती हैं, ''इधर हाल में लेखिकाओं द्वारा लिखे गये उपन्यासों में खासकर–ममता कालिया का 'दौड़', 'मैत्रेयी पुष्पा का 'विजन', लवलीन का 'स्वप्न ही रास्ता है' से उपन्यास इस अर्थ में हटकर हैं, क्योंकि इसमें मोबाइल एक प्रतीक है और कथा विन्यास में नया ट्रीटमेंट हैं।''[१]

क्षमा जी अपने साहित्य में स्त्री अधिकारों की बात एकतरफा नहीं करती है। वह बगैर उग्र हुए, बेलाग तरीके से अपनी बात कहते हुए सिक्के के दोनों पहलू बिना किसी आग्रह–दुराग्रह के आराम से उलटती चलती है। क्षमा जी की यह खूबी ही कही जाएगी कि वे संस्कृति, परंपरा, आधुनिकता, वैश्वीकरण, मीडिया, तकनीक आदि की दोनों तरफ की भूमिकाओं को सहज भाव से देख पाती हैं, जो स्त्री को उसकी अस्मिता की पहचान कराने में मदद भी करती है और किसी–न–किसी रुप में शोषित होने को अभिशप्त भी करती है।

महिला संगठनों और पत्रकारिता से लम्बे समय से जुड़ी क्षमा शर्मा बौद्धिक विमर्शकार के रूप को प्रस्तुत करती है। साथ ही आम जनता और उसके जीवन यथार्थ से जुडाव–अलगाव की व्यथा–कथा भी कहती है। उनका विमर्श स्त्री–मुक्ति से आगे स्त्री–स्वातन्त्र्य की प्रस्तावना करता है जिसमें स्त्री आत्मदया से ग्रस्त नहीं है। वर्जनाओं और कुंठाओं को मध्यवर्गीय स्त्री न सिर्फ तोड रही है, बल्कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था के तमाम प्रयासों को विफल भी कर रही है। उनका साहित्य स्वतन्त्रता का परिपूर्ण बोध कराता है। इनके चरित्र बाहर और भीतर दोनो परिवेशों में स्वतन्त्रता को लेकर अपने दिमाग में बहुत स्पष्ट है। क्षमा शर्मा की स्त्रियों को, ऐसा नहीं कि भावुकता अपने लुभावने जाल में नहीं फँसाती–घेरती लेकिन उससे बढ़कर वे बुद्धि और आत्मविश्वास का बल अर्जित करती है।

क्षमा जी ने भौतिक, पारिवारिक, सामाजिक जीवन के स्थूल और सूक्ष्म रुपों का विस्तृत एवं व्यापक चित्रण किया है। विशेष कर नारी जीवन के विविध पक्षों को परिवेश की परिवर्तित रोशनी में सूक्ष्मता से पहचानने का प्रयास किया है। स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि स्त्री और पुरुष को समान्तर स्तर पर स्थापित करने के लिए आस्थापूर्ण प्रयास कर रही है। वर्तमान में नारी का अधिकार क्षेत्र पहले की अपेक्षा बहुत अधिक विस्तृत एवं व्यापक हो गया है। समाज में उन्हें 'स्व' की प्रतिष्ठा

भी मिल रही है। अनेक क्षेत्रों में वह पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। इतना कुछ प्रगति कर लेने के बावजूद भी अचेतन स्तर पर आज भी वह संस्कारयुक्त नारियों के समान कुछ हद तक पराश्रित एवं बंधन युक्त है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में, नारी के जीवन में आए अनेक नये मोडों को लेखिका ने जीवन के यथार्थ पहलुओं से जोडकर प्रस्तुत किया है। अस्तित्व की स्थापना के लिए संघर्षरत नारी, जीवन की विभिन्न भूमिकाओं को निभा रही है। परम्परागत भाभीवादी–दीदीवादी परम्परा से वह मुक्त है क्योंकि वह सहानुभूति की नहीं, संघर्ष की नयी भूमी चाहती है। अतः लेखिका ने नारी को उस इकाई के रुप में प्रस्तुत किया है जिसे जीवन के अनेक संदर्भों, एवं नयी दिशाओं से गुजरना पड रहा है।

उनके साहित्य की स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र नजर आती है। शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन की आहट से पता चलता है कि नारी की स्थिति में कुछ सुधार हुआ है। वह उच्च शिक्षा ग्रहण कर आत्मनिर्भर हो रही है और उसे अपना जीवन सुरक्षित नजर आ रहा है। स्त्री की बढती हुई स्वतंत्रता एवं उसके स्वतंत्र विचारों के कारण स्त्री पुरूष के सम्बधों में समानता नजर आ रही है, जिसका सार्थक चित्रण लेखिका ने किया है। नैतिकता के परिवर्तित स्वरूप पर भी लेखिका ने दृष्टि फेंकी है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में जिस नवीन नैतिकता को आश्रय मिल रहा है उसके परिणामस्वरूप परम्परागत नैतिक बोध मिटता जा रहा है। नयी पीढी पूर्ण रूप से नयी नैतिक मान्यताओं को अपनाती हुई आधुनिक वातावरण में साँस ले रही है।

लेखिका की लेखनी से जिन समस्याओं का प्रतिपादन हुआ है वे समस्याएँ बड़ी सीमा तक स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत की समस्याओं से भिन्न हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त की नारी अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, अशिक्षा आदि समस्याओं की शिकार बनी हुई थी। लेकिन आधुनिक काल की नारी स्वतंत्रचेता बनकर अधिकारों की रक्षा के लिए तुली हुई लगती है और साहित्य का केन्द्र बिन्दु बन जाती है।

क्षमा जी के साहित्य में समाज स्थितियों पर विचार करने से पता चलता है कि जीवन के अनुभूत क्षणों के बहुविधीय पक्षों पर सूक्ष्म अर्न्तदृष्टि डालकर लेखिका ने उन जीवनानुभवों को शब्द रूप दिया है। इसी वजह से अधिकांश स्थितियाँ जीवन्त लगती है। साधना अग्रवाल के अनुसार

'' 'मोबाइल' क्षमा शर्मा का सद्यःप्रकाशित नया उपन्यास है जिसमें विश्व बाजारवाद की संस्कृति और नयी प्रोद्योगिकी के माध्यम से सामाजिक जीवन में हो रहे परिवर्तन को सामने लाया गया है। ''[२]

लेखिका ने स्त्री स्वर, उनकी समस्याएँ, उनकी संवेदनाएँ और उनका मुखर प्रतिरोध द्वारा स्त्री जीवन का मार्मिक चित्रण किया है। यह स्वर अपने संप्रेषण और प्रभाव के लिए अलग ही शैली अपनाए हुए है। 'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' जैसे कहानी संग्रह परंपराओं, सामाजिक विश्वासों और अंध रूढ़ियों को उनके विद्रुप्त परिणामों की और ले जाकर स्पष्ट सकारात्मक संकेत देते रहते हैं। लेखिका की यह शैली प्रतिशोधात्मक और कटु न होकर सकारात्मक दृष्टिकोण के निर्माण में प्रभावशाली होती दिखाई देती है। उदाहरण के लिए 'दादी माँ का बटुआ' कहानी प्रतीकात्मक रूप में, मादा भ्रुण हत्या को एक मूल्य और सामाजिक आवश्यकता के तौर पर स्थापित किए जाने के कुचक्र को व्यंग्यात्मक शैली की तरह प्रस्तुत करती है।

समीक्षक रजनी गुप्त के अनुसार, ''अधिकांश कहानियों में 'जैसे-'खेल', 'फादर', 'अलविदा', 'एक है सुमन', 'व्युह', 'डोर', 'नेम प्लेट', 'रसोईघर', 'सेमिनार' आदि' वे पात्रों की पारिवारिक स्थितियों को 'जस-का-तस' स्वीकारने के बजाय पूरी सतर्कता के साथ बदलाव की मुहिम छेड़ देती है। बाजार की चकाचौंध का प्रतिफलन है स्वार्थ के दलदल में धँसते रिश्ते हैं। 'जय श्रीराम', 'नेम प्लेट' , 'रास्ता छोड़ो डार्लिंग', 'एक शहर अजनबी' संग्रह की उत्कृष्ट कहानियाँ हैं। जिनके जरिए वे तकनीक की आपाधापी के बीच मनुष्यता की रक्षा की मुहिम छेड़ सकती है।''[३] हताशा से आशा की तरफ सकारात्मक संकेत लेती कहानियों में विवरणों की प्रचुरता और पात्रों की मनोदशा का विश्लेषण इन कहानियों की प्राणवत्ता है।

लेखिका अपने साहित्य में मनुष्य के अंतर्जगत पर प्रकाश डालते हुए जीवन के चौथेपन के सुख-दुःखों को उनके विकल्पों को ढूँढती है। 'दूसरा पाठ' उपन्यास में शिक्षा के प्रारंभिकता से लेकर युनिवर्सिटी स्तर तक के बहुविध चित्र स्पष्ट करती है। अफसरी शोषण के कई किस्से बताती है। क्षमा शर्मा की कहानियों का विषय भी चकित कर देता है, इनमें कहीं पति का अहं तो कहीं सौतेली माँ का अप्रत्याशित सद्भाव, कहीं 'लिव-इन-रिलेशनशिप' की संगति-विसंगति, कहीं पडोसियों का मोर्चा दिखाई देता है। वह जिंदगी समाज और संसार तथा सांसारिकता के अंतर्संबंधों के कई पक्षों,

रंगों और विद्रूपों का अंकन करती है। उनकी कहानियों में कस्बे, छोटे शहर और कहीं-कहीं महानगर भी अपनी जड़ मानसिकता के साथ दिखाई देती है। ''इनका मध्यवर्गीय सोच एक खास तरह का माहौल प्रस्तुत करता है। दरअसल, यह पूरे भारतीय मध्यवर्गीय सोच का प्रतिनिधित्व करता है। इनमें उसकी पुरातनता भी मौजूद है और बदलते भूमंडलीकरण के दौर की विकृतियों और सुधार दोनों की झलक दिखाई देती है। इसी में कई बार मानवीय सरोकार भीतर को छूने लगते हैं।''[४]

उनकी ज्यादातर कहानियाँ और उपन्यास नारी की आवाज को गति देने में अधिक प्रयत्नशील रहे हैं। वे अपने लेखन कार्य में 'नए विचार में स्त्री की स्थिति' को ही केंद्र में रखती हैं। 'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास में तो स्त्री, कथा की निमित्त मात्र नहीं है बल्कि वैचारिक उन्नति और वैज्ञानिक उपलब्धियों के युग में भी स्त्री को केवल उपभोक्ता और उपभोग की वस्तु बनाए रखने की चेष्टा है। उसे इज्जत का प्रतीक मान उसके सम्मान को नष्ट करने की पुरानी मनोवृत्ति की पुष्टी को नकारती है। इनमें संवेदना का स्तर ही नए वैचारिक धरातल की माँग करता है। यहाँ अपने अस्तित्व की पहचान के लिए संघर्षरत नारी का आक्रोश दिखता है, संघर्ष करने की अदम्य इच्छा दिखती है। ''यह जरुर है कि विचार स्वातंत्र्य के इस युग में अब भी एक औरत अपने होने-न-होने की पीड़ा से गुजर रही है। उन्मुक्त जीवनशैली की पक्षधर महिलाओं को आज भी अपने जन्म लेने की सार्थकता की तलाश है।''[५] इस वेदना के पीछे एक औरत के मनोविज्ञान को जरुर समझा जा सकता है। इस बारे में क्षमा शर्मा कहती हैं कि, ''औरतों के मसले पर राजनेता चिंता चाहे जितनी जताते रहे हों, मगर जब सचमुच कोई ठोस निर्णय लेने की बात आती है, तो वे सबसे पहले महिलाओं को ही खदेडते हैं। साथ ही महिला संगठनों को आगाह करते हुए वह कहती है कि ''यह वक्त है जब महिला संगठनों को चेतना चाहिए।''[६] क्षमा शर्मा के लेखन से गुजरने का मतलब है, आज की समस्याओं से जुझतीं अपने आसपास की महिलाओं को जानना और समझना।

जिंदगी को निखारते हुए हर एक आदमी का वास्ता जिंदगी के सातों रंगों से पडता है, इसी सत्यता को लेखिका परिवार संस्था पर बल देते हुए दर्शाती हैं। ''क्षमा शर्मा का कहानी संग्रह 'घर-घर तथा अन्य कहानियाँ ' जीवन के विविध रंगों को एक सूत्र में पिरोता हुआ इसी प्रकार का संग्रह है जो सीधे आम आदमी की जिंदगी से जुडे मुद्दों को छूता है और आपको यह अहसास दिला देता है

कि कहानी का नाटक या पात्र आपका चिर परिचित पड़ोसी, रिश्तेदार या सहकर्मी सरीखा ही है। ''[७] लेखिका सीधे जिन्दगी से जुड़े पहलुओं और वास्तविकताओं को लेकर साहित्य की रचना करती है। आम आदमी के जिंदगी भर के संघर्ष और उसके यथार्थ को प्रतिबिंबित करती है। जैसे 'मोबाइल' उपन्यास में तीन बिंदुओं को समेटने का प्रयास किया है। पहला, जीवन और संबंधों को समझने के पुरुष और स्त्री के विचारों का अंतर। दूसरा, अपनी अस्मिता के लिए स्त्री का वैचारिक संघर्ष और तीसरा, समाज की उन रूढ़ियों को नकारने का प्रयास जो औरत को यथास्थिति में बनाए रखने का प्रयास करता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तेजी से बदलते घटनाचक्र के चलते आर्थिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में क्षमा शर्मा का लेखन नारी शक्ति तक अपने को सीमित करने के बजाय बड़े शहर में आए दिन की आकांक्षाओं-चुनौतियों, राग-द्वेष तथा नियति के विषम चक्र में मध्यवर्गीय जीवन के डूबने-उतरने का जायजा लेता हैं। ''इसी प्रक्रिया में कहानी समाज-समीक्षा का काम भी करती चली आती है। समय का आकलन तो क्षमा की कहानी का मूल मिजाज ही है। यहाँ समय की विडम्बनाएँ भी हैं, कला की अबूझ-गूढ़ रचना भी और राजनीतिक कला के पैंतरे भी।''[८]

नारी जीवन संबंधी दृष्टिकोण जिस तरह लेखिका ने अपने लेखन में प्रतिबिम्बित किया है वह अपने में एक महत्त्वपूर्ण विषय है। कहानियाँ नारी के जज़्बातों को, उसके अस्तित्त्व की समस्याओं को सकारात्मक स्थितियों से जोडकर देखने की कोशिश करती हैं। बदलती हुई मान्यताओं के आधार पर नारी का जो स्वरूप रूपायित होने लगा है वह एक ओर तो दूसरी ओर भारतीयता की सीमाओं से परे अन्तर्राष्ट्रीय भावधारा से प्रभावित भी। इस कारण समसामायिक साहित्य में आधुनिक नारी की जो झलक मिलती है वह पूर्णतया नयी है, विवादास्पद है, और नारी चरित्र के नये विकास की ओर संकेत करती है। समसामायिक बोध से प्रभावित इस विचारधारा की गहरी छाप लेखिकाओं की लेखनी में देखी जा सकती है।

क्षमा शर्मा 'शस्य का पता' उपन्यास में हिंदी साहित्य में अछूते विषय को अपनाकर आधुनिक काल की महत्त्वपूर्ण समस्या पर्यावरण विनाश पर न केवल प्रकाश डाला है, अपितु इस समस्या का समाधान भी प्रस्तुत किया है। उपन्यास में वह सवाल उठाती है कि यह धरती सिर्फ मनुष्यों के लिए क्यों? यदि इस धरती पर पेड-पौधे, पशु-पक्षी नहीं रहेंगे तो इसका क्या होगा?

पर्यावरण असंतुलन के वजह से पशु-पक्षियों का व्यवहार बेरूखा सा हो रहा है। उजाड़ में बदलते पर्यावरण की तरह उनका व्यवहार और स्वभाव भी बिगड़ रहा है। अगर आधुनिकता का यहीं प्रतिफलन है तो मनुष्य स्वभाव धर्म का क्या होगा? जिस पर्यावरण से मनुष्य परोपकार, दानत, नम्रता आदि मूल्य अवगत करता है, अगर यहीं नहीं रहेंगे तो मनुष्य के मूल्य बोध का भविष्य क्या होगा?

आधुनिकता के दौर से गुजरते हुए हम शिक्षा जैसे क्रांतिपर्व को अछूता नहीं रख सकते। 'दूसरा पाठ' उपन्यास में लेखिका शैक्षिक वातावरण से बोध कराती है कि अगर भ्रष्टाचार के महारोग का निदान नहीं किया गया तो सारा देश इस रोग से पीड़ित होगा। अच्छा होगा अगर हम वक्त के पहले संभल ले। वरना आनेवाली अनगिनत अड़चनों का सामना करते हुए हम दो पग आगे और चार पग पीछे रह जाएँगे। लेखिका कथन में एक प्रश्नचिन्ह सामने खड़ा करती है और साथ ही उसका हल प्रस्तुत करती है। देरी सिर्फ इस बात की है कि हम कब तक इस सच्चाई से मुँह मोड़े रहेंगें।

प्रायः सभी लेखिकाओं ने नारी के आधुनिक स्वरूप को उभार कर समाज में स्त्री-पुरूष की समानता पर बल दिया है और लेखिका ने भी आधुनिक नारी को इस तरह साकार किया है कि वह भी पुरूषों के समान्तर चल कर अपनी जागरूकता और प्रबुद्धता का परिचय देती है। नारी वर्ग में नवोन्मेष व नयी जागृति का सूत्रपात स्वातन्त्रोत्तर काल से ही होने लगा था। आधुनिक काल ने इस सुषुप्त नारी को जागृत कर उसे अपने अधिकारों के प्रति सचेत कराया है। यहीं बात 'नेम प्लेट' कहानी संग्रह में महानगरीय जीवन की आपाधापी में भागते-दौड़ते चरित्रों के मार्फत कही गई हैं। इनमें नारी मन के भिन्न कोणों और परिस्थितियों में गहरी पड़ताल है। लेखिका बहुत धीमें और जाने-पहचाने रास्ते से किसी एक स्त्री पात्र के जीवन का कोई पहलू निष्पक्षता से उभारकर पाठक के सामने रखती है। जिसके बाद पाठक का उस पात्र की चिंताओं और आकांक्षाओं के प्रति प्राकृतिक खिंचाव बन जाता है। कहानियाँ किसी भी 'वाद' से परे जीवन की तटस्थ व्याख्या है, जो पाठक से भी तटस्थ चिंतन की माँग करती हैं।

वह शहरी स्त्री के बहाने से समूचे शहरीकरण पर भी पुरजोर कटाक्ष करती है। साथ ही कहानियाँ शहरी स्त्री के जीवन के प्रति नित बदलते नजरिए का कहीं समर्थन करती हैं, तो कहीं उन्हें चेताती भी हैं। कहानियों में लेखिका की दृष्टि आधुनिक नारी के उत्तरदायित्वों के प्रति साफ और

निरपेक्ष है। इसकी सबसे बड़ी मिसाल 'अगली सदी की लड़की' कहानी है। क्षमा शर्मा कहानियों के जरिए पाठकों से संवाद करती हैं, जो कहानियों के परिवेश की दृष्टि से निहायत जरूरी है। संग्रह की कुछ कहानियाँ स्त्री–संसार के विराट को अभिव्यक्त करने की उद्दामभरी इच्छा हैं। कहानियाँ जो माहौल रचती हैं, उसमें आत्मस्वीकृतियाँ हैं और आत्ममुठभेड भी है। इन कहानियों में यह परखने का प्रयत्न भी है कि भरे–पूरे परिवार में, पार्टियों में, दफ्तरी–जीवन में एक अदद अकेलापन स्त्री का पीछा करता रहता है। नारी की प्रगति और नारी स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए भी यह प्रश्न इन कहानियों की तह में छुपा रहता है। ''वरिष्ठ कथा लेखिका क्षमा शर्मा का यह कहानी संग्रह इस लिहाज से पठनीय हैं क्योंकि इसमें उभरती हुई स्त्री–चेतना के अम्लान अकुंर हैं। इन नवांकुरों की रक्षा की जानी चाहिए।''[९]

लेखिका ने नारी के एक स्वतंत्र व्यक्तिमत्व को ही चित्रित किया है। ये ऐसी स्त्रियाँ है जो स्वयं निर्णय लेती हैं, किसी के दबाव के नीचे रहना पसन्द नहीं करती हैं और जब चाहे, जो चाहे करती हैं। उनका एक अलग व्यक्तित्व हमारे सामने प्रकट होता है। 'कस्बे की लड़की' कहानी में ऐसे ही स्वतंत्र व्यक्तित्व रूपी नारी चरित्रों को उजागर किया गया है। लेखिका उसे क्रांति का मार्ग बताती है। उन्हें नारी मन के द्रवीभूत संवेगों आवेगों को लिपिबद्ध करने की दृष्टि है। वह नारी संवेदना को किसी न किसी रूप में स्वर देती है। यह किन्हीं रूढ़ अर्थो में स्त्री–प्रधान कहानियाँ नहीं है जो विवशता, दयनीयता अथवा नारी जागरण जैसे नारों से इकट्ठी होती है। बल्कि आंदोलनों के बल पर अपना रूप गढ़ती है। वह अपने सहयोगी प्रतियोगी पुरूष समाज का सामना करते हुए, उस सारी स्थिति से जूझ कर अपने व्यक्तित्व को उजागर रखने में कामयाब है। लेखिका इन कहानियों के गहराई में उतरती है, उन्हें वर्णनात्मकता से बचाती हुई अधिक आत्मीय बनाती है। क्षमा जी की कहानियाँ अपनी बात उमदा अंदाज में कहती हैं, जिससे पाठक को पुस्तक समाप्त होने के बाद भी हमेशा याद आती रहती है।

क्षमा शर्मा की कहानियाँ यथार्थ–बोध सोच और अभिव्यक्ति के स्तरों पर आश्वस्त करती हैं। 'एक लड़की और सत्रह किस्से' में जो लड़की है, वह पूरे आत्मविश्वास से अपने ऊपर लगे आरोप को खारिज करती है। 'पापा के एपिसोड में बेटा' में अपनी अस्मिता को पहचान चुकी नारी

अपने पुत्र के दबाव में भी नहीं झुकती। 'छिनाल' कहानी में अपने दुख से उभरने के संकल्प और अपने ढंग से जीने की इच्छा पर अँगुली भले ही उठें, परंतु लेखिका ने यहाँ नारी की मुक्ति का सकारात्मक अध्याय छेड़ दिया है। इन कहानियों की वास्तविकता ही इनकी वैचारिक उर्जा है। इनमें विचार और संवेदना की सफल जुगलबंदी है। इन कहानियों की चर्चा इनके अद्‌भुत रचना-विधान के चलते हुए होती है। मुक्तिबोध ने 'नयी कहानी' से अपेक्षा की थी कि उसमें व्यक्ति समस्या को मानव समस्या बनाकर एक व्यापक पार्श्वभूमि में उपस्थित किया जाएगा। नयी कहानी और बाद की कहानी ने ऐसा किया भी है। क्षमा शर्मा की ज्यादातर कहानियाँ भी परिवार, शहर और वर्ग विशेष की समस्याओं को विसंस्कृतिकरण, आर्थिक-सांस्कृतिकता की व्यापक पृष्ठभूमि में कथात्मक रचाव का प्रमाण देती हैं। इन मार्मिक कहानियों में अधिकतर महिला कथाकारों जैसी निर्जीव वैचारिकता नहीं है और यही इस संकलन का गुण है।

उत्तर आधुनिकता के इस दौर में साहित्य से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह किसी बड़े सत्य का वाहक बने या कोई बडा संदेश दे, बल्कि उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को देखने-समझने में मददगार साबित हो। लेखिका क्षमा शर्मा ने अपने समय की चुनौतियों को न केवल स्वीकार किया है, बल्कि उसके जटिल यथार्थ से जुड़े पहलुओं को पकड़ने की कोशिश भी की है। कहानी संग्रह 'थैंक्यू सद्‌दाम हुसैन' को इस सिलसिले में देखा जा सकता है। इन कहानियों को पढ़ते हुए बारबार यह महसूस होता है कि इन के माध्यम से लेखिका की यही कोशिश रही है कि उदारीकरण के इस दौर में महिलाओं का जीवन किस तरह प्रभावित हुआ है, उसके विविध रूपों को देखने की कोशिश की जाए। ये कहानियाँ भारतीय परिवेश के मध्य वर्ग में व्याप्त विषमताओं को उनकी गहरी संवेदना के साथ उजागर करती हैं और वे लगातार इस कोशिश में होती हैं कि एक सार्थक बदलाव लाया जा सके। समाज को वे सद्य स्थिति में स्वीकार करने के पक्ष में नहीं हैं, उनके सरोकारों में शामिल है एक सच्ची और सहभागी दुनिया की तलाश।

क्षमा शर्मा का कथालोक अत्यन्त सघन है और वे जीवन के अलग-अलग विषयों पर अपनी कलम चलाती हैं। उनकी कथाभाषा बिल्कुल नये लिबास में आती है जो दुरुह तो है पर अपनी संवेदना और मार्मिकता के साथ पाठक से अपना रिश्ता बना लेती है। इनके लेखन में विशिष्ट

विमर्श नहीं बल्कि समग्र 'जीवन विमर्श' समाता है। जीवन की अनेकों समकालीन समस्याएँ और उत्तर जीवन की भी चुनौतियाँ अपनी पूरी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त होती हैं। आज के अनिश्चित, स्वार्थी और घबराये समय में क्षमा जी आदमी की उलझन, उसकी कुंठा, उसकी हताशा और उसके स्वार्थ को अपनी किस्सों के जरिए पाठक से बाँटती हैं। इनके लेखन में निहित संवेदना या सरोकार इनके साहित्य को सार्थक बनाते हैं। पाठक खुद को इनके साहित्य के साथ जोड़ते हैं। शिल्प की दृष्टि से बौद्धिक होते हुए भी संवेदनात्मक धरातल पर मन को बाँधते हैं।

भाषा की दृष्टि से लेखिका का हिंदी कथा–साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनकी भाषा में कुछ ऐसा आकर्षण है कि पाठक की उत्सुकता को बराबर बनाए रखता है। शब्दों के पार जाकर पाठक स्थितियाँ समझ लेता है और आगे बढ़ जाता है। वे भाषा–शैली के प्रति अत्यधिक जागरूक हैं। विशेषतः उनके 'शस्य का पता' उपन्यास और 'लव–स्टोरीज़' तथा 'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' की शैल्पिक दृष्टि से काफी चर्चा हुई है। अत्यन्त सहज, सम्प्रेषणीय, पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग उन्होंने किया है। भाषा के माध्यम से वे पूरा का पूरा दृश्य पाठक के हृदयपटल पर अंकित करने में सफल होती हैं। इसका कारण यह है कि लेखिका वातानुकूलित कमरों में बैठकर कल्पना की उड़ान से साहित्य नहीं लिखती, बल्कि वे उस मिट्टी से जुड़ी हैं जिसमें उनके पात्र जीते हैं। फुरसत के समय के बारे में क्षमा जी का कहना है, ''विकल्प हो तो शायद घूमना चाहूँगी। समुद्र के किनारे रहना या पहाड़ों पर शाम बिताना या किसी नदी के किनारे एकांत कमरे में। आपको ये बातें बहुत रोमांटिक लग रही होंगी, मुझे भी लग रही हैं। मैं जानती हूँ कि इनमें से एक काम भी नहीं कर पाऊँगी। एक दिन बाद ही मुझे अपना घर, सुधीश पचौरी जैसे अच्छे इंसान और अपने बच्चे याद आ जाएँगे और सब कुछ छोड़कर मैं उधर दौड़ पड़ूँगी, फिर किसी अधूरी कहानी को पूरा करने में जुट जाऊंगी।''[१०]

अतः जीवंत पात्रों के बीच रहने वाली क्षमा शर्मा के पात्र, परिवेश, भाषा निर्जीव कैसे रह सकते हैं? यह कहा जा सकता है कि कथ्य की विविधता के साथ ही भाषा और शैली की विविधता उनके साहित्य की विशिष्टता है।

क्षमा शर्मा : अन्य अलोचकों के विचार

''क्षमा शर्मा लंबे अरसे से लेखनरत हैं और इधर उनकी कहानियाँ अधिक प्रखर तथा नई भाषाई संरचना के साथ सामने आई हैं।''[११]

–ज्ञानप्रकाश विवेक

''क्षमा शर्मा की कहानियों, उनके विषय चयन में एक ताजगी होती है। इसके कारण पठनीयता का स्वाभाविक गुण उनकी कहानियों में होता है। कथानक ही नहीं, क्षमा शर्मा की भाषा भी विविधवर्णी है और वे यथावसर उसका बेहतर उपयोग करना भी जानती हैं।''[१२]

– प्रभात रंजन

''इसमें कोई संदेह नहीं है कि क्षमा शर्मा एक समर्थ कहानी–लेखिका हैं, विषयों के चुनाव में पिष्ठपेशन नहीं है, तात्कालिक समस्याओं की नब्ज़ पर उनकी पकड मजबूत है, कहानी के 'कथ्य', 'ट्रिंटमेंट' और जीवन के उद्देश्य के प्रति सजग दृष्टि रखती हैं।''[१३]

– प्रेमप्रकाश भाटिया

''निस्संदेह क्षमा शर्मा ने जो कुछ भी लिखा है वह बेहिचक व स्पष्ट लिखा है। दुराग्रह का अभाव संग्रह की अपनी विशेषता है। 'कस्बे की लड़की' क्षमा शर्मा की सशक्त अभिव्यक्ति है।''[१४]

– नरेंद्र कुमार

''आज के आपाधापी भरे समय में जिजीविषा एवं मानवता को बचाने की ललक सँजोए लेखिका हर अन्याय का रचनात्मक प्रतिवाद करने का जोखिम उठाती है जिसे कैसे भी कमतर करके नहीं आँका जा सकता। ''[१५]

– रजनी गुप्ता

''क्षमा शर्मा के कथा साहित्य को पढ़ते हुए जो बात पाठक को बार–बार मथती है वह है उसका स्त्री–पुरूष संबंधों के उत्स को पहचान मूल वृत्तियों को तार–तार करने में इतना निमग्न हो जाना कि इन रिश्तों का सच खुद–ब–खुद उभरने लगे। इसी कारण एकबारगी देखने पर उनकी स्त्रियाँ मर्दवादी होने का संभ्रम भी पैदा होने देती हैं पर गहरे में यह रोमानियत से अलग होने की चेष्टा होती है जिससे वे चौतरफा आत्म–प्रवंचना के जाल से मुक्त हो सके।''[१६] – राजेंद्र सहगल

''कथा लेखिका ने एक नए किस्म की कथा शैली और विन्यास इजाद किया है। वह कहानी के समानान्तर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय हलचलों के कथा-सूत्र कहानी में जज्ब करती चलती हैं। इस तरह से कहानी का सृजन काल भी ताकत की भाँति उभरता है।''[१७]

– ज्ञानप्रकाश विवेक

''क्षमा शर्मा की कहानी में प्रायः यह प्रतीत होता है कि वे यशपाल की तरह विचार के विस्तार पर यकीन करती हैं। जैसे 'सन्दर्भहीन' सरीखी कहानी बताती है कि कितनी ही चीजें हमारे आसपास ऐसी होती है जो सन्दर्भहीन होते हुए भी परस्पर जुड़ती चली जाती हैं।''[१८]

– महेश दर्पण

''निःशब्द प्रतिरोध की जगह मुखर चेतना की संवाहिका क्षमा शर्मा की कहानियों में नारी-विमर्श का एक अलग तेवर दिखाई पड़ता है। अपने अनुभवों की जमीन पर सीधा संवाद करने वाली नयी पीढी की यह आधुनिक स्त्री अपने निर्णयों में निभ्रांत और दृढ़ संकल्पों से भरी हुई है। बेशक, इस आधुनिक स्त्री की अपनी उपलब्धियाँ भी है और अंतर्विरोध भी।''[१९]

– रामधारी सिंह दिवाकर

''क्षमा शर्मा एक सुपरिचित नाम है, महिला लेखन के क्षेत्र में। स्त्रियों की दशा और दिशा पर उनका महत्त्वपूर्ण काम है। उनकी पारदर्शी नजरें पुरूष के तिलिस्म को बखूबी ताड़ जाती है।''[२०]

– विवेक द्विवेदी

''आज की स्त्री का यथार्थ उसकी दलित, पीड़ित, असहाय स्थिति में नहीं हैं। उसकी तीखी प्रतिक्रिया और संघर्ष में है। क्षमा शर्मा ने आज की स्त्री के इसी यथार्थ को अभिव्यक्त किया है।''[२१]

– रामकृष्ण पांडेय

सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि कहानी और उपन्यास लिखनेवाली क्षमा जी सशक्त यथार्थवादी कलाकार हैं। यथार्थवाद किसी कलाकार के लिए उसकी शक्ति है। यदि कोई कलाकार अपनी कला से हटकर, कल्पना का सहारा लेकर चित्रण करता है तो उसे कल्पनाजीवी का करार दिया जाता है। यदि उसकी कल्पना किसी आदर्श की ओर उन्मुख होती है तो उसे आदर्शवादी मान लिया जाता है। कल्पनावादी हो या आदर्शवादी, दोनों स्थितियाँ एकांतिक हैं। इन दोनों के बीच

यथार्थ स्थित है और भारतीय संस्कृति हमेशा से मध्यम मार्ग की उपासिका रही है। इसलिए यथार्थवादी साहित्यकार की महत्ता बनी रही है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि क्षमा जी ने हिंदी कथा साहित्य को एक नई दृष्टि प्रदान करने का प्रयत्न किया है। समाज को एक नई दिशा दिखाने की चेष्टा की है। क्षमा जी का समग्र साहित्य उनके सीधे-सादे और सच्चे व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करनेवाला है। इसमें झाँकनेवाले पाठक वर्ग को अपनी अनुभूतियों की प्रतिच्छाया जब उसमें दिखाई देती है तो पाठक भावविभोर हो जाता है। यही कारण है कि क्षमा जी अपने प्रारंभिक लेखनकाल से लेकर आजतक बराबर सम्मानित होती रही हैं। क्षमा जी ने जहाँ आधुनिक प्रगतिशील नारी का चित्र अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है वहीं उन्होंने पर्यावरण, राजनीति तथा शिक्षा के क्षेत्र में जुड़ी समस्याओं से भी समाज को अवगत कराने का प्रयत्न किया है। आलोचकों द्वारा जिस तरह के अनुभवों के बारे में सीमा-संकेत किए जाते रहे हैं, क्षमा जी ने उन सभी सीमाओं का अतिक्रमण सहज रूप में किया है।

क्षमा जी जिस कुशलता से घर, परिवार और सम्बन्धों को कथात्मक सौंदर्य से बाँधती हैं, उसी कुशलता से घर के बाहर निकलकर एक्जीक्यूटिव्ह क्लास, विज्ञापन की चकाचौंध भरी दुनिया, दफ्तरों की वातानुकुलित जिंदगी और साथ-साथ निम्न वर्ग की उस दबी-पिसी जिंदगी के आर्थिक दबावों और तनावों को भी रेखांकित करने में सफल हुई हैं। उनके कथा-साहित्य के अधिकांश पात्र भावुकता की तर्कहीन धारा में न बहकर आर्थिक दबावों के यथार्थ को स्वीकार करते हुए अधिक प्रभावपूर्ण बनते हैं। इन्हें वैविध्यपूर्ण कथ्य और शिल्प के साथ-साथ भाषा के स्तर पर प्रस्तुत करने में क्षमा जी की सजगता उल्लेखनीय है। इस प्रकार यह कहने में हमें जरा भी संकोच नहीं होता है कि क्षमा जी ने समाज को अपने कथा-साहित्य के माध्यम से एक नई दिशा देने का प्रयत्न किया है तथा इसमें उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई है। हिंदी कथा साहित्य के विकास में उनका यह विशेष योगदान है।

सन्दर्भ : षष्ठ अध्याय

१. अग्रवाल साधना–हिन्दुस्तान,५ सितंबर, २००४, पृ.१५

२. अग्रवाल साधना–हिन्दुस्तान,५ सितंबर, २००४, पृ.१५

३. गुप्ता रजनी–वर्तमान साहित्य, जून, २००९, पृ.६६

४. शर्मा क्षितिज–इंडिया टुडे, २४ जून, २००९, पृ.१०२

५. नागर हीरालाल–जनसत्ता, २२ जून, १९९७, पृ.८

६. शर्मा क्षमा दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि.६ अप्रैल,२०१४

७. पचौरी अनुराग–हिन्दुस्तान रविवासरीय, १ जनवरी, १९९५, पृ.१३

८. दर्पण महेश–कथादेश, ५ जुलाई, २००७, पृ.९०

९. दिवाकर रामधारी सिंह–दैनिक जागरण, २४ अगस्त,२००७, पृ.९

१०. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि.६ अप्रैल,२०१४

११. विवेक ज्ञानप्रकाश–अमर उजाला, ९अगस्त, १९९८, पृ.१८

१२. प्रभात रंजन–राष्ट्रीय सहारा, ६ मई ,२००७, पृ.१४

१३. भाटिया प्रेमप्रकाश–आजकल, फरवरी, २००१, पृ.४८

१४. कुमार नरेंद्र–पींग, ५ मई, १९९०, पृ.१५

१५. गुप्ता रजनी–वर्तमान साहित्य, जून २००९, पृ.६८

१६. सहगल राजेंद्र–आउटलुक साप्ताहिक, ११ जून, २००७, पृ.५८

१७. विवेक ज्ञानप्रकाश–अमर उजाला, ४ जुलाई, १९९९, पृ.२१

१८. दर्पण महेश–कथादेश, मई, २००७, पृ.९०

१९. दिवाकर रामधारी सिंह–दैनिक जागरण, २४ अगस्त, २००७, पृ.९

२०. द्विवेदी विवेक–कथादेश, दिसंबर, २००५, पृ.९४

२१. पांडेय रामकृष्ण–हिंदुस्तान रविवासरीय, १ फरवरी, १९९८

उपसंहार

आधुनिक काल की प्रमुखतम महिला साहित्यकारों में क्षमा शर्मा का स्थान विशिष्ट एवं अन्यतम रहा है। साहित्य की कई विधाओं में एक साथ साहित्य सृजन करने वाली क्षमा जी अधिक कहानीकार के नाते जानी जाती है। क्षमा जी के हँसमुख व्यक्तित्व को एक बार अगर कोई देख ले तो वह उसे भूल नहीं सकता। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के पश्चात् कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं। उनके साहित्य में ज्यादातर दिल्ली जैसे शहर का वर्णन आया है। कोई भी साहित्यकार अपने परिवेश से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। ऐसा लगता है कि जरूर इन सभी जगहों से क्षमा जी का कोई सम्बन्ध रहा होगा। उनके जीवन परिचय को जानने पर इस बात का पता चलता है कि दिल्ली उनकी कर्मभूमि रही है। चाहे शिक्षा के संदर्भ में हो, चाहे संपादक के रूप में हो वह इन स्थानों से जुड़ी हुई है। इसी वजह से दिल्ली जैसे महानगरों में होने वाली समस्याएँ जैसे- बेरोजगारी, अर्थाभाव, मकान समस्या आदि का चित्रण उन्होंने सहजता और सफलता के साथ किया है। अपनी जन्मभूमि को वे अपने साहित्य का प्रेरणा स्थान मानती है।

जब उनके साहित्य में नौकरी पेशा स्त्रियों की समस्याएँ देखते हैं तो उनके द्वारा समय-समय पर की गई नौकरियाँ याद आती हैं। वे स्वयं भी नौकरी और घर की जिम्मेदारियाँ एक साथ कैसे निभाती होंगी, इस बात का पता चलता है। उन्हें स्वयं भी उन तकलीफों को झेलना पड़ा है। नौकरी करते वक्त उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। क्षमा जी के व्यक्तित्व में दूसरों को मदद करने की प्रवृत्ति, हँसमुख व्यक्तित्व, भावुकता, संवेदनशीलता, ईमानदारी, मिलनसारिता, आतिथ्यशीलता, परिश्रय यह सारे गुण दिखाई देते है। यह सारे गुण उनकी नायिकाओं में भी दिखाई देते हैं। साहित्य में नारी को पुरूष के समानांतर दिखाना यह क्षमा जी के साहित्य सृजन का उद्देश्य रहा है। वे नारी का वैचारिक विकास चाहती हैं। क्षमा जी के साहित्य पर पूरी तरह से उनके परिवेश का प्रभाव पड़ा है। उनके व्यक्तित्व के कई पहलू उनके साहित्य में उभरते हैं। इसी वजह से साहित्य उनके जीवन का आइना बन गया है।

विषय-वस्तु के अंतर्गत क्षमा जी ने सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं को अलग-अलग प्रकारों से विभाजित किया है। सामाजिकता का

प्रस्तुतीकरण करते समय क्षमा जी ने शिक्षा–समस्या, भ्रष्टाचार, दहेज, अधिकारीयों की स्त्री लंपटता, महानगरीय समस्या, साहित्यकारों की समस्या, अवैध सम्बन्ध, असफल प्रेमविवाह, नारी समस्याएँ आदि कई तरह की सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन सभी के प्रस्तुतीकरण में क्षमा जी सफल हुई हैं। पारिवारिकता के अन्तर्गत पति अधीनस्थ स्त्री, छोटे बच्चों की समस्या, रिश्तों में दरार आदि को अत्यन्त कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। आर्थिक समस्याओं के रूप दिखाते हुए क्षमा जी ने महँगाई, रिश्तों में आये तनाव, अर्थाभाव, बेकारी को दर्शाया है। धार्मिकता के अन्तर्गत अंधविश्वास, रूढ़ि–परम्पराएँ, धार्मिक अंधश्रद्धा, गंगास्नान के पीछे नष्ट हुई धार्मिक भावना आदि समस्याओं को दर्शाया है। राजनीतिक समस्याओं के अंतर्गत राजनीतिक क्षेत्र में चल रहे भ्रष्टाचाार, राजनेताओं पर व्यंग्य, नेताओं का समाज को सिर्फ आश्वासन देना आदि का चित्रण किया है।

क्षमा जी के कथा–साहित्य के अध्ययन के उपरांत यह पाया जाता है कि उनके लेखन में नारी केंद्र में रहकर भी अन्य विषयों का भी उन्होंने चयन किया है। उनके साहित्य में उच्च वर्ग में सभ्यता का गिरता स्तर, मकान की तंगी, मनुष्य की समझौतापरस्त वृत्ति, पैसों का महत्त्व, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, अकेलापन, शादी उपरांत स्त्री–परिवर्तन, नैतिकता का पतन एवं रक्षा, अविवाहित प्रौढ़ा स्त्री की समस्या, अन्तर्जातीय विवाह समस्या, दफ्तर का उबाऊ वातावरण, दहेज समस्या, मादा भ्रूण हत्या, अनेकानेक भ्रष्टाचार, पहली तारीख का महत्त्व, अफसरी जीवन, संस्कारहीनता, पति–पत्नी संघर्ष जैसे विषय दिखाई देते हैं। इन अलग अलग विषयों पर उन्होंने अलग–अलग कहानियों में अपने विचार व्यक्त किये हैं। इनमें से अधिक विषय नारी सम्बधित हैं।

क्षमा शर्मा के शैल्पिक उपलब्धियों के बारे में कहा जा सकता है कि वे शिल्प के स्तर पर सिद्धहस्त कलाकार हैं, परन्तु शिल्प में कलात्मकता के प्रति दुराग्रही नहीं है। शिल्प रचनाकार की प्रतिभा, सृजनशील कल्पना और अविराम साधना का परिणाम होता है, जिसके द्वारा वह अपने रचनात्मक लक्ष्य को प्राप्त करता है। क्षमा शर्मा के उपन्यासों तथा कहानियों के शिल्प के सम्बन्ध में विचार करते समय उपन्यास तथा कहानी विधा के छः तत्त्वों को केन्द्र में रखा गया है। कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र–चित्रण, कथोपकथन एवं संवाद, देशकाल एवं वातावरण, भाषा–शैली तथा उद्देश्य

इन तत्त्वों को केन्द्र में रखते हुए साहित्य में उनकी सार्थकता की चर्चा की है। लेखिका अपने उपन्यासों के लिए कथानक का चुनाव यथार्थ की भूमी पर करती है। यथार्थ को कल्पना की उड़ान देकर वे अपनी कथावस्तु बुनती हैं। उनके उपन्यासों की विषय-वस्तु उनके विस्तृत अनुभव-क्षेत्र का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

पर्यावरण चिन्तन, शैक्षिक क्षेत्र, कामकाजी नारी अथवा मोबाइल युग की युवतियाँ हो, सभी ओर लेखिका की पैनी नजर है। पात्रों को यथार्थ की भूमि पर उतारने के लिए लेखिका उनके अनुकूल परिवेश का सृजन करती हैं। उनके पात्र परिस्थितियों के अनुसार आचरण करते हैं। अतः वे काल्पनिक लोक के नहीं लगते। स्त्रियों के प्रति सहानुभूति का दृष्टिकोण रखते हुए भी लेखिका पुरूषों को खलनायक के रूप में प्रस्तुत नहीं करती। लेखिका उपन्यास में रोचकता तथा जीवंतता भरने के लिए संवादों का बहुत ही सुन्दर प्रयोग करती है। इनके संवादों में विविधता है जो उपन्यास के पात्रों को जीवंत बनाते हैं, उनका चरित्रांकन करने में सहायता करते हैं, तथा कथावस्तु का विस्तार करते हैं। लेखिका की भाषा पात्रानुकूल, वातावरणानुकूल, जीवंत, मुहावरेदार, प्रवाहमयी तथा ओजस्वी है। क्षमा जी लेखक के लिए सामाजिक सरोकारों को अनिवार्य मानती है। उनके साहित्य का उद्देश्य ही सोए हुए लोगों को जगाना है। इस दृष्टि से उनके कथासाहित्य में समाज के विभिन्न वर्ग के लोगों की समस्याएँ चित्रित हुई हैं। मध्यवर्ग, श्रमजीवी वर्ग, मजदूर वर्ग, अशिक्षा के कारण शोषण का शिकार बन रही स्त्रियों का वर्ग, वृद्धों की समस्याएँ, विज्ञापन जगत में स्त्रियों की ओर देखने का दृष्टिकोण, इन सभी के जीवन की विसंगतियों को लेखिकाने अपने लेखन का उद्देश्य बनाया है। लेखिकाने केवल समस्याएँ ही सामने नहीं रखी बल्कि यथासम्भव उनके कतिपय समाधान भी प्रस्तुत किए हैं, साथ ही कलात्मकता की दृष्टि से भी उनका साहित्य सम्पन्न है।

साहित्य में नारी चेतना की अभिव्यक्ति को देखते हुए उनके साहित्य के समीक्षक विद्वानों ने उन्हें स्त्रीवादी लेखिका के रूप में विश्लेषित करने का प्रयास किया है। वास्तविकता यह है कि लेखिका प्रचलित अर्थ में स्त्रीवादी लेखिका नहीं है। लेखिका के साहित्य में स्त्री-जीवन के प्रति जो उनका दृष्टिकोण उजागर हुआ है, उसे अधिक से अधिक उनकी नारी-चेतना कहा जा सकता है। क्षमा जी अपने साहित्य में स्त्रियों के शोषण का विरोध अवश्य करती हैं, परन्तु स्त्रियों की पक्षधरता

के लिए वे पुरूषों को अपना विरोध नहीं मानतीं। उनकी मान्यता है कि स्त्री और पुरूष संसाररूपी रथ के दो पहिए हैं और उनके समन्वय के अभाव में जीवन का रथ ध्वस्त हो सकता है। अतः वे स्त्री-पुरूष के आपसी सामंजस्य पर अधिक बल देती हैं। अनके अनुसार सम्बन्ध-विच्छेद समस्या का समाधान नहीं हैं। इससे समस्या और भी अधिक जटिल बनती है। क्षमा शर्मा के उपन्यासों में नारी-चेतना के विविध पहलुओं का चित्रण हुआ है। इसके अन्तर्गत उन्होंने स्त्री-स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ, देह-प्रदर्शन का विरोध, पाश्चात्य नारीवाद का विरोध, विवाह पद्धती एवं परिवार संस्था का समर्थन, अनिष्ट धार्मिक रूढ़ियों तथा परम्पराओं का विरोध, कामकाजी नारी का नारी प्रकृति के अनुकूल सुविधाएँ प्राप्त कराने के लिए संघर्ष, कामकाजी नारी का दैहिक शोषण के विरूद्ध मोर्चा, सम्बन्ध-विच्छेद,अंतिम विकल्प आदि आयामों पर विचार किया है।

क्षमा शर्मा ने कामकाजी नारी की स्त्री-स्वाधीनता के सम्बन्ध में उनके आत्मसम्मान तथा अधिकारों का समर्थन करते हुए उनके उत्तरदायित्वों की ओर भी ध्यान खींचा है। मध्यवर्गीय गृहिणी के पास गृहकार्य से निवृत्त होने के बाद कोई खास काम नहीं होता, वह नौकरी करना भी चाहे तो उस पर प्रतिबन्ध लगाया जाता है। अतः उसके व्यक्तित्व की रक्षा के लिए लेखिका उनके कामकाजी होने पर बल देती हैं। पहले की तुलना में आज नारी की स्थिति बेहतर है। नारी की यह बदलती हुई स्थिति एक प्रकार से पुरूष की मानसिकता के परिवर्तन की द्योतक है। अतः परिवर्तन की यह प्रक्रिया यों ही चलती रही तो एक दिन स्त्री-पुरूष विषमता का मुद्दा ही समाप्त हो जाएगा। क्षमा शर्मा की यह सोच महिला कथाकारों में उन्हें विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। उनकी इस सोच को सतही रूप से देखते हुए उन्हें कोई परम्परावादी कह सकता है परन्तु सूक्ष्मता से देखें तो उनकी यह विचारधारा गम्भीर चिन्तन का प्रतिफल है।

सीमाएँ

कथा-साहित्य के अध्ययन की संपूर्णत: तो तभी है, जब उनके योगदान का सम्यक मूल्यांकन किया जाए। क्षमा जी का विषय क्षेत्र कामकाजी नारी की अनगिनत समस्याएँ, शैक्षिक क्षेत्र, पर्यावरण समस्या, महानगरीय युवतियों की समस्या आदि अपेक्षाकृत सीमित होते हुए भी उन्होंने घर-परिवार, विवाह, दाम्पत्य प्रेम, तलाक, पुनर्विवाह, स्त्री-पुरूष की मधुर-कटु

अनुभूतियाँ, दलित–कुंठित स्त्री की छटपटाहट, व्यक्तित्व निर्माण एवं अस्मिता की खोज की ललक, समानता, सम्मान की आकांक्षा आदि मानवीय व्यवहार के महत्त्वपूर्ण पक्षों को अपने साहित्य में उद्‌घाटित किया है। परन्तु यह विषय काल्पनिकता या आदर्शवाद से परे होते हुए यथार्थता की ओर मार्गप्रवण करते हैं। लेखिका का यह दृष्टिकोण सीमित न होकर उपलब्धि को दर्शाता है। इन विषयों के प्रति उनकी सोच गंभीर चिंतन का प्रतिफल है। परम्परागत संस्कारों में आबद्‌ध आज का समाज आधुनिक बनने की ओर बढ़ना तो चाहता है, पर बढ़ नहीं पाता। इन दुविधाओं को उन्होंने अपने लेखन में अभिव्यक्त किया है। अत: यह जरूरी नहीं कि लेखिका अपनी हर कृति में उन सभी प्रश्नों का पूरा–पूरा या सही–सही जबाब दे ही सके जिन्हें वह उठाती है या जिनसे उनका साक्षात्कार होता है। लेखिका के सफलता का एक आयाम यह भी हो सकता है कि वह हमारा हमसे ही एक सर्वथा भिन्न और अकल्पित रूम में सामना कराए।

उपलब्धियाँ

- क्षमा शर्मा का व्यक्तित्व प्रभावशाली एवं संघर्षशील है।
- क्षमा शर्मा ने महिलाओं की यथार्थ दशा, उनकी मानसिकता, उनके अधिकारों का सूक्ष्म वर्णन किया है।
- क्षमा शर्मा ने अपने साहित्य के द्‌वारा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर प्रकाश डाला है। समस्याओं को प्रस्तुत किया है तथा उनके समाधान की ओर संकेत किया है।
- क्षमा जी ने जो स्वयं अनुभव किया, उसे अपने साहित्य में अभिव्यक्ति दी है।
- क्षमा जी ने समसामयिक घटनाओं से हमारा परिचय करवा कर उस पर सोचने, चिंतन–मनन, विचार–विमर्श करने के लिए बाध्य किया है।
- क्षमा जी स्त्री–पुरूष समानता की पक्षधर हैं। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से इस समानता को उजागर किया है।
- क्षमा जी ने अपने पात्रों के माध्यम से मानव को मानवता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी है।
- क्षमा जी ने अपने पात्रों द्वारा मनुष्यमात्र में सकारात्मक दृष्टि का संचरण किया है।

निष्कर्ष

क्षमा शर्मा का व्यक्तित्व, उनकी रचनाओं का सामान्य परिचय, उनके कथा–साहित्य की विषय–वस्तु, कथा–साहित्य में शिल्प–विधान, कथा–साहित्य में नारी–चेतना तथा समकालीन महिला कथालेखन में उनकी विशिष्टता आदि के विवेचनात्मक–अध्ययन के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष परिलक्षित होते हैं–

- क्षमा जी के कथा–साहित्य का शोधपरक अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि उनका कथा–साहित्य वर्तमान मनुष्य जीवन की घटनाओं का यथार्थ रूप है। जीवन के यथार्थ की अद्‌भुत विश्लेषण क्षमता क्षमा जी का वैशिष्ट्य है।
- उनके साहित्य में विधागत वैविध्य के साथ–साथ विषयगत वैविध्य भी है। पारिवारिक, सामाजिक दायरों से आगे बढ़कर आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा मनोवैज्ञानिक विषयों को उन्होंने यथावत् स्थान दिया है।
- उनका रचना संसार संख्यात्मक दृष्टि से जितना व्यापक है, गुणात्मक दृष्टि से उतना ही गहन उनका विषयगत अध्ययन भी है। उनके कथा–साहित्य में कथानक, पात्र, कथोपकथन तथा परिवेश यथार्थ एवं विषयानुकूल है।
- क्षमा जी के कथा–साहित्य में नगरीय–महानगरीय जीवन, दैनंदिन जीवन संघर्ष, रोटी, कपडा और मकान की समस्या, असुरक्षितता, जटिलता, महँगाई, आर्थिक विपन्नता, शिक्षित नवयुवकों की बेरोजगारी व परेशानी, सर्वत्र व्याप्त भ्रष्टाचार व विद्रुपताएँ, असंतोष आदि जीवन स्थितियों का यथार्थ चित्रण हुआ है।
- मध्य वर्ग की परेशानी, निराशा, कुंठा, ऊब, घुटन, संत्रास, भय, अवनति, अकेलापन, शोषण, संघर्ष, कृत्रिमता, झूठ–फरेब आदि को अधोरेखित किया है।
- निम्न मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग की दरिद्रता, लाचारी, गरीबी, उनकी मजबूरी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत है।
- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य की नारी अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्षरत है।

- उनके कथा–साहित्य में राजनीतिक, प्रशासनिक क्षेत्रों से लेकर शिक्षाक्षेत्र तक व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश हुआ है। इसके अतिरिक्त उन्होंने पर्यावरण समस्या, समाज की दकियानूसी रूढ़ी–परंपरा और पुरूष मानसिकता के गहन–गंभीर विषय को बड़े साहस के साथ प्रस्तुत किया है।
- क्षमा जी ने अपनी संस्कृति को छोड़कर पश्चिमी देशों की संस्कृति का अंधानुकरण करनेवाले वर्तमान आधुनिक स्त्री–पुरूषों को आगाह भी किया है। वे विवाहपूर्व प्रेम का समर्थन करती हैं, किंतु अवैध संबंध को अस्विकार करती है।
- उनके कथा–साहित्य के पात्र कल्पना की अपेक्षा यथार्थ की ठोस जमीन से जुड़े हैं। वे परिस्थिती की उपज हैं, अत: परिस्थिति के अनुसार कार्य–व्यापार करते हैं।
- क्षमा जी के कथा–साहित्य की भाषा मुहावरेदार व व्यंग्यात्मकता से ओतप्रोत है, जो रचना के कलात्मक सौंदर्य में अभिवृद्धि करती है।
- अपने कथा–साहित्य में लेखिका ने पूर्वदीप्ति, वर्णनात्मक तथा संवादात्मक आदि शैलियों का प्रयोग प्रमुखता से किया है।
- उनके कथा–साहित्य के शीर्षक प्रतीकात्मक हैं, जो रचना का सौन्दर्य तथा भाव–सार्थकता को वृद्धिंगत करते हैं।
- उनके साहित्य में शिल्पगत प्रयोग उल्लेखनीय है। परन्तु इन प्रयोगों से भाव–सम्प्रेषण में कहीं भी बाधा उपस्थित नहीं होती। अत: वे प्रयोग कथ्य के अनुकूल तथा उपकारक बने हैं।

आधुनिक काल में क्षमा जी के कथा साहित्य की उपयोगिता

क्षमा जी कथा साहित्य द्वारा एक प्रश्न उपस्थित करती है जो स्त्रियों के हक के लिए आवाज, एक नारे के रूप में नहीं गूँजता बल्कि सवालों के रूप में सुप्त संवेदनाओं को झकझोरता है। वे स्त्री के साथ मानवीय व्यवहार करने का संदेश देती है।

इनकी नायिका नौकरीपेशा होते हुए संवेदनशील तथा दृढ़संकल्प से प्रभावित है। वह ठोस सच्चाई का सामना करते हुए घुटने नहीं टेकती बल्कि स्थितियों से भिड़ जाती है। साथ ही अपने पारिवारिक जीवन पर तथा बच्चों पर इसकी आँच नहीं आने देती। बच्चों के शिक्षा एवं संस्कार के

प्रति वे सजग एवं सतर्क है। पर्यावरण समस्या से जूझने से लेखिका भी नहीं चूँकि है, तथापि केवल प्रश्नों से न घिरते हुए वे उपर उठकर समस्या के हल की ओर संकेत करती है।

इनका कथा साहित्य महानगर के मध्यवर्गीय परिवार की साधारण घटनाओं से होते हुए जीवन–शिक्षा के अनेकविध आयामों को प्रकट है। आखिरकार पाठक पढ़ता है,फिर विचार करता है और अपने आचरण में बदलाव पाता महसूस करता है। यह सामाजिक परिवर्तन की आखरी कड़ी श्रृंखला द्वारा हमें लेखन की पहली कड़ी की ओर ले जाती है और यहीं क्षमा शर्मा लेखिका के रूप में सफल होती है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में आधुनिक काल में क्षमा जी के कथा साहित्य की उपयोगिता सिद्ध होती है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ

प्रस्तुत शोध विषय का अध्ययन करते समय इस विषय के विविध आयाम उद्घाटित हुए हैं जो स्वतंत्र रूप से अनुसंधान के विषय हो सकते हैं। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की अपनी सीमा के कारण उन विविध आयामों का विस्तृत विवेचन अनुसंधान का विषय नहीं है। नये अनुसंधानकर्ता भविष्य में निम्न विषय पर स्वतंत्र रूप में अनुसंधान कर सकते हैं–

- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य में मानवतावादी दृष्टि की अभिव्यक्ति।
- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन।
- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य में स्त्री विमर्श।
- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य में सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति
- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य में राजनीतिक चेतना की अभिव्यक्ति
- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य में आर्थिक चेतना की अभिव्यक्ति
- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य में चित्रित मध्यवर्ग।
- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य में चित्रित महानगरीय जीवन।
- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य में चित्रित स्त्री–पुरूष सम्बन्ध।
- क्षमा शर्मा के कथा–साहित्य में चित्रित पात्रों की मानसिकता।

परिशिष्ट – १

क्षमा शर्मा से साक्षात्कार

यद्यपि साहित्यकृति लेखक का प्रतिबिम्ब होता है, तथापि उसके व्यक्तित्व के भी कुछ ऐसे पहलू होते हैं जो उसकी कृति में नहीं आ पाते । साहित्यकार के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जाने–समझे बिना उसके साहित्य का मूल्यांकन करना असम्भव नहीं, तो भी कठिन अवश्य होता है। साहित्यकार के उन अनछुए पहलुओं को जानने–समझने का सबसे उत्तम मार्ग है, साक्षात्कार द्वारा उसके आंतरिक व्यक्तित्व को समझना। वैसे भी साक्षात्कार शोध–प्रविधि का एक अंग माना जाता है। साहित्यकार यदि वर्तमान नहीं है तो बात और है, तथापि यदि साहित्यकार वर्तमान है, तो उनसे साक्षात्कार करके उनके व्यक्तित्व को अच्छी तरह जाना जा सकता है। इसी सन्दर्भ में श्रीमती क्षमा शर्मा से रविवार दि.६ एप्रिल, २०१४ को दिल्ली स्थित निवास स्थान पर शोधकर्ता ने साक्षात्कार लिया।

- **आपको लिखने की प्रेरणा कहाँ से मिली?**

क्षमा जी:– लिखने के बारे में मैंने सोचा नहीं था लेकिन मुझे लिखने की प्रेरणा मेरे व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों से मिली। मेरा'अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष' नामक लेख 'अमर उजाला' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। जो लिखा उसकी तारीफ हुई, पुरस्कार मिला तो लेखन का उत्साह बढ़ा।

- **क्या आप अपने पर किसी सिद्धांत या विचारधारा का प्रभाव मानती है ?**

क्षमा जी :– मुझे लगता है कि अगर मेरी कोई पार्टी है तो बस लिटरेचर है। अत: मैं लिटरेचर की कार्ड होल्डर हूँ, जिसमें सारे लोग मेरा विषय है। राजनीतिज्ञ, नेता या अभिनेता मेरा विषय है, डॉक्टर, इन्स्पेक्टर या अपराधी भी मेरा विषय है।

- **साहित्य के प्रति आपका क्या दृष्टिकोण है ?**

क्षमा जी :– स्कूली जीवन में ही मैंने प्रेमचंद, वृन्दावनलाल वर्मा इन सबको पढ़ना शुरू किया। फिर कॉलेज लाईफ में और भी ज्यादा पढ़ना शुरू किया। अच्छे लेखकों को, अच्छे अखबारों को, अखबारों के अच्छे कॉलमिस्टों को पढ़ना शुरू किया। पढ़कर मुझे अहसास हुआ कि मेरी संवेदना का विस्तार हो रहा है। आज हम कहते हैं कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की वजह से ग्लोबलाइजेशन हो

गया। लेकिन मुझे लगता है कि साहित्य ने ग्लोबलाइजेशन किया है क्योंकि उदा. के तौर पर चीन का समाज वास्तव में क्या है? चीन के लोग कैसे हैं? चीन के लोगों के मन में असंतोष क्यों है? वो किन चीजों के लिए कब लड़े? कब उन्होंने क्या हासिल किया? यह सब मैंने साहित्य के माध्यम से जाना। मैंने साहित्य के माध्यम से जाना कि असंतोष कोई बुरी चीज नहीं है। समाज में जो भी असंतोष है उसको संगठित होने की जरूरत है और जिन चीजों के कारण असंतोष है उनको पाने के लिए संघर्ष करना चाहिए। पुस्तकें पढ़ने से जो पहली बात हुई कि मेरे भीतर असंतोष को विस्तार मिलने लगा कि अपने घर में मैं ही दु:खी नहीं हूँ, बहुत से लोग बहुत तरह से पीड़ित हैं। जब–जब सारी दुनिया में लोग पीड़ित रहे हैं, उनके असंतोष ने संगठित होकर प्रतिकार किया है, उसका परिणाम सामने आया है, वो उस दुनिया को बदल पाए हैं। इस दृष्टि से मुझे गोर्की के 'माँ' उपन्यास ने हिलाकर रख दिया। साथ ही मुझे प्रेमचन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्य ने अभिभूत किया। एक और किताब मुझे आज तक बहुत अच्छी लगती है, वो है गाँधी जी की 'My Eexperiment with truth' मुझे गाँधी जी की इस पुस्तक ने रास्ता दिखाया है ।

- **आपने अपनी रचनाओं में स्त्री जीवन के अनेक समस्याओं को बड़े मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। वर्तमान नारी की सामाजिक स्थिति के बारे में आप क्या कहना चाहेंगी ?**

क्षमा जी :– नारी की सामाजिक स्थिति पिछले कुछ वर्षों से काफी बदली है। मेरे देखते–देखते आज स्त्रियाँ ज्यादा संख्या में घर से बाहर निकल रही हैं, शिक्षित हो रही हैं। नौकरी कर रही हैं, स्वतंत्र जीवन जी रही हैं। लेकिन यह परिवर्तन व्यापक रूप में नहीं हुआ है। क्योंकि भारत की बहुत सारी आबादी गाँवों और कस्बों में रहती है। हम जब भी सामाजिक स्थिति के बार में विचार करेंगे तो दोनों बातें अपनी दृष्टि में लेनी पडेगी। मेरी कहानियों का क्षेत्र अधिकांश शहरी है। उनमें जीवन स्थितियाँ काफी बदली हैं और साथ ही मुश्किल यह है कि उनकी समस्याएँ भी बदली हैं।

- **क्या आप साहित्य के अलावा नारी सुधार का भी कोई और कार्य करती हैं ?**

क्षमा जी :– नहीं, ऐसा कोई अहमन्य दावा मेरा नहीं है।

- **आपकी रचनाओंका अंत पाठकों को कुछ खलता है अनिर्णय या अनिश्चित समाप्ति के कारण, ऐसा क्यों ?**

क्षमा जी :- मुझे नहीं लगता, साहित्य का काम निर्णय देना है। साहित्य में अन्तिम चुनाव मैं पाठक के हाथ में छोड़ देती हँ और अगर पाठकों को साहित्यिक कृति में ऐसे अंत पसन्द नहीं आते जो निर्णय न देकर, पाठक को भागीदारी का अवसर दे तो इसका मतलब है वे सृजनशील और साहित्यप्रेमी नहीं है।

- **'दूसरा पाठ' उपन्यास के माध्यम से आप क्या सन्देश देना चाहती है ?**

क्षमा जी :- आज सारी दुनिया जिस मुल्क को, मुल्क की तरक्की को आदर और सम्मान के साथ देख रही है, वह भारत है। लोग कहते हैं कि हिंदुस्तान में सब कुछ मिलता है, जी हाँ हमारे पास सब कुछ है। लेकिन मुझे यह कहते हुए अफसोस भी होता है कि हमारे पास ईमानदारी नहीं है। शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टाचार कितनी गहराई तक उतर चुका है और किस तरह से बेईमानी एक राष्ट्रीय मजबूरी बनकर हमारी नसों में समा चुकी है इसका सही अंदाज कराने के लिए मैंने 'दूसरा पाठ' उपन्यास का माध्यम चुना है।

- **सामाजिक परिवर्तन में साहित्यकार की भूमिका की बारे में आप के क्या विचार हैं ?**

क्षमा जी :- सामाजिक परिवर्तन में लेखक की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। क्योंकि परिवर्तन विचारों की देन है, और विचारों की गहराई साहित्य से उभरती है।

- **आप सफल लेखिका हैं और सफल गृहिणी भी हैं। इस सफलता का प्रधान कारण क्या है ?**

क्षमा जी:- इसका सीधा कारण संजोग ही है कि मुझे सुधीश जैसे अच्छे पति मिल गये। वे भी साहित्यकार हैं जिनसे मैं साहित्य के प्रति बात कर सकती हँ। आखिर परिवारिक जीवन पर भी आपका साहित्य निर्भर करता है।

- **साहित्य और संसार के अतिरिक्त आपके जीवन में अन्य आकर्षण कौनसे हैं ?**

क्षमा जी :- मुझे फिल्में देखना, गाने सुनना, गजल सुनना, किताबें पढ़ना बेहद पसंद है। जगजीत सिंह, मेहंदी हसन, फरिदा खानम की 'आज जाने की ज़िद् ना करो ' जैसी गजलें सुनना बहुत अच्छा लगता है और खाली समय में मैं किताबे पढ़ने के अपने शौक को पूरा कर लेती हँ।

➢ **आपने एड्स और दलित विषय पर कभी गौर नहीं किया ?**

क्षमा जी :- एड्स जैसी बीमारी भी माइग्रेशन से जुड़ी है। बताया तो यह भी जा रहा है कि अगले कुछ सालों में भारत में यह महामारी के रूप में फैल जाएगी। एड्स और सेक्स एक-दूसरे से जुड़े हैं। सेक्स पर बातचीत करने पर हमारे यहाँ पाबंदी है तब बताइए कि जागरूकता कैसे फैलाई जा सकती है? दलित विषय के बारे में मैं कहूँगी कि जिस बात से मैं अनजान हूँ उसको हाथ लगाने से भी मुझे डर लगता है। रचनाकार को अनजान विषय को हाथ लगाना भी नहीं चाहिए और फिर मुझे ऐसा लगता है ऐसी चीजों को ना ही छुए जिससे हमें आगे मुसीबतें झेलनी पड़े।

➢ **सहित्य पर संचार माध्यमों का बढ़ता विशेष प्रभाव उचित है ?**

क्षमा जी :- समाज में घटित हर स्थिती और परिवर्तन का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है। हमेशा से पडता आया है। संचार माध्यमों का भी प्रभाव उस पर पड़ेगा। आगे चलकर लिखित कृति को संचार माध्यमों के अनुरूप बना सकते हैं।

➢ **आप अपनी उपलब्धियों पर प्रकाश डालेंगी ?**

क्षमा जी :- मेरे हिसाब से मैनें अपना साहित्य हर हाल में हर मूड में लिखा हैं। बहुत अधिक सुविधाओं में मेरी रचना ठिठूर जाती है। अपनी खुशियाँ, मायूसियाँ, इरादे, मनसूबे, आक्रोश सभी मैंने अपनी कहानियों में ढ़ाले हैं। जो शायद सामने कहने में मुझे सात जनम लेने पड़ते थे। उन सब रचनाओं को मैंने किसी और के मुँह में डाल दिया है। मेरे रचनात्मक सफर में मैंने यह महसूस किया कि साहित्य से अच्छा जीवनसाथी मुझे कोई नहीं मिल सकता है।

➢ **कुछ लेखक अपनी रचनाओं को अपनी संतान समझने के अभ्यस्त हैं इसलिए वे नहीं बता पाते कि उनकी सर्वोत्तम रचना कौन सी है। आपको किसी रचना में सर्वाधिक संतोष प्राप्त हुआ है ?**

क्षमा जी :- अपने लेखन पर मुझे गर्व नहीं है, क्योंकि लगता है कि जो कुछ अब तक लिखा है, दूसरों के आसपास भी पहुँच नहीं सका है। अपने लिखने में मुझे इतनी गलतियाँ नज़र आती हैं कि मैं उन्हें ठीक करने को बेचैन हो उठती हूँ। इसीलिए अपने लिखे को छपा देख मुझे प्राय: बहुत संकोच भी होता है। मैं अपने लेखन से कतई संतुष्ट नहीं हूँ।

- **एक लेखिका के रूप में अपने पाठकों से आप क्या आशा करती है?**

क्षमा जी :- मैं आशा तो करती हूँ कि जब वे मेरी रचना पढ़े तो अपनी दृष्टि खुली रखे। सिर्फ अपने पूर्वग्रहों की पुष्टि ही उसमें न चाहे पर इस आशा के अनुरूप पाठक मिले ही ऐसा जरूरी नहीं है। पर मेरा विश्वास है कि पाठक जब साहित्य पढ़ता जाता है तो उसका दृष्टिकोण अधिक उदार बनता चला जाता है। इसी आशा में हम साहित्य लिखते हैं कि अन्तत: ऐसा होगा।

- **नयी पीढी के लेखकों से आपको क्या उम्मीदें है?**

क्षमा जी :- नई पीढी के लेखकों से मुझे बहुत उम्मीदें हैं। मुझे लगता है कि जो कुछ कमियाँ, या जो दोहरा अथवा तिहरापन हमारी पीढी में है इससे उनको वाकिफ होने की जरूरत है। इस नई पीढी के लेखकों को चाहिए कि दलबन्दी से मुक्त होकर साहित्य में पूरी निर्भीकता के साथ लिखें। 'दूध का दूध और पानी का पानी' पूरे साहस या बोल्डनेस के साथ कर सकें।

- **आज के साहित्यिक परिदृश्य के बारे में आपका क्या मत है?**

क्षमा जी :- आज के दौर से गुजरते हुए भी लेखक लिख रहे हैं और लोग पढ़ रहे हैं यह अत्यन्त संतोषजनक स्थिति है।

- **लेखन के क्षेत्र में आपकी भविष्य की योजनाएँ और आगामी संकल्प क्या है?**

क्षमा जी :- जैसे मैंने पहले ही कहा है कि लेखन मेरा जीवनसाथी है। मैं अपनी आखिरी साँस तक लिखना पसन्द करूँगी और भविष्य में लेखन की दिशा इस प्रकार निश्चित करना चाहूँगी कि सामाजिक परिवर्तन के रूह को थोडा सुकून मिल सके।

परिशिष्ट – २

आधार ग्रंथ सूची (क्षमा शर्मा का कथा साहित्य)

क) उपन्यास :

१. शर्मा क्षमा – **दूसरा पाठ**, विकास पेपर बैक्स,दिल्ली,१९९४

२. ------- **परछाई अन्नपूर्णा**, राजसूर्य प्रकाशन,दिल्ली, १९९६

३. ------- **मोबाइल**,राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, २००४

४. ------- **शस्य का पता**, आकाशदीप पब्लिकेशन,नई दिल्ली,१९९७

ख) कहानी संग्रह :

१. ------ **इक्कीसवीं सदी का लड़का**,सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली,१९९९

२. ------ **काला कानून**, देवदार, प्रकाशन,नई दिल्ली,१९८२

३. ------ **कस्बे की लड़की**, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,१९८९

४. ------ **घर–घर तथा अन्य कहानियाँ**, सचिन प्रकाशन,नई दिल्ली,१९९४

५. ------- **थैंक्यू सद्दाम हुसैन**, भारती प्रकाशन,नई दिल्ली,१९९७

६. ------- **नेमप्लेट**, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,२००६

७. ------- **लड़की जो देखती पलटकर**, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,२००६

८. ------- **लव स्टोरीज़**, आत्माराम एंड सन्स,दिल्ली, १९९८

९. ------ **रास्ता छोड़ो डार्लिंग**, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,२००८

परिशिष्ट–३

संदर्भ ग्रंथ सूची

क. हिन्दी ग्रंथ :

१. कमलेश्वर–**नयी कहानी की भूमिका**, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, १९६६

२. कुमार जैनेंद्र–**साहित्य का श्रेय और प्रेय**,पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, १९५३

३. कालिया ममता (सम्पा.)–**नई सदी की पहचान : श्रेष्ठ महिला कथाकार**, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,२००२

४. डॉ. गणेशदास–**हिंदी कहानी में नारी के विविध रूप**, अक्षय प्रकाशन कानपुर, १९९२

५. डॉ. चव्हाण अर्जुन–**राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन**,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली,१९९५

६. डॉ. जैन महेंद्र–**हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक जीवन**,जैन ब्रदर्स,दिल्ली, १९७४

७. डॉ. टंडन प्रतापनारायण–**हिंदी कहानी कला**,हिंदी समिती सूचना विभाग,लखनऊ,१९७०

८. डॉ. त्रिपाठी धर्मध्वज–**प्रेमचंद कथा–साहित्य**,समीक्षा और मूल्यांकन, प्रेम प्रकाशन,दिल्ली,१९९३

९. डॉ. त्रिभुवनसिंह–**हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग**,हिंदी प्रचारक संस्थान,वाराणसी,१९७३

१०. डॉ. थोरात गोरक्ष–**चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन**, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, १९९७

११. दिनकर रामधारी –**धर्म नैतिकता और विज्ञान**,उदयांचल, पटना, १९६९

१२. डॉ. नगेन्द्र–**समस्या और समाधान**, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,दिल्ली,१९७१

१३. पटेल राजेश–**निराला के उपन्यासों में सामाजिक चेतना**, ज्ञान प्रकाशन,कानपुर,२००६

१४. पन्त बसंती–**हिंदी उपन्यास: रचना विधान और युगबोध**,पंचशील प्रकाशन, जयपुर, १९७३

१५. प्रेमचंद–**साहित्य के उद्देश्य**,हंस प्रकाशन,इलाहाबाद,१९५४

१६. डॉ.बाबर सुरेश–**भिष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन**,अन्नपूर्णा प्रकाशन,कानपुर,१९९७

१७. भुतड़ा घनश्यामदास–**समकालीन हिंदी कहानियों में नारी के विविध रूप**,अतूल प्रकाशन, कानपुर,१९७६

१८. मित्तल सुशीला–**आधुनिक हिंदी कहानी में नारी की भूमिकाएँ आमुख**, अनुपमा प्रकाशन, बम्बई,१९७५

१९. डॉ.मिश्र रामदशरथ–**साहित्य संदर्भ और मूल्य**,भारती साहित्य मंदिर,१९६१

२०. डॉ.यादव उषा–**हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना**, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली,१९९९

२१. डॉ. लाल लक्ष्मीनारायण–**हिंदी कहानियों की शिल्प विधी का विकास**,साहित्य भवन प्रा.ली, इलाहाबाद, १९७४

२२. डॉ. वर्मा शीलप्रकाश–**महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक–संदर्भ**,विद्या विहार, कानपुर, १९८७

२३. व्यास विनोद–**कहानी–कला**,हिंदी साहित्य कुटीर,बनारस,१९४४

२४. डॉ. शर्मा ओमप्रकाश–**समकालीन महिला लेखन**,पूजा प्रकाशन, दिल्ली, २००२

२५. डॉ. शर्मा मक्खनलाल–**हिंदी उपन्यास:सिद्धांत और समीक्षा**,प्रभात प्रकाशन,दिल्ली–मथुरा, १९६६

२६. डॉ. शर्मा ज्योत्स्ना–**शिवानी का हिंदी साहित्य : सामाजिक परिप्रेक्ष्य में**, अन्नपूर्णां प्रकाशन, कानपुर, १९९४

२७. डॉ. शर्मा प्रदीपकुमार–**हिंदी उपन्यासों का शिल्प–विधान**, अक्षय प्रकाशन, कानपुर,१९९०

२८. डॉ. शर्मा सरनाम ''अरण''–**कृति और कृतिकार**,विजय बुक डिपो, जयपुर,१९६८

२९. डॉ.श्रीमती शुक्ल ओम–**हिंदी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास**,अनुसंधान प्रकाशन,कानपुर,१९६४

३०. डॉ. शुक्ल रामलखन–**हिंदी उपन्यास कला**, सन्मार्ग प्रकाशन,दिल्ली,१९७२

३१. श्रीवास्तव शिवनारायण–**हिंदी उपन्यास**, सरस्वती मंदिर,काशी, १९६७

३२. डॉ. सक्सेना सुनिता–**हिंदी उपन्यास: आधुनिक संदर्भ**, आस्था प्रकाशन, दिल्ली, १९९८

३३. डॉ. सिंह जवाहर–**हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्प–विधि**,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,१९८६

३४. डॉ. सिंहल शशिभूषण–**हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ**, विनोद पुस्तक मंदिर,आग्रा,१९७०

ख) संस्कृत ग्रंथ :

१. मनुस्मृति– **मन्वर्थ मुक्तावली**, तृत्योध्याय,श्लोक ५६

२. वृत्तनाम–उपजाति, **भर्तृहरिसुभाषितसंग्रह**–५४, प्रकरण–१६,श्लोक–३

३. वृत्तनाम–अनुष्टुभ, **महाभारतम्**, प्रकरण–७, श्लोक–१३

ग) अंग्रेजी ग्रंथ :

1. Hudson W. H.– **An Introduction in the staudy of literature**, Kalyani pun. 9, Indian edition, 1979

घ) कोशग्रंथ :

१. आचार्य बच्चूलाल(सम्पा.)–**हिंदी व्युत्पत्तिकोश (भाग–३)**, बुक्स एन बुक्स, दिल्ली, २००५

२. शर्मा एस्. के., सहाय आर.एन.(सम्पा.)–**ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश**, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस,नई दिल्ली, २००३

३. डॉ. चातक गोविंद(सम्पा.)–**आधुनिक हिंदी शब्द कोश**,तक्षशिला प्रकाशन,दिल्ली,१९८६

४. डॉ.द्वारकाप्रसाद(सम्पा.)–**हिंदी–हिंदी शब्दकोश**, एस. चंद. एंड कंपनी लि.रामनगर, दिल्ली, २०००

५. वर्मा धीरेन्द्र(सम्पा.)–**हिंदी साहित्य कोश, भाग–२**, ज्ञान मंडल लि. वाराणसी, २०००

६. पं. पाठक रामचंद्र(सम्पा.)–**आदर्श हिंदी शब्दकोश**, मार्ग बुक डिपो,१९९५

७. वर्मा फूलचंद सहाय(सम्पा.)–**हिंदी विश्व कोश (ग्रंथावली–४)** नागरी प्रचारिणी सभा .

८. श्री.नवल जी(सम्पा.)–**नालंदा विशाल शब्दसागर**, आदीश बुक डेपो, २०००

च) पत्रिकाएँ :

१. अजित समाचार,जनवरी,२०००

२. अमर उजाला, १९ जनवरी,२००५

३. अक्षर भारत, २७ दिसंबर,१९९९

४. अहा जिंदगी, जून,२००७

५. आउटलुक साप्ताहिक, ११ जून, २००७

६. आजकल,फरवरी,२००१

७. इंडिया टुडे, १५ जुलाई,१९९६

८. कथादेश, मे, २००७

९. गृहलक्ष्मी, सितंबर, २००१

१०. जनसत्ता, ३० मार्च, १९९७

११. दैनिक जागरण,२४ अगस्त,२००७

१२. दैनिक हिंदुस्तान,१० अक्तूबर, १९९७

१३. नवभारत टाइम्स, १० अगस्त,१९९७

१४. पींग,५ जनवरी,१९९०

१५. राष्ट्रीय सहारा,६ मई,२००७

१६. लोकमत समाचार,नवम्बर,२००२

१७. वर्तमान साहित्य,जून, २००९

१८. वागार्थ, अक्तूबर, १९९९

१९. वाणी, मार्च,२००८

२०. संचेतना,दिसंबर,२००१

२१. सांध्य टाइम्स, १२ फरवरी, २०००

२२. समीक्षा, अक्तूबर–दिसंबर,२००७

२३. हिंदुस्तान रविवासरीय, ३० नवंबर, १९९७

क्षमाजी से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर भेंट

क्षमा जी को मौलिक लेखन के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।